DurgaSaptaShati

श्री दुर्गा सप्तशती संपूर्ण पाठ विधि

साधक स्नान करके पवित्र हो कर शुद्ध आसन पर बैठ जाएं। सारी सामग्री एकत्रित कर लें । माथे पर अपनी पसंद के अनुसार भस्म, चंदन अथवा रोली लगा लें, शिखा बांध लें।

पवित्रीकरण

हाथ में जल लेकर मंत्र पढ़ते हुए स्वयं पर तथा सभी पूजन सामग्री पर जल छिड़क दें

ॐ पवित्रः अपवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्यभ्यन्तर शुचिः॥

आसन शुद्धि

इसके बाद आसन को भी जल छिड़क कर निम्नलिखित मंत्र से शुद्ध कर लेंः-

पृथ्विति मंत्रस्य मेरुपृष्ठः गषिः सुतलं छन्दः
कूर्मोदेवता आसने विनियोगः॥

पृथ्वी पूजन

अब मां पृथ्वी को प्रणाम करके मंत्र बोलें-

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥
पृथिव्यै नमः आधारशक्तये नमः

आचमन

फिर पूर्वाभिमुख होकर तत्व शुद्धि के लिए चार बार आचमन करें। इस समय निम्न मंत्रों को बोलें-

ॐ ऐं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा॥
ॐ क्लीं शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा॥

पवित्री धारण

तत्पश्चात प्राणायाम करके गणेश आदि देवताओं एवं गुरुजनों को प्रणाम करें, कुश की पवित्री धारण करें-

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।

संकल्प

हाथ में लाल फूल, अक्षत और जल लेकर निम्नांकित रूप से संकल्प करें-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः। ॐ नमः परमात्मने, श्रीपुराणपुरुषोत्तमस्य श्रीविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्रीब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यप्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने यथानामसंवत्सरे अमुकामने महामांगल्यप्रदे मासानाम्

उत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरान्वितायाम् अमुकनक्षत्रे अमुक-राशिस्थिते सूर्ये अमुकामुकराशिस्थितेषु चन्द्रभौमबुधगुरुशुक्रशनिषु सत्सु शुभे योगे शुभकरणे एवं गुणविशेषणविशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ सकलशास्त्र श्रुति स्मृति पुरा-णोक्त फलप्राप्तिकामः अमुकगोत्रोत्पन्नः अमुक नाम अहं ममात्मनः सपुत्रस्त्रीबान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृतराजकृतसर्व-विधपीडानिवृत्तिपूर्वकं नैरुज्यदीर्घायुः पुष्टिधन-धान्यसमृद्ध्‌यर्थं श्री नवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निवृत्तिसर्वाभीष्टफलावाप्तिधर्मार्थ- काममो-क्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीमहाकाली-महालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थं शापो-द्धारपुरस्परं कवचार्गलाकीलकपाठ- वेदतन्त्रोक्त रात्रिसूक्त पाठ देव्यथर्वशीर्ष पाठन्यास विधि सहित नवार्णजप सप्तशतीन्यास- ध्यानसहितचरित्रसम्बन्धिविनियोगन्यासध्यान-पूर्वकं च 'मार्कण्डेय उवाच॥ सावर्णिः सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः।' इत्याद्यारभ्य 'सावर्णिर्भविता मनुः' इत्यन्तं दुर्गासप्तशतीपाठं तदन्ते न्यासविधिसहितनवार्णमन्त्रजपं वेदतन्त्रोक्तदेवीसूक्तपाठं रहस्यत्रयपठनं शापोद्धारादिकं च किरष्ये/करिष्यामि।
इस प्रकार प्रतिज्ञा (संकल्प) करके देवी का ध्यान करें ।

पुस्तक पूजा

अब पंचोपचार की विधि से पुस्तक की पूजा करें-
दुर्गा-सप्तशती पुस्तक को काष्ठ के शुद्ध आसन पर रख लें। अब गंध,फूल,धूप तथा दीप से पुस्तक पूजा करे और कुछ नैवैद्य अर्पित करें।

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥

योनिमुद्रा का प्रदर्शन करके भगवती को प्रणाम करें, फिर मूल नवार्ण मन्त्र से पीठ आदि में आधारशक्ति की स्थापना करके उसके ऊपर पुस्तक को विराजमान करें।
ध्यात्वा देवीं पञ्चपूजां कृत्वा योन्या प्रणम्य च ।
आधारं स्थाप्य मूलेन स्थापयेत्तत्र पुस्तकम्॥
इसके बाद शापोद्धार करना चाहिए। इसके अनेक प्रकार हैं।
'ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिकादेव्यै शापनाशानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा'
इस मंत्र का आदि और अन्त में सात बार जप करें। यह शापोद्धार मंत्र कहलाता है। इसके अनन्तर उत्कीलन मन्त्र का जाप किया जाता है।
इसका जप आदि और अन्त में इक्कीस-इक्कीस बार होता है। यह मन्त्र इस प्रकार है-
'ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।' इसके जप के पश्चात् आदि और अन्त में सात-सात बार मृतसंजीवनी विद्या का जाप करना चाहिए, जो इस प्रकार है-
'ॐ ह्रीं ह्रीं वं वं ऐं ऐं मृतसंजीवनि विद्ये मृतमुत्थापयोत्थापय क्रीं ह्रीं ह्रीं वं स्वाहा।'
मारीचकल्प के अनुसार सप्तशती-शापविमोचन का मन्त्र यह है-
'ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हूं ॐ ऐं क्षोभय मोहय उत्कीलय उत्कीलय उत्कीलय ठं ठं।'
इस मन्त्र का आरंभ में ही एक सौ आठ बार जाप करना चाहिए, पाठ के अन्त में नहीं।

अथवा रुद्रयामल महातन्त्र के अंतर्गत दुर्गाकल्प में कहे हुए चण्डिका शाप विमोचन मन्त्र का आरंभ में ही पाठ करना चाहिए। वे मन्त्र इस प्रकार हैं-

ॐ अस्य श्रीचण्डिकाया ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापविमोचनमन्त्रस्य वसिष्ठ-नारदसंवादसामवेदाधिपतिब्रह्माण ऋषयः सर्वैश्वर्यकारिणी श्रीदुर्गा देवता चरित्रत्रयं बीजं ह्री शक्तिः त्रिगुणात्मस्वरूपचण्डिकाशापविमुक्तौ मम संकल्पितकार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ (ह्रीं) रीं रेतःस्वरूपिण्यै मधुकैटभमर्दिन्यै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥१॥
ॐ श्रीं बुद्धिस्वरूपिण्यै महिषासुरसैन्यनाशिन्यै
ब्रह्मवसिष्ठ विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥२॥
ॐ रं रक्तस्वरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥३॥
ॐ क्षुं क्षुधास्वरूपिण्यै देववन्दितायै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥४॥
ॐ छां छायास्वरूपिण्यै दूतसंवादिन्यै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥५॥
ॐ शं शक्तिस्वरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥६॥
ॐ तृं तृषास्वरूपिण्यै चण्डमुण्डवधकारिण्यै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव॥७॥
ॐ क्षां क्षान्तिस्वरूपिण्यै रक्तबीजवधकारिण्यै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥८॥
ॐ जां जातिस्वरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥९॥
ॐ लं लज्जास्वरूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥१०॥
ॐ शां शान्तिस्वरूपिण्यै देवस्तुत्यै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥११॥
ॐ श्रं श्रद्धास्वरूपिण्यै सकलफलदात्र्यै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥१२॥
ॐ कां कान्तिस्वरूपिण्यै राजवरप्रदायै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥१३॥
ॐ मां मातृस्वरूपिण्यै अनर्गलमहिमसहितायै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥१४॥
ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वैश्वर्यकारिण्यै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥१५॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शिवायै अभेद्यकवचस्वरूपिण्यै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥१६॥
ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदस्वरूपिण्यै
ब्रह्मवसिष्ठविश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव॥१७॥
ॐ ऐं ह्री क्लीं महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीस्वरूपिण्यै
त्रिगुणात्मिकायै दुर्गादेव्यै नमः॥१८॥
इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्वा परमेश्वर।
चण्डीपाठं दिवा रात्रौ कुर्यादेव न संशयः॥१९॥
एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति यः।
आत्मानं चैव दातारं क्षीणं कुर्यान्न संशयः॥२०॥

इस प्रकार शापोद्धार करने के अनन्तर अन्तर्मातृका बहिर्मातृका आदि न्यास करें , फिर श्रीदेवी का ध्यान करके रहस्य में बताए अनुसार नौ कोष्ठों वाले यन्त्र में महालक्ष्मी आदि का पूजन करें , इसके बाद छ: अंगों सहित दुर्गासप्तशती का पाठ आरंभ किया जाता है।

कवच, अर्गला, कीलक और तीनों रहस्य- ये ही सप्तशती के छ: अंग माने गए हैं। इनके क्रम में भी मतभेद हैं। चिदम्बरसंहिता में पहले अर्गला, फिर कीलक तथा अन्त में कवच पढ़ने का विधान है, किन्तु योगरत्नावली में पाठ का क्रम इससे भिन्न है। उसमें कवच को बीज, अर्गला को शक्ति तथा कीलक को कीलक संज्ञा दी गई है। जिस प्रकार सब मंत्रों में पहले बीज का, फिर शक्ति का तथा अन्त में कीलक का उच्चारण होता है, उसी प्रकार यहाँ भी पहले कवच रूप बीज का, फिर अर्गला रूप शक्ति का तथा अन्त में कीलक रूप कीलक का क्रमशः पाठ होना चाहिए। यहाँ इसी क्रम का अनुसरण किया गया है।

(इसके बाद देवी कवच का पाठ करना चाहिए।)

अथ देवी कवचम् ॥

अस्य श्रीचण्डीकवचस्य ब्रह्मा ऋषिः , अनुष्टुप् छन्दः ,
चामुण्डा देवता अङ्गन्यासोक्तमातरो बीजम् ,
दिग्बन्धदेवतास्तत्वम् , श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।
ॐ नमश्चण्डिकायै ।
ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है ।
मार्कण्डेय उवाच ।
मार्कण्डेय बोला ।
ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ।
यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ १॥
यत् = जो
गुह्यं = गोपनीय
परमं = अत्यंत
लोके = संसार में

सर्वरक्षाकरं = सब प्रकार से रक्षा करने वाला
नृणाम् = मनुष्यों की
यत् न = जो नहीं
कस्यचित् आख्यातं = किसी को बताया गया
तत् मे = उसे मुझे
ब्रूहि = बताइये
पितामह = हे पितामह
हे पितामह जो संसार में अत्यंत गोपनीय है , मनुष्यों की सब पकार से रक्षा करने वाला है , जो किसी को नहिं बताया गया उस (साधन) को मुझे बताइये ।
ब्रह्मोवाच ।
अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् ।
देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥ २॥
अस्ति = है
गुह्यतमं = गोपनीय से भी गोपनीय
विप्र = ब्राह्मण
सर्वभूतोपकारकम् = सभी प्राणियों का उपकार करने वाला
देव्या: = देवी का
तु = निश्चय ही
कवचं = कवच
पुण्यं = पवित्र
तच्छृणुष्व = तत् श्रुणुष्व = वह सुनो
महामुने = हे महामुनि
ब्राह्मण निश्चय ही देवी का पवित्र कवच गोपनीय से भी गोपनीय, सभी प्राणियों का उपकार करने वाला है , हे महामुनि , वह सुनो ।
प्रथमं शैलपुत्रीति द्वितीयं ब्रह्मचारिणी ।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥ ३॥
प्रथमं शैलपुत्रीति = पहली शैलपुत्री
द्वितीयं ब्रह्मचारिणी = दूसरी ब्रह्मचारिणी
तृतीयं चन्द्रघण्टेति = तीसरी चन्द्रघंटा
कूष्माण्डेति चतुर्थकम् = चौथी कूष्माण्डा
(देवी के नौ रूप हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं) पहली शैलपुत्री, दूसरी ब्रह्मचारिणी , तीसरी चन्द्रघंटा , चौथी कूष्माण्डा
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च ।
सप्तमं कालरात्रिति महागौरीति चाष्टमम् ॥ ४॥
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः ।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥ ५॥
पञ्चमं स्कन्दमातेति = पांचवी सकंधमाता

षष्ठं कात्यायनी तथा = इसी प्रकार छटी कात्यायनी
सप्तमं कालरात्रिश्च = और सातवीं काल रात्रि
महागौरीति चाष्टमम् = और आठवीं महा गौरी
नवमं सिद्धिदात्री = नौवीं सिद्धिदात्री
च = और
नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः = नौ दुर्गायै प्रसिद्ध हैं
उक्तान्येतानि नामानि = उक्तानि एतानि नामानि =ये नाम कहे गए हैं
ब्रह्मणैव= ब्रह्मा द्धारा ही
महात्मना = हे महात्मा

पांचवी सकंधमाता , इसी प्रकार छटी कात्यायनी, और सातवीं काल रात्रि और आठवीं महा गौरी, और नौवीं सिद्धिदात्री , (इस प्रकार) नौ दुर्गायै प्रसिद्ध हैं , हे महात्मा ये नाम ब्रह्मा द्धारा ही बताये गए हैं ।

अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे ।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं गताः ॥ ६।

अग्निना =अग्नि में
दह्यमाना: = जलता हुआ
तु = और
शत्रुमध्यगता रणे = युद्ध में शत्रुओं के बीच फंसा
विषमे = विषम
दुर्गमे = संकट में पड़ा
चैव = और इसी प्रकार
भयार्ताः = भय से आतुर
शरणं = शरण में
गताः = जाता है
अग्नि में जलता हुआ और युद्ध में शत्रुओं के बीच फंसा, विषम संकट में पड़ा और इसी प्रकार भय से आतुर (दुर्गा की) शरण में जाता है
न तेषां जायते किञ्चिदशुभं रणसङ्कटे ।
नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं न हि ।। ७।।
न तेषां जायते = उनका नहीं होता
किञ्चित् अशुभं = कुछ भी अशुभ
रणसङ्कटे = युद्ध के संकट में
आपदं = आपत्ति
तस्य = उस पर
न= नहीं
च= और

पश्यन्ति = दिखाई देती
शोकदुःखभयम् = शौक दुःख भय
न हि = और न
उनका कुछ भी अशुभ नहीं होता , और न युद्ध संकट में आपत्ति दिखाई देती है , और न दुःख शौक भय होता है ।
यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते ।
ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः ॥ ८॥
यैस्तु= यै: तु= और जो
भक्त्या = भक्ति पूर्वक
स्मृता = स्मरण करते हैं
नित्यं = रोज़
तेषां = उनका
वृद्धिः =विकास
प्रजायते = होता है
ये = जो
त्वां = तुम्हे
स्मरन्ति = स्मरण करते हैं
देवेशि = देवी
रक्षसि = रक्षा करती हो
तान्न संशयः= इसमें कोई संदेह नहीं
और जो भक्तिपूर्वक रोज तुम्हारा स्मरण करते हैं उनका विकास होता है , हे देवी जो तुम्हे स्मरण करते हैं उनकी तुम रक्षा करती हो इसमें कोई संदेह नहीं ।
प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना ।
ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥ ९॥

प्रेतसंस्था = प्रेत पर आरूढ़ है
तु = और
चामुण्डा = चामुण्डा देवी
वाराही = वाराही
महिषासना ।= भैंसे पर सवार है
ऐन्द्री = इंद्री
गजसमारूढा = हाथी पर बैठी है
वैष्णवी = वैष्णवी
गरुडासना = गुरुङ पर सवार है

और चामुण्डा देवी प्रेत पर आरूढ़ है , वाराही भैंसे पर सवार है , ऐन्द्री हाथी पर बैठी है , वैष्णवी गुरुङ पर सवार हैं ।

माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना ।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्महस्ता हरिप्रिया ।।१०।।

माहेश्वरी = माहेश्वरी
वृषारूढा = वृष पर आरूढ़
कौमारी = कौमारी
शिखिवाहना = मोर के वाहन पर
लक्ष्मीः = लक्ष्मी
पद्मासना = कमल के आसन पर
देवी = देवी
पद्महस्ता = कमल हाथ में लिए
हरिप्रिया = विष्णु प्रिया

माहेश्वरी वृष पर आरूढ़ , कौमारी मोर के वाहन पर , विष्णुप्रिया देवी लक्ष्मी कमल हाथ में लिए कमल के आसन पर बैठी हैं ।

श्वेतरूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना ।
ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरणभूषिता ।।११।।

श्वेतरूपधरा = श्वेत रूप धारे
देवि = देवी
ईश्वरी = ईश्वरी
वृषवाहना = वृषभ पर सवार है
ब्राह्मी = ब्राह्मी
हंससमारूढा = हंस पर आरूढ़ है
सर्वाभरणभूषिता= सभी आभूषणों से सुसज्ज्त

देवी ईश्वरी श्वेत रूप धारे वृषभ पर सवार है , ब्राह्मी सभी आभूषणों से सुसज्ज्ति हंस पर आरूढ़ है ।

इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः ।
नानाभरणशोभाढ्या नानारत्नोपशोभिताः ।।१२।।

इत्येता = इति एता = इस प्रकार ये
मातरः = माताएं
सर्वाः = सभी
सर्वयोगसमन्विताः सभी योग शक्तियों से संपन्न

नानाभरणशोभाढ्या = अनेक प्रकार के आभूषणों से सुशोभित
नानारत्नोपशोभिताः= अनेक प्रकार के रत्नों से शोभायमान हैं

इस प्रकार ये सभी माताएं सभी योग शक्तियों से संपन्न, अनेक प्रकार के आभूषणों से सुशोभित , अनेक प्रकार के रत्नों से शोभायमान हैं ।

दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः ।
शङ्खं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम् ।।१३।।
खेटकं तोमरं चैव परशुं पाशमेव च ।
कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ।।१४।।

दृश्यन्ते = दिखाई देती हैं
रथमारूढा = रथ पर सवार
देव्यः = देवियाँ
क्रोधसमाकुलाः क्रोध से युक्त
शङ्खं = शंख
चक्रं = चक्र
गदां = गदा
शक्तिं = शक्ति
हलं च = और हल
मुसल = मूसल
युधम् = शस्त्र

खेटकं = खेटक
तोमरं = तोमर
चैव = और इसी प्रकार
परशुं = परशु
पाशमेव = पाश
च = और
कुन्तायुधं = कुंत का हथियार
त्रिशूलं च = और त्रिशूल
शार्ङ्गमायुधमुत्तमम्= = उत्तम शस्त्र शार्ङ्ग

देवियाँ क्रोध से युक्त शंख , चक्र गदा शक्ति , हल और मूसल के शस्त्र , खेटक, तोमर और इसी प्रकार परशु , पाश और कुंत का हथियार और उत्तम शस्त्र शार्ङ्ग लिए रथ पर सवार दिखाई देती हैं ।

दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च ।
धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय वै ।।१५।।

दैत्यानां देहनाशाय = दैत्यों के शरीर के नाश

भक्तानाम अभयाय च = और भक्तों के अभय
धारयन्त्यायुधानीत्थं = धारयन्ति आयुधान् इथं = इन हथियारों को धारण किया है
देवानां च हिताय वै = और इसी प्रकार देवताओं के हित के लिए

दैत्यों के शरीर के नाश और भक्तों के अभय और इसी प्रकार देवताओं के हित के लिए (देवियों ने) इन हथियारों को धारण किया है ।

नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोरपराक्रमे ।
महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि ।।१६।।

नमस्तेऽस्तु = तुम्हे नमस्कार है
महारौद्रे = महा रौद्र
महाघोरपराक्रमे= महान पराकम
महाबले = महाबली
महोत्साहे = महा उत्साही

महाभयविनाशिनि= महान भय का नाश करने वाली

महा रौद्र, महान पराकम, महाबली,महा उत्साही ,महान भय का नाश करने वाली देवी तुम्हें नमस्कार है।

त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि ।
प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ।।१७।।

त्राहि मां देवि = हे देवी मेरी रक्षा करो
दुष्प्रेक्ष्ये = जिसकी और देखना कठिन हो
शत्रूणां = शत्रुओं में
भयवर्धिनि = भय बढ़ाने वाली
प्राच्यां रक्षतु = पूर्व दिशा में रक्षा करे
माम= मेरी
एन्द्री = एन्द्री
आग्नेय्याम अग्निदेवता= अग्नि कोण में अग्नि शक्ति

शत्रुओं में भय बढ़ाने वाली हे देवी तुम्हारी और देखना भी कठिन है , मेरी रक्षा करो । पूर्व दिशा में एन्द्री, अग्नि कोण में अग्नि शक्ति मेरी रक्षा करे ।

दक्षिणेऽवतु वाराही नैऋत्यां खड्गधारिणी ।
प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद्वायव्यां मृगवाहिनी ।।१८।।

दक्षिणेऽवतु = दक्षिण दिशा में
वाराही = वाराही
नैऋत्यां = नैऋत्य कोण में
खड्गधारिणी = खड्गधारिणी
प्रतीच्यां = पश्चिम में
वारुणी = वारुणी
रक्षेत्= रक्षा करे

वायव्यां मृगवाहिनी = वायव्य कोण में मृगवाहिनी

दक्षिण दिशा में वाराही ,नैऋत्य कोण में खड्गधारिणी, पश्चिम में वारुणी वायव्य कोण में मृगवाहिनी रक्षा करे ।

उदीच्यां पातु कौमारी ईशान्यां शूलधारिणी ।
ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा ।।१९।।

उदीच्यां = उत्तर दिशा में
पातु कौमारी = कौमारी रक्षा करे
ईशान्यां शूलधारिणी = ईशान में शूलधारणी
ऊर्ध्वं ब्रह्माणी = ऊपर से ब्रह्माणी
मे = मेरी
रक्षेत् = रक्षा करे
धस्तात् = नीचे से
वैष्णवी = वैष्णवी देवी

तथा= इसी प्रकार

उत्तर दिशा में कौबेरी रक्षा करे ईशान में शूलधारणी, ऊपर से ब्रह्माणी,इसी प्रकार नीचे से वैष्णवी देवी मेरी रक्षा करे ।

एवं दश दिशो रक्षेच्चामुण्डा शववाहना ।
जया मे चाग्रतः पातु विजया पातु पृष्ठतः ।।२०।।
एवं दश दिशो = इसी प्रकार दसो दिशाओं से
रक्षेत् चामुण्डा = चामुण्डा रक्षा करे
शववाहना = शव के वाहन वाली
जया माम अग्रतः = जया मेरी आगे से
पातु = रक्षा करे
विजया पातु पृष्ठतः = विजया पीछे से रक्षा करे

इसी प्रकार शव के वाहन वाली चामुण्डा दसो दिशाओं में रक्षा करे । जया मेरी आगे से रक्षा करे, विजया पीछे से रक्षा करे ।

अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता ।
शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता ।।२१।।

अजिता वामपार्श्वे= वाम भाग में अजीता
तु = और , अब
दक्षिणे च अपराजिता= और दक्षिण में अपराजिता
शिखाम् उद्योतिनी = उद्योतिनी शिखा की
रक्षेत् उमा = उमा रक्षा करे
मूर्ध्नि = मस्तक पर
व्यवस्थिता = विराजमान हो कर

अजीता वाम भाग की , और दक्षिण में अपराजिता, उद्योतिनी शिखा की , और उमा मस्तक पर विराजमान हो कर रक्षा करे ।

मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद्यशस्विनी ।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ।।२२।।

मालाधरी ललाटे = मालाधारी ललाट की
च = और
भ्रुवौ = भौहों की
रक्षेत्= रक्षा करे
यशस्विनी = यशस्विनी
त्रिनेत्रा च भ्रुवो: मध्ये= और भौहों के मध्य की त्रिनेत्रा
यमघण्टा च नासिके =और नासिका की यमघण्टा

मालाधारी ललाट की और यशस्विनी भौहों की और भौहों के मध्य की त्रिनेत्रा और नासिका की यमघण्टा रक्षा करे ।

शङ्खिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वारवासिनी ।
कपोलौ कालिका रक्षेत् कर्णमूले तु शाङ्करी ।। २३।।

शङ्खिनी चक्षुषो: मध्ये = शङ्खिनी आँखों के बीच की
श्रोत्रयो: द्वारवासिनी= द्वारवासिनी कानों की
कपोलौ कालिका = कालिका गालों की
रक्षेत् = रक्षा करे
कर्णमूले तु शाङ्करी = और शाङ्करी कानों के मूल भाग की

शङ्खिनी आँखों के बीच की ,द्वारवासिनी कानों की , कालिका गालों की और शाङ्करी कानों के मूल भाग की रक्षा करे ।

नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्टे च चर्चिका ।
अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ।। २४।।

नासिकायां सुगन्धा = सुगन्धा नाक की
च = और
उत्तरोष्टे च चर्चिका = ऊपर के होठ की चर्चिका
अधरे च अमृतकला = और नीचे के होंठ की अमृतकला
जिह्वायां च सरस्वती = और जीभ की सरस्वती रक्षा करे

नाक की सुगंधा और ऊपर के होठ की चर्चिका और नीचे के होंठ की अमृतकला और जीभ की सरस्वती रक्षा करे ।

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका ।
घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ।। २५।।

दन्तान् रक्षतु कौमारी= दांतों की रक्षा कौमारी
कण्ठदेशे तु चण्डिका= और चण्डिका कण्ठप्रदेश की
घण्टिकां चित्रघण्टा च = और चित्रघण्टा घाँटी की
महामाया च तालुके = और महामाया तालु की

दांतों की कौमारी और चण्डिका कण्ठप्रदेश की और चित्रघण्टा घाँटी की और महामाया तालु की रक्षा करे ।

कामाक्षी चिबुकं रक्षेद्वाचं मे सर्वमङ्गला ।
ग्रीवायां भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ।। २६।।

कामाक्षी चिबुकं = कामाक्षी ठोडी की
रक्षेत् = रक्षा करे
वाचं मे सर्वमङ्गला = सर्वमङ्गला मेरी वाणी की
ग्रीवायां भद्रकाली = गर्दन की भद्रकाली
च पृष्ठवंशे धनुर्धरी= और धनुर्धरी मेरुदण्ड की

कामाक्षी ठोडी की , सर्वमङ्गला मेरी वाणी की , गर्दन की भद्रकाली और धनुर्धरी मेरुदण्ड की रक्षा करे ।

नीलग्रीवा बहिः कण्ठे नलिकां नलकूबरी ।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे वज्रधारिणी ।। २७।।

नीलग्रीवा बहिः कण्ठे = नीलग्रीवा कंठ के बाहरी भाग की
नलिकां नलकूबरी = नलकूबरी कंठ की नली की
स्कन्धयोः खड्गिनी = खड्गिनी दोनों कन्धों की
रक्षेत् = रक्षा करे
बाहू मे वज्रधारिणी = वज्रधारिणी मेरी बाहों की

नीलग्रीवा कंठ के बाहरी भाग की, नलकूबरी कंठ की नली की , खड्गिनी दोनों कन्धों की , वज्रधारिणी मेरी बाहों की रक्षा करे ।

हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चाङ्गुलीषु च ।
नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत् कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ।। २८।।

हस्तयो: दण्डिनी = दण्डिनी हाथों की
रक्षेत् = रक्षा करे
अम्बिका च अङ्गुलीषु= और अम्बिका उँगलियों की
च = और

नखान् शूलेश्वरी रक्षेत् = नाखूनों की शूलेश्वरी रक्षा करे
कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी= कुलेश्वरी पेट की रक्षा करे

दण्डिनी हाथों की रक्षा करे और अम्बिका उँगलियों की और शूलेश्वरी नाखूनों की रक्षा करे और कुलेश्वरी पेट की रक्षा करे ।

स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनःशोकविनाशिनी ।
हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ।। २९।।

स्तनौ महादेवी = स्तनों की महादेवी
रक्षेत् = रक्षा करे
मनःशोकविनाशिनी = मन की शोकविनाशिनी
हृदये ललिता देवी = हृदय की ललित देवी
उदरे शूलधारिणी = उदर की शूलधारणी

स्तनों की महादेवी , मन की शोकविनाशिनी, हृदय की ललित देवी , हृदय की ललित देवी , उदर की शूलधारणी रक्षा करे ।

नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यं गुह्येश्वरी तथा ।
पूतना कामिका मेढ्रं गुदे महिषवाहिनी ।। ३०।।

नाभौ च कामिनी = नाभी की कामिनी
रक्षेद् = रक्षा करे
गुह्यं गुह्येश्वरी तथा = और गुह्य भाग की गुह्येश्वरी
पूतना कामिका मेढ्रं = पूतना और कामिका लिंग की
गुदे महिषवाहिनी= महिषवाहिनी गुदा की

नाभी की कामिनी और गुह्य भाग की गुह्येश्वरी, पूतना और कामिका लिंग की , महिषवाहिनी गुदा की रक्षा करे ।

कट्यां भगवती रक्षेज्ज्ञानुनी विन्ध्यवासिनी ।
जङ्घे महाबला रक्षेत्सर्वकामप्रदायिनी ।। ३१।।

कट्यां भगवती = भगवती कमर की
रक्षेत् = रक्षा करे

जानुनी विन्ध्यवासिनी= विन्ध्यवासिनी घुटनों की
जङ्घे महाबला = महाबला जंघाओं की
रक्षेत् = रक्षा करे
सर्वकामप्रदायिनी= सभी कामनाओं को देने वाली

भगवती कमर की , विन्ध्यवासिनी घुटनों की रक्षा करे, सभी कामनाओं को देने वाली महाबला जंघाओं की रक्षा करे ।

गुल्फयोर्नारसिंही च पादपृष्ठे तु तैजसी ।
पादाङ्गुलीषु श्री रक्षेत्पादाधस्तलवासिनी ।। ३२।।

गुल्फयो: नारसिंही च = और टकनों की नारसिंही
पादपृष्ठे तु तैजसी = और पैरों के पृष्ठ भाग की तैजसी
पादाङ्गुलीषु श्री = श्री देवी पैरों की उँगलियों की
रक्षेत् = रक्षा करे
पादाधस्तलवासिनी = तलवासिनी तलवों की

और टकनों की नारसिंही, और पैरों के पृष्ठ भाग की तैजसी , श्री देवी पैरों की उँगलियों की , तलवासिनी तलवों की रक्षा करे ।

नखान् दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्वकेशिनी ।
रोमकूपेषु कौमारी त्वचं वागीश्वरी तथा ।। ३३।।

नखान् दंष्ट्राकराली च = और दंष्ट्राकराली नखों की
केशां च एव उर्ध्वकेशिनी = और ऐसे ही उर्ध्वकेशिनी बालों की
रोमकूपेषु कौमारी = कौमारी रोमकूपों की
त्वचं वागीश्वरी तथा = और वागीश्वरी त्वचा की

और दंष्ट्राकराली नखों की , और ऐसे ही उर्ध्वकेशिनी बालों की , कौमारी रोमकूपों की और वागीश्वरी त्वचा की रक्षा करे ।

रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती ।
अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ।। ३४।।

रक्त मज्जा वसा मांसान्य अस्थि मेदांसि = रक्त , मज्जा , वसा, मांस , हड्डी , मेद की
पार्वती = पार्वती
अन्त्राणि कालरात्रिश्च= आँतों की कालरात्रि
पित्तं च मुकुटेश्वरी = और पित्त की मुक्तेश्वरी

रक्त , मज्जा , वसा, मांस , हड्डी , मेद की पार्वती , आँतों की कालरात्रि और पित्त की मुक्तेश्वरी रक्षा करे ।

पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणिस्तथा ।
ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसन्धिषु ।। ३५।।

पद्मावती पद्मकोशे = पद्मकोश की पद्मावती
कफे चूडामणि: तथा = और कफ की चूडामणि
ज्वालामुखी = ज्वालामुखी
नखज्वालाम - नख के तेज की
अभेद्या = अभेद्या देवी
सर्वसन्धिषु = सभी जोड़ों की

पद्मकोश की पद्मावती और कफ की चूडामणि, नख के तेज की ज्वा-लामुखी, सभी जोड़ों की अभेद्या देवी रक्षा करें ।

शुक्रं ब्रह्माणी मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा ।
अहङ्कारं मनो बुद्धिं रक्षेन्मे धर्मधारिणी ।। ३६।।

शुक्रं ब्रह्माणी मे = ब्रह्माणी मेरे वीर्य की
रक्षेत् = रक्षा करे
छायां छत्रेश्वरी तथा = और छत्रेश्वरी छाया की
अहङ्कारं मनो बुद्धिं = अहंकार , मन और बुद्धि की
रक्षेत् = रक्षा करे
मे= मेरे
धर्मधारिणी= धर्मधारिणी

ब्रह्माणी मेरे वीर्य की और छत्रेश्वरी छाया की रक्षा करे, धर्मधारिणी मेरे अ-हंकार , मन और बुद्धि की रक्षा करे ।

प्राणापानौ तथा व्यानमुदानं च समानकम् ।
वज्रहस्ता च मे रक्षेत् प्राणं कल्याणशोभना ।। ३७।।

प्राण अपानौ तथा व्यानम् = प्राण , अपान , व्यान
उदानं च समानकम्= उदान और समान वायु की
वज्रहस्ता = वज्रहस्ता
च मे = और मेरी
रक्षेत्= रक्षा करे
प्राणं कल्याणशोभना = कल्याणशोभना प्राणों की

वज्रहस्ता प्राण , अपान , व्यान , उदान और समान वायु की और कल्याणशोभना मेरे प्राणों की रक्षा करे ।

रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी ।
सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ।। ३८।।

रसे रूपे च = रस रूप
गन्धे च शब्दे = गंध और शब्द की
स्पर्शे च योगिनी = और स्पर्श की योगिनी
सत्त्वं रजस्तमश्च एव = सत्व , रज और तम गुणों की
रक्षेत्= रक्षा करे
नारायणी = नारायणी
सदा = हमेशा

रस, रूप , गंध और शब्द और स्पर्श की योगिनी देवी , सत्व , रज और तम गुणों की नारायणी हमेशा रक्षा करे ।

आयू रक्षतु वाराही धर्मं रक्षतु वैष्णवी ।
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं विद्या च चक्रिणी ।। ३९।।

आयू रक्षतु वाराही = वाराही आयु की रक्षा करे
धर्मं रक्षतु वैष्णवी = धर्म की वैष्णवी रक्षा करे
यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च = यश , कीर्ति , लक्ष्मी और
धनं विद्या च चक्रिणी= धन व विद्या की चक्रिणी देवी

वाराही आयु की रक्षा करे, धर्म की वैष्णवी रक्षा करे , यश , कीर्ति ,

लक्ष्मी और धन व विद्या की चक्रिणी देवी रक्षा करे ।

गोत्रमिन्द्राणी मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके ।
पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीर्भार्यां रक्षतु भैरवी ।। ४०।।

गोत्रमिन्द्राणी मे = मेरे गोत्र की इन्द्राणी
रक्षेत्= रक्षा करे
पशून्मे रक्ष चण्डिके= पशुओं की चण्डिका रक्षा करे
पुत्रान् = पुत्रों की
रक्षेत्= रक्षा करे
महालक्ष्मीः = महालक्ष्मी

भार्यां रक्षतु भैरवी = पत्नी की भैरवी रक्षा करे

मेरे गोत्र की इन्द्राणी रक्षा करे ,पशुओं की चण्डिका रक्षा करे , पुत्रों की महालक्ष्मी रक्षा करे ,पत्नी की भैरवी रक्षा करे ।

पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमङ्करी तथा ।
राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ।।४१।।

पन्थानं सुपथा = सुपथा मेरे पथ की
रक्षेत्= रक्षा करे
मार्गं क्षेमङ्करी तथा = और मार्ग की क्षेमकरी
राजद्वारे महालक्ष्मीः= राजा के दरबार में महालक्ष्मी
विजया सर्वतः स्थिता = सब जगह स्थित विजया चारों और से

सुपथा मेरे पथ की और मार्ग की क्षेमकरी , राजा के दरबार में महाल-क्ष्मी, सब जगह स्थित विजया चारों और से रक्षा करे ।

रक्षाहीनं तु यत् स्थानं वर्जितं कवचेन तु ।
तत्सर्वं रक्ष मे देवि जयन्ती पापनाशिनी ।।४२।।

रक्षाहीनं तु यत् स्थानं = और जो स्थान रक्षा रहित हैं
वर्जितं कवचेन तु = और कवच में नहीं कहे गए हैं
तत्सर्वं रक्ष मे देवि = उन सभी स्थानों पर मेरी रक्षा करो , हे देवी
जयन्ती पापनाशिनी= विजयशालिनी , पापनाशिनी

और जो स्थान रक्षा रहित हैं और कवच में नहीं कहे गए हैं, हे विजय-शालिनी , पापनाशिनी देवी उन सभी स्थानों पर मेरी रक्षा करो ।

पदमेकं न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः ।
कवचेनावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ।।४३।।

पदमेकं न गच्छेत् तु= और एक कदम भी न जाए
यदीच्छेच्छुभमात्मनः = यत् इच्छेत् शुभम् आत्मनः = जिसे अपने शुभ की इच्छा है
कवचेनावृतो= कवच से आवृत हो
नित्यं = रोज़
यत्र यत्रैव= जहां जहां
गच्छति = जाते हैं

जिसे अपने शुभ की इच्छा है(कवच बिना) एक कदम भी न जाएँ , जो रोज़ कवच से आवृत हो जहां जहां जाते हैं

तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः ।

तत्र तत्र = वहां वहां
अर्थलाभश्च = अर्थ लाभ

विजयः सार्वकामिकः= सब कामनाओं में विजय प्राप्त करते हैं

वहां वहां अर्थ लाभ व् सब कामनाओं में विजय प्राप्त करते हैं ।

यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् ।
यं यं= जिस जिस
चिन्तयते कामं = अभीष्ट का चिंतन करते हैं
तं तं = उस उस को
प्राप्नोति निश्चितम्= निश्चय ही प्राप्त करते हैं

जिस जिस अभीष्ट का चिंतन करते हैं उस उस को निश्चय ही प्राप्त करते हैं ।

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ।।४४।।

परमैश्वर्यम अतुलं = अतुलनीय परम ऐश्वर्य
प्राप्स्यते= प्राप्त करते हैं
भूतले = पृथ्वी पर
पुमान्= मनुष्य

पृथ्वी पर मनुष्य अतुलनीय परम ऐश्वर्य प्राप्त करता है ।

निर्भयो जायते मर्त्यः सङ्ग्रामेष्वपराजितः ।
त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ।। ४५।।

निर्भयो जायते = निर्भीक हो जाता है
मर्त्यः = मनुष्य
सङ्ग्रामेष्व अपराजितः = युद्ध में पराजय नहीं होती
त्रैलोक्ये तु= और त्रिलोक में
भवेत्पूज्यः= पूजनीय होता है
कवचेनावृतः पुमान् = कवच से सुरक्षित मनुष्य

कवच से सुरक्षित मनुष्य निर्भीक हो जाता है और त्रिलोक में पूजनीय होता है ।

इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् ।
यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ।। ४६।।

इदं तु देव्याः कवचं = और देवी का यह कवच
देवानामपि = देवताओं के लिए भी
दुर्लभम् = दुर्लभ है
यः पठेत्= जो पढता है
प्रयतो =नियम से
नित्यं त्रिसन्ध्यं = प्रतिदिन तीनों संध्याओं में
श्रद्धयान्वितः = श्रद्धापूर्वक

और देवी का यह कवच देवताओं के लिए भी दुर्लभ है , जो नियम से प्र-तिदिन तीनों संध्याओं में श्रद्धापूर्वक इसे पढता है ।

दैवी कला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः ।

जीवेद्वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ।। ४७।।

दैवी कला भवेत्त तस्य = उसे देवी कला प्राप्त होती है
त्रैलोक्येष्वपराजितः = तीनों लोकों में पराजित नहीं होता
जीवेद्वर्षशतं = सौ वर्षों तक जीता है
साग्रम अपमृत्यु विवर्जितः= इतना ही नहीं अपमृत्यु(अकाल मृत्यु) से रहित हो

उसे देवी कला प्राप्त होती है , तीनों लोकों में पराजित नहीं होता, इतना ही नहीं अपमृत्यु(अकाल मृत्यु) से रहित हो सौ वर्षों तक जीता है ।

नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः ।
स्थावरं जङ्गमं चैव कृत्रिमं चैव यद्विषम् ।। ४८।।

नश्यन्ति= नष्ट हो जाते हैं
व्याधयः = रोग
सर्वे लूताविस्फोटकादयः= मकरी चेचक आदि सभी
स्थावरं= स्थिर चीज़ों के जैसे भांग अफीम धतूरे आदि के
जङ्गमं= चलने वाली जीवित जैसे सांप , बिच्छु का
चैव = और इसी प्रकार
कृत्रिमं चैव= अहिफेन और तेल को मिलाने से बनाने वाले
यद्विषम् = जो जहर हैं

मकरी चेचक आदि सभी रोग , स्थिर चीज़ों के जैसे भांग अफीम धतूरे आदि के और इसी प्रकार चलने वाली जीवित जैसे सांप , बिच्छु का और ऐसे ही अहिफेन और तेल को मिलाने से बनाने वाले जो जहर हैं नष्ट हो जाते हैं ।

अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले ।
भूचराः खेचराश्चैव कुलजाश्चौपदेशिकाः ।। ४९।।

अभिचाराणि = अभिचारण (मारन मोहन आदि) के
सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि = सभी मन्त्र
भूतले = पृथ्वी पर
भूचराः=पृथ्वी पर विचरने वाले ग्रामदेवता
खेचरा= आकाश में विचरने वाले देवविशेष
च एव = और ऐसे ही
कुलजा = जल में प्रकट होने वाले गण

उपदेशिकाः= उपदेश से सिद्ध होने वाले देव

पृथ्वी पर अभिचारण (मारन मोहन आदि) के सभी मन्त्र , पृथ्वी पर विचरने वाले ग्रामदेवता , आकाश में विचरने वाले देवविशेष और ऐसे ही जल में प्रकट होने वाले गण , उपदेश से सिद्ध होने वाले देव

सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा ।
अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ।। ५०।।

सहजा = जनम के साथ प्रकट होने वाले देवता
कुलजा = कुल देवता
माला= कंठमाला
डाकिनी शाकिनी तथा = डाकिनी शाकिनी और
अन्तरिक्षचरा= अंतरिक्ष में घूमने वाले
घोरा = भयंकर
डाकिन्यश्च = डाकनियाँ

महाबलाः= महाबली

जनम के साथ प्रकट होने वाले देवता , कुल देवता, कंठमाला , डाकिनी शाकिनी और अंतरिक्ष में घूमने वाले भयंकर महाबली डाकनियाँ

गृहभूतपिशाचाश्च यक्षगन्धर्वराक्षसाः ।
ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ।। ५१।।

गृहभूतपिशाचाश्च = गृह , भूत , पिशाच और
यक्षगन्धर्वराक्षसाः= यक्ष , गन्धर्व , राक्षस
ब्रह्मराक्षसवेतालाः = ब्रह्मराक्षस, बेताल
कूष्माण्डा = कूष्माण्ड,
भैरवादयः= भैरव आदि

गृह , भूत , पिशाच और यक्ष , गन्धर्व , राक्षस ,ब्रह्मराक्षस, बेताल , कूष्माण्ड,भैरव आदि

नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते ।

नश्यन्ति = भाग जाते हैं
दर्शनात् = देख कर ही

तस्य = उसको
कवचे हृदि संस्थिते= हृदय में कवच धारण करने पर

हृदय में कवच धारण करने पर उस मनुष्य को देख कर ही भाग जाते हैं ।

मानोन्नतिर्भवेद्राज्ञास्तेजोवृद्धिकरं परम् ।। ५२।।

मानोन्नतिः= मान की वृद्धि
भवेत् = होती है
राज्ञाः =राजा से
ते= वे ,
तेजोवृद्धिकरं परम् = तेज की वृद्धि करने वाला , उत्तम है

और राजा से उनके मान की वृद्धि होती है । (यह कवच) तेज की वृ-द्धि करने वाला , उत्तम है ।

यशसा वर्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभुतले ।
जपेत् सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचं पुरा ।।५३।।

यशसा = यश
वर्धते = वृद्धि को प्राप्त करता है
सोऽपि = वह भी
कीर्तिमण्डित = कीर्ति से सुशोभित
भुतले = पृथ्वी पर

जपेत् = जप करता है
सप्तशतीं = सप्तशती
चण्डीं = चंडी का
कृत्वा = करके
तु = और
कवचं = कवच का

पुरा = पहले

पृथ्वी पर कीर्ति से सुशोभित वह भी यश और वृद्धि को प्राप्त करता है । जो पहले कवच का पाठ करके सप्शती चंडी का जप करता है
यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् ।
तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी ।। ५४।।

यावत् = जब तक
भूमण्डलं = पृथ्वी
धत्ते = टिकी है
सशैलवनकाननम् = पर्वत, वन , कानन के साथ
तावत् = तब तक
तिष्ठति = ठहरती है
मेदिन्यां= पृथ्वी पर
सन्ततिः = संतान परम्परा
पुत्रपौत्रिकी = पुत्र पौत्र आदि

जब तक पृथ्वी पर्वत, वन , कानन के साथ टिकी है तब तक उसकी पुत्र पौत्र आदि संतान परम्परा रहती है ।
देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामायाप्रसादतः ।। ५५।।

देहान्ते = देह का अंत होने पर
परमं स्थानं = उत्तम स्थान को
यत्सुरैरपि दुर्लभम् = देवताओं को भी दुर्लभ
प्राप्नोति = प्राप्त करता है
पुरुषो= पुरुष
नित्यं = नित्य
महामायाप्रसादतः = महामाया के प्रसाद से

महामाया के प्रसाद से वह पुरुष देवताओं को भी दुर्लभ नित्य उत्तम स्थान को प्राप्त करता है ।

लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते।। ५६।।

लभते परमं स्थानं = उत्तम स्थान प्राप्त करके
शिवेन सह = शिव के समान
मोदते = होता है

उत्तम स्थान प्राप्त करके शिव के समान होता है ।

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे हरिहरब्रह्मविरचितं
देवीकवचं समाप्तम् ॥

॥ अथ अर्गलास्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्रीअर्गलास्तोत्रमन्त्रस्य विष्णुर्ऋषिः,
अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहालक्ष्मीर्देवता,
श्रीजगदम्बाप्रीतये सप्तशतिपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ।

ॐ नमश्चण्डिकायै ।

ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है ।

मार्कण्डेय उवाच ॥

मार्कण्डेय बोला ।

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा शिवा क्षमा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ २॥

जयन्ती, मङ्गला, काली, भद्रकाली, कपालिनी, दुर्गा, शिवा, क्षमा, धात्री, स्वाहा, स्वधा आपको नमस्कार है ।

मधुकैटभ विद्रावि विधातृवरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ३॥

मधुकैटभ विद्रावि =मधु कैटभ को पराजित करने वाली
विधातृ वरदे = ब्रह्मा को वरदान देने वाली
नमः = नमस्कार है
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

मधु कैटभ को पराजित करने वाली , ब्रह्मा को वरदान देने वाली देवी नमस्कार है आप रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का

नाश करो ।

महिषासुर निर्णाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ४॥

महिषासुर निर्नाशि = महिषासुर का नाश करने वाली ,
भक्तानां सुखदे = भक्तों को सुख देने वाली
नमः = नमस्कार है
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

महिषासुर का नाश करने वाली , भक्तों को सुख देने वाली देवी नमस्कार है आप रूप दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ५॥

रक्तबीज वधे= रक्तबीज का वध करने वाली
देवि = देवी
चण्डमुण्ड विनाशिनी = चण्ड मुंड का विनाश करने वाली
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

रक्तबीज का वध करने वाली , चण्ड मुंड का विनाश करने वाली देवी आप रूप दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।
शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ६॥
शुम्भस्य= शुम्भ का
एव = और, भी
निशुम्भस्य = निशुम्भ का
धूम्राक्षस्य = धूम्राक्ष का

च = और
मर्दिनि=मर्दन करने वाली

रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

शुम्भ का और निशुंभ और धूम्राक्ष का भी मर्दन करने वाली आप रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ७॥

वन्दिता = वन्दनीय
अङ्घ्रि युगे = युगल चरणों वाली
देवि = देवी
सर्व सौभाग्य दायिनि = सम्पूर्ण सौभाग्य देने वाली

रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

युगल चरणों वाली, सम्पूर्ण सौभाग्य देने वाली वन्दनीय देवी आप रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ८ ॥

अचिन्त्यरूपचरिते = अचिन्त्य रूप और चरित्र वाली
सर्वशत्रुविनाशिनि= सब शत्रुओं का विनाश करने वाली

रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

अचिन्त्य रूप और चरित्र वाली ,सब शत्रुओं का विनाश करने वाली देवी आप रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ९॥

नतेभ्यः = नत होने वालों को
सर्वदा = हमेशा
भक्त्या = भक्ति से
चण्डिके =चण्डिका देवी
दुरितापहे = पापों को दूर करने वाली
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

पापों को दूर करने वाली चण्डिका देवी हमेशा भक्ति से नत होने वालों को आप रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

स्तुवद्भ्योभक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १० ॥

स्तुवद्भ्यो = स्तुति करने वालों को
भक्तिपूर्वं = भक्तिपूर्वक
त्वां = तुम्हारी
चण्डिके = चण्डिका
व्याधिनाशिनि = रोगों का नाश करने वाली
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

रोगों का नाश करने वाली चण्डिका देवी हमेशा भक्तिपूर्वक तुम्हारी स्तुति करने वालों को रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ११॥

चण्डिके = चण्डिका
सततं = हमेशा
ये = जो
तवं अर्चयन्तीह = तुम्हारी पूजा करते हैं
भक्तितः = भक्तिपूर्वक
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

हे चण्डिका जो तुम्हारी हमेशा भक्तिपूर्वक पूजा करते हैं उन्हें रूप (आत्म-स्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १२ ॥

देहि = दो
सौभाग्यम् = सौभाग्य
आरोग्यं = निरोगता
देहि= दो
देवि = हे देवी
परं सुखम् = परम सुख
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

हे देवी सौभग्य और आरोग्य दो , परम सुख दो , रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १३ ॥

विधेहि= प्रदान करो
द्विषतां = द्वेष रखने वालों को
नाशं = नाश
विधेहि = प्रदान करो
बलमुच्चकैः = महान बल दो

रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

द्वेष रखने वालों को नाश प्रदान करो , मुझे महान बल दो , रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमाम् श्रियम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १४ ॥

विधेहि= प्रदान करो
देवि = हे देवी
कल्याणं = कल्याण
विधेहि = प्रदान करो
परमाम् = उत्तम
श्रियम् = संपत्ति
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

हे देवी कल्याण करो , उत्तम संपत्ति दो , रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १५ ॥

सुरासुर= सुर असुर
शिरोरत्न = सिर के (मुकुट के) रत्नों को
निघृष्ट= घिसते हैं
चरणे =चरणों में
अम्बिके = हे अम्बिका
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

हे अम्बिका सुर ,असुर आपके चरणों में सिर के (मुकुट के) रत्नों को घिसते हैं , आप रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनं कुरु ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १६ ॥

विद्यावन्तं = विद्वान
यशस्वन्तं = यशस्वी
लक्ष्मीवन्तं जनं = लक्ष्मीवन्तं = लक्ष्मीवान
कुरु = करो
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

मुझे विद्वान ,यशस्वी, लक्ष्मीवान करो , आप रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १७ ॥

प्रचण्डदैत्य दर्पघ्ने = प्रचंड दैत्यों के दर्प को नष्ट करने वाली
चण्डिके = चण्डिका
प्रणताय = शरणागत , आत्म समपर्ण किये
मे= मुझे
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो

जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

प्रचंड दैत्यों के दर्प को नष्ट करने वाली चण्डिका शरणागत आये मुझे रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १८ ॥

चतुर्भुजे = चार भुजा धारणी
चतुर्वक्त्र = चार मुख वाले ब्रह्मा से
संस्तुते = स्तुत (प्रशंसनीय)
परमेश्वरि= = परमेश्वरी
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

चार मुख वाले ब्रह्मा से स्तुत (प्रशंसनीय) चार भुजा धारणी परमेश्वरी मुझे रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १९ ॥

कृष्णेन संस्तुते = भगवान विष्णु से स्तुत (प्रशंसनीय)
देवि = देवी
शश्वद्भक्त्या = निरंतर भक्तिपूर्वक
सदा= हमेशा , नित्य
अम्बिके = अम्बिका
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

भगवान विष्णु से नित्य निरंतर भक्तिपूर्वक स्तुत (प्रशंसनीय) अम्बिका मुझे

रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २० ॥

हिमाचल सुतानाथ संस्तुते = हिमाचल पुत्री के पति शिव से स्तुत (प्रशंस-नीय)
परमेश्वरि = परमेश्वरी
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

हिमाचल पुत्री के पति शिव से स्तुत (प्रशंसनीय) परमेश्वरी मुझे रूप (आ-त्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २१ ॥

इन्द्राणीपति = इंद्र द्वारा
सद्भावपूजिते = सद्भाव से पूजित
परमेश्वरि = परमेश्वरी
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

इंद्र द्वारा सद्भाव से पूजित परमेश्वरी मुझे रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान) दो , जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।। २२।।

देवि = देवी
प्रचण्डदोर्दण्डदैत्य= प्रचंड भुजदंड वाले दैत्यों के
दर्प= दर्प का
विनाशिनि = विनाश करने वाली

रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान)
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

प्रचंड भुजदंड वाले दैत्यों के दर्प का विनाश करने वाली देवी ,हमें जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २३ ॥

देवि = देवी
भक्तजन उद्दाम दत्ता आनन्दोदये अम्बिके = भक्तजनों को असीम आनंद और अभ्युदय देने वाली अम्बिका
रूपं देहि = रूप (आत्मस्वरूप का ज्ञान)
जयं देहि = जय दो
यशो देहि = यश दो
द्विषो जहि =(काम क्रोध आदि) शत्रुओं का नाश करो

भक्तजनों को असीम आनंद और अभ्युदय देने वाली अम्बिका देवी ,हमें जय दो , यश दो, शत्रुओं का नाश करो ।

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
तारिणि दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम् ॥ २४ ॥

पत्नीं = पत्नी
मनोरमां = मनोहर
देहि = दो
मनोवृत्तानुसारिणीम् = मन की इच्छा के अनुसार चलने वाली
तारिणि = तारने वाली
दुर्गसंसारसागरस्य = संसार रूपी कठिन सागर से
कुलोद्भवाम = उत्तम कुल में उत्पन्न

मन की इच्छा के अनुसार चलने वाली मनोहर, संसार रूपी कठिन सागर से तारने वाली उत्तम कुल में उत्पन्न पत्नी दो ।

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।
स तु सप्तशती संख्या वरमाप्नोति सम्पदाम् ॥ २५ ॥

इदं स्तोत्रं पठित्वा तु = जो इस स्त्रोत्र को पढ़ के
महास्तोत्रं पठेन् नरः= महास्त्रोत्र को पढता है
स = वह
सप्तशती संख्या = सप्शती संख्या के
वरमाप्नोति = वरदान पाता है
सम्पदाम् = संपत्ति को

जो इस स्त्रोत्र को पढ़ के महास्त्रोत्र को पढता है वह सप्शती संख्या के श्रेष्ठ वारों और संपत्ति को पाता है ।
॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे अर्गलास्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ अथ कीलकस्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्रीकीलकमन्त्रस्य शिवऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्रीमहासरस्वती देवता, श्रीजगदम्बाप्रीत्यर्थं
सप्तशतीपाठाङ्गत्वेन जपे विनियोगः ।

ॐ नमश्चण्डिकायै ।
ॐ चण्डिका देवी को नमस्कार है ।

मार्कण्डेय उवाच ।

मार्कण्डेय बोला ।

ॐ विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे ।
श्रेयःप्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्धधारिणे ॥ १॥

ॐ
विशुद्धज्ञानदेहाय = विशुद्ध ज्ञान जिनका शरीर है,
त्रिवेदीदिव्यचक्षुषे= तीनों वेद रूपी दिव्य नेत्रों वालों
श्रेयःप्राप्ति निमित्ताय = कल्याण प्राप्ति के हेतु
नमः = नमस्कार है

सोमार्ध धारिणे= अर्ध चन्द्रमा धारण करने वाले

विशुद्ध ज्ञान जिनका शरीर है, तीनों वेद रूपी दिव्य नेत्रों वालों, कल्याण प्राप्ति के हेतु , अर्ध चन्द्रमा धारण करने वाले शिव को नमस्कार है ।

सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामपि कीलकम् ।
सोऽपि क्षेममवाप्नोति सततं जप्यतत्परः ॥ २॥

सर्वं एतत् = इन सब
विजानीयान = जान कर
मन्त्राणाम् = मन्त्रों को
अभिकीलकम्= अभिकीलक के (बाधा निवारण के)
सोऽपि = जप में लगा
क्षेमम्= कल्याण
अवाप्नोति = प्राप्त करता है
सततं = निरंतर
जप्यतत्परः= जप में लगा है

इन सभी अभिकीलक मन्त्रों को जान कर निरंतर जप में लगा वह साधक कल्याण प्राप्त करता है ।

सिद्ध्यन्त्युच्चाटनादीनि वस्तुनि सकलान्यपि ।
एतेन स्तुवतां देवीं स्तोत्रमात्रेण सिद्ध्यति ॥ ३॥

सिद्ध्यन्ति = सिद्धि होती है
उच्चाटनादीनि = उच्चाटन आदि
वस्तुनि = वस्तुओं की
सकल अन्यपि = अन्य भी सभी
एतेन = = इस
स्तुवतां = स्तुति से
देवीं = देवी
स्तोत्र मात्रेण = स्तोत्र मात्र की
सिद्ध्यति = सिद्ध हो जाती हैं

उच्चाटन आदि और अन्य वस्तुओं की भी सिद्धि होती है , इस स्त्रोत्र की स्तुति मात्र से देवी सिद्ध हो जाती हैं ।

न मन्त्रो नौषधं तस्य न किञ्चिदपि विद्यते ।
विना जप्येन सिद्ध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥ ४॥

न मन्त्रो = न मन्त्र की
नौषधं = न औषध की
तस्य = उसको
न किञ्चिदपि विद्यते= न किसी भी साधन की
विना जप्येन = बिना जाप के ही
सिद्ध्येत्तु = सिद्ध हो जाते हैं
सर्वमुच्चाटनादिकम् = सभी उच्चाटन आदि कर्म

उनको न मन्त्र की, न औषध की ,न ही किसी साशन की जरुरत है , बिना जाप के उनके सभी उच्चाटन आदि कर्म सिद्ध हो जाते हैं ।

समग्राण्यपि सिद्ध्यन्ति लोकशङ्कामिमां हरः ।
कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम् ॥ ५॥

समग्राण्यपि = सब ही
सिध्यन्ति = सिद्ध हो जाती हैं
लोकशङ्कामिमां इमां = लोगों की इस शंका पर
हरः = शिव ने
कृत्वा = कर
निमन्त्रयामास = बुला कर
सर्वमेवमिदं = सर्वं एवं इदं = ये सारा ही
शुभम् = कल्याण कारी है

(स्तोत्र मात्र से) सब कुछ सिद्ध हो जाता है , लोगों की इस शंका पर शिव ने उन्हें बुला कर कहा ये सारा (सप्तशती पाठ) ही कल्याणकारी है ।

स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तम् चकार सः ।
समाप्तिर्न च पुण्यस्य तां यथावन्नियन्त्रणाम् ॥ ६॥

स्तोत्रं = स्तोत्र को
वै = यद्यपि

चण्डिकाया:= चण्डिका के
तु = लेकिन
तत्= तब
च = और
गुप्तम् चकार सः = उस (महादेव) ने गुप्त कर दिया
समाप्तिः न च = समाप्ति नहीं होती
पुण्यस्य = पुण्य की
तां = उसके
यथावत् = वैसा ही है
नियन्त्रणाम् = नियंत्रण करने पर भी

और तब यद्यपि महादेव ने चण्डिका के स्तोत्र को गुप्त कर दिया , परन्तु उसके पुण्य की समाप्ति नहीं होती , नियंत्रण करने पर भी (उसका फल) वैसा ही है ।

सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः ।

सोऽपि = वह भी
क्षेमम अवाप्नोति = कल्याण प्राप्त करता है
सर्वमेव = सभी
न संशयः = बिना संशय के

वह(अन्य मन्त्रों का पाठ करने वाला) भी (सप्तशती के जप से) बिना संशय के सभी कल्याण प्राप्त करता है।

कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥ ७॥
ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति ।

कृष्णायां = कृष्ण पक्ष की
वा = अथवा
चतुर्दश्याम= चतुर्दशी
अष्टम्यां वा = अथवा अष्टमी को

समाहितः = एकाग्र चित्त हो

समाहितः = एकाग्र चित्त हो
ददाति = (देवी को अपना सर्वस्व) अर्पित करता है

प्रतिगृह्णाति = फिर उसे पुनः(प्रसाद के रूप में) ग्रहण करता है
न अन्यथ एषा प्रसीदति = अन्यथा यह प्रसन्न नहीं होती

अथवा कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी अथवा अष्टमी को एकाग्र चित्त हो (देवी को अपना सर्वस्व) अर्पित करता है,फिर उसे पुनः(प्रसाद के रूप में) ग्रहण करता है । (तभी देवी प्रसन्न होती है) अन्यथा यह प्रसन्न नहीं होती ।

इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥ ८॥
इत्थं = इस प्रकार
रूपेण = रूप में
कीलेन = कीलक के
महादेवेन = महादेव ने
कीलितम् = कीलित किया है

इस प्रकार कीलक के रूप में महादेव ने (सप्तशती को) कीलित किया है ।

यो निष्कीलां विधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् ।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वो जायते नरः ॥ ९॥

यो= जो
निष्कीलां = निष्कीलन करके
विधाय एनां = विधि से इसका
नित्यं जपति = नित्य जप करता है
संस्फुटम् = स्पष्ट उच्चारण से
स सिद्धः = वह सिद्ध
स गणः = वह गण
सोऽपि गन्धर्वो = वही गन्धर्व
जायते = होता है
नरम् = मनुष्य

जो विधि से निष्कीलन करके इसका स्पष्ट उच्चारण से नित्य जप करता है , वह सिद्ध , वह गण , वही मनुष्य गन्धर्व होता है ।

न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते ।
नापमृत्युवशं याति मृतो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ १०॥

न = नहीं
चैवाप्य अटत:= घूमने रहने पर भी
तस्य = उसे
भयं = भय
क्वाप इह =इस (संसार में) कहीं
जायते = होता
न अपमृत्युवशं = अकाल मृत्यु के वश में नहीं
याति = पड़ता
मृतो = मृत्यु पर
मोक्षम आप्नुयात् = मोक्ष को प्राप्त करता है

घूमते रहने पर भी इस (संसार में) कहीं उसे भय नहीं होता , अकाल मृत्यु के वश में नहीं पड़ता , मृत्यु पर मोक्ष को प्राप्त करता है ।

ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति ।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥ ११॥

ज्ञात्वा = कीलक को जान कर ही
प्रारभ्य = प्रारम्भ
कुर्वीत = करता है
न कुर्वाणो = ऐसा न करने पर
विनश्यति = विनाश होता है
ततो = इसलिए
ज्ञात्वैव = जान कर ही
सम्पन्नमिदं = इसको सिद्ध करते हैं
प्रारभ्यते = प्रारंभ करते हैं
बुधैः = विद्वान

कीलक को जान कर ही सप्तशती का प्रारम्भ करना चाहिए , ऐसा न क-रने पर (फल का) विनाश होता है इसलिए कीलक जान कर ही विद्वान पुरुष सप्शती प्रारभ कर इसको (दुर्गासप्तशती के फल को) सिद्ध करते हैं ।

सौभाग्यादि च यत्किञ्चिद् दृश्यते ललनाजने ।

तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन जाप्यमिदम् शुभम् ॥ १२॥

सौभाग्यादि च = और सौभाग्य आदि
यत्किञ्चिद् दृश्यते = जो कुछ भी दृष्टिगोचर होता है
ललनाजने = स्त्रियों में
तत्सर्वं = वह सब
तत्प्रसादेन = उसके प्रसाद से है
तेन= इस लिए
जाप्यम् = जप करना चाहिए
इदम् = इस स्तोत्र का
शुभम् = कल्याण कारी

और स्त्रियोंमे जो कुछ भी सौभाग्य आदि दृष्टिगोचर होता है वह सब उस देवी के प्रसाद से है । इसलिए इस कल्याणकारी स्तोत्र का जप करना चाहिए ।

शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्तिरुच्चकैः ।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥ १३॥

शनैः तु= और मंद स्वर में
जप्यमाने = जाप करने पर
अस्मिन् = इस
स्तोत्रे = स्तोत्र का
सम्पत्तिः =फल
उच्चकैः = उच्चे स्वर में
भवत्येव = भवती एव = ऐसा ही होता है
समग्रापि = सम्पूर्ण
ततः = तब , इसलिए
प्रारभ्यमेव = आरम्भ ही
तत् = वह , इसका

मंद स्वर में जाप करने पर और उच्चे स्वर में जाप करने पर इस स्तोत्र का फल ऐसा ही होता है (मंद स्वर में मंद,थोड़ा फल और ऊँचे स्वर में उच्च सारा फल)। इसलिए सम्पूर्ण फल के लिए इसका आरम्भ ही ऊँचे स्वर में करें ।

ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्य सम्पदः ।
शत्रुहानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किं जनैः ॥॥ ॐ ॥॥ १४॥

ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन = जिसके प्रसाद से ऐश्वर्य
सौभाग्यारोग्य सम्पदः = सौभाग्य आरोग्य संपत्ति
शत्रुहानिः = शत्रु नाश
परो मोक्षः = परम मोक्ष
स्तूयते = स्तुति करे
सा = उसकी
न किं जनैः = मनुष्य क्यों नहीं

जिसके प्रसाद से ऐश्वर्य , सौभाग्य, आरोग्य, संपत्ति , शत्रु नाश, परम मो-क्ष की सिद्धि होती है उसकी मनुष्य स्तुति क्यों न करे ।

॥ स्वस्ति देव्याः कीलकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

॥अथ वेदोक्तं रात्रिसूक्तम्॥
ॐ रात्रीत्याद्यष्टर्चस्य सूक्तस्य कुशिकः सौभरो रात्रिर्वा भारद्वाजो ऋषिः, रात्रिर्देवता, गायत्री छन्दः, देवीमाहात्म्यपाठे विनियोगः।
ॐ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः।
विश्वार अधि श्रियोऽधित॥१॥
महत्तत्वादिरूप व्यापक इन्द्रियों से सब देशों में समस्त वस्तुओं को प्रकाशित करने-वाली ये रात्रिरूपा देवी अपने उत्पन्न किये हुए जगत् के जीवों के शुभाशुभ कर्मों को विशेषरूप से देखती है और उनके अनुरूप फल की व्यवस्था करने के लिये समस्त विभूतियों को धारण करती हैं ॥१॥
ओर्वप्रा अमर्त्यानिवतो देव्युद्वतः।
ज्योतिषा बाधते तमः॥२॥
ये देवी अमर हैं और सम्पूर्ण विश्व को , नीचे फैलानेवाली लता आदि को तथा ऊपर बढ़नेवाले वृक्षों को भी व्याप्त करके स्थित हैं ; इतना ही नहीं , ये ज्ञानमयी ज्योति से जीवों के अज्ञानान्धकार का नाश कर देती हैं ॥२॥
निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती।
अपेदु हासते तमः॥३॥
परा विच्छक्तिरूपा रात्रिदेवी आकर अपनी बहन ब्रह्मविद्यामयी उषादेवी को प्रकट करती हैं , जिससे अविद्यामय अन्धकार स्वतः नष्ट हो जाता है॥३॥
सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि।
वृक्षे न वसतिं वयः॥४॥
वे रात्रिदेवी इस समय मुझपर प्रसन्न हों , जिनके आनेपर हमलोग अपने घरों में सुखसे सोते हैं – ठीक वैसे ही , जैसे रात्रि के समय पक्षी वृक्षों पर बनाये हुए अपने घोंसलों में सुखपूर्वक शयन करते हैं ॥४॥
नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः।

नि श्येनासश्चिदर्थिनः॥५॥
उस करूणामयी रात्रिदेवी के अंक में सम्पूर्ण ग्रामवासी मनुष्य , पैरों से चलनेवाले गाय , घोड़े आदि पशु , पंखों से उड़नेवाले पक्षी एवं पतंग आदि , किसी प्रयोजन से यात्रा करनेवाले पथिक और बाज आदि भी सुखपूर्वक सोते हैं ॥५॥
यावया वृक्यं वृकं यवय स्तेनमूर्म्ये।
अथा नः सुतरा भव॥६॥
हे रात्रिमयी चिच्छक्ति ! तुम कृपा करके वासनामयी वृकी तथा पापमय वृक को हमसे अलग करो । काम आदि तस्कर समुदाय को भी दूर हटाओ । तदनन्तर हमारे लिये सुखपूर्वक तरने योग्य हो जाओ –मोक्षदायिनी एवं कल्याणकारिणी बन जाओ ॥६॥
उप मा पेपिशत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित।
उष ऋणेव यातय॥७॥
हे उषा ! हे रात्रि की अधिष्ठात्री देवी ! सब ओर फैला हुआ यह अज्ञानमय काला अंधकार मेरे निकट आ पहुँचा है । तुम इसे ऋण की भाँति दूर करो – जैसे धन देकर अपने भक्तों के ऋण दूर करती हो , उसी प्रकार ज्ञान देकर इस अज्ञान को भी हटा दो ॥७॥
उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः।
रात्रि स्तोमं न जिग्युषे॥८॥
हे रात्रिदेवी ! तुम दूध देनेवाली गौके समान हो । मैं तुम्हारे समीप आकर स्तुति आदि से तुम्हें अपने अनुकूल करता हूँ । परम व्योमस्वरूप परमात्मा की पुत्री ! तुम्हारी कृपा से मैं काम आदि शत्रुओं को जीत चुका हूँ , तुम स्तोम की भाँति मेरे हविष्य को भी ग्रहण करो ॥८॥

स्वस्ति ऋग्वेदोक्तं रात्रिसूक्तं समाप्तं।

॥अथ तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्॥
ॐ विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम्। निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः॥१॥
ब्रह्मोवाच त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका।सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता॥२॥अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः।त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा॥३॥
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत्।
त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा॥४॥विसृष्टौ सृष्टिरुपा त्वं स्थितिरूपा च पालने।
तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये॥५॥महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।
महामोहा च भवती महादेवी महासुरी॥६॥
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी।
कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा॥७॥
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा।

लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च॥८॥खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा॥९॥सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसु-न्दरी।
परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वतरी॥१०॥
यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा॥११॥
यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः॥१२॥विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्॥१३॥सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता।मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ॥१४॥प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु।बोधश्चं क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ॥१५॥स्वस्ति रात्रिसूक्तम्।
॥श्रीदेव्यथर्वशीर्षम् ॥
ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति॥१॥
ॐ सभी देवता देवीके समीप गये और नम्रता से पूछने लगे – हे महादेवि तुम कौन हो ? ॥१॥
साब्रवीत् - अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः
प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च॥२॥
उसने कहा – मैं ब्रह्मस्वरूप हूँ । मुझसे प्रकृति – पुरुषात्मक सद्रूप और असद्रूप जगत् उत्पन्न हुआ है ॥२॥
अहमानन्दानानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये।
अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत्॥३॥
मैं आनन्द और अनानन्दरूपा हूँ । मैं विज्ञान और अविज्ञानरूपा हूँ । अवश्य जाननेयोग्य ब्रह्म और अब्रह्म भी मैं ही हूँ । पंचीकृत और अपंचीकृत महाभूत भी मैं ही हूँ । यह सारा दृश्य –जगत् मैं ही हूँ ॥३॥
वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्।
अधश्चोमर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्॥४॥
वेद और अवेद मैं हूँ । विद्या और अविद्या भी मैं , अज्ञा और अनजा (प्रकृति और उससे भिन्न) भी मैं , नीचे –ऊपर , अगल – बगल भी मैं ही हूँ ॥४॥
अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।
अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ॥५॥
मैं रुद्रों और वसुओं के रूप में संचार करती हूँ । मैं आदित्यों और विश्वदेवों के रूपों में फिरा करती हूँ । मैं मित्र और वरुण दोनों का , इन्द्र एवं अग्निका और दोनों अश्विनीकुमारों का भरण –पोषण करती हूँ ॥५॥
अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि।
अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि॥६॥

मैं सोम, त्वष्टा , पूषा और भग को धारण करती हूँ । त्रैलोक्यको आक्रान्त करने के लिये विस्तीर्ण पादक्षेप करनेवाले विष्णु , ब्रह्मदेव और प्रजापति को मैं ही धारण करती हूँ ॥६॥

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते।
अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे।
य एवं वेद। स दैवीं सम्पदमाप्नोति॥७॥

देवों को उत्तम हवि पहुँचानेवाले और सोमरस निकालनेवाले यजमान के लिये हविर्द्रव्योंसे युक्त धन धारण करती हूँ । मैं सम्पूर्णजगत् की ईश्वरी , उपासकों को धन देनेवाली , ब्रह्मरूप और यज्ञार्हों में (यजन करने योग्य देवों में) मुख्य हूँ । मैं आत्मस्वरूप पर आकाशादि निर्माण करती हूँ । मेरा स्थान आत्मस्वरूप को धारण करनेवाली बुद्धिवृति में है। जो इस प्रकार जानता है , वह दैवी सम्पत्ति लाभ करता है ॥७॥

ते देवा अब्रुवन् - नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥८॥

तब उन देवों ने कहा- देवी को नमस्कार है । बड़े- बड़ों को अपने- अपने कर्तव्य में प्रवृत करनेवाली कल्याणकर्त्रीको सदा नमस्कार है । गुणासाम्यावस्थारूपिणी मंगलमयी देवीको नमस्कार है । नियमयुक्त होकर हम उन्हें प्रणाम करते हैं॥८॥

तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः॥९॥

उस अग्निके-से वर्णवाली , ज्ञान से जगमगानेवाली दीप्तिमती, कर्म फल प्राप्ति के हेतु सेवन की जानेवाली दुर्गादेवी की हम शरण में हैं। असुरों का नाश करनेवाली देवि ! तुम्हें नमस्कार है ॥९॥

देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वारूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु॥१०॥

प्राणरूप देवों ने जिस प्रकाशमान वैखरी वाणी को उत्पन्न किया, उसे अनेक प्रकार के प्राणी बोलते है । वह कामधेनुतुल्य आनन्दायक और अन्न तथा बल देनेवाली वाग् रूपिणी भगवती उत्तम स्तुति से संतुष्ट होकर हमारे समीप आये ॥१०॥

कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्॥११॥

कालका भी नाश करनेवाली , वेदों द्वारा स्तुत हुई विष्णुशक्ति , स्कन्दमाता (शिवशक्ति) , सरस्वती (ब्रह्मशक्ति), देवमाता अदिति और दक्षकन्या (सती) ,पापनाशिनी कल्याणकारिणी भगवती को हम प्रणाम करते हैं ॥११॥

महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्॥१२॥

हम महालक्ष्मी को जानते हैं और उन सर्वशक्तिरूपिणी का ही ध्यान करते है । वह

देवी हमें उस विषय में (ज्ञान-ध्यान में) प्रवृत करें ॥१२॥
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः॥१३॥
हे दक्ष ! आपकी जो कन्या अदिति हैं , वे प्रसूता हुई और उनके मृत्युरहित कल्याणमय देव उत्पन्न हुए ॥१३॥
कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वममातादिविद्योम्॥१४॥
काम (क) , योनि (ए) , कमला (ई) , वज्रपाणि – इन्द्र (ल) ,गुहा (ह्रीं) , ह , स – वर्ण , मातरिश्वा – वायु (क) , अभ्र (ह) , इन्द्र (ल) , पुनः गुहा (ह्रीं) , स , क , ल – वर्ण और माया (ह्रीं) – यह सर्वात्मिका जगन्माताकी मूल विद्या है और वह ब्रह्मरूपिणी है ॥१४॥
एषाऽऽत्मशक्तिः। एषा विश्वमोहिनी। पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा।
एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति॥१५॥
ये परमात्मा की शक्ति हैं । ये विश्वमोहिनी हैं । पाश , अंकुश , धनुष और बाण धारण करनेवाली हैं। ये ' श्रीमहाविद्या ' हैं । जो ऐसा जानता है , वह शोकको पार कर जाता है ॥१५॥
नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः॥१६॥
भगवती ! तुम्हें नमस्कार है । माता ! सब प्रकारसे हमारी रक्षा करो ॥१६॥
सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः।
सैषा विश्वेवदेवाः सोमपा असोमपाश्चद।
सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः।
सैषा सत्त्वरजस्तमांसि। सैषा ब्रह्मविष्णुरुद्ररूपिणी।
सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रहनक्षत्रज्योतींषि।
कलाकाष्ठादिकालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्॥
पापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम्।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम्॥१७॥
(मन्त्रद्रष्टा ऋषि कहते हैं -) वही ये अष्ट वसु है ; वही ये एकादश रुद्र हैं ; वही ये द्वादश आदित्य हैं ; वही ये सोमपान करनेवाले और सोमपान न करनेवाले विश्वदेव हैं ; वही ये यातुधान (एक प्रकार के राक्षस) , असुर , राक्षस , पिशाच , यक्ष और सिद्धि हैं ; वही ये सत्व – रज – तम हैं ; वही ये ब्रह्म-विष्णु – रूद्ररूपिणी हैं ; वही ये प्रजापति – इंद्र-मनु हैं ; वही ये ग्रह , नक्षत्र और तारे हैं ; वही कला-काष्ठादि कालरूपिणी हैं ; उन पाप नाश करनेवाली , भोग-मोक्ष देनेवाली , अंतरहित , विजयाधिष्ठात्री, निर्दोष , शरण लेनेयोग्य , कल्याणदात्री और मंगलरूपिणी देवीको हम सदा प्रणाम करते हैं ॥१७॥
वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्॥१८॥
वियत् – आकाश (ह) तथा 'ई' कारसे युक्त , वीतिहोत्र – अग्नि (र) – सहित ,

अर्धचंद्र (ँ) – से अलंकृत जो देवीका बीज है, वह सब मनोरथ पूर्ण करनेवाला है ।
एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः॥१९॥
इस प्रकार इस एकाक्षर ब्रह्म (ह्रीं) – का ऐसे यति ध्यान करते हैं , जिनका चित्त शुद्ध है , जो निरतिशयानंदपूर्ण और ज्ञानके सागर हैं । (यह मंत्र देवीप्रणव माना जाता है । ऊँकार के समान ही यह प्रणव भी व्यापक अर्थसे भरा हुआ है । संक्षेप में इसका अर्थ इच्छा –ज्ञान – क्रियाधार , अद्वैत , अखण्ड , सच्चिदानन्द , समरसीभूत , शिवशक्तिस्फुरण है ।) ॥१८ - १९॥
वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दुसंयुक्तष्टात्तृतीयकः।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश्चाकधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः॥२०॥
वाणी (ऐं) , माया (ह्रीं) , ब्रह्मसू – काम (क्लीं) , इसके आगे छठा व्यंजन अर्थात् च , वही वक्त्र अर्थात् आकारसे युक्त (चा) , सूर्य (म) , ' अवाम क्षेत्र ' – दक्षिण कर्ण (उ) और बिन्दु अर्थात् अनुस्वार से युक्त (मुं) , टकारसे तीसरा ड , वही नारायण अर्थात् 'आ' से मिश्र (डा) , वायु (य) . वही अधर अर्थात् 'ऐ' से युक्त (यै) और ' विच्चे' यह नवार्णमंत्र उपासकों को आनन्द और ब्रह्मसायुज्य देनेवाला है ॥२०॥
[इस मंत्र का अर्थ है – हे चित्स्वरूपिणी महासरस्वती ! हे सद्रूपिणी महालक्ष्मी ! हे आनन्दरूपिणी महाकाली ! ब्रह्मविद्या पाने के लिये हम सब समय तुम्हारा ध्यान करते हैं । हे महाकाली – महालक्ष्मी – महासरस्वती- स्वरूपिणी चण्डिके ! तुम्हें नमस्कार है । अविद्यारूप रज्जुकी दृढ़ ग्रंथि को खोलकर मुझे मुक्त करो ।]
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे॥२१॥
हृत्कमल के मध्य में रहनेवाली, प्रात:कालीन सूर्यके समान प्रभावाली , पाश और अंकुश धारण करनेवाली, मनोहर रूपवाली , वरद और अभयमुद्रा धारण किये हुए हाथोंवाली , तीन नेत्रोंसे युक्त , रक्तवस्त्र परिधान करनेवाली और कामधेनु के समान भक्तों के मनोरथ पूर्ण करनेवाली देवीको मैं भजता हूँ ॥२१॥
नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्।
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्॥२२॥
महाभय का नाश करनेवाली , महासंकट को शांत करनेवाली और महान् करूणाकी साक्षात् मूर्ति तुम महादेवी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥२२॥
यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया।
यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता।

यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या।
यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा।
एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका।
एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका।
अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति॥२३॥
जिसका स्वरूप ब्रह्मादिक नहीं जानते – इसलिये जिसे अज्ञेया कहते हैं , जिसका अंत नहीं मिलता – इसलिये जिसे अनंता कहते हैं , जिसका लक्ष्य दीख नहीं पड़ता- इसलिये जिसे अलक्ष्या कहते हैं , जिसका जन्म समझ में नहीं आता – इसलिये जिसे अजा कहते हैं , जो अकेली सर्वत्र है – इसलिये जिसे एका कहते हैं , जो अकेली ही विश्वरूप में सजी हुई है – इसलिये जिसे नैका कहते हैं , वह इसीलियी अज्ञेया , अनंता , अलक्ष्या , अजा , एका और नैका कहाती हैं ॥२३॥
मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता* शून्यानां शून्यसाक्षिणी।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता॥२४॥
सब मंत्रों में 'मातृका' – मूलाक्षररूपसे रहनेवाली , शब्दों में ज्ञान (अर्थ) – रूप से रहनेवाली , ज्ञानों में 'चिन्मयातीता' , शून्यों में 'शून्यसाक्षिणी' तथा जिनसे और कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है , वे दुर्गा के नाम से प्रसिद्ध है ॥२४॥
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्॥२५॥
उन दुर्विज्ञेय , दुराचारनाशक और संसारसागर सए तारनेवाली दुर्गादेवी को संसार से डरा हुआ मैं नमस्कार करता हूँ ॥२५॥
इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति।
इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति - शतलक्षं प्रजप्त्वापि
सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः।
दशवारं पठेद् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः॥२६॥
इस अथर्वशीर्ष का जो अध्ययन करता है , उसे पाँचों अथर्वशीर्षों के जपका फल प्राप्त होता है । इस अथर्वशीर्ष को न जानकर जो प्रतिमास्थापन करता है , वह सैंकड़ों लाख जप करके भी अर्चासिद्धि नहीं प्राप्त करता । अष्टोत्तरशत (१०८) जप (इत्यादि) इसकी पुरश्चरणविधि है । जो इसका दस बार पाठ करता है , वह उसी क्षण पापोंसे मुक्त हो जाता है और महादेवी के प्रसाद से बड़े दुस्तर संकटों को पार कर जाता है ॥२६॥
सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति।
प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति।
सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति।
निशीथे तुरीयसन्ध्यायां जप्त्वा वाक् सिद्धिर्भवति।

नूतनायां प्रतिमायां जप्त्वा देवतासांनिध्यं भवति।
प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति।
भौमाश्विनत्यां महादेवीसंनिधौ जप्त्वा महामृत्युं तरति।
स महामृत्युं तरति य एवं वेद। इत्युपनिषत्॥
स्वस्ति श्रीदेव्यथर्वशीर्षम् सम्पूर्णम्।
इसका सायंकाल में अध्ययन करनेवाला दिनमें किये हुए पापों का नाश करता है , प्रातःकाल अध्ययन करनेवाला रात्रिमें किये हुए पापों का नाश करता है । दोनों समय अध्ययन करनेवाला निष्पाप होता है । मध्यरात्रि में तुरीय संध्या (जो की मध्यरात्रि में होती है) के समय जप करने से वाक् सिद्धि प्राप्त होती है । नयी प्रतिमा पर जप करने से देवतासान्निध्य प्राप्त होता है । प्राणप्रतिष्ठा के समय जप करने से प्राणोंकी प्रतिष्ठा होती है। भौमाश्विनी योग में महादेवी की सन्निधि में जप करने से महामृत्यु से तर जाता है । जो इस प्रकार जानता है , वह महामृत्यु से तर जाता है । इस प्रकार यह अविद्या नाशिनी ब्रह्मविद्या है।
॥अथ नवार्णविधिः॥
इस प्रकार रात्रिसूक्त और देव्यथर्वशीर्ष का पाठ करने के पश्चात्
निम्नांकितरूपसे नवार्णमन्त्र के विनियोग, न्यास और ध्यान आदि करें।
॥विनियोगः॥
श्रीगणपतिर्जयति। "ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः,
गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो
देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्,
श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।"
इसे पढ़कर जल गिराये।
॥ऋष्यादिन्यासः॥
तत्पश्चात् न्यासवाक्यों में से एक-एक का उच्चारण करके दाहिने हाथ की अँगुलियों से क्रमशः सिर, मुख, हृदय, गुदा, दोनों, चरण और नाभि - इन अंगों का स्पर्श करें।
ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे। महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि।
ऐं बीजाय नमः, गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः।
क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ।
"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"- इस मूलमन्त्र से हाथों की शुद्धि करके करन्यास करें।
॥करन्यासः॥
करन्यास में हाथ की विभिन्न अँगुलियों, हथेलियों और हाथ के पृष्ठभाग में मन्त्रों का न्यास (स्थापन) किया जाता है; इसी प्रकार अंगन्यास में हृदयादि अंगों में मन्त्रों की स्थापना होती है। मन्त्रों को चेतन और मूर्तिमान् मानकर उन-उन अंगों का नाम लेकर उन मन्त्रमय देवताओं का ही स्पर्श और वन्दन किया जाता है, ऐसा करने से

पाठ या जप करनेवाला स्वयं मन्त्रमय होकर मन्त्रदेवताओं द्वारा सर्वथा सुरक्षित हो जाता है। उसके बाहर-भीतर की शुद्धि होती है, दिव्य बल प्राप्त होता है और साधना निर्विघ्नतापूर्वक पूर्ण तथा परम लाभदायक होती है।

ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

(दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों से दोनों अंगूठों का स्पर्श)

ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

(दोनों हाथों की तर्जनी अंगुलियों से दोनों तर्जनी का स्पर्श)

ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः।

(अंगूठों से मध्यमा अंगुलियों का स्पर्श)

ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः।

(अंगूठों से अनामिका अंगुलियों का स्पर्श)

ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

(अंगूठों से कनिष्ठिका अंगुलियों का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

(हथेलियों और उनके पृष्ठभागों का परस्पर स्पर्श)

॥हृदयादिन्यासः॥

इसमें दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों से 'हृदय' आदि अंगों का स्पर्श किया जाता है।

ॐ ऐं हृदयाय नमः।

(दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों से हृदय का स्पर्श)

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।

(सिर का स्पर्श)

ॐ क्लीं शिखायै वषट्।

(शिखा का स्पर्श)

ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्।

(दाहिने हाथ की अंगुलियों से बायें कंधे का और बायें हाथ की अंगुलियों से दायें कंधे का साथ ही स्पर्श)

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्।

(दाहिने हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग से दोनों नेत्रों और ललाट के मध्यभाग का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।

(यह वाक्य पढ़कर दाहिने हाथ को सिर के ऊपर से बायीं ओर से पीछे की ओर ले जाकर दाहिनी ओर से आगे की ओर ले जाये और तर्जनी तथा मध्यमा अंगुलियों से बायें हाथ की हथेलीपर ताली बजाये)

॥अक्षरन्यासः॥

निम्नांकित वाक्यों को पढ़कर क्रमशः शिखा आदि का दाहिने हाथ की अँगुलियों से स्पर्श करें।

ॐ ऐं नमः, शिखायाम्।
ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे।
ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे।
ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे।
ॐ मुं नमः, वामकर्णे।
ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे।
ॐ यैं नमः, वामनासापुटे।
ॐ विं नमः, मुखे।
ॐ च्चें नमः, गुह्ये।
इस प्रकार न्यास करके मूलमन्त्र से आठ बार व्यापक (दोनों हाथों द्वारा सिर से लेकर पैर तक के सब अंगों का) स्पर्श करें ।
॥दिङ्न्यासः॥
फिर प्रत्येक दिशा में चुटकी बजाते हुए न्यास करें-
ॐ ऐं प्राच्यै नमः।
ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः।
ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः।
ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः।
ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः।
ॐ क्लीं वायव्यै नमः।
ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः।
ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।
॥ध्यानम्॥
खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥१॥
अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥२॥
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥३॥

भगवान् विष्णु के सो जानेपर मधु और कैटभ को मारने के लिये कमल जन्मा ब्रह्माजी ने जिनका स्तवन किया था, उन महाकाली देवी का मैं सेवन करता हूँ। वे अपने दस हाथों में खड्ग , चक्र, गदा , बाण, धनुष , परिध , शूल , भुशुण्डि , मस्तक और शंख धारण करती है । उनके तीन नेत्र हैं । वे समस्त अंगों में दिव्य आभूषणों से विभूषित हैं । उनके शरीर की कान्ति नीलमणि के समान है तथा वे दस मुख और दस पैरों से युक्त हैं ॥१॥ मैं कमल के आसनपर बैठी हुई प्रसन्न मुखवाली महिषासुरमर्दिनी भगवती महालक्ष्मी का भजन करता हूँ , जो अपने हाथों में अक्षमाला , फरसा , गदा , बाण , वज्र, पद्म , धनुष , कुण्डिका , दण्ड , शक्ति , खड्ग , ढ़ाल , शंख . घण्टा , मधुपात्र , शूल ,पाश और चक्र धारण करती है ॥२॥ जो अपने करकमलों में घण्टा , शूल ,हल , शंख ,मूसल , चक्र ,धनुष और बाण धारण करती हैं , शरदऋतु के शोभा सम्पन्न चंद्रमा के समान जिनकी मनोहर कान्ति है, जो तीनों लोकों की आधारभूता और शुम्भ आदि दैत्यों का नाशा करनेवाली हैं तथा गौरी के शरीर से जिनका प्राकट्य हुआ है , उन महासरस्वती देवी का मैं निरंतर भजन करता हूँ ॥३॥

॥माला प्रार्थना॥

फिर "ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः" इस मन्त्र से माला की पूजा करके प्रार्थना करें-

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥
ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥
ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि
साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।

इसके बाद "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" इस मन्त्र का १०८ बार जप करें और-

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

इस श्लोक को पढ़कर देवी के वामहस्तमें जप निवेदन करें ।

॥सप्तशतीन्यासः॥

॥विनियोगः॥

प्रथममध्यमोत्तरचरित्राणां ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः,
गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छंन्दांसि, नन्दाशाकम्भरीभीमाः शक्तयः, रक्तदन्तिकादुर्गाभ्रामर्यो बीजानि, अग्निवायुसूर्यास्तत्त्वानि,
ऋग्यजुःसामवेदा ध्यानानि, सकलकामनासिद्धये
श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

इसे पढ़कर जल गिरायें ।

॥ऋष्यादिन्यासः॥

तत्पश्चात् न्यासवाक्यों में से एक-एक का उच्चारण करके दाहिने हाथ की अँगुलियों से क्रमशः सिर, मुख, हृदय, गुदा, दोनों, चरण और नाभि - इन अंगों का स्पर्श करें।

ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे। महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि।
ऐं बीजाय नमः, गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः।
क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ।
"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"- इस मूलमन्त्र से हाथों की शुद्धि करके करन्यास करें।
॥करन्यासः॥
ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा॥ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥ तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥ मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥ अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥ करतलकरपृष्ठाभ्यां।
॥हृदयादिन्यासः॥
इसमें दाहिने हाथ की पाँचों अँगुलियों से 'हृदय' आदि अंगों का स्पर्श किया जाता है।
ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा॥ हृदयाय नमः।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥ शिरसे स्वाहा ।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥ शिखायै वषट् ।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥ कवचाय हुम् ।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥ नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥ अस्त्राय फट् ।
॥ध्यानम्॥
ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां

कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चाप्ं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

मैं तीन नेत्रोंवाली दुर्गादेवी का ध्यान करता हूँ , उनके श्रीअंगों की प्रभा बिजली के समान है। वे सिंह के कंधे पर बैठी हुई भयंकर प्रतीत होती हैं। हाथों में तलवार और ढ़ाल लिये अनेक कन्याएँ उनकी सेवा में खड़ी हैं । वे अपने हाथों में चक्र , गदा ,तलवार , ढ़ाल , बाण , धनुष , पाश और तर्जनी मुद्रा धारण किये हुए हैं । उनका स्वरूप अग्निमय है तथा वे माथेपर चंद्रमा का मुकुट धारण करती हैं ।

प्रथम अध्यायः

ॐ खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीम् करैस्त्रिनयनाम् सर्वांगभूषावृताम्
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम्
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुम् कैटभम्

ॐ खड्गं चक्रगदेषुचाप = खड्गं, चक्र, गदा , धनुष
परिधांछूलं भुशुण्डीं शिरः = परिध , शूल , मस्तक
शङ्खं संदधतीम् करैः = शंख हाथों में धारण करती है
त्रिनयनाम् सर्वांगभूषावृताम् = तीन नयनों वाली , सभी अंगों में आभूषण धारण किये
नीलाश्म द्युतिम्= नीलमणि के सामान आभा वाली
आस्य पाद दशकां = जिसके दस पैर हैं
सेवे= स्तवन
महाकालिकाम् = महाकाली का
यामः= जिस प्रकार
तौ = उन
स्वपिते = सोने पर
हरौ = विष्णु के
कमलजो= कमल जन्मा ब्रह्मा ने
हन्तुं मधुम कैटभम् = मधु कैटभ को मारने के लिए

खड्गं चक्र, गदा, धनुष,परिध, शूल, मस्तक , शंख हाथों में धारण करती है, तीन नयनों वाली , सभी अंगों में आभूषण धारण किये , नीलमणि के सामान आभा वाली महाकाली का उसी प्रकार स्तवन करता हूँ जिस प्रकार कमल जन्मा ब्रह्मा ने विष्णु के सो जाने पर उन मधु कैटभ को मारने के लिए महाकाली का स्तवन किया था ।

ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच ।। १ ।।

मार्कण्डेय = मार्कण्डेय
उवाच = बोले

मार्कण्डेय बोले ।

सावर्णि: सूर्यतनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः ।
निशामय तदुत्पत्तिम् विस्तराद् गदतो मम ॥ २ ॥

सावर्णि:= सावर्णि
 सूर्य तनयो = सूर्य के पुत्र
यो =जो
मनुः = मनु

कथ्यते= कहलाये
अष्टमः= आठवें
निशामय= सुनो
तद उत्पत्तिम्= उनकी उत्पत्ति को
विस्तराद्= विस्तार से , विस्तारपूर्वक
गदतो= कहता हूँ
मम= मेरे द्वारा

सूर्य के पुत्र सावर्णि जो आठवें मनु कहे जाते हैं उनकी उत्पत्ति को विस्ता-रपूर्वक मुझसे सुनो ।
महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः
स बभूव महाभागः सावर्णिस्तनयो रवेः ॥ ३॥
महामायानुभावेन = महामाया + अनुभवेन
महामाया = महामाया की
अनुभवेन= कृपा से
यथा = जिस प्रकार
मन्वन्तराधिपः मन्वन्तर +अधिपः
मन्वन्तर= मन्वन्तर के
अधिपः = राजा
स= वह
बभूव = बना , हुआ
महाभागः = भाग्यशाली
सावर्णिस्तनयो= सावर्णिः + तनयो

सावर्णिः = सावर्णि
तनयो = पुत्र
रवेः = सूर्य का
वह सूर्य के पुत्र महाभाग सावर्णि महामाया की कृपा से जिस प्रकार मन्वन्तर के राजा हुए (वही सुनाता हूँ) ।
स्वारोचिषेन्तरे पूर्वं चैत्रवंशसमुद्भवः
सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले ॥ ४ ॥
स्वारोचिषेन्तरे स्वारोचिष मन्वन्तर में
पूर्वं = पूर्व काल में
चैत्रवंशसमुद्भवः चैत्रवंश + समुद्भवः
चैत्रवंश + समुद्भवः = चैत्र वंश में उत्पन्न
सुरथो = सुरथ
नाम = नाम के
राजाभूत्समस्ते = राजा + अभूत + समस्ते
राजा = राजा
अभूत = थे
समस्ते = सारे
क्षितिमण्डले = भूमि मंडल के
पूर्व काल में, स्वारोचिष मन्वन्तर में, चैत्र वंश में उत्पन्न सुरथ नामक सारे पृथ्वी मंडल का राजा था ।
तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रानिवौरसान्
बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा ॥ ५ ॥
तस्य= वह , उस, उसके द्वारा आदि
पालयतः = पालन करना
सम्यक् = अच्छी प्रकार से
प्रजाः= प्रजा को
पुत्रानिवौरसान् = पुत्रान् इव औरसान्
पुत्रान् = पुत्रो
इव = जैसे
औरसान्= सगे
बभूवुः = होना
शत्रवो = शत्रु
भूपाः = राजा
कोलाविध्वंसिनस्तदा= कोलाविध्वंसिनः तदा
कोलाविध्वंसिनः = एक क्षत्रिये कुल का नाम (कोला नामक प्रदेश को ध्वंस करने के कारण इस नाम से जाने गए)
तदा= तब

वह (राजा सुरथ) प्रजा का अपने पुत्रों के सामान अच्छी प्रकार से पालन करता था , तब कोलविध्वंसी राजा के शत्रु हो गए ।

तस्य तैरभवद् युद्धमतिप्रबलदण्डिनः
न्यूनैरपि स तैर्युद्धे कोलाविविध्वंसिभिर्जितः ॥ ६ ॥

तस्य = उस
तैरभवद् = तैः अभवत्
तैः= उन , वे
अभवत् = हुआ
युद्धमतिप्रबलदण्डिनः युधम् अति प्रवल दण्डिनः
युधम् = युद्ध
अति = अत्यंत
प्रबल = शक्तिशाली
दण्डिनः = दण्डनीति
न्यूनैरपि = न्युनैः अपि कम
स
तैर्युद्धे तैः युद्धे
तैः= उन से
युद्धे = युद्ध में
कोलाविविध्वंसिभिर्जितः कोलाविविध्वंसिभि: जितः
कोलाविविध्वंसिभि: = कोलविध्वंसियों के
जितः = हराना

उस दण्डनीति में अत्यंत प्रबल राजा का उनसे युद्ध हुआ , संख्या में कम होने पर भी उन कोलविधवासियों ने उस राजा को हरा दिया ।

ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोभवत्
आक्रान्तः स महाभागस्तैस्तदा प्रबलारिभिः ॥ ७ ॥

ततः = तब , उसके बाद
स्वपुरमायातो = स्वपुरम् +आयतो
स्वपुरम् = अपने नगर में
आयतो = आ कर
निजदेशाधिपोभवत् = निज+ देश+ अधिपः+ अभवत्
निज = अपने
देश = देश के
अधिपः = राजा
अभवत् = हुए
आक्रान्तः= आक्रमण किया

स= वह
महाभागस्तैस्तदा = महाभागः + तैः+ तदा
महाभागः= महाभाग
तैः= उन
तदा = तब
प्रबलारिभिः प्रबल+ अरिभि
प्रबल =शक्तिशाली
अरिभि = शत्रुओं ने
तब अपने नगर में आ कर अपने देश के राजा हुए (सारी पृथ्वी पर अधिकार न रहा)
, तब (वहां भी) उस महाभाग पर उन शक्तिशाली शत्रुओं ने आकर्मण कर दिया ।
अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य दुरात्मभिः
कोशो बलं चापहृतम् तत्रापि स्वपुरे ततः ॥ ८ ॥
अमात्यैर्बलिभिर्दुष्टैर्दुर्बलस्य = अमात्यै:+बलिभिः+दुष्टैः+दुबलस्य
अमात्यै: = मंत्रियों ने
बलिभिः = शक्तिशाली
दुष्टैः = दुष्ट
दुबलस्य = दुर्बल (राजा) का
दुरात्मभिः = बुरे
कोशो = खज़ाना
बलं = हथियार
चापहृतम्
च = और
अपहृतम् = हर लिया
तत्रापि
तत्र = वहां
अपि = भी
स्वपुरे = अपने नगर में
ततः = तब
वहां भी तब अपने नगर में शक्तिशाली, दुष्ट, बुरे मंत्रियों ने (उस) दुर्बल (राजा) का खज़ाना और हथियार लूट लिए ।
ततो मृगयाव्याजेन् हृतस्वाम्यः स भूपतिः
एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् ॥ ९ ॥
मृगयाव्याजेन् = मृगया +व्याजेन्
मृगया = शिकार के
व्याजेन् = बहाने से
हृतस्वाम्यः हृत+स्वाम्यः
हृत = छीने गए , नष्ट हुए

स्वाम्यः = प्रभुत्व
स= वह
भूपतिः = राजा
एकाकी = अकेले
हयमारुह्य = हयं + आरुह्य
हयं = घोड़े पर
आरुह्य = सवार हो
जगाम = गए
गहनं = घने
वनम् = जंगल में
नष्ट हुए प्रभुत्व (वाले) वह राजा शिकार के बहाने से अकेले घोड़े पर सवार हो के घने जंगल में चले गए ।
स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः
प्रशान्तश्वापदाकीर्णम् मुनिशिष्योपशोभितम् ॥ १० ॥
स= उसने
तत्राश्रममद्राक्षीद् = तत्र आश्रमम् द्राक्षीद्
तत्र= वहाँ
आश्रमम् = आश्रम
द्राक्षीद् = देखा
द्विजवर्यस्य= महृषि, द्विजों में श्रेष्ठ
मेधसः = मेधा
प्रशान्तश्वापदाकीर्णम् = प्रशान्त+पद: +आकीर्णम्
प्रशान्त= शांत
श्वापद:= जंगली जानवर
आकीर्णम् = भरपूर
मुनिशिष्योपशोभितम् = मुनिशिष्य:+ उपशोभितम्
मुनिशिष्य:= मुनि शिष्यों से
उपशोभितम् = शोभायमान
उसने वहां श्रेष्ठ द्विज मेधा का शांत जंगली जानवरों से भरपूर, मुनि शिष्यों से शोभायमान आश्रम देखा ।
तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः
इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे ॥ ११ ॥
तस्थौ = ठहरना , रहना
कंचित्स = कुछ
कालं = समय
च = और
मुनिना = मुनि ने
तेन = उनका

सत्कृतः = स्वागत करना
इतश्चेतश्च= इतः च एततः च = यहां वहाँ
विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे= विचरन+ तस्मिन्+ मुनिवर+ आश्रम
विचरन= घूमना
तस्मिन् = उस
मुनिवर = मुनिश्रेष्ठ के
आश्रम = आश्रम में
उस मुनिवर के आश्रम में इधर उधर घूमते हुए कुछ समय के लिए ठहरे और मुनि ने उनका स्वागत किया ।
सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः
मत्पूर्वैः पालितम् पूर्वं मया हीनं पुरम् हि तत ॥ १२ ॥
सोऽचिन्तयत्तदा = सः अचिन्यत तदा
सः = वह
अचिन्यत = सोचने लगा
तदा = तब
तत्र = वहां
ममत्वाकृष्टचेतनः ममत्व आकृष्ट चेतनः
ममत्व मोह से
आकृष्ट = आकर्षित
चेतनः = मन
मत्पूर्वैः = मेरे पूर्वजों द्वारा
पालितम् = पाला गया
पूर्वं = पूर्वकाल
मया = मुझसे
हीनं = रहित
पुरम् = नगर
हि = निसंदेह
तत = वह
तब वह ममता से आकृष्टचित हो सोचने लगा पूर्व काल में मेरे पूर्वजों द्वारा पाल गया वह नगर निश्चय ही मुझसे रहित हो गया है ।
मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा
न जाने स प्रधानो में शूरहस्ती सदामदः ॥ १३ ॥

मद् मेरे
भृत्यैः = आश्रित
सद्वृतैः = सदाचार से
तैः वे

धर्मतः धरम का
पाल्यते = पालन करना
न वा = अथवा नहीं
न जाने= ना जाने
स= वह
प्रधानो मुख्य
में = मेरा
शूरहस्ती = शूरवीर हाथी
सदामदः = हमेशा मद में रहने वाला

वे मेरे आश्रित सदाचार से धरम का पालन करते हैं या नहीं , ना जाने मेरा प्रधान हमेशा मद में रहने वाला शूरवीर हाथी ...

मम वैरिवशं यातः कान् भोगानुपलप्स्यते
ये ममानुगता नित्यं प्रसादधनभोजनैः ॥ १४ ॥

मम = मेरे
वैरिवशं = वैरि वशम् शत्रुओं के आधीन
यातः = जा कर
कान् = कैसे, कौन से
भोगानुपलप्स्यते = भोगान् उपलप्स्यते
भोगान्= भोगों को
उपलप्स्यते = प्राप्त करता होग। भोगता होगा
ये = जो
ममानुगता = मम अनुगता
मम= मेरा
अनुगता = अनुसरण करने वाले
नित्यं = रोज़
प्रसादधनभोजनैः प्रसाद + धन + भोजनैः
प्रसाद = कृपा
धन = धन
भोजनैः = भोजन

वह हाथी मेरे शत्रुओं के आधीन जा कर कौन से भोगो का भोगता होगा ? रोज़ कृपा , धन और भोजन के लिए मेरा अनुसरण करने वाले...

अनुवृत्तिम् ध्रुवम् तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम्

असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ॥ १५ ॥

अनुवृत्तिम् = अनुसरण
ध्रुवम् = निश्चय ही
तेऽद्य= ते+ अद्य= वे अब
कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम् = कुर्वन्तिः+ अन्य+ महिभृताम्
कुर्वन्तिः = करते होंगे
अन्य= दूसरे
महिभृताम् राजाओं का
असम्यग्व्ययशीलैस्तैः = असम्यग् व्ययशीलैः तैः
असम्यग् = अनुचित
व्ययशीलैः = व्यय करने वाले
तैः = वे
कुर्वद्भिः = करते होंगे
सततं = लगातार
व्ययम्= व्यय , खर्च

वे अब निश्चय ही दूरसरे राजाओं का अनुसरण करते होंगे । अनुचित व्यय करने वाले वे लगातार खर्च करते होंगे।

संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयम् कोशो गमिष्यति
एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः ॥ १६ ॥

संचितः = संचित किया , इकट्ठा किया
सोतिदुःखेन = स अति दुःखेन
स = वह
अति= अत्यंत
दुःखेन= दुखों से , कष्ट से
क्षयम् = नष्ट
कोशो = खज़ाना
गमिष्यति = होना
एतच्चान्यच्च एतत च अन्यत च = यह वह
सततं = लगातार
चिन्तयामास = सोचते रहना
पार्थिवः = राजा

अत्यंत कष्ट से संचित किया वह खज़ाना नष्ट हो जाएगा । राजा लगातार यह वह सोचते रहते थे ।

तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः
स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्र कः ॥ १७ ॥

तत्र = वहां
विप्र = विप्रवर मेधा के
आश्रम = आश्रम
अभ्याशे = समीप
वैश्यम् = वैश्य को
एकम् = एक
ददर्श = देखा
सः = उस
पृष्ठः = पूछा
तेन = उससे
कः = कौन
त्वं = तुम
भो = श्रीमान
हेतुः = कारण उद्देश्य
च = और
आगमन = आने का
अत्र = यहां
कः = क्या है

उसने (राजा ने) विप्रवर के आश्रम के समीप एक वैश्य को देखा । उसने उस से पूछा श्रीमान आप कौन हैं और आपके यहाँ आने का कारन क्या है ।

सशोक इव कस्मात्त्वम् दुर्मना इव लक्ष्यसे
इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥ १८ ॥

सशोक = दुखी
इव =जैसे , तरह
कस्मात् = किस लिए
तवं = तुम
दुर्मना = अनमना
लक्ष्यसे = दिखाई देते हो
इति = इस प्रकार

आकर्ण्य = सुन कर
वचः = वचनों को
तस्य = उस
भूपतेः = राजा के
प्रणय = प्यार से
उदितम् = बोले गए

तुम दुखी से अनमने से किस लिए दिखाई देते हो । इस प्रकार उस राजा के प्रेम से बोले गए वचनों को सुन कर....

प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपं ॥ १९ ।

प्रत्युवाच = उत्तर दिया
स = उस
तं = उस
वैश्यः = वैश्य ने
नृपं = राजा को
प्रश्रय = विनीत , सम्मान से
अवनतो = प्रणाम

उस वैश्य ने उस राजा को विनीत हो प्रणाम करके उत्तर दिया ।

वैश्य उवाच ॥ २० ॥

वैश्य बोला ।

समाधिर्नाम वैश्योअहमुत्पन्नो धनिनाम् कुले ॥ २१ ॥

समाधिः = समाधी
नाम = नाम का
वैश्य =वैश्य
अहम् = मैं
उत्पन्नो = पैदा हुआ
धनिनाम् = धनि
कुलम = कुल में

मैं धनि कुल में पैदा हुआ समाधि नाम का वैश्य हूँ ।

पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः
विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्ररादाय मे धनम् ॥ २२ ॥
पुत्रदारैः = पुत्र और पत्नी द्वारा
निरस्तः = त्यागने पर
धनलोभादसाधुभिः = धन लोभात् असाधुभिः = धन लोभी बुरे
विहीनः = बिना
धनैर्दारैः = धन पत्नी
पुत्र = पुत्रो
आदाय = ले कर
में = मेरा
धनम् = धन
धन लोभी बुरे पुत्र, पत्नी ने मेरा धन ले कर (मुझे) त्याग दिया । (अब मैं) धन, पुत्र, पत्नी से रहित हूँ ।
वनमभ्यागतो दुखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः
सोअहम् न वेदभि पुत्राणाम् कुशलाकुशलात्मिकाम् ॥ २३ ॥
वनम् = वन में
अभ्यागतो = आ गया
दुखी = दुखी
निरस्तः = त्याग गया
च = और
आप्त = मित्र
बन्धुभिः = रिश्तेदार
स = वह , उस
अहं = मैं
न = नहीं
वेदभि = जनता
पुत्राणाम् = पुत्रों की
कुशल कुशलता
अकुशल अकुशलता
आत्मिकाम् = विषय
मित्र स्वजनों द्वारा त्याग गया दुखी हो वन में आ गया । मैं पुत्रो की कुशलता अकुशलता के विषय में नहीं जनता ।
प्रवृत्तिम् स्वजनानाम् च दाराणाम् चात्र संस्थितः
किं नु तेषाम् गृहे क्षेममक्षेम किं नु साम्प्रतम् ॥ २४ ॥
प्रवृत्तिम् = कार्य समाचार
स्वजनानाम् = स्वजनों के
च = और
दाराणाम् = पत्नी के

अत्र = यहां
संस्थितः= रह कर
तेषाम् = उनके
गृहे = घर में
किं नु क्षेमम् = क्या कुशलता है
किं नु अक्षेमम् = क्या अकुशलता है
साम्प्रतम् = अब, आजकल
यहां रहते हुए मैं स्वजनों और पत्नी का समाचार नहीं जनता , अब उनके घर में क्या कुशलता है क्या अकुशलता है ।
कथं ते किं नु सदवृत्ता दुर्वृत्ता किं नु मे सुताः ॥ २५ ॥
कथं = क्या
ते = वे
मे = मेरे
सुताः = पुत्र
किं नु सदवृत्ता = सदाचारी हैं
किं नु दुर्वृत्ता = दुराचारी है
क्या वे मेरे पुत्र सदाचारी है या दुराचारी है ।
राजोवाच ॥ २६ ॥

राजा बोला ।

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः ॥ २७ ॥

यैः = जिन
निरस्तो = त्याग दिया
भवान् = आप
लुब्धैः = लोभ में
पुत्र = पुत्र
दारादिभि पत्नी आदि द्वारा
धनैः = धन के

जिन धन के लोभी पुत्र पत्नी आदि द्वारा आप त्याग दिए गए।

तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाती मानसं ॥ २८ ॥

तेषुम् = उनके के लिए
किं = कैसे
भवतः = आपका

स्नेहम् = प्यार से
अनुबध्नाति = बंधता है
मानसं = मन

उनके लिए आप का मन कैसे प्यार में बंधता है ।

वैश्य उवाच ॥ २९ ॥
वैश्य बोला

एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः ॥ ३० ॥
एवं ही है
एतत् ऐसा
यथा = जैसे, जो
प्राह = कहना
भवान् = आपने
अस्मद्= मेरे
गतम् = लिए, बारे में
वचः = बात

आपने मेरे लिए जैसी बात कही है ऐसा ही है ।
किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरताम् मनः
यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ॥ ३१ ॥
पतिस्वजनहार्दं च हार्दि तेष्वेव में मनः
किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥ ३२ ॥
किं = क्या
करोमि = करूँ
न = नहीं
बध्नाति = बंधता
मम = मेरा
निष्ठुरताम् = निष्ठुरता से
मनः = मन
यैः = जिन ने
संत्यज्य = त्याग कर
पितृस्नेहं = पिता के स्नेह
धनलुब्धै: = धन के लोभ में
निराकृतः = अपमानित किया
पतिस्वजनहार्दं = पति और आत्मीय के प्रति प्यार

च = और
हार्दि = प्रीति
तेष्वेव = उनके ही लिए
मे= मेरे
मनः = मन में
किमेतन्नाभिजानामि = किं एततत् न अभिजानामी
किं = क्या
एतत् = यह
न अभिजानामी = नहीं जनता
जानन्नपि = जानते हुए भी
महामते = महाज्ञानी
क्या करूँ मेरा मन निष्ठुर नहीं होता जिन्होंने धन के लोभ में पिता के लिए स्नेह ,पति और आत्मीय के लिए प्यार त्याग कर अपमानित किया उन्ही के प्रति मेरे मन में प्रीति है ।
हे महामते मैं जनता हुआ भी नहीं जनता की यह क्या है ।
यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु
तेषाम् कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यम् च जायते ॥ ३३ ॥
करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ॥ ३४ ॥
यत् = जो
प्रेमप्रवणं = प्रेममग्न
चित्तं = मन
तेषाम् कृते = उनके लिए
मे मैं
विगुणेष्वपि = विगुणेषु अपि = दुर्गुणी भी
निःश्वासो = आहें , ठंडी सांसें
दौर्मनस्यम् = दुखी मन
च और
जयते = होना
करोमि किं = क्या करूँ
यत् = जो
न = नहीं
मनः = मन
तेषु = उनके
अप्रीतिषु = प्रीति का अभाव
निष्ठुरम् = निष्ठुर
दुर्गुणी लोगों के लिए भी जो मेरा मन प्रेममग्न है । उनके लिए ठंडी साँसे ले और दुखी हो रहा है । क्या करूँ उनकी प्रीति के अभाव में भी मेरा मन निष्ठुर नहीं हो रहा ।

मार्कण्डेय उवाच ॥ ३५ ॥
मार्कण्डेय बोला ।
ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ ॥ ३६ ॥
समाधिर्नाम वैश्योअसौ स च पार्थिवसत्तमः
कृत्वा तु तौ यथान्यायम् यथार्हम् तेन संविदम् ॥ ३७ ॥

तत= तब
तौ = वे दोनों
सहितौ = इकट्ठे
विप्र = हे विप्र
तं = उस
मुनिं = मुनि के
समुपस्थितौ = पास गए
समाधिर्नाम= समाधिः नाम = समाधि नाम का
वैश्य
असौ = वह
स = वह
च = और
पार्थिवसत्तमः = श्रेष्ठ राजा (सुरथ)

हे विप्र , तब, वह समाधि नाम का वैश्य और वह श्रेष्ठ राजा(सुरथ), दो-नों इकट्ठे उस मुनि के पास गए ।

कृत्वा = कर के
तु = और
तौ = उन दोनों ने
यथान्यायम् = न्याय अनुसार
यथार्हम् = यथा अर्हं = योग्यता अनुसार
तेन = उनको
संविदम् = अभिवादन किया

उन दोनों ने न्याय अनुसार और योग्यता अनुसार उसे अभिवादन किया ।
उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ ॥ ३८ ॥
उपविष्टौ = पास बैठ कर
कथाः = वार्तालाप

काश्चित् = कुछ
चक्रतुः = आरभ करना
वैश्य
पार्थिवौ

पास बैठ कर वैश्य और पार्थिवौ ने वार्तालाप आरम्भ किया ।

राजोवाच ॥ ३९ ॥
राजा बोला ।

भगवंस्त्वामहम् प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥ ४० ॥

भगवन् = भगवन
तवां = आप से
अहम् = मैं
प्रष्टुम् = पूछने की
इच्छामि = इच्छा है
एकं = एक
वदः = कहिये , बताइये
व = आप
तत् = वह

भगवन मैं आपसे एक (बात) पूछना चाहता हूँ , आप वह बताइये ।

दुखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततां विना
ममत्वम् गतराज्यस्य राज्यांगेष्वखिलेष्वपि ॥ ४१ ॥

दुखाय = दुखी
यन्मे = यत मे = जो मेरा
मनसः = मन
स्वचित्तायत्ततां = स्व चित्त आयत्तताम् = मेरा मन आधीनता
विना = रहित
ममत्वम् = ममता
गतराज्यस्य = गए राज्य के
राज्यांगेष्वखिलेष्वपि = राज्य अङ्गेषु अखलेषु अपि = राज्य के सभी अंगों में

मेरा मन जो दुखी है। मेरा मन अधीनता रहित है । गए राज्य और राज्य के सभी अंगों में मेरी ममता है ।

जानतोपि यथाज्ञस्य किमेतनमुनिसत्तम
अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः ॥ ४२ ॥

जानतोपि = जानते हुए भी
यथाज्ञस्य = ऐसा अज्ञान
किमेतन = किं एतत = ये क्या है
मुनिसत्तम = मुनि श्रेष्ट
अयं = यह (वैश्य)
च = और
निकृतः = बेईमान
पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः = पुत्रः दारैः भृतैः तथा उज्झितः = इस प्रकार पुत्र पत्नी भृत्यों द्वारा त्याग गया

हे मुनि श्रेष्ट जानते हुए भी ऐसा अज्ञान, ये क्या है ? और यह वैश्य भी बेईमान पुत्र, पत्नी और भृत्यों द्वारा त्याग गया , इस प्रकार

स्वजनेन च सन्त्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति
एवमेष तथाहं च द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ ॥ ४३ ॥

स्वजनेन = अपने लोगों द्वारा
च = और
सन्त्यक्तस्तेषु संत्यक्त: तेषु
संत्यक्त: त्याग दिया
तेषु = उनके लिए
हार्दी = प्रीति
तथाप्यति = तथापि अति = तब भी अत्यंत
एवमेष = इस प्रकार यह
तथाहं = उस प्रकार मैं
च = और
द्वावप्यत्यन्तदुःखितौ द्वावपि अत्यंत दुःखितौ = दोनों अत्यंत दुखी हैं

(यह वैश्य) अपने लोगों द्वारा त्यागा गया ,तब भी उनके लिए अत्यंत प्रीति है । इस प्रकार यह और उस प्रकार यह और उस प्रकार मैं अत्यंत दुखी हैं ।

दृष्टदोषेऽपि विषय ममत्वाकृष्टमानसौ
तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥ ४४॥
ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढ़ता ॥ ४५ ॥

दृष्टदोषेअपि दोष देखने पर भी
विषय = विषय के लिए
ममत्वाकृष्टमानसौ = ममत्व आकृष्ट मानसो = ममता में मन आकृष्ट हो रहा है
तत = तब
किं= क्या
एतत= यह
महाभाग
यत मोहो = जो मोह में
ज्ञानिनोरपि = ज्ञानी होते हुए भी
मम = मेरी
अस्य = इसकी
च = और
भवति = है , घटित होना
ऐषा = ऐसी
विवेकान्धस्य = विवेकशून्य
मूढ़ता = मूढ़ता

दोष देखने पर भी विषय के लिए ममता में मन आकृष्ट हो रहा है , तब यह क्या है जो मोह में ज्ञानी होते हुए भी मेरी और इसकी ऐसी विवेकशून्य मूर्खता हो रही है ।

ऋषिरुवाच ॥ ४६ ॥

ऋषि बोला ।

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे ॥ ४७॥
ज्ञानम् =ज्ञान
अस्ति = है
समस्तस्य =सब
जन्तोः = जीवों
विषयगोचरे = विषय मार्ग

विषय मार्ग(अनुभूति) का ज्ञान सब जीवों को है

विषयश्च महाभाग यान्ति चैवं पृथक्पृथक् ।
विषयश्च = और विषय
महाभाग = हे महाभाग
यान्ति = पाना , प्राप्ति
चैवं च एवं और इस प्रकार
पृथक्पृथक् अलग अलग हैं

और इस प्रकार हे महाभाग विषय और विषय को प्राप्ति (के तरीके) अलग अलग हैं
दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे ॥ ४८॥

दिवान्धाः= दिन में अंधे अर्थात दिन में नहीं देख सकते
प्राणिनः = प्राणी
केचित् = कुछ
रात्रौ = रात को
अन्धः = नहीं देख पाते
तथा = इस प्रकार
अपरे = दूसरे

कुछ प्राणी दिन में नहीं देख सकते इस प्रकार कुछ रात में नहीं देख सकते

केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः ।
ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते न हि केवलम् ॥ ४९॥

केचिद्= कुछ
दिवा =दिन में
तथा= इसी प्रकार
रात्रौ = रात को
प्राणिनः = प्राणी
तुल्य = सामान रूप से
दृष्टयः = देख पाते हैं

इसी प्रकार कुछ प्राणी दिन तथा रात में सामान रूप से देख पाते हैं

।

ज्ञानिनो = ग्यानी हैं
मनुजाः = मनुष्य
सत्यं = सत्य है
किंतु = परन्तु
ते = वे
न = नहीं
हि = निश्चित रूप से
केवलम् = सिर्फ

मनुष्य गाणी हैं ये सच है परन्तु निश्चित रूप से सिर्फ वे ही ग्यानी नहीं हैं ।

यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः ।
ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ॥ ५०॥
यतो हि = इसी प्रकार
ज्ञानिनः = समझदार हैं
सर्वे = सब
पशुपक्षिमृगादयः = पशु पक्षी मृग आदि प्राणी

इसी प्रकार सब पशु पक्षी मृग आदि प्राणी समझदार हैं ।

ज्ञानं = ज्ञान
च = और
तद् मनुष्याणां = जैसा मनुष्यों का
यत्तेषां यत तेषाम् = वैसा ही उन
मृगपक्षिणाम् पशु पक्षियों का है

और जैसा मनुष्यों का ज्ञान हैवैसा ही उन पशु पक्षियों का है

मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः ।
मनुष्याणां = मनुष्यों की
च = और
यत्तेषां =यत् तेषाम् = जो उनकी
तुल्यमन्यत्तथोभयोः ।

तुल्यम्= सामान है
अन्यत् = दूसरी बातें
तथा = इस प्रकार
उभयोः = दोनों में

और जैसी मनुष्यों की होती है वैसी उनकी इस प्रकार दोनों की समझ और दूसरी बातें सामान है ।

ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥ ५१॥

कणमोक्षादृतान् मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा ।

ज्ञानेऽपि= ज्ञान भी
सति = होते हुए (उपस्थित होते हुए)
पश्यैतान् = देखो
पतङ्गान्= पक्षियों को
शाव = शावकों की
चञ्चुषु = चोंच में

कणमोक्षादृतान् =अन्न के दाने दे रहे हैं
मोहात्पीड्यमानानपि
मोहात् = मोह वश
पीड्यमानानपि = पीड़ित होते हुए भी
क्षुधा = भूख से

ज्ञान होते हुए भी उन पक्षियों को देखो जो भूख से पीड़ित होते हुए भी मोहवश शावकों की चोंच में अन्न के दाने दे रहे हैं

मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति ॥ ५२॥
लोभात् प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं न पश्यसि ।

मानुषा = मनुष्य
मनुजव्याघ्र = नर श्रेष्ट
साभिलाषाः = अभिलाषा युक्त
सुतान् = पुत्रों के
प्रति =लिए

लोभात् = लोभ से
प्रत्युपकाराय = प्रति उपकाराय = उपकार के बदले के लिए
नन्वेतान् = ननु एतां = निश्चय ही ये
किं न पश्यसि = क्या नहीं देखते

हे नरश्रेष्ठ क्या आप नहीं देखते की मनुष्य उपकार के बदले के लिए लो-भवश पुत्रों के लिए अभिलाषा युक्त हैं ।

तथापि ममतावर्त्ते मोहगर्ते निपातिताः ॥ ५३॥
महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा ।

तथापि= तो भी (ज्ञान होते भी)
ममतावर्त्ते= ममता के चक्र
मोहगर्ते= मोह के गर्त में
निपातिताः = गिरे हैं
महामायाप्रभावेण= महामाया के प्रभाव से
संसारस्थितिकारिणा= संसार की स्तिथि(जनम मरण की परम्परा) की कारक

तो भी (ज्ञान होते भी) संसार की स्तिथि(जनम मरण की परम्परा) की कारक महामाया के प्रभाव से ममता के चक्र, मोह के गर्त में गिरे हैं ।

तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥ ५४॥
महामाया हरेश्चैषा तया सम्मोह्यते जगत्

तन्नात्र विस्मयः कार्यो= तो यहां आश्चर्य क्या करना
योगनिद्रा = योगनिद्रा
जगत्पतेः = जगत्पति
महामाया = महामाया
हरेश्चैषा = हरी और यह
तया = उसने
सम्मोह्यते =सम्मोहित किया है
जगत्= संसार

तो यहां आश्चर्य क्या करना, योगनिद्रा महामाया ने जगत्पति हरि और इस सारे संसार को सम्मोहित किया हुआ है ।

ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥ ५५॥

बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ।

ज्ञानिनामपि=ज्ञानियों के भी
चेतांसि = मन को
देवी देवी
भगवती = भगवती
हि सा = वे ही

बलादाकृष्य बलात् आकृष्य = बलपूर्वक आकृषित करके
मोहाय= मोह में
महामाया = महामाया
प्रयच्छति = डाल देती हैं

वे भगवती महामाया ही ज्ञानियों के मन को भी बलपूर्वक आकृषित करके मोह में डाल देती हैं ।

तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ॥ ५६॥

सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये ।
तया = उनके द्वारा ही
विसृज्यते = रचा गया
विश्वं = ब्रह्माण्ड
जगदेतच्चराचरम्
जगत एतद चराचरम् =ये चर अचर जगत

सैषा = वे ही
प्रसन्ना = प्रसन्न होने पर
वरदा = वरदान
नृणां = मनुष्यों की
भवति = होती हैं
मुक्तये = मुक्ति का

उनके द्वारा ही ब्रम्हांड और ये चर अचर जगत रचा गया । वे ही प्रसन्न होने पर मनुष्यों की मुक्ति का वरदान होती हैं।

सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥ ५७॥

संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ॥ ५८॥

सा =वह
विद्या = विद्या (ज्ञान)
परमा = परम
मुक्तेर्हेतुभूता मुक्ति की हेतु (कारण)
सनातनी=सनातनी (अविनाशी)eternal

संसारबन्धहेतुश्च = और संसार बंधन की हेतु
सैव = वे ही
सर्वेश्वरेश्वरी =सम्पूर्ण ईश्वरों की अधीश्वरी

वह परम विद्या संसार बंधन और मोक्ष की हेतु सनातनी देवी हैं, वे ही सम्पूर्ण ईश्वरों की अधीश्वरी हैं ।

राजोवाच ॥ ५९॥
राजा बोला ।

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥ ६०॥
भगवन् = हे भगवन
का हि = कौन हैं
सा देवी = वह देवी
महामायेति= महामाया इति= महामाया इस प्रकार
यां = जिन्हें
भवान् = आप

भगवन जिन्हें आप महामाया कहते हैं वो देवी कौन हैं ।

ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज ।
यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा ॥ ६१॥

ब्रवीति = बताइये
कथं = कैसे
उत्पन्ना = प्रकटीकरण, उत्पन्न
सा= वह
कर्म= कार्य
अस्याः = उसके
च = और
किं = क्या
द्विज =ब्राह्मण
यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा
यत = जो
प्रभावा = प्रभाव, शक्ति
च = और
सा = वह
देवी=देवी
यत = जो
स्वरूपा = स्वरुप
यत = जो
उद्भवा = रचना

हे ब्राह्मण बताइये वो कैसे उत्पन्न हुईं, उनके क्या कार्य हैं, उनका क्या प्र-भाव है क्या स्वरुप है कैसे रचना हुई ।

तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर ॥ ६२॥

तत्सर्वं = वह सब
श्रोतुमिच्छामि श्रोतुम् इच्छामि = सुनना चाहता हूँ
त्वत्तो = आपसे
ब्रह्मविदां वर = हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ

हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ वह सब आपसे सुनना चाहता हूँ ।

ऋषिरुवाच ॥ ६३॥

ऋषि बोला ।

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥ ६४॥

नित्य = नित्य , चिरकालिक , अविनाशी
एव = ही
सा= वह
जगत=संसार
मूर्तिः = मूर्ति, रूप
तया = उसका
सर्वं = सारा
इदं= यह
ततम् = फैला है

वह नित्य स्वरुप है , यह फैला हुआ सारा संसार उसी का रूप है ।

तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम ।
तथापि= तब भी
तत् समुत्पत्तिः उनका जनम हुआ
बहुधा = अनेक बार
श्रूयतां = सुनो
मम = मुझसे

तब भी उनका अनेक बार जनम हुआ वह मुझसे सुनो ।

देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ॥ ६५॥

देवानां देवताओँ के
कार्यसिद्ध्यर्थम= कार्यों को पूर्ण करने के लिए
आविर्भवति = प्रकट होती हैं
सा यदा वह जब

देवताओं के कार्यों को पूर्ण करने के लिए जब वो प्रकट होती है ।

उत्पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते ।

उत्पन्न= उत्पन्न हुई
इति =ऐसा
तदा = तब
लोके= संसार में
सा = वह
नित्य अपि = नित्य होते भी
अभिधीयते = कहा जाता है

तब नित्य होते हुए भी संसार में उनका जनम हुआ ऐसा कहा जाता है ।

योगनिद्रां यदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥ ६५॥

आस्तीर्य शेषमभजत् कल्पान्ते भगवान् प्रभुः ।

योगनिद्रां =योगनिद्रा
यदा =जब
विष्णुः =विष्णु
जगति = जगत को
एकार्णवीकृते = एक अर्णव कृते = एक समुन्द्र करके
आस्तीर्य = शैया बिछा के फैला के
शेषम् = शेषनाग
अभजत् = लीन थे
कल्पान्ते = कल्प के अंत में
भगवान् प्रभुः भगवान विष्णु

जब भगवान विष्णु संसार को एक समुन्दर बना शेषनाग की शिया बिछ कर योगनिद्रा में लीन थे

तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभौ ॥ ६७॥
विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ ।

तदा = तब
द्वौ = दो
असुरौ = राक्षस
घोरौ = भयानक
विख्यातौ = प्रसिद्ध
मधुकैटभौ = मधु कैटभ
विष्णुकर्णमलोद्भूतौ = विष्णु के कान के मेल से उत्पन्न
हन्तुम् = मारने के लिए
ब्रह्माणं = ब्रह्मा को
उद्यतौ = तैयार हुए

तब मधु कैटभ नाम से कुख्यात दो भयंकर राक्षस विष्णु के कान के मेल से उत्पन्न हुए और ब्रह्मा को मरने के लिए तैयार हुए ।

स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ॥ ६८॥
दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रौ प्रसुप्तं च जनार्दनम् ।

सः= उस
नाभिकमले= नाभि कमल ने
विष्णोः= विष्णु की
स्थितः= स्थित
ब्रह्मा= ब्रम्हा ने
प्रजापतिः= प्रजापति
दृष्ट्वा= देखा
तौ असुरौ= उन दोनों राक्षसों
च= और
उग्रौ = भयंकर
प्रसुप्तम् =सोते हुए
च = और
जनार्दनम्= विष्णु

उस विष्णु की नाभि कमल में स्थित प्रजापति ब्रम्हा ने उन दो उग्र राक्षसों

को और सोते हुए भगवान विष्णु को देखा

तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयः स्थितः ॥ ६९॥
विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम् ।

तुष्टाव = मन्त्रों द्वारा प्रशंसा ki
योगनिद्रां = योगनिद्रा की
ताम् = उस
एकाग्रहृदयस्थितः = एकाग्र चित होकर
प्रबोधनार्थाय = जगाने के लिए
हरेः =विष्णु को
हरिनेत्रकृतालयाम् । हरी नेत्र कृत आलयाम् = हरी की आँखों में किया है घर जिसने

उस ब्रह्मा ने भगवान विष्णु को जगाने के लिए उनके नेत्रों में स्थत योगनिद्रा की प्रशंसा की ।

विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥ ७०॥
विश्वेश्वरीं= विश्व की अधीश्वरी
जगद्धात्रीं= जगत को धारण करने वाली

स्थितिसंहारकारिणीम् = संसार का पालन और संहार करने वाली

निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ ७१॥

निद्रां भगवतीं भगवती योग निद्रा
विष्णोरतुलां विष्णोः अतुलाम् =अतुलनीय
तेजसः = शक्ति
प्रभुः= प्रभु

प्रभु विष्णु की योगनिद्रा भगवती अतुलनीय शक्ति है।

ब्रह्मोवाच ॥ ७२॥
ब्रह्मा बोले ।

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥ ७३॥

त्वं = तुम
स्वाहा = स्वाहा मन्त्र (प्रत्येक आहुति अर्पण पर बोले जाने वाला शब्द)
त्वं = तुम
स्वधा = हवन में अर्पित की जाने वाली सामग्री
त्वं हि = तुम ही
वषट्कारः = वषट्कार (यज्ञ में आहुतियों के सम्पूर्ण होने के बाद बोले जाना वाला शब्द)
स्वरात्मिका = स्वर की आत्मा हो ।

तुम स्वाहा मन्त्र , तुम हवन में अर्पित की जाने वाली सामग्री , तुम ही वषट्कार (यज्ञ में आहुतियों के सम्पूर्ण होने के बाद बोले जाना वाला शब्द) स्वर की आत्मा हो ।

सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ।
अर्धमात्रा स्थिता नित्या यानुच्चार्याविशेषतः ॥ ७४॥

सुधा = जीवन दायिनी सुधा
तवं = तुम
अक्षरे =अक्षर
नित्ये = नित्य
त्रिधा = तीन
मात्रात्मिका मात्रा आत्मिका = मात्राओं का आधार या स्वरुप
स्थिता = स्थित
अर्धमात्रा = आधी मात्राएँ बिंदु रुपी
स्थिता = स्थित
नित्या = स्थायी
यानुच्चार्याविशेषतः = या अनुच्चार्या विशेषतः = जिनका उच्चारण विशेष रूप से नहीं होता है

तुम जीवनदायनी सुधा हो । तुम ही नित्य अक्षर में तीन मात्राओं (अकार, उकार , मकार) के आधार में स्थित हो । और बिंदु रुपी आधी मात्र जिनका उच्चारण विशेष रूप से नहीं होता है में स्थित हो ।

त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ।
त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत् सृज्यते जगत् ॥ ७५॥

त्वमेव = तवं एव = तुम ही
सन्ध्या = संध्या
सावित्री =सावित्री
त्वं = तुम
देवि = देवी
जननी = जनम देने वाली
परा = परम
त्वयैतद्धार्यते = त्वयि - एतत्- धार्यते = तुमने- इस- धारण किया है
विश्वं = विश्व को
त्वयैतत् = तुमने इस
सृज्यते = सृजन किया है
जगत् = जगत का

तुम ही संध्या , सावित्री , तुम परम जननी हो । तुमने इस विश्व को धारण किया है , तुमने इस संसार का सृजन किया है ।

त्वयैतत् पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ।
त्वयैतत् = तुम इसका
पाल्यते = पालन करती हो
देवि = देवी
त्वमत्स्यन्ते तवं अत्स्यन्ते = तुम ग्रास बना लेती हो
च = और
सर्वदा = हमेशा

तुम इस (जगत) का पालन करती हो , और तुम ही (कल्पांत में) इसे ग्रस बना लेती हो (नष्ट कर देती हो)

विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥ ७६॥

तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ।
विसृष्टौ = सृजन में

सृष्टिरूपा = सृष्टिरूपा
त्वं = तुम
स्थितिरूपा= स्थितिरूपा
च = और
पालने = पालते हुए

तथा= इस प्रकार
संहृतिरूपा= संहार रूप
अन्ते = अंत में
अस्य जगतः = इस जगत को
जगन्मये = जगन्मयी देवी

हे जगन्मयी देवी इस जगत के सृजन में तुम सृष्टि रूपा ,पालते हुए स्थितिरूपा(संरक्षक), तथा अंत में संहार रूपा तुम्ही हो।

महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥ ७७॥

महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृति हो ।

महामोहा च भवती महादेवी महेश्वरी ।
प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी ॥ ७८॥
भवती= आप
प्रकृतिस्त्वं प्रकृतिः त्वं तुम प्रकृति
च = और
सर्वस्य =सब की

गुणत्रयविभाविनी = तीन गुणों को उत्पन्न करने वाली हो

और आप महामोहा महादेवी महेश्वरी हो । तुम ही तीन गुणों को उत्पन्न करने वाली सबकी प्रकृति हो ।

कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा ।
त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥ ७९॥

कालरात्रि: = कालरात्रि

महारात्रि := महारात्रि :
मोहरात्रिः = महारात्रि :
च = और
दारुणा = भयंकर
त्वं = तुम
श्रीस्त्वमीश्वरी = श्री: त्वं ईश्वरी श्री तुम ईश्वरी
त्वं=तुम
ह्रीः=ह्री
बुद्धिर्बोधलक्षणा = बुद्धिः बोध लक्षणा = बोध स्वरूपा बुद्धि

तुम भयंकर कालरात्रि, महारात्रि, मोहरात्रि हो , तुम श्री, तुम ईश्वरी तुम ह्री, तुम बोध स्वरूपा बुद्धि हो ।

लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च ।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ ८०॥

शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ।
लज्जा = लज्जा
पुष्टिस्तथा= पुष्टिः(विकास , पोषण) तथा = इस प्रकार
तुष्टिस्त्वं= तुष्टिः त्वं = तुष्टि(संतोष) तुम
शान्तिः =शांति
क्षान्तिरेव =क्षान्ति: = क्षमा
च = और
खड्गिनी = तलवार धारिणी
शूलिनी = शूल धारिणी
घोरा = घोर रूपा
गदिनी -= गदा धारिणी
चक्रिणी = चक्र धारिणी
तथा = और
शङ्खिनी = शंख धारिणी
चापिनी = चाप धारिणी

बाणभुशुण्डीपरिघायुधा= बाण भुशुण्डी परिघ आयुधा बाण= भुशुण्डी परिघ शस्त्र धारिणी

इसी प्रकार तुम लज्ञा , पुष्टि , तुष्टि , शांति और क्षमा हो । तुम तलवार धारिणी, शूल धारिणी, घोर रूपा , गदा धारिणी ,शंख धारिणी ,चाप धारिणी , तथा भुशुण्डी, परिघ, शस्त्र धारिणी हो।

सौम्या सौम्यतराशेषसौम्येभ्यस्त्वतिसुन्दरी ॥ ८१॥
सौम्या सौम्यतरा = सौम्यों में सौम्य(भद्र , सुशील, दयालु)
अशेषसौम्येभ्य: = सभी सौम्यों से
त्वतिसुन्दरी=
तु = भी ,
अति सुंदरी = अत्यंत सुन्दर हो

सौम्यों में सौम्य ,सभी सौम्यों से भी अत्यंत सुन्दर हो।

परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ।

परापराणां पर अपराणां = श्रेष्ठ और श्रेष्टतरों में
परमा = परम (ultimate)
त्वमेव = तुम ही
परमेश्वरी = परम ईश्वरी हो

श्रेष्ठ और श्रेष्टतरों में परम , परमेश्वरी तुम ही हो ।

यच्च किञ्चित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥ ८२॥

तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे मया ।

यच्च = यत् च= और जो
किञ्चित्क्वचिद्वस्तु= किञ्चित् क्वचिद् वस्तु = कुछ कहीं भी वस्तु
सदसद्वाखिलात्मिके= सत् असत् व्= सत्य या असत्य
अखिल = सब
आत्मिके = आधार में
तस्य = उन
सर्वस्य = सब की
या= जो

शक्तिः शक्ति है
सा = वह
त्वं = तुम हो
तदा = तब
किं = कैसे
स्तूयसे = स्तुति हो सकती है
मया = मेरे द्वारा

और कहीं भी जो कुछ सत असत सब वस्तु है उन सभी के आधार में जो शक्ति है वह तुम हो ।तब मेरे द्वारा कैसे स्तुति हो सकती है ।

यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ ८३॥

सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ।
यया= जो
त्वया = तुम्हारे द्वारा
जगत्स्रष्टा= जगत का रचयिता
जगत्पात्यत्ति= जगत पाति = जगत का पालक
अत्ति = संहार
यो = जो
जगत् = जगत

सोऽपि उनको भी
निद्रावशं = नींद के वश में
नीतः = लाया हुआ है या डाला हुआ है
कस्त्वां = कः त्वां = कौन तुम्हारी
स्तोतुमिहेश्वरः = स्तोतुं= स्तुति कर सकता है
महेश्वर: = महेश्वर विष्णु

तुम्हारे द्वारा महेश्वर विष्णु को , जो जगत के सृजक ,पालक, और संहार-कर्ता हैं ,उनको भी नींद के वश में लाया हुआ है , तुम्हारी स्तुति कौन कर सकता है ।

विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥ ८४॥

कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत् ।

विष्णुः विष्णु
शरीरग्रहणम् = शरीर ग्रहण
अहम् = मुझे
ईशान = शिव
एव = ही
च = और

कारिता:= करवाया है
ते = तुम्हारे द्धारा
यतोऽतस्त्वां यतो अतः त्वां इसलिए अब तुम्हारी
कः = कौन
स्तोतुं = स्तुति
शक्तिमान् शक्तिशाली
भवेत् होगा

मुझे , विष्णु और शिव को तुमने ही शरीर ग्रहण करवाया है इसलिए अब तुम्हारी स्तुति करने वाला कौन समर्थ है ।

सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ ८५॥

सा त्वम = तुम खुद
इत्थं = इस प्रकार
प्रभावैः = प्रभावों से
स्वैरुदारैर्देवि= स्वैः उदारैः देवी = अपने उदार
देवी = हे देवी
संस्तुता = प्रशंसित हो

हे देवी इस प्रकार तुम स्वयं अपने उदार प्रभावों से प्रशंसित हो ।
मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ।
मोहयैतौ= मोहय = मोहित कर दो
एतौ= इन
दुराधर्षौ = अहंकारी (अजेय)
असुरौ मधुकैटभौ = असुरों मधु कैटभ को

इन अहंकारी असुरों मधु कैटभ को मोहित करिये

प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥ ८६॥

प्रबोधं = जागृत, जाग , जागरण
च = और
जगत्स्वामी = जगत के स्वामी
नीयतामच्युतो नीयताम् = ले आना
अच्युतो = विष्णु का एक नाम
लघु= शीघ्र

और शीघ्र ही जगत के स्वामी विष्णु को जागृत (अवस्था) में ले आइये (जगा दीजिये)

बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ ८७॥

बोधश्च बोधः च = ज्ञान
क्रियतामस्य =क्रियताम = सक्रिय करना
अस्य = इन में
हन्तुमेतौ = हन्तुं मरने का
एतौ = इन
महासुरौ= महा असुरों

और इन (विष्णु) में इन महासुरों को मरने का ज्ञान सक्रिय कर दीजिये ।

ऋषिरुवाच ॥ ८८॥
ऋषि बोला ।

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥ ८९॥

विष्णोः प्रबोधनार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ ।

एवं = इस प्रकार
स्तुता = स्तुति करने पर
तदा = तब
देवी = देवी
तामसी = तामसी (तमोगुण की अधिष्ठात्री)
तत्र = वहां
वेधसा =ब्रह्मा ने
विष्णोः = विष्णु को
प्रबोधनार्थाय = जगाने के लिए
निहन्तुं = मारने के लिए
मधुकैटभौ = मधुकैटभ को

इस प्रकार तब वहाँ ब्रह्मा द्वारा मधुकैटभ को मारने के लिए और विष्णु को जगाने के लिए स्तुति करने पर तामसी (तमोगुण की अधिष्ठात्री) देवी

नेत्रास्यनासिकाबाहुहृदयेभ्यस्तथोरसः ॥ ९०॥

निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः ।

नेत्रास्य = उनकी (विष्णु की) आँखों
नासिका= नाक
बाहु = बाहों
हृदयेभ्य = हृदय
तथा = इस प्रकार
उरसः = छाती

निर्गम्य= निकल कर
दर्शने = दर्शन के लिए
तस्थौ= खड़ी हुई
ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः अवयक्त जनम ब्रह्मा

उनकी (विष्णु की) आँखों, नाक ,हृदय छाती से इस प्रकार निकल कर अवयक्त जनम ब्रह्मा की दृष्टि के समक्ष खड़ी हुई ।

उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः ॥ ९१॥

एकार्णवेऽहिशयनात्ततः स ददृशे च तौ ।
उत्तस्थौ = उठ खड़े हुए
च= और
जगन्नाथ:= जगत के स्वामी
तया = उस योगनिद्रा से
मुक्तो = मुक्त हो
जनार्दनः= विष्णु

एकार्णवे = एक वर्ण हुई पृथ्वी पर
अहिशयनात् = शेषनाग की शैया से
ततः = तब
स = उन्होए
ददृशे = देखा
च = और
तौ = उन दोनों को

और तब उस योगनिद्रा से मुक्त हो कर जगत के स्वामी विष्णु एकार्णव के जल में शेषनाग की शैय्या से उठ खड़े हुए और उन्होंने उन दोनों को देखा ।

मधुकैटभौ दुरात्मानावतिवीर्यपराक्रमौ ॥ ९२॥

क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ ।

मधुकैटभौ = मधु कैटभ
दुरात्मानौ = दुष्ट
अतिवीर्यपराक्रमौ= अति बलशाली और पराकर्मी

क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं= क्रोध रक्त अक्षणौ= क्रोध से लाल आँखों वाले
अत्तुम् = खाने का
ब्रह्माणं =ब्राह्मण को
जनितोद्यमौ जनित उद्यमौ = प्रयास कर रहे थे

क्रोध से लाल आँखों वाले अति बलशाली और पराकर्मी दुष्ट मधुकैटभ

ब्राह्मण को खाने का प्रयास कर रहे थे ।

समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः ॥ ९३॥
समुत्थाय = उठ कर
ततस्ताभ्यां ततः ताभ्याम् = उन दोनों से
युयुधे = युद्ध किया
भगवान् हरिः = भगवान विष्णु ने

तब भगवान विष्णु ने उठ कर उन दोनों से युद्ध किया ।

पञ्चवर्षसहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः ।
पञ्चवर्षसहस्राणि= पांच हज़ार वर्षों तक
बाहुप्रहरणो = बाहु युद्ध किया
विभुः = भगवन विष्णु ने

भगवन विष्णु ने पांच हज़ार वर्षों तक बाहु युद्ध किया ।

तावप्यतिबलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥ ९४॥
उक्तवन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम् ॥ ९५॥

तौ अपि बलोन्मत्तौ =वे भी बल से उन्मत
महामाया= मोहमाया द्धारा
विमोहितौ = मोहित हो कर
उक्तवन्तौ = बोले
वरोऽस्मत्त = हम से वरदान
व्रियतामिति = व्रियताम् बोलो , मांगो
इति = इस प्रकार
केशवम् = विष्णु को

वे भी बल से उन्मत मोहमाया द्धारा मोहित हो कर इस प्रकार बोले , हम से वरदान मांगो ।

श्रीभगवानुवाच ॥ ९६॥

भगवान विष्णु बोले ।

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ॥ ९७॥

किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मया ॥ ९८॥
भवेताम् = होना
अद्य = अब , आज
मे = मुझसे
तुष्टौ = प्रसन्न हैं
मम = मेरे द्वारा
वध्यौ = मारे
उभौ = आप दोनों
अपि = भी
किम् = क्या
अन्येन = दूसरा
वरेण = वरदान
अत्र = यहां
एतावत् = यही
हि = निश्चित
वृतम् = चुना
मया ।= मेरे द्वारा

अब आप मुझसे प्रसन्न हैं तो दोनों ही मेरे द्वारा मारे जाओ ,यहां(युद्ध में) क्या दूसरा वरदान? , यही मेरे द्वारा चुना गया है ।

ऋषिरुवाच ॥ ९९॥
ऋषि बोला ।

वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत् ॥ १००॥

विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः ।

वञ्चिताभ्याम् = ठगे जाने पर
इति = इस प्रकार

तदा = तब
सर्वमापोमयं सर्वं = सारे
आपोमयं = पानी से युक्त
जगत् = संसार को

विलोक्य = देख कर
ताभ्यां = उन्होंने
गदितो = कहा
भगवान् = भगवान
कमलेक्षणः = कमल नयन

इस प्रकार ठगे जाने पर उन्होंने सारे जगत हो पानी से निहित देख कर भगवान कमल नयन से कहा ।

आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥ १०१॥

आवाम्=हमें
जहि=मारिये
न= नहीं
यत्र= जहां
उर्वी= पृथ्वी
सलिलेन=पानी से
परिप्लुता = तर हो , युक्त हो

हमें जहां पृथ्वी पानी से युक्त न हो वहाँ मारिये ।

ऋषिरुवाच ॥ १०२॥
ऋषि बोला ।

तथेत्युक्त्वा भगवता शङ्खचक्रगदाभृता ।
कृत्वा चक्रेण वै छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥ १०३॥

तथा=ऐसा ही हो
इति=ये
उक्त्वा =कह कर

भगवता = विष्णु ने
शङ्खचक्रगदाभृता = शंख चक्र गदा धारी
चक्रेण = चक्र से
वै छिन्ने कृत्वा = काट दिया
जघने = जाँघ पर रख कर
शिरसी = सर
तयोः = उनका

ऐसा ही हो यह कहते हुए शंख चक्र गदा धारी विष्णु ने उनका सर जांघ पर रख कर चक्र से काट दिया ।

एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम् ।
प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ॥ १०४॥

एवं = इस प्रकार
ऐषा= वह
समुत्पन्ना = उत्पन्न हुईं
ब्रह्मणा = ब्रह्मा के
संस्तुता =स्तुति करने पर
स्वयम्= खुद
प्रभावम् = प्रभाव
अस्या = उस
देव्याः = देवी के
तु = और
भूयः = फिर से
शृणु = सुनो
वदामि = बताता हूँ
ते = वे

इस प्रकार ब्रह्मा के स्वयं स्तुति करने पर वे प्रकट हुईं । देवी के और क्या प्रभाव हैं पुनः बताता हूँ , सुनो ।

। ऐं ॐ ।
॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
मधुकैटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १॥

द्वितीयोऽध्यायः

विनियोगः
अस्य श्री मध्यमचरित्रस्य विष्णुर्ऋषिः ।
श्रीमहालक्ष्मीर्देवता ।
उष्णिक् छन्दः । शाकम्भरी शक्तिः । दुर्गा बीजम् ।
वायुस्तत्त्वम् ।
यजुर्वेदः स्वरूपम् । श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थे
मध्यमचरित्रजपे विनियोगः ।
। ध्यानम् ।
ॐ अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नानां

सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥

ॐ अक्षस्त्रक् = रुद्राक्ष माला
परशुम्= परशु
गदेषुकुलिशं = गदा , कुलिश
पद्मं = पद्म
धनुः = धनुष
कुण्डिकां= कुण्डिका
दण्डं = दंड
शक्तिमसिं = शक्ति , तलवार
च =और
चर्म = ढाल
जलजं = शंख
घण्टां = घंटा
सुराभाजनम् = मधु पात्र
शूलं = त्रिशूल
पाश= पाश
सुदर्शने च = और सुदर्शन चक्र
दधतीं हस्तैः = हाथों में धारण करती है
प्रसन्नानां= प्रसन्न मुख वाली
सेवे = भजन करता हूँ
सैरिभमर्दिनीमिह = महिषासुर को मारने वाली इस
महालक्ष्मीं = महालक्ष्मी का

सरोजस्थिताम्= कमल पर बैठी हुई

मैं कमल पर बैठी हुई प्रसन्नमुखी , महिषासुर को मारने वाली इस महाल-क्ष्मी का भजन करता/करती हूँ जो हाथों में रुद्राक्ष माला, परशु, गदा , कुलिश, पद्म, धनुष, कुण्डिका, दंड , शक्ति , तलवार और ढाल, शंख, घंटा , मधु पात्र, त्रिशूल, पाश और सुदर्शन चक्र धारण करती है ।

ॐ ह्लीं ऋषिरुवाच ॥ १॥

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा ।
महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ॥ २॥

देवासुरम् = देवा असुरम् = देवों और असुरों में
अभूत् = हुआ
युद्धं = युद्ध
पूर्णम् = पुरे
अब्दशतं = सौ साल
पुरा = पूर्वकाल में
महिषे = महिषासुर
असुराणाम् = असुरों के
अधिपे = राजा थे
देवानाम् = देवताओं के
च = और
पुरन्दरे = इंदर

देवों और असुरों में पूर्वकाल में पुरे सौ साल तक युद्ध हुआ । महिषासुर असुरों और इंद्र देवताओं के राजा थे ।

तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम् ।
जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः ॥ ३॥

तत्र = वहां
असुरैः = असुरों से
महावीर्यैः = महावीर
देवसैन्यम् = देवताओं की सेना
पराजितम् = पराजित हुई
जित्वा = जीत कर
च = और

सकलान् = सब
देवान् = देवताओं को
इन्द्रः = इन्दर
अभूत् = बन गया
महिषासुरः = महिषासुर

वहाँ महावीर असुरों से देवताओं की सेम पराजित हुई सब देवताओं को जीत कर महिषासुर इन्दर बन गया ।

ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम् ।
पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥ ४॥

ततः = तब
पराजिताः = हारे हुए
देवाः = देवता
पद्मयोनिम् = कमल से उत्पन्न
प्रजापतिम् = ब्रह्मा को
पुरस्कृत्य =पुरः कृत्य= आगे कर के
गताः = गए
तत्र = वहां
यत्र = जहां
ईशगरुडध्वजौ = शिव और विष्णु थे

तब हारे हुए देवता कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को आगे करके वहां गए जहां शिव और विष्णु थे ।

यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम् ।
त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम् ॥ ५॥

यथा = जिस प्रकार
वृत्तम् = घटित हुआ
तयोः = उनको
तत्र = वहां
महिषासुरचेष्टितम् = महिषासुर के कार्यों को
त्रिदशाः = देवताओं
कथयामासुः = वर्णन किया

दॆवाभिभवविस्तरम् देवानां अभिभव = देवाभिभव= देवताओं की हार
 विस्तरम् = विस्तार से

वहाँ देवताओं ने उनको देवों की पराजय और महिषासुर के कार्यों को जिस प्रकार घटित हुआ विस्तार से वर्णन किया ।

सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च ।
अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति ॥ ६॥

सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां = सूर्य इंदर अग्नि अनिल इन्दुनाम् = सूर्य , इंद्र अग्नि, वायु , चन्द्र के
यमस्य = यम के
वरुणस्य च = और वरुण के
अन्येषां = अन्यो के
चाधिकारान्स = च
अधिकारान् = अधिकारों का
स = वह
स्वयमेवा= खुद ही
अधितिष्ठति = संचालक हो गया है , शाशक होना , वश में करना

 सूर्य , इंद्र अग्नि, वायु , चन्द्र के यम के और वरुण के और

अन्यो के अधिकारों का वह खुद ही संचालक हो गया है ।

स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि ।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥ ७॥

स्वर्गान्निराकृताः = स्वर्ग से निकाले गए
सर्वे = सब
तेन = वे
देवगणा = देवता
भुवि = पृथ्वी पर
विचरन्ति = घूम रहे हैं
यथा = जैसे
मर्त्या = मनुष्यों
महिषेण = महिषासुर द्वारा
दुरात्मना= दुष्ट

महिषासुर द्वारा स्वर्ग से निकाले गए वे सब देवता पृथ्वी पर मनुष्यों जैसे घूम रहे हैं ।

एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम् ।
शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ८॥

एतद्वः= एतत् = ये , अब
वः= हमने
कथितं = कह दिए
सर्वममरारिविचेष्टितम् = सर्व अमरारि विचेष्टितम् = असुरों के सब कार्य
शरणं = शरण को
वः = हम
प्रपन्नाःस्मो = प्राप्त हुए हैं

वधस्तस्य = वधः तस्य = उसके वध का
विचिन्त्यताम् = उपाय करिये

अब हमने असुरों की सब चेष्टाएँ कह दी हैं , हम आप की शरण को प्राप्त हुए हैं , उसके वध का उपाय कीजिये ।

इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः ।
चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥ ९॥

इत्थं = इसप्रकार
निशम्य = सुन कर
देवानाम् = देवताओं के
वचांसि = वचनों को
मधुसूदनः = विष्णु
चकार = किया
कोपं = क्रोध
शम्भुः = शिव
च = और
भ्रुकुटीकुटिलाननौ ।भ्रुकुटी- भौहें
कुटिल - टेढ़ा
आननौ= चेहरा

इस प्रकार देवताओं के वचनों को सुन कर विष्णु और शिव ने क्रोध किया और उनकी भौहें और चेहरा कुटिल हो गया ।

ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः ।
निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शङ्करस्य च ॥ १०॥

ततः = तब
अतिकोपपूर्णस्य = अत्यंत क्रोध से युक्त
चक्रिणः = विष्णु
वदनात् = मुख से
ततः = तब
निश्चक्राम = निकला
महत् = महान
तेजः = प्रकाश
ब्रह्मणः = ब्रह्मा
शङ्करस्य = शिव के
च = और

तब अत्यंत क्रोध से युक्त विष्णु के चेहरे से महान प्रकाश निकला , तब ब्रह्मा और शिव के (चेहरे से प्रकाश निकला) ।

अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः ।
निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥ ११॥

अन्येषाम् = अन्यो
च = और
एव= भी, ही
देवानाम् = देवताओं के
शक्रादीनाम् = शुक्र आदि
शरीरतः = शरीर से
निर्गतम् = निकला
सुमहत् = महान
तेजः =प्रकाश
तत् = तब
च = और
ऐक्यम् = इकठ्ठा
समगच्छत= हो गया

शुक्र आदि अन्य देवताओं के शर्रे से भी महान प्रकाश निकला और इकट्ठा हो गया ।

अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम् ।
ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् ॥ १२॥

अतीव = अत्यंत
तेजसः = प्रकाश
कूटं = पुंज
ज्वलन्तम = जलते हुए
इव = सामान
पर्वतम्= पर्वत
ददृशुः = देखा
ते = उन
सुराः= देवता
तत्र= वहां
ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् = दिशाएँ ज्वाला से व्याप्त हो गयीं

उन देवताओं ने वहाँ पर्वत के सामान अत्यंत प्रकाश का पुंज देखा जिसकी ज्वाला से दिशाएँ व्याप्त थी ।

अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम् ।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥ १३॥

अतुलम् = अतुलनीय
तत्र = वहां
तत् = वह
तेजः= प्रकाश
सर्वदेवशरीरजम् सभी देवताओं के शरीरों से उत्पन्न
एकस्थम् = इकट्ठा हो
तत् = तब
अभूत् = बन गया
नारी = नारी
व्यप्तलोकत्रयम् = तीनों लोक व्याप्य

त्विषा ।= चमक

सभी देवताओं के शरीरों से उत्पन्न वह अतुलनीय प्रकाश वहां इकट्ठा हो नारी बन गया जिसकी चमक से तीनों लोक व्याप्त हो गए ।

यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम् ।
याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा ॥ १४॥

यदभूच्छाम्भवं = यत = जो
अभूत = बन गया
शाम्भवं = शिव का
तेजस्तेनाजायत= तेजः
तेन= उसका
अजायत = बन गया
तन्मुखम् । = उस का मुंह
याम्येन = यम के
चाभवन् = च अभवन =बन गया
केशा = बाल
बाहवो = हाथ
विष्णुतेजसा = विष्णु के तेज से

जो शिव का तेज था उससे उसका मुंह बन गया , यम के तेज से बाल बन गए और विष्णु के तेज से हाथ बन गए ।

सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत् ।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः ॥ १५॥

सौम्येन = चन्द्रमा के
स्तनयोर्युग्मं =स्तनयो: युगमम् = दोनों स्तन
मध्यं = कमर
चैन्द्रेण = च इन्द्रेण
चाभवत् = च अभवत्
वारुणेन = वरुण के
च = और
जङ्घोरू = जंघा और पिंडली
नितम्बस्तेजसा =
नितम्ब: = नितम्ब

तेजसा = प्रकाश से
भुवः = पृथ्वी

चन्द्रमा के तेज से दोनों स्तन , इंद्र के तेज से कमर बन गयी , और व-रुण के तेज से जंघा और पिंडली और पृथ्वी के तेज से नितम्ब बने ।

ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा ।
वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥ १६॥

तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा ।
नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा ॥ १७॥

ब्रह्मणस्तेजसा =ब्रह्मण तेजसा = ब्रह्मा के तेज से
पादौ = दोनों पाँव
तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा=
तद = उसकी
अंगुल्यो= उंगलियां
अर्क= सूर्य
तेजसा = तेज से
वसूनां = वसुओं के
च = और
कराङ्गुल्यः हाथ की उंगलियां
कौबेरेण च = और कुबेर के
नासिका= नाक

ब्रह्मा के तेज से दोनों पाँव सूर्य के तेज से उनकी(पाँव की) उंगलियां और वसुओं के तेज से हाथ की उंगलियां और कुबेर के तेज से नाक बनी ।

भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च ।
अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा ॥ १८॥

भ्रुवौ = भौहें
च = और
सन्ध्ययोस्तेजः=सन्ध्ययो तेजः = संध्या के तेज से
श्रवणावनिलस्य =श्रवणाव अनिलस्य = वायु से कान
च=और

अन्येषां= अन्यों के
चैव= च एव = और इसी प्रकार
देवानां = देवताओं के
सम्भवस्तेजसां
सम्भव:= जन्म हुआ
तेजसा = तेज से
शिवा= कल्याणमयी देवी का

और संध्या के तेज से भौहें ,वायु से कान और इसी प्रकार अन्य देवताओं के तेज से कल्याणमयी देवी का जन्म हुआ ।

ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम् ।
तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः ॥ १९॥

ततः = तब
समस्तदेवानां= सब देवताओं के
तेजोराशिसमुद्भवाम् = तेजोराशि समुद्भवाम्= तेज पुंज से उत्पन्न
तां = उस देवी को
विलोक्य = देख कर
मुदं = प्रसन्नता
प्रापुरमरा =
प्रापुः = प्राप्त की
अमरा = देवताओं ने
महिषार्दिताः= महिषासुर के सताए

तब सब देवताओं के तेज पुंज से उत्पन्न उस देवी को देख कर महिषा-सुर के सताए देवताओं ने प्रसन्नता प्राप्त की ।

शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक् ।
चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाट्य स्वचक्रतः ॥ २०॥
शूलं = त्रिशूल से
शूलाद्विनिष्कृष्य = शूलात् विनिष्कृष्य = त्रिशूल निकाल कर
ददौ = दिया
तस्यै उस देवी को
पिनाकधृक् = शिव ने
चक्रं = चक्र
च = और

दत्तवान् = दिया
कृष्णः = विष्णु ने
समुत्पाट्य = निकाल कर
स्वचक्रतः= अपने चक्र से

शिव ने त्रिशूल से त्रिशूल निकाल कर उसे दिया और विष्णु ने अपने सु-दर्शन चक्र से चक्र निकाल कर दिया ।

शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः ।
मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥ २१॥

शङ्खं = शंख
च = और
वरुणः = वरुण ने
शक्तिं = शक्ति (भाला)
ददौ = दी
तस्यै = उस का
हुताशनः= अग्नि ने
मारुतो = वायु ने
दत्तवांश्चापं = धनुष दिया
बाणपूर्णे = बाणों से भरा
तथेषुधी =
तथा = इसी प्रकार
इषुधि= तरकश

वरुण ने शंख और अग्नि ने शक्ति दी, इसी प्रकार वायु ने धनुष और बा-णों से भरा तरकश दिया ।

वज्रमिन्द्रः समुत्पाट्य कुलिशादमराधिपः ।
ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद्गजात् ॥ २२॥

वज्रमिन्द्रः=
वज्रम् = वज्र
इंद्रः = इंद्र ने
समुत्पाट्य = निकाल कर
कुलिशादमराधिपः =
कुलिशात= व्रज से

अमराधिपः = देवताओं के राजा
ददौ = दिया
तस्यै = उसको
सहस्राक्षो = हजार आँखों वाले
घण्टामैरावताद्गजात् = घंटाम ऐरावतात् गजात्= ऐरावत हाथी का घंटा

हजार आँखों वाले देवताओं के राजा इंद्र ने अपने व्रज से व्रज निकाल कर और ऐरावत हाथी का घंटा उसे दिया ।

कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ ।
प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥ २३॥

कालदण्डाद्यमो =कालदण्डात यमो =
दण्डं = दंड
पाशं = पाश
चाम्बुपतिर्ददौ= च अम्बुपति ददौ = और वरुण ने दिया
प्रजापतिश्चाक्षमालां= प्रजापति च अक्षमाला = और प्रजापति ने स्फटिक माला
ददौ = दिया
ब्रह्मा = ब्रह्मा ने
कमण्डलुम्= कमण्डलु

याम ने अपने कालदंड से दंड , वरुण ने पाश, प्रजापति ने स्फटिक माला और ब्रह्मा ने कमण्डलु दिया ।

समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः ।
कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्यै चर्म च निर्मलम् ॥ २४॥

समस्तरोमकूपेषु = सब रोमकूपों में
निजरश्मीन् = अपनी किरणें
दिवाकरः = सूर्य ने
कालश्च = और काल ने
दत्तवान् = दिया
खड्गं = तलवार
तस्यै = उसको
चर्म = ढाल
च = और
निर्मलम् = चमकीली , स्वच्छ

सूर्य ने सब रोमकूपों में अपनी किरणें और काल ने उसे चमकीली तलवार और ढाल दी ।

क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे ।
चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥ २५॥

क्षीरोदश्चामलं =क्षीरोद च अमलं = समुन्दर ने उज्ञवल
हारमजरे=
हारं= हार
अजरे = जीर्ण न होने वाले
च = और
तथाम्ब=रे तथा अम्बरे = इसी प्रकार वस्त्र
चूडामणिं =चूडामणिं
तथा = और
दिव्यं = दिव्य
कुण्डले = कुण्डल
कटकानि = कड़े
च = और

और समुन्दर ने उज्ञवल हार , कभी जीर्ण न होने वाले वस्त्र और इसी प्रकार चूड़ामणि , दिव्या कुण्डल और कड़े दिए ।

अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु ।
नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥ २६॥

अर्धचन्द्रं = अर्धचन्द्र
तथा = और
शुभ्रं = उज्ञवल
केयूरान् =बाजूबंद
सर्वबाहुषु = सब बाहों के लिए
नूपुरौ = पाजेब
विमलौ= सुन्दर
तद्वद् तद्वत् = उसी तरह
ग्रैवेयकमनुत्तमम् = ग्रैवेयकम् अनुत्तमम् = श्रेष्ठ हंसली (गले का हार)

और उज्ज्वल अर्धचन्द्र सभी बाजुओं के लिए बाजूबंद , उसी तरह उत्तम हंसली दी ।

अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च ।
विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् ॥ २७॥

अङ्गुलीयकरत्नानि= रत्नों की अंगूठियां
समस्तास्वङ्गुलीषु च = और सभी उँगलियों के लिए
विश्वकर्मा = विश्कर्मा ने
ददौ = दी
तस्यै = उसे
परशुं = फरसा(कुल्हाड़ी)
चातिनिर्मलम् और अति चमकता

और सभी उँगलियों के लिए रत्नों की अंगूठियां दी । विश्कर्मा ने उस देवी को अत्यंत निर्मल फरसा दिया ।

अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम् ।
अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥ २८॥

अस्त्राण्यनेकरूपाणि =अस्त्राणि अनेक रूपाणि = अनेक प्रकार के अस्त्र
तथा = और
अभेद्यं= अभेद्य जिसे भेद न जा सके
च = और
दंशनम्= कवच
अम्लान=न कुम्हलाने वाला
पङ्कजां = कमल
मालां = माला
शिरस्युरसि =शिरस्य उरसि = मस्तक और सीने के लिए
चापराम् =
च = और
अपराम् = इसके अतिरिक्त

अनेक प्रकार के अस्त्र अभेद्य कवच और इसके अतिरिक्त सिर और वक्ष-

स्थल के लिए कभी न कुम्हलाने वाले कमलों की माला दी ।

अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम् ।
हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥ २९॥

अददज्जलधिस्तस्यै अददत जलधिः तस्यै = जलधि ने उसे दिया
पङ्कजं = कमल
चातिशोभनम् अत्यंत सुन्दर
हिमवान् = हिमालय ने
वाहनं = वाहन(सवारी के लिए)
सिंहं = सिंह
रत्नानि = रत्न
विविधानि = अनेक प्रकार के
 च = और

जलधि ने उसे दिया अत्यंत सुन्दर कमल और हिमालय ने सवारी के लिए सिंह और अनेक प्रकार के रत्न दिए ।

ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः ।
शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम् ॥ ३०॥

 दादाव = दिया
 अशून्यम् = भरा हुआ
सुरया = मधु से
पानपात्रं = प्याला
धनाधिपः= कुबेर ने
शेषश्च = और शेष नाग ने
सर्वनागेशो = सब नागों के राजा
महामणिविभूषितम् = महा मणि से सज्जित

कुबेर ने मधु से भरा हुआ प्याला दिया और सब नागों के राजा शेषनाग ने महामणि से सज्ज्ति ...

नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम् ।
अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा ॥ ३१॥

नागहारं = नाग हार

ददौ = दिया
तस्यै = उसको
धत्ते = धारण किया
यः = जिसने
पृथिवीमिमाम् पृथिवीम् ईमाम् इस पृथ्वी को
अन्यैरपि = अन्यै: अपि = दूसरों ने भी
सुरैर्देवी = सुरै: देवी = देवताओं ने देवी को
भूषणैरायुधैस्तथा= भूषणै: आयुधै: तथा = इस प्रकार आभूषण और हथियार

जिसने इस पृथ्वी को धारण किया हुआ है उस विष्णु ने उसे नागहार दिया दूसरों देवताओं ने भी देवी को इस प्रकार आभूषण और हथियार दिए ।

सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः ।

अन्यैः = दूसरे
अपि = भी
सुरैः = देवताओं से
देवी = देवी
भूषणैः = आभूषण
आयुधैः = हथियार
तथा = इस प्रकार
सम्मानिता= सम्मानित
ननाद = आवाज
उच्चैः = ऊँचा
साट्टहासम् = हंसना
मुहुः मुहुः= बार बार

इस प्रकार दूसरे देवताओं से भी देवताओं और हथियारों से सम्मानित देवी ऊँची आवाज़ में बार बार हंसने लगी ।

तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥ ३२॥
तस्या = उसकी
नादेन = आवाज़ से
घोरेण = भयंकर
कृत्स्नमापूरितं
कृत्स्नम् = सारा
आपूरितम् = भर गया
नभः= आकाश

उसकी भयंकर आवाज से सारा आकाश भर गया ।

अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत् ।
चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥ ३३॥

चुक्षुभुः = डांवांडोल, व्याकुल
सकलाः = सारा
लोकाः = विश्व
समुद्राः = समुन्दर
च = और

सारा विश्व व्याकुल हो गया और समुन्दर कांपने लगे ।

चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः ।
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम् ॥ ३४॥

चकम्पिरे = कांपने लगे
चचाल = हिलने लगी
वसुधा = पृथ्वी
चेलुः = डोलने, हिलने लगे
सकलाः = सभी
महीधराः = पर्वत
पृथ्वी हिलने लगी और पर्वत डोलने लगे ।

तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः ।
दृष्ट्वा समस्तं सङ्क्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥ ३५॥

तुष्टवुः= स्तवन , प्रसंशा
मुनयः = मुनियों ने
च= और
एनाम् = उसका
भक्ति नम्रात्ममूर्तयः = भक्ति भाव से विनम्र हो कर
दृष्ट्वा = देख कर
समस्तं = सभी

सङ्क्षुब्धं = पीड़ित
त्रैलोक्यम्= तीनों लोकों को
अमरारयः = देवताओं के दुश्मन , असुर

और मुनियों ने भक्ति भाव से विनम्र हो कर उसका स्तवन किया । तीनों लोकों में सभी असुरों को पीड़ित देख कर.. .

सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः ।
आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥ ३६॥

सन्नद्धा= कवच पहने
अखिलसैन्या:= सारी सेना
ते = वे
समुत्तस्थुः = खड़ा हो गया
उदायुधाः = हथियार उठाये हुए
आः= ओह
किमेतदिति = ये क्या है , इस प्रकार
क्रोधादाभाष्य क्रोधात् अभाष्य क्रोध से बोला
महिषासुरः = महिषासुर

कवच पहने और हथियार उठाये वो सारी सेना खड़ी हो गयी । महिषासुर क्रोध से बोला ओह ये क्या है ।

अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः ।
स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥ ३७॥

अभ्यधावत= की तरफ भाग
तं= उस
शब्दम्= शब्द की
अशेषै:= सारे
असुरै:= असुरों से
वृतः = घिरा
स = वह
ददर्श = देखा
ततो= तब
देवीं = देवी

व्याप्त= व्याप्त थे
लोकत्रयां = तीनों लोक
त्विषा = चमक , प्रकाश

असुरों से घिरा वह महिषासुर उस शब्द की तरफ भागा| तब उसने देवी जिसके प्रकाश से तीनो लोक व्याप्त थे , को देखा ।

पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम् ।
क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम् ॥ ३८॥

पादाक्रान्त्या = पाद आक्रान्त्या= कदम रखने से
नतभुवं = पृथ्वी नत थी
किरीटोल्लिखिताम्बराम् = मुकुट से आकाश में रेखांकित हो रहा था
क्षोभिताशेषपातालां सारे पाताल को क्षुब्ध
धनुर्ज्यानिःस्वनेन धनुष की टंकार
ताम् = उसके

उसके पैरों से दबी पृथ्वी नत थी , मुकुट से आकाश रेखांकित हो रहा था, धनुष की टंकार से सारा पाताल क्षुब्ध था ।

दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्यापत संस्थिताम् ।
ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् ॥ ३९॥

दिशो = दिशाओं को
भुजसहस्रेण = हजारों भुजाओं से
समन्ताद्व्याप्य = समन्तात् व्यापत
संस्थिताम् = कड़ी थी
ततः= तब
प्रववृते = शुरू हुआ
युद्धं = युद्ध
तया देव्या = उस देवी से
सुरद्विषाम्= देवताओं का शत्रु

हजारों भुजाओं से सभी दिशाओं को व्यापत कर कर खड़ी थी , तब उस देवी के साथ दैत्यों का युद्ध शुरू हुआ ।

शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम् ।

महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥ ४०॥

शस्त्रास्त्रै:=शास्त्रों और अस्त्रों से
र्बहुधा = बहुत से
मुक्तै:= छोड़े गए
आदीपितदिगन्तरम् = दिशाए रोशन हो गयी

महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो =महिषासुर सेनानी चिक्षुर् आख्यो = महिषासुर का सेनापति चिक्षु नाम का महासुर

छोड़े गए शास्त्रों और अस्त्रों से दिशाएँ रोशन हो गयी महिषासुर का सेना-पति चिक्षुर नाम का महासुर

युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः ।
रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः ॥ ४१॥

युयुधे = युद्ध किया
चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः ।
चामर = चामर
च= और
अन्यैः= अन्य
चतुरङ्गबलान्वितः चतुरंगिणी सेना के साथ (हाथीसवार, रथसवार, पैदल, घुड़सवार)
रथानामयुतैः = रथों के साथ
षड्भिरुदग्राख्यो
षड्भिः= साठ हजार
उदग्रा आख्यो उद्ग्रा नाम के
महासुरः= महासुर ने

चामर ने दूसरी चतुरंगिणी सेना के साथ और साठ हजार रथों के साथ उद्ग्रा नाम के महासुर ने युद्ध किया ।

अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः ।
पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥ ४२॥

अयुध्यत =युद्ध किया
आयुतानां= दस हज़ार

च = और
सहस्रेण = हज़ारों
महाहनुः =महाहनु
पञ्चाशद्भिश्च= पचास
नियुतै = खरब
असिलोमा
महासुरः

महाहनु ने करोड़ों (रथों) और महाअसुर असिलोमा ने पचास खरब रथि-
यों के साथ युद्ध किया ।

अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे ।

महाहनुः =महाहनु
पञ्चाशद्भिश्च= पचास
नियुतै = खरब
असिलोमा
महासुरः

बाष्कल ने छह करोड़ रणभूमि में युद्ध किया ।

गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः ॥ ४३॥

वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत ।

गज= हाथी
वाजि= घोड़े
सहस्र= हजारों
औघै:= नदी , प्रवाह
अनेकैः = अनेक
परिवारितः= परिवारित नामक दैत्य
वृतो= घिरे
रथानां = रथों से
कोट्या = करोड़ों
च = और

युद्धे = युद्ध किया
तस्मिन्नयुध्यत = तस्मिन् अयुध्यत = उससे युद्ध लड़ा

परिवारित नामक दैत्य ने हज़ारों हाथियों, घोड़ों जो अनेकों नदियों के प्र-
वाह (जैसे दिख रहे थे) के साथ
उस ने (परिवारित ने) करोड़ों रथों से घिर कर युद्ध लड़ा ।

बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः ॥ ४४॥
युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः ।

बिडालाख्यो= बिड़ाल नामक
अयुतानां = दस हजार
च = और
पञ्चाशद्भि= पचास
रथायुतैः= रथों के साथ

युयुधे = युद्ध किया
संयुगे = संग्राम में
तत्र = वहां
रथानां = रथों से
परिवारितः = घिर कर

और बिड़ाल नामक राक्षस ने पांच करोड़ रथों के साथ
वहां संग्राम में बिड़ाल ने रथों से घिर कर युद्ध किया.

अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः ॥ ४५॥
युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः ।

अन्ये च = दूसरों ने
तत्रायुतशो तत्र अयुतशो = वहां हज़ारों में या असंख्य
रथ नाग हयै: वृताः = रथ , हाथी , घोड़ों से घिरे

युयुधुः = युद्ध किया
संयुगे= संग्राम में
देव्या = देवी के
सह= साथ
तत्र = वहां
महासुराः =महासुर

और दूसरे महासुरों ने असंख्य रथ , हाथी , घोड़ों से घिर कर
वहाँ संग्राम में देवी के साथ युद्ध किया ।

कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥ ४६॥
हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः ।

कोटिकोटिसहस्रैस्तु हजारों करोड़ों
रथानां = रथों
दन्तिनां = हाथियों
तथा = और , इस प्रकार

हयानां= घोड़ों से
च = और
वृतो = घिरा
युद्धे = युद्ध में

तत्राभून्महिषासुरः = तत्र आभूत महिषासुरः= वहां महिषासुर आया

और , इस प्रकार हज़ारों करोड़ों हाथियों , रथों

और घोड़ों से घिरा महिषासुर वहाँ युद्ध में आया ,

तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥ ४७॥

युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः ।

तोमरैर्भिन्दिपालैश्च = तोमरैः भिन्दिपालेः च = भाला,बन्दुक
शक्तिभिर्मुसलैस्तथा= शक्तिभिः मुसलैः तथा = बरछी , मूसल

युयुधुः = युद्ध किया
संयुगे = संग्राम में
देव्या = देवी के साथ
खड्गैः = तलवार
परशुपट्टिशैः =

वे भाला, बंदूक, बरछी, मूसल ....

तलवार , परशु , पट्टिश के साथ देवी से संग्राम में युद्ध करने लगे ।

केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित् पाशांस्तथापरे ॥ ४८॥

देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः ।

परशुपट्टिशैः =
केचिच्च = किसी ने
चिक्षिपुः = फेंका
शक्तीः = शक्ति
केचित् = किसी ने
पाशांस्तथापरे पाशं= पाश
तथा इसी प्रकार
अपरे = दूसरों ने

देवीं = देवी पर
खड्ग प्रहारैः तु = तलवार से प्रहार किया और
ते =वे
तां= उसको
हन्तुं = मारने का
प्रचक्रमुः= प्रयास करने लगे

किसी ने शक्ति फेंकी , किसी ने पाश , इसी प्रकार दूसरों ने

देवी पर तलवार से प्रहार किया और वे उसको मारने का प्रयास करने लगे ।

सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥ ४९॥

लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी ।

सापि = वह भी
देवी = देवी
ततस्तानि = ततः तानि
शस्त्राण्यस्त्राणि = शस्त्राणि अस्त्राणि = शस्त्रों अस्त्रों को
चण्डिका = चण्डिका

लीलयैव =खेल खेल में ही
प्रचिच्छेद = काट दिए
निज शस्त्रास्त्र वर्षिणी= अपने शस्त्रों अस्त्रों की वर्षा से

उस चण्डिका देवी ने भी उनके शस्त्रों अस्त्रों को खेल खेल में ही अपने शस्त्रों अस्त्रों की वर्षा से काट दिया ।

अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः ॥ ५०॥
अनायस्तानना = अनायस्त आनना = चेहरे पर थकावट के चिन्ह नहीं थे
देवी = देवी के
स्तूयमाना = पूजित
सुरर्षिभिः= ऋषियों द्वारा

ऋषियों द्वारा पूजित देवी के चेहरे पर थकावट के चिन्ह नहीं थे ।

मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी ।

मुमोच = छोड़ रही थी , फेंक रही थी
असुरदेहेषु = असुरों की देहों पर
शस्त्राण्यस्त्राणि = शास्त्रों अस्त्रों को
चेश्वरी च ईश्वरी =और देवी

और देवी शास्त्रों अस्त्रों को असुरों की देहों पर फेंक रही थी ।

सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी ॥ ५१॥

चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः ।

सः =वह
अपि = भी
क्रुद्धो= गुस्से से
धुत सटो = हिलाता हुआ बाल
देव्याः = देवी का
वाहनकेसरी = वाहन शेर
चचार = घूमने, विचरने लगा
असुरसैन्येषु = असुरों की सेना में
वनेषु= वन में
इव = समान

हुताशनः = आग

वह देवी का वाहन केसरी भी क्रोध से बाल हिलाता हुआ असुरों की सेना में व में आग की तरह विचरने लगा ।

निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ॥ ५२॥

त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः ।
निश्वासान् = साँसे
मुमुचे = छोड़े
यान् = जो
तु = और
युध्यमाना युद्ध में रत
रणे = युद्ध भूमि में
अम्बिका = अम्बिका देवी ने
ते एव = वे सभी ही
सद्यः = तभी , उसी वक़्त
सम्भूताः = बन गए
गणाः = गण
शतसहस्रशः= सैंकड़ों हज़ारों

और युद्धभूमि में युद्ध में रत अम्बिका देवी ने जी साँसे छोड़ी वे सभी ही सैंकड़ों हज़ारों भूतगण बन गयी ।

युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः ॥ ५३॥

युयुधुस्ते = युयुधुः ते = वे युद्ध करने लगे
परशुभिः= परशु
भिन्दिपाल= भिन्दिपाल
असि= तलवार
पट्टिशैः = पट्टिश

वे गण परशु , भिन्दिपाल , तलवार और पट्टिश लेकर युद्ध करने लगे ।

नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः ।
अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथापरे ॥ ५४॥

नाशयन्तोऽसुरगणान् =नाशयन्तः असुरगणान् = असुरों के समूह का नाश करने लगे
देवीशक्त्युपबृंहिताः = देवी शक्ति उपबृंहिताः= देवी की शक्ति से बढे हुए
अवादयन्त = बजाने लगे
पटहान् = नगाड़ा
गणाः = गण
शङ्खांस्तथापरे = शङ्खां तथा अपरे = इसी प्रकार दूसरे शंख

देवी की शक्ति से बढे हुए गण असुरों के समूह का नाश करने लगे, इसी प्रकार दूसरे गण नगाड़े और शंख बजाने लगे ।

मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे ।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः ॥ ५५॥

मृदङ्गांश्च = मृदङ्गां च = और मृदंग
तथैवान्ये = तथा एव अन्ये इसी प्रकार दूसरे गणों ने
तस्मिन् = उस
युद्धमहोत्सवे=युद्ध के महोत्सव में
ततो = तब
देवी = देवी ने
त्रिशूलेन = त्रिशूल
गदया = गदा
शक्तिवृष्टिभिः = शक्ति की वर्षा से

इसी प्रकार उस युद्ध के महोत्सव में अन्यों ने मृदंग बजाये । तब देवी ने त्रिशूल गदा और शक्ति की वर्षा से

खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान् ।
पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान् ॥ ५६॥

खड्गादिभिश्च खड्ग आदिभि च =और तलवार आदि से
शतशो = सैंकड़ों
निजघान = मार दिया

महासुरान्= महा असुर
पातयामास = गिरा दिया
चैवान्यान् = और दूसरों को
घण्टास्वन = घंटे की आवाज़ से
विमोहितान्= बेसुध कर

और तलवार आदि से सैंकड़ों असुरों को मार दिया और दूसरों को घंटे की आवाज़ से बेसुध कर गिरा दिया ।

असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत् ।
केचिद् द्विधाकृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ॥ ५७॥

असुरान् = असुरों को
भुवि = पृथ्वी पर
पाशेन = पाश से
बद्ध्वा = बाँध कर
चान्यानकर्षयत् = च अन्यान अकर्षयत्= और दूसरों को घसीटा
केचिद् = कुछ को
द्विधाकृता= दो भाग कर दिए
तीक्ष्णैः = तीखी
खड्गपातै= तलवार के प्रहार से
तथापरे = तथा अपरे = इसी प्रकार दूसरों को

और दूसरे (असुरों) को पाश से बाँध कर भूमि पर घसीटा और इसी प्रकार अन्य कुछ के तीखी तलवार के प्रहार से दो टुकड़े कर दिए ।

विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते ।
वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ॥ ५८॥

विपोथिता = शांत हो
निपातेन = प्रहार से
गदया = गदा के
भुवि = भूमि पर
शेरते = गिर गए
वेमुश्च = वमन, उलटी

केचिद्रुधिरं= केचित् रुधिरम् = कुछ खून की
मुसलेन = मूसल के
भृशं= बार बार , शक्तिशाली
हताः = मार से

कुछ गदा के प्रहार से शांत हो भूमि पर गिर गए , मूसल की शक्तिशाली मार से खून की उलटी करने लगे ।

केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि ।
निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥ ५९॥

केचिन्निपतिता केचित निपतिता = कुछ गिर गए
भूमौ = भूमि पर
भिन्नाः = भिद कर
शूलेन = शूल से
वक्षसि = छाती में
निरन्तराः = लगातार
शरौघेण = तीरों की धारा से
कृताः कर
केचिद्रणाजिरे केचित रण अजिरे जो युद्ध के मैदान में

युद्धभूमि में कुछ शूल से भिद कर और कुछ लगातार तीरों की धरा से ।

श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः ।
केषाञ्चिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ॥ ६०॥

श्येनानुकारिणः = श्येन अनुकारिणः = बाज़ का अनुकरण करने वाले
प्राणान् = प्राण
मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः =
मुमुचु = छोड़ने लगे
त्रिदशार्दनाः= असुर
केषाञ्चिद् केषां चिद्= कुछ
बाहव = बांह
छिन्न = काट गयी
छिन्नग्रीवा= गर्दन काट गयी

तथापरे= इसी प्रकार दूसरों की

बाज़ का अनुकरण करने वाले असुर प्राण छोड़ने लगे ,कुछ की बांह काट गयी , इसी प्रकार दूसरों की गर्दन काट गयी ।

शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः ।
विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ॥ ६१॥

शिरांसि = सिर
पेतुः= गिर गए
अन्येषाम = अन्यों के
अन्ये = दूसरों को
मध्ये = बीच से
विदारिताः = फाड़ दिया
विच्छिन्न = कटे कर अलग होना
जङ्घास्त्वपरे= अन्यों की जांघ
पेतुरुर्व्यां = पेतुः उर्व्यां= भूमि पर गिर गए
महासुरा महासुर

अन्यों के सर गिर गए , दूसरों को बीच से फाड़ दिया गया , दूसरे म-हासुर जाँघ अलग होने से पृथ्वी पर गिर गए ।

एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधाकृताः ।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ॥ ६२॥

एक= एक
बाह्व= बाजू
अक्षि= आँख
चरणाः = चरण
केचिद्देव्या = कुछ को देवी ने
द्विधाकृताः = दो टुकड़े कर दिए
छिन्ने= कटे
अपि= भी
चान्ये च अन्ये = और दूसरे
शिरसि = सर
पतिताः = गिर कर
पुनरुत्थिताः पुनः उत्थिता =फिर से खड़े हो गए

कुछ को देवी ने एक बाह , आँख , पैर वाला तथा अन्यों के दो टुकड़े कर दिए । कटे सर होने पर गिर कर भी (वे)फिर से खड़े हो गए ।

कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः ।
ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥ ६३॥

कबन्धा = धड़
युयुधुर्देव्या = युयुधुः देव्या= देवी से युद्ध करने लगे
गृहीत= ले कर
परमायुधाः = उत्तम हथियार ले कर
ननृतुः= नाचे
च = और
अपरे = दूसरे
तत्र = वहाँ
युद्धे = युद्ध के
तूर्य= बाजों की
लय= लय पर
आश्रिताः= आश्रित हो

(महासुरों के) धड़ उत्तम हथियार ले कर देवी से युद्ध करने लगे और दू-सरे वहां युद्ध के बाजों की लय पर आश्रित हो नाचने लगे ।

कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः ।
तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥ ६४॥

कबन्धाः= धड़
छिन्न= कटे
शिरसः = सर
खड्ग= तलवार
शक्ति = शक्ति
ऋष्टि ऋष्टि
पाणयः= हाथ में ले कर
तिष्ठ तिष्ठेति = ठहरो ठहरो
भाषन्तो = कहते
देवीम्= देवी को

अन्ये = दूसरे
महासुराः = महा सुर

दूसरे महासुरों के सर कटे धड़ हाथ में तलवार , शक्ति , ऋष्टि ले कर देवी को ठहरों ठहरों बोले ।

पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा ।
अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत् स महारणः ॥ ६५॥

पतितैः = गिरे हुए
रथनागाश्वैः = रथ नागा अश्वैः = रथों , हाथियों और घोड़ों
असुरैः = असुरों
च = और
वसुन्धरा = पृथ्वी
अगम्या = अगम्य = चलना फिरना मुश्किल
सा = वह
अभवत् = हो गयी
तत्र = वहां
यत्र = जहां
अभूत् = हुआ
सः = वह
महारणः = महा युद्ध

जहां वह महायुद्ध हुआ वहाँ वह पृथ्वी गिरे हुए रथों, हाथियों घोड़ों और असुरों के गिरने से अगम्य हो गयी ।

शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः ।
मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ॥ ६६॥

शोणितौघाः = शोणित ओघाः = रक्त की धारा
महानद्यः = महा नदियां
सद्यः= उसी वक़्त
तत्र = वहां
विसुस्रुवुः = बहने लगी
मध्ये = बीच
च = और
असुरसैन्यस्य = असुरों की सेना के

वारणासुरवाजिनाम् = वारण, असुर , वाजिनाम = हाथियों, असुरों, घोड़ों के

और तभी वहाँ असुरों की सेना के बीच हाथियों, असुरों, घोड़ों के रक्त की धारा की महा नदियां बहने लगी ।

क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका ।
निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् ॥ ६७॥

क्षणेन = क्षण भर में
तत् = तब
सैन्यम् = सेना को
सर्वम् = सारी
असुराणाम् = असुरों की
तथा = इस प्रकार
अम्बिका = अम्बिका देवी ने
निन्ये = कर दिया (ले जाना)
क्षयं = नष्ट , नाश
यथा = जिस प्रकार
वह्निः = आग
तृणदारुमहाचयम्= तृण दारु महा चयम् = तिनको और लकड़ी में महान समूह को

तब अम्बिका देवी ने क्षण भर में असुरों की सारी सेना को इस प्रकार नष्ट कर दिया जिस प्रकार अग्नि तिनको और लकड़ी में महान समूह को नष्ट कर देती है ।

स च सिंहो महानादमुत्सृजन् धुतकेसरः ।
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥ ६८॥

स = वह
च = और
सिंहो = सिंह
महानादमुत्सृजन्= महा नादम् उत्सृजन् = महान आवाज करता हुआ
धुतकेसरः= गर्दन के बालों को हिलता हुआ
धुत = हिलाना
केसर = गर्दन के बाल
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव= शरीरेभ्यो अमरारीणाम् असून असुरों के शरीर से प्राण

इव= मानो
विचिन्वति = ढूंढ रहा था (खाने के लिए)

और वह सिंह भी महान आवाज करता हुआ , गर्दन के बालों को हिलता हुआ मानो असुरों के शरीर से प्राण ढूंढ रहा था ।

देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं तथासुरैः ।
यथैषां तुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥ ६९॥

देव्या = देवी के
गणैः = गणों ने
च = और
तैः = उन
तत्र = वहां
कृतम् = किया
युद्धम् = युद्ध किया
तथा= इस प्रकार
असुरैः= असुरों के साथ
यथैषां = जिस से
एषां = सभी
तुतुषुः = संतुष्ट
देवाः = देवता
पुष्पवृष्टिमुचः = फूलों की वर्षा करने लगे
दिवि = स्वर्ग से

और देवी के गानों ने उन असुरों के साथ इस प्रकार युद्ध किया जिससे सभी देवता संतुष्ट हो कर स्वर्ग से फूलों की वर्षा करने लगे ।

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २॥

तृतीयोऽध्यायः

ॐ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरूणक्षौमां शिरोमालिकाम
रक्तलिप्तपयोधराम् जपवटीं विद्यामभीतिं वरं ।

हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र विलसद्वक्त्रारविन्दश्रियम्
देवीं बद्ध हिमांशुरत्नमुकटाम् वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥

ॐ
उद्यत् = उदित होते
भानु सहस्त्र कान्तिम् = हज़ारों सूर्यों जैसी कांति वाली
अरूण = लाल
क्षौमां = रेशमी वस्त्र वाली
शिरोमालिकाम् = मुण्डमाला वाली
रक्तलिप्तपयोधराम् = रक्तचंदन से युक्त स्तनों वाली
जपवटीं = जपमालिका
विद्यामभीतिं = विद्या , अभय
वरं = वर
हस्ताब्जैः दधतीं = कर कमलों में धारण करती है
त्रिनेत्र = तीन नेत्रों से
विलसद्वक्त्रारविन्दश्रियम् = चमकते सुन्दर कमलमुख वाली
देवीम् = देवी की
बद्ध हिमांशुरत्नमुकटाम् = चन्द्र रत्न मुकुट से युक्त
वन्दे = वंदना करता/ करती हूँ
अरविन्दस्थिताम् = कमल के आसान पर स्थित

उदित होते हज़ारों सूर्यों जैसी कांति वाली, लाल रेशमी वस्त्र वाली ,रक्त-चंदन से युक्त स्तनों वाली , कर कमलों में विद्या, अभय , वर की मुद्राएं धारण करने वाली , तीन नेत्रों से चमकते सुन्दर कमलमुख वाली , चन्द्र रत्न मुकुट से युक्त, कमल के आसान पर स्थित देवी की वंदना करता/ करती हूँ ।

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १॥

ऋषि बोले ।

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः ।
सेनानीश्चिक्षुरः कोपाद्ययौ योद् धुमाम्बिकाम् ॥ २॥

निहन्यमानम् = मारा जाता हुआ
तत् = उस
सैन्यम् =सेना को

अवलोक्य = देख कर
महासुरः = महासुर
सेनानीः = सेनापति
चिक्षुरः = चिक्षुर
कोपात् = क्रोध से
ययौ = गया
योद्धुम् = युद्ध करने
अथ = तब
अम्बिकाम = अम्बिका से

उस सेना को मारा जाता हुआ देख कर महसूर चिक्षुर् क्रोध में अम्बिका से युद्ध करने गया ।

स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः ।
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः ॥ ३॥

सः = उस
देवीम् = देवी पर
शरवर्षेण = तीरों की वर्षा
ववर्ष = बरसाई
समरे = युद्ध में
असुरः = असुर ने
यथा = जिस प्रकार
मेरुगिरेः मेरु पर्वत की
शृङ्गम् = चोटियों पर
तोयवर्षेण = पानी बरसता है
तोयदः = बादल

युद्ध में उस असुर ने देवी पर तीरों की वर्षा बरसाई जिस प्रकार बादल मेरु पर्वत की चोटियों पर पानी बरसता है ।

तस्य छित्वा ततो देवी लीलयैव शरोत्करान् ।
जघान तुरगान्बाणैर्यन्तारं चैव वाजिनाम् ॥ ४॥

तस्य = उसके
छित्वा =काट दिया
ततो= तब
देवी = देवी ने

लीलयैव = खेल है में
शरोत्करान् शर उत्करान्= तीरों के ढेर या समूह को
जघान = मार दिया
तुरगान्बाणैर्यन्तारं=
तुरगां = घोड़ों
बाणैः= बाणों से
यंतारम् = सारथि
चैव और इसी प्रकार
वाजिनाम् = घोड़ों के

तब देवी ने खेल खेल में बाणों से उसके तीरों के समूह को काट दिया और इसी प्रकार घोड़ों और घोड़ों के सारथि को मार दिया ।

चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छृतम् ।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः ॥ ५॥

चिच्छेद = काट दिया
च = और
धनुः = धनुष
सद्यो = तभी
ध्वजं = पताका
चातिसमुच्छृतम् च= और
अति = बहुत
समुच्छृतम् = उन्नत,ऊँची
विव्याध = भेद दिया
चैव = और इसी प्रकार
गात्रेषु = शरीर को
छिन्न = काटने पर
धन्वानम्= धनुष
आशुगैः = तीरों से

और (देवी ने उसके) धनुष और अत्यंत उची पताका को काट दिया , और इसी प्रकार धनुष काटने पर (उस चिक्षुर् के) शरीर को तीरों से भेद दिया ।

सच्छिन्नधन्वा विरथो हताश्वो हतसारथिः ।
अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्मधरोऽसुरः ॥ ६॥

सच्छिन्नधन्वा = स छिन्न धन्वा = वह कटे धनुष
विरथो = रथ रहित
हताश्वो = मारे गए घोड़ों
हतसारथिः = मारे गए सारथि
अभ्यधावत = ओर भागा
तां = उस
देवीं = देवी की
खड्गचर्मधरोऽसुरः = तलवार और ढाल लेकर असुर

कटे धनुष , रथ विहीन,मारे गए घोड़ों , मारे गए सारथि वाला वह असुर उस देवी की ओर भागा ।

सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि ।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥ ७॥

सिंहमाहत्य सिंह आहत्य = सिंह पर वार किया
खड्गेन = तलवार से
तीक्ष्णधारेण = तेज धार वाली
मूर्धनि =सर पर
आजघान = प्रहार किया
भुजे = भुजा पर
सव्ये = बायीं
देवीमप्यतिवेगवान् = देवीम अपि अति वेगवान देवी पर भी अत्यंत वेग से

उसने तेज धार वाली तलवार से सिंह के सर पर वार किया और देवी की भी बायीं भुजा पर अत्यंत वेग से वार किया ।

तस्याः खड्गो भुजं प्राप्य पफाल नृपनन्दन ।
ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः ॥ ८॥

तस्याः = उसकी
खड्गो = तलवार
भुजं = बाँह

प्राप्य = पहुंच कर
पफाल = टूट गयी
नृपनन्दन = हे नृपनन्दन
ततो = तब
जग्राह = हाथ में ले कर
शूलं = त्रिशूल
स = वह
कोपादरुणलोचनः कोपात् अरुण लोचनः = क्रोध से लाल आँखों वाला

उस देवी की बाँह पर पहुँच कर तलवार टूट गयी, तब क्रोध से लाल आँ-खों वाला वह त्रिशूल हाथ में ले कर

चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः ।
जाज्वल्यमानं तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् ॥ ९॥

चिक्षेप = फेंका
च = और
ततस्तत्तु ततः= तब
 तत् तु= उसे
भद्रकाल्यां = भद्र काली पर
महासुरः महासुर ने
जाज्वल्यमानं = प्रज्वलित
तेजोभी = तेज से =
रविबिम्बमिवाम्बरात् = रविबिम्बं एव अम्बरात्= आकाश में रविबिम्ब की तरह

तब महासुर ने भद्रकाली पर उसे(त्रिशूल) फेंका जो आकाश में रविबिम्ब की तरह तेज से प्रज्वलित था ।

दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी शूलममुञ्चत ।
तेन तच्छतधा नीतं शूलं स च महासुरः ॥ १०॥

दृष्ट्वा = देख कर
तदापतच्छूलं तत आपत शूलम् = उस आते हुए शूल को
देवी = देवी ने
शूलममुञ्चत = शूल छोड़ा
तेन = जिसने

तच्छतधा =
तत्= उस
शतधा =सौ टुकड़े , भाग
नीतं = कर दिए
शूलं = शूल
स च महासुरः और उस महासुर के

देवी ने उस आते हुए शूल को देख कर शूल फेंका , जिसने उस शूल के और उस महासुर के सौ टुकड़े कर दिए ।

हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ ।
आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥ ११॥

हते = मारे जाने पर
तस्मिन्महावीर्ये - उस महा वीर्य के
महिषस्य महिषासुर का
चमूपतौ = सेनापति
आजगाम = गया
गजारूढ= हाथी पर चढ़ कर
चामर= चामर
त्रिदशार्दनः = असुर

उस महावीर्यke मारे जाने पर महिषासुर का सेनापति असुर चमार हठी पर बैठ कर आया ।

सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्तामम्बिका द्रुतम् ।
हुङ्काराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् ॥ १२॥

सोऽपि = उसने भी
शक्तिं = शक्ति
मुमोच = छोड़ी
अथ = तब
देव्या = देवी की ओर
ताम् = उस
अम्बिका अम्बिका
द्रुतम्= शीघ्रता से
हुङ्कार = हुंकार से

अभिहतां = वार कर
भूमौ = भूमि पर
पातयामास = गिरा दिया
निष्प्रभाम् = निष्प्रभाव करके

तब उसने भी देवी की ओर शक्ति फैंकी, उस अम्बिका ने शीघ्रता से हुंकार से प्रहार कर निष्प्रभाव कर उसे भूमि पर गिरा दिया ।

भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः ।
चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत् ॥ १३॥

भग्नां = टूट कर
शक्तिं = शक्ति को
निपतितां = गिरता हुआ
दृष्ट्वा = देख
क्रोधसमन्वितः = क्रोध से युक्त
चिक्षेप = फेंका
चामरः = चामर ने
शूलं = शूल
बाणैस्तदपि बाणैः तदपि = बाण से वह भी
साच्छिनत् =
सा = उसन देवी ने
अच्छिनत् = तोड़ दिया

शक्ति को टूट कर गिरता हुआ देख क्रोध से युक्त चामर ने शूल फेंका , उस देवी ने बाणों से उसे भी तोड़ दिया ।

ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः ।
बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ॥ १४॥

ततः = तब
सिंहः = सिंह
समुत्पत्य = उछाल कर
गजकुम्भान्तरे = हाथी के कंधे पर
स्थितः= स्थित हो गया
बाहुयुद्धेन = बाहुयुद्ध

युयुधे = किया
तेन = उस
उच्चैः= प्रचंडता से
त्रिदशारिणा = देवताओं के दुश्मन

तब सिंह उछल कर हाथी के कंधे पर स्थित हो उस देवताओं के दुश्मन से प्रचंड बाहुयुद्ध करने लगा ।

युध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ ।
युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ॥ १५॥

युध्यमानौ = युद्ध करते हुए
ततः = तब
तौ = वे दोनों
तु = और
तस्मान् = उस
नागान् = हाथी से
माहिं = पृथ्वी पर
गतौ = गए
युयुधाते = युद्ध किया
अति = अत्यंत
संरब्धौ = उत्तेजना
प्रहारैः= प्रहार करने लगे
अतिदारुणैः = अत्यंत भयंकर

युद्ध करते हुए तब वे दोनों उस हाथी से पृथ्वी पर गए और अत्यंत उत्तेजना से प्रहार करते हुए अत्यंत भयकर युद्ध करने लगे ।

ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा ।
करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक् कृतम् ॥ १६॥

ततो = तब
वेगात् = वेग से
खमुत्पत्य = आकाश में उछाल कर
निपत्य = नीचे गिरते हुए
च = और
मृगारिणा = सिंह ने

करप्रहारेण = हाथ के प्रहार से
शिरश्चामरस्य = चामर का सिर
पृथक् = अलग
कृतम् = कर दिया

और तब सिह ने वेग से आकाश में उछालते कर निचे आते हुए हाथ के प्रहार से चामर का सिर अलग कर दिया ।

उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः ।
दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥ १७॥

उदग्रश्च= और उदग्र को
रणे = युद्ध भूमि में
देव्या = देवी ने
शिला= पत्थर
वृक्षादिभि; = वृक्ष आदि से
हतः = मार कर
दन्त दांत
मुष्टितलै= मुक्के और थप्पड़
च=और
एव = ही
करालश्च= और कराल को
निपातितः = गिरा दिया

और उदग्र को देवी ने पत्थर, वृक्ष आदि से मार कर और कराल को दांत , मुक्के और थप्पड़ से ही युद्ध भूमि में गिरा दिया ।

देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम् ।
बाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम् ॥ १८॥

देवी= देवी ने
क्रुद्धा = क्रोधित
गदापातैः= गदा के वार से
चूर्णयामास = चूर्ण बना दिया
चोद्धतम् च उद्धतम् = और उद्धत को
बाष्कलं = बाष्कल को
भिन्दिपालेन = भिन्दिपाल से

बाणैस्ताम्रं = बाणैः ताम्रं = बाणों से ताम्र
तथान्धकम् = तथा अंधकम् = इसी प्रकार अंधक को

क्रोधित देवी ने गदा के वार से उद्धत को चूर्ण बना दिया और बाष्कल को भिन्दिपाल से , इसी प्रकार ताम्र और अंधक को बाणों से मार दिया ।

उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम् ।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥ १९॥

उग्रास्यमुग्रवीर्यं =उग्रास्य, उग्रवीर्य को
च = और
तथैव = तथा एव = इसी प्रकार ही
च= और
महाहनुम् = महाहनु
त्रिनेत्रा= तीन नेत्रों वाली
च= और
त्रिशूलेन = त्रिशूल से
जघान = मार दिया
परमेश्वरी = परमेश्वरी ने

और इसी प्रकार ही तीन नेत्रों वाली परमेश्वरी ने उग्रास्य, उग्रवीर्य और मा- हाहनु को त्रिशूल से मार दिया ।

बिडालस्यासिना कायात् पातयामास वै शिरः ।
दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्ये यमक्षयम् ॥ २०॥

बिडालस्य= बिड़ाल का
असिना = तलवार से
कायात् = शरीर से
पातयामास = गिरा दिया
वै = भी
शिरः = सिर
दुर्धरं = दुर्धर
दुर्मुखं = दुर्मुख
चोभौ = च उभौ = और दोनों
शरैः= तीरों से
निन्ये = प्राप्त करना , भेज दिया

यमक्षयम्= यम के घर

तलवार से बिड़ाल का सिर शरीर से गिरा दिया और और दुर्धर, दुर्मुख दोनों को भी तीरों से यमलोक भेज दिया ।

एवं सङ्क्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः ।
माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान् ॥ २१॥

एवं = इस प्रकार
सङ्क्षीयमाणे = नष्ट होने पर
तु =अब
स्वसैन्ये = अपनी सेना को
महिषासुरः = महिषासुर
माहिषेण = महिष के
स्वरूपेण = अपने रूप में
त्रासयामास = त्रस्त करने लगा
तान् = उन
गणान् = गणों को

इस प्रकार अपनी सेना के नष्ट होने पर महिषासुर अब महिष के अपने रूप में गणों को त्रस्त करने लगा ।

कांश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान् ।
लाङ्गूलताडितांश्चान्यान् शृङ्गाभ्यां च विदारितान् ॥ २२॥

कांश्चित् कान+चित्= कुछ को
तुण्डप्रहारेण = थूथुन के प्रहार से
खुरक्षेपैः = खुरो से फ़ेंक के
तथा = इसी प्रकार
अपरान् = दूसरों को
लाङ्गूलताडितान् = पुंछ से पीट कर
च = और
अन्यान् = दूसरों को
शृङ्गाभ्याम् = सींगों से
च = और
विदारितान्= फाड़ के

कुछ को थूथुन के प्रहार से इसी प्रकार दूसरों को खुरो से फ़ेंक के और पुंछ से पीट कर और अन्यों को सींगों से फाड़ के। .

वेगेन कांश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च ।
निःश्वासपवनेनान्यान्पातयामास भूतले ॥ २३॥

वेगेन = वेग से
कांश्चित् = कुछ को
अपरान् = अन्यों को
नादेन = आवाज से
भ्रमणेन = घूम कर
च = और
निःश्वासपवनेन = सांस की वायु से
अन्यान् = दूसरों को
पातयामास = गिरा दिया
भूतले = भूमि पर

कुछ को वेग से , कुछ को ऊँची आवाज से और दूसरों को (इधर उधर) घूम कर तथा अन्यों को निःश्वास वायु से भूमि पर गिरा दिया ।

निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः ।
सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥ २४॥

निपात्य = हरा कर , गिरा कर
प्रमथानीकम् = गणों के
अभ्यधावत = भागा
सोऽसुरः = स असुरः = वह असुर
सिंहं = सिंह को
हन्तुं = मरने
महादेव्याः = महादेवी के
कोपं चक्रे = क्रोध किया
ततोऽम्बिका = ततः अम्बिका = तब अम्बिका ने

वह असुर गानों को गिरा कर महादेवी के सिंह को मरने के लिए भागा, तब अम्बिका ने क्रोध किया ।

सोऽपि कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः ।
शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चांश्चिक्षेप च ननाद च ॥ २५॥

सोऽपि= स अपि
कोपात् क्रोध से
महावीर्यः = महा पराक्रमी
खुर= खुरों से
क्षुण्ण = खुरच रहा था
महीतलः भूमि को
शृङ्गाभ्यां = सींगों से
पर्वतान्=पर्वतों को
उच्चां = ऊँचे
चिक्षेप = फैंक रहा था
च = और
ननाद च = और गरज रहा था

वह महा पराक्रमी भी क्रोध में भूमि को खुरो से खुरच रहा था और सींगों से ऊँचे पर्वतों को फैंक रहा था और गरज रहा था ।

वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत ।
लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ॥ २६॥

वेगभ्रमण = तेजी से घूमने से
विक्षुण्णा = दलित
मही = पृथ्वी
तस्य = उसके
व्यशीर्यत = टुकड़ों में फट रही थी
लाङ्गूलेना = पूँछ से
आहत = आहत हो
च अब्धिः = और समुन्दर
प्लावयामास = बह रहा था , डुबो रहा था
सर्वतः= सब जगह , चारों ओर की जगह

उसके तेजी से घूमने से दलित पृथ्वी फैट रही थी और पूँछ से आहत हो कर समुन्दर सब जगह डुबो रहा था ।

धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः ।

श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ॥ २७॥

धुत= हिलते हुए
शृङ्ग= सींगों से
विभिन्न: = छेदे गए
च = और
खण्डं खण्डं = टुकड़े टुकड़े
ययु:= हो गए
घनाः= बादल
श्वासानिला सांस की वायु
ताः = वे
शतशो = सैंकड़ों
निपेतु:= गिरने लगे
नभस: = आकाश से
अचलाः = पर्वत

हिलते हुए सींगों से छेदे गए बादल टुकड़े टुकड़े हो गए और सांस की वायु से वे सैंकड़ों पर्वत आकाश से गिरने लगे ।

इति क्रोधसमाध्मातमापतन्तं महासुरम् ।
दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत् ॥ २८॥

इति = इस प्रकार
क्रोध समाध्मातम् = क्रोध से भरे , क्रोध से उत्तेजित
आपतन्तम् = आते हुए
महासुरम् = महासुर को
दृष्ट्वा = देख कर
सा = उस
चण्डिका = चण्डिका ने
कोपम् = क्रोध
तद्वधाय = उसका वध करने के लिए
तदा = तब
अकरोत्= क्रोध

इस प्रकार उस महासुर को क्रोध से भरे हुए आते हुए देख कर उस च-ण्डिका देवी उसका वध करने के लिए ने क्रोध किया ।

सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम् ।
तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृधे ॥ २९॥

सा = उसने
क्षिप्त्वा = फेंका
तस्य = उसको
वै = और
पाशं = पाश , रस्सा
तं = उस
बबन्ध = बाँध दिया
महासुरम् = महासुर
तत्याज = त्याग कर
माहिषं = भैंसे का
रूपं = रूप
सः = वह
अपि = भी
बद्धः = बंधे
महामृधे = महान संग्राम में

महान संग्राम में उस देवीने उस पर रस्सा फैंक कर उस महासुर को बाँध दिया। बंधे हुए उसने भी भैंसे का रूप त्याग दिया ।

ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः ।
छिनत्ति तावत् पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत ॥ ३०॥

ततः = तब
सिंहः = सिंह
अभवत् = बन गया
सद्यः = उसी वक़्त
यावत् = जब
तस्य = उस का
अम्बिका = अम्बिका देवी
शिरः = सिर
छिनत्ति = कटती
तावत् = तब तक
पुरुषः = पुरुष
खड्गपाणिः = हाथ में तलवार लिए

अदृश्यत = दिखाई देने लगा

तब उसी वक़्त (वह) सिंह बन गया । अम्बिका देवी जब तक उसका सिर काटती तब तक हाथ में तलवार लिए पुरुष (के रूप में) दिखाई देने लगा ।

तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः ।
तं खड्गचर्मणा सार्धं ततः सोऽभून्महागजः ॥ ३१॥

ततः = तब
एव = ही
आशु = शीघता से
पुरुषं = पुरुष को
देवी = देवी ने
चिच्छेद = काट दिया
सायकैः = तीरों से
तम् = उस
खड्गचर्मणा = तलवार और ढाल से
सार्धम् = युक्त , साथ
ततः = तब
सः = वह
अभूत् = बन गया
महागजः = महान हाथी

तब देवी ने शीघ्र ही तलवार और ढाल से के साथ उस पुरुष को तीरों से काट दिया तब वह विशाल हाथी बन गया ।

करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च ।
कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत ॥ ३२॥

करेण = सूंड से
स = वह
महासिंहं = महासिंह को
तं = उस
चकर्ष = घसीटने , खींचने
जगर्ज = दहाड़ने, चिंघाड़ने लगा
च= और
कर्षत: खींचते हुए

तु = और
करं = सूंड को
देवी = देवी ने
खड्गेन = तलवार से
निरकृन्तत = काट दिया

सूंड से वह उस महासिंह को घसीटने लगा और चिंघाड़ने लगा और देवी ने घसीटते हुए उस सूंड को तलवार से काट दिया ।

ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः ।
तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ ३३॥

ततः = तब
महासुरः = महासुर
भूयः = दुबारा
माहिषम् = भैंसे के
वपुः = शरीर में
आस्थितः = आ गया
तथा एव = उसी प्रकार ही
क्षोभयामास = व्याकुल करने लगा
त्रैलोक्यं = तीनों लोकों के
सचराचरम् = चर अचर प्राणियों को

तब महाअसुर दुबारा भैंसे के शरीर में आ गया और उसी प्रकार तीनों लोकों के चर अचर प्राणियों को व्याकुल करने लगा ।

ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम् ।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना ॥ ३४॥

ततः = तब
क्रुद्धा = क्रोधित
जगन्माता = जगत माता ने
चण्डिका = चण्डिका ने
पानमुत्तमम् । पानं उत्तमम् = उत्तम पान पिया
पपौ = पिया
पुनः पुनः = बार बार

च = और
एव = ही
जहास = हंसी
अरुणलोचना = लाल आँखों वाली

तब जगत माता ने उत्तम पान पिया और लाल आँखों वाली बार बार हंसने लगी ।

ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः ।
विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥ ३५॥

ननर्द = चिल्लाया
चासुरः च असुर : और असुर
सोऽपि = वह भी
बलवीर्य मदोद्धतः = बल, पराक्रम के मद से उन्मत्त
विषाणाभ्यां = सींगों से
च = और
चिक्षेप = फेंके
चण्डिकां = चण्डिका के
प्रति = तरफ
भूधरान् = पर्वत

और वह असुर भी बल, पराक्रम के मद से उन्मत्त हो कर चिल्लाने लगा और सींगों से चण्डिका की ओर पर्वत फेंकने लगा ।

सा च तान्प्रहितांस्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः ।
उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम् ॥ ३६॥

सा च = और वह देवी
तान् = उन पर्वतों को
प्रहितां
तेन= उसके द्वारा
चूर्णयन्ती = चूर्ण कर दिया
शरोत्करैः = तीरों के समूह से
उवाच = बोली
तं = उसको
मदः = मद से

उद्धूत = उत्तेजित , प्रज्वल
मुखराग = चेहरे का रंग
आकुला अक्षरम् = अक्षर विकल थे

और वह देवी जिसका मुख राग मद से प्रज्वल और अक्षर बैचैन थे , उसके द्वारा फेंके पहाड़ों को तीरों के समूह से चूर्ण करती हुई उससे बोली ,

देव्युवाच ॥ ३७॥
देवी ने कहा ।

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम् ।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥ ३८॥

गर्ज गर्ज गरजो गरजो
क्षणं = क्षण भर को
मूढ = मूर्ख
मधु = मधु
यावत्पिबाम्यहम्= यावत् पिबामि अहम्= जब तक मैं पीती हूँ
मया = मेरे द्वारा
त्वयि = तुम्हारे
हतेऽत्रैव = मारे जाने पर यहीं
गर्जिष्यन्त्याशु गर्जयन्ति आशु = शीघ्र ही गरजेंगे
देवताः= देवता

गरजो गरजो क्षण भर को मूरख जब तक मैं मधु पीती हूँ । मेरे द्वारा तुम्हारे मारे जाने पर यहीं शीघ्र ही देवता गरजेंगे ।

ऋषिरुवाच ॥ ३९॥
ऋषि बोले ।

एवमुक्त्वा समुत्पत्य सारूढा तं महासुरम् ।
पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ॥ ४०॥

एवमुक्त्वा एवं उक्त्वा = ऐसा कह कर
समुत्पत्य = उछल कर
सारूढा = सा आरूढा = वह चढ़ गयी

तं = उस
महासुरम् =महासुर पर
पादेनाक्रम्य = पाँव से दबा दिया
कण्ठे = कंठ
च = और
शूलेनैनमताडयत् = शूलेन् ऐनम् अताड़ियत् शूल से उस पर आघात किया

ऐसा कह कर वह उछल कर उस महासुर पर चढ़ गयी और उसके कंठ को पाँव से दबा कर शूल से उस पर प्रहार किया ।

ततः सोऽपि पदाक्रान्तस्तया निजमुखात्तदा ।
अर्धनिष्क्रान्त एवासीद्देव्या वीर्येण संवृतः ॥ ४१॥

ततः = तब
सोऽपि = वह भी
पदाक्रान्तः= पैर से दबा
तया = उस के
निजमुखात्तदा = निज मुखात् तदा = तब अपने मुख से

अर्धनिष्क्रान्तः = आधे निकले
एव =ऐसे
आसीत् = निकले , बने ,
देव्या = देवी ने
वीर्येण = पराक्रम से
संवृतः = रोक दिया

तब उसके पैर से दबा वह अपने मुख से आधा निकला था ऐसे निकले उस को उस देवी ने पराक्रम से रोक दिया ।

अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः ।
तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥ ४२॥

अर्धनिष्क्रान्तः = आधे निकले को
एव = ही
असौ = उस
युध्यमानः = लड़ते हुए
महासुरः = महासुर

तया = उस
महासिना= बड़ी तलवार
देव्या = देवी ने
शिरः = सिर
छित्वा = काट कर
निपातितः = गिरा दिया

आधे निकले ही उस लड़ते हुए महासुर का उस देवी ने बड़ी तलवार से सर काट कर गिरा दिया ।

ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्यसैन्यं ननाश तत् ।
प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ॥ ४३॥

हाहाकृतं = हाहाकार करती हुई
सर्वं = सारी
दैत्यसैन्यं = दाइयों की सेना
ननाश = भाग गयी
तत् = वह
प्रहर्षं = प्रसन्न
च = और
परं = अत्यधिक
जग्मुः = हुए
सकला = सब
देवतागणाः= देवता गण

तब हाहाकार करती हुई वह सारी असुरों की सेना भाग गयी । और सभी देवतागण अत्यधिक प्रसन्न हुए ।

तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सहदिव्यैर्महर्षिभिः ।
जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ४४॥

तुष्टुवुः = स्तवन किया
ताम् = उस
सुरा = देवताओं ने
देवीं = देवी का
सह = के साथ
दिव्यैः= दिव्य
महर्षिभिः = महषियों के

जगु: = गाने लगे
गन्धर्वपतयो =गन्धर्व राज
ननृतुः= नृत्य करने लगी
च = और
अप्सरोगणाः = अप्सराएं

देवताओं ने दिव्य महर्षियों के साथ उस देवी का स्तवन किया , गन्धर्व राज गाने लगे और अप्सराएं नृत्य करने लगीं ।

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३॥
चतुर्थोऽध्यायः
ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम्।
सिंहस्कन्धाधिरुढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः।।

ॐ
कालाभ्राभां = काल अभ्र आभाम् = काले बादल की आभा वाली
कटाक्षै: अरिकुलभयदां = कटाक्षों से शत्रुओं को भय देने वाली
मौलिबद्ध इन्दुरेखां = मस्तक पर बंधी चन्द्रमा की रेखा वाली
शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि = शंख, चक्र कृपाण और त्रिशूल
करै: उद्वहन्तीं = हाथ में धारण करने वाली
त्रिनेत्राम्= तीन नेत्रों वाली
सिंहस्कन्धाधिरुढां = सिंह के कंधे पर बैठी
त्रिभुवनम अखिलं = सभी तीनों लोकों को
तेजसा = तेज से
पूरयन्तीं = भरने वाली
ध्यायेद् = ध्यान करें
दुर्गां = दुर्गा का
जयाख्यां = जया कही जाने वाली
त्रिदशपरिवृतां = देवताओं से घिरी
सेवितां = सेवित

सिद्धिकामैः= सिद्धि की इच्छा रखने वालों द्वारा

काले बादल की आभा वाली ,कटाक्षों से शत्रुओं को भय देने वाली , म-स्तक पर बंधी चन्द्रमा की रेखा वाली ,शंख, चक्र कृपाण और त्रिशूल हाथ में धारण करने वाली , तीन नेत्रों वाली ,सिंह के कंधे पर बैठी, सभी तीनों लोकों को तेज से भरने वाली , सिद्धि की इच्छा रखने वालों द्वारा सेवित , देवताओं से घिरी, जया कही जाने वाली दुर्गा देवी का ध्यान करें ।

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १॥

ऋषि बोले ।

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ।
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ २॥

शक्रादयः = इंद्र की अगवाई में
सुरगणाः = सुरगण
निहते = मारे जाने पर
अतिवीर्ये = अत्यंत पराक्रमी
तस्मिन् = उसके
दुरात्मनि =दुष्ट
सुरारिबले= सुर अरि बले =देवताओं के दुश्मन यानी असुरों की सेना
च = और
देव्या = देवी द्वारा
तां = उस
तुष्टुवुः = प्रशंसा की
प्रणतिनम्रशिरोधरांसाः=प्रणति,प्रणाम । नम्र, झुकेहुए । शिरः= सर , धर bearing, अंसाः= कंधे
वग्भिः = शब्दों द्वारा
प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः=प्रहर्ष, बहुत खुश , पुलक, रोएँ उठना , उद्गम, प्रकट होना , चारु, सुन्दर ,देहाः =शरीर

देवी द्वारा अत्यंत बलि दुष्ट उस (महिषासुर) और असुरसेना के मारे जाने पर इंद्र की अगवाई में प्रणाम के लिए झुके हुए गर्दन और कंधे और ख़ुशी से पुलकित सुन्दर देह वाले सुरगण उत्तम वचनों द्वारा उस देवी का स्तवन करने लगे ।

देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या ।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः ॥ ३॥

देव्या = देवी
यया = जिनकी
ततमिदं = ततम् = व्याप्त है, फैला है
 इदं = ये
जगदात्मशक्त्या जगत = संसार
आत्म शक्ति = आत्म शक्ति से
निःशेष = सभी
देवगण = देवगणों की
शक्तिसमूह शक्ति समूह की
मूर्त्या = मूर्ति है
तामम्बिकाम = उस अम्बिका को
अखिल = सारे
देवमहर्षि - देव ऋषियों द्वारा पूज्य
पूज्यां = पूज्य
भक्त्या = भक्ति पूर्वक
नताः स्म = हम नमन करते हैं
विदधातु = करे
शुभानि = कल्याण
सा नः वह हमारा

देवी जिनकी आत्मशक्ति से ये संसार व्याप्त है , जो सभी देवताओं की श-क्ति समूह की मूर्ति है, सारे देव ऋषियों द्वारा पूज्य उस अम्बिका को हम नमन करते हैं , वह हमारा कल्याण करें ।

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥ ४॥

यस्याः = जिसका
प्रभावम् = प्रभाव
अतुलम् = अतुलनीय

भगवान् = भगवान
अनन्तः = विष्णु
ब्रह्मा = ब्रह्मा
हरः = शिव
च न हि = और न ही
वक्तुम् = बताना , कहना
अलं = योग्य
बलं च = बल
सा = वह
चण्डिका = चण्डिका देवी
अखिलजगत्परिपालनाय = सारे जगत के पालन की
नाशाय च= और नाश की
अशुभचयस्य अशुभ भयस्य = अशुभ का भय
मतिं करोतु = सोचे ,

जिसके प्रभाव और बल को भगवान विष्णु, ब्रह्मा और न ही शिव बताने में समर्थ हैं , वह चण्डिका देवी सारे जगत के पालन और सभी अशुभ भय के नाश की मति करे या सोचे ।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥ ५॥

या = जो
श्रीः = लक्ष्मी
स्वयं = खुद
सुकृतिनां = अच्छे लोगों के
भवनेषु, = घर में
अलक्ष्मीः = अलक्ष्मी (दरिद्रता)
पापात्मनाम्, = पापियों के
कृतधियां = = विवेकी ,परिष्कृत मन वाले
हृदयेषु = हृदय में
बुद्धिः, = बुद्धि
श्रद्धा = श्रद्धा
सतां = संतों के
हृदि, = मन में
कुलजनप्रभवस्य = कुलीन लोगों के
लज्जा,= लज्जा

तां = उन
त्वां = आप
नताः स्म, = प्रणाम करते हैं
परिपालय देवि विश्वम् = देवी विश्व का पालन करो

जो स्वयं अच्छे लोगों के घर में लक्ष्मी , पापियों के घर में दरिद्रता , सत्पुरुषों के हृदय में श्रद्धा के रूप में है उन आप भगवती को हम प्रणाम करते हैं , हे देवी विश्व का पालन करिये ।

किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
किञ्चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि ।
किं चाहवेषु चरितानि तवाद् भुतानि
सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥ ६॥

किं = क्या
वर्णयाम्= वर्णन हो सकता है
तव = तुम्हारे
रूपमचिन्त्यम् एतत् = इस अचिन्तय रूप का
किं= क्या
च = और
अतिवीर्यम् = अत्यंत पराक्रम का
असुरक्षयकारि= असुरों का विनाश करने वाले
भूरि = अधिक , महान
किं = क्या
च= और
आहवेषु = चुनौती, युद्ध में
चरितानि =चरित्र है
तव अति = तुम्हारे अत्यंत
यानि= जो , ऐसा
सर्वेषु = सभी
देव्य = देवी = हे देवी
असुरदेवगणादिकेषु = असुरों , देवताओं आदि में, पर

तुम्हारे इस अचिन्तय रूप का और महान असुरों का विनाश करने वाले अत्यंत पराक्रम का और युद्ध में सभी असुरों, देवताओं आदि में जो तुम्हारे अत्यंत चरित्र है उनका क्या वर्णन हो सकता है ।

हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै-
र्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ।
सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत-
मव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्वमाद्या ॥ ७॥

हेतुः = कारण
समस्तजगतां = सारे जगत का
त्रिगुणापि = त्रिगुणी हो कर भी
दोषैः = दोष
न = नहीं
ज्ञायसे = दीखता
हरिहरादिभिः= विष्णु , शिव आदि देवता भी
अपि= भी
अपारा = जिसका पार नहीं पा सकते
सर्व आश्रया = सब का आश्रय
अखिलमिदं = यह सारा
जगदंशभूतम् = जगत आपका ही अंशभूत है
अव्याकृता= अव्याकृता
हि = निश्चित ही
परमा = परम
प्रकृतिः= प्रकृति
तवं =तुम
आद्या = आदिभूत

हे देवी तुम सारे जगत का (उत्पत्ति का) कारण हो , त्रिगुणी(सत्व, राज, तम) हो कर भी दोष नहीं दीखता, विष्णु , शिव आदि देवता भी जिसका पार नहीं पा सकते , यह सारा जगत आपका ही अंशभूत है । तुम निश्चित ही आदिभूत अव्याकृता ,परम प्रकृति हो ।

यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन
तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ।
स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु-
रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥ ८॥

यस्याः = जिसके
समस्तसुरता = सभी देवता

समुदीरणेन= उच्चारण से
तृप्तिं = तृप्ति
प्रयाति = प्राप्त करते हैं
सकलेषु= सभी
मखेषु = यज्ञों में
देवि = हे देवी
स्वाहासि = स्वाहा
वै = निश्चित रूप से
पितृगणस्य= पितृगणों की
च = और
तृप्तिहेतुः = तृप्ति के लिए
उच्चार्यसे = उच्चारित
त्वमत एव = तुम ही हो
जनैः = लोग
स्वधा च= और स्वधा

सभी यज्ञों में सारे देवता जिस के उच्चारण से तृप्ति प्राप्त करते हैं वह स्वाहा और पितृगणों की तृप्ति के लिए उच्चारित स्वधा हे देवी निश्चित रूप से आप ही हैं ।

या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्वं
अभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः ।
मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै-
र्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि ॥ ९॥

या = जिसका
मुक्तिहेतुः = मोक्ष प्राप्ति का साधन
अविचिन्त्यमहाव्रता = अचिन्त्य महाव्रत स्वरूपा
त्वं = तुम हो
अभ्यस्यसे = अभ्यास करते हैं
सुनियतेन्द्रिय = जितेन्द्रिय
तत्त्वसारैः = तत्व को ही सार वस्तु मानने वाले
मोक्षार्थिभिः = मोक्ष की अभिलाषा रखने वाले
मुनिभिः = मुनिजन
अस्त समस्तदोषै=सारे दोषों से रहित
विद्या असि = विद्या हैं
सा = वह

भगवती= भगवती
परमा = परा
हि देवि= और हे देवी

और हे देवी सारे दोषों से रहित, जितेन्द्रिय, तत्व को ही सार वस्तु मानने वाले, मोक्ष की अभिलाषा रखने वाले मुनिजन जिसका अभ्यास करते हैं वह मोक्ष प्राप्ति का साधन, अचिन्त्य, महाव्रत स्वरूपा, परा विद्या भगवती आप हैं ।

शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषाम् निधान-
मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् ।
देवि त्रयी भगवती भवभावनाय
वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥ १०॥

शब्दात्मिका = शब्दों की आत्मा
सुविमलर्ग्यजुषाम् सुविमल ऋग् यजुषाम् = अत्यंत निर्मल ऋग्वेद और यजुर्वेद
निधानम् = निधि, खजाना
उद्गीथ रम्यपद पाठवतां = उद्गीथ के मनोहर पदों के पाठों
च = और
साम्नाम् = सामवेद
देवि = देवी
त्रयी = त्रयी (तीनों वेद)
भगवती = भगवती हैं
भवभावनाय = संसार के पालन के लिए
वार्ता = वार्ता (खेती और आजीविका)
च = और
सर्वजगतां = सारे संसार की
परम आर्तिहन्त्री= पीड़ाओं को हरने वाली

हे देवी आप अत्यंत निर्मल ऋग्वेद और यजुर्वेद के शब्दों की आत्मा उद्गीथ के मनोहर पदों के पाठों और सामवेद का खज़ाना ,संसार के पालन के लिए वार्ता (खेती और आजीविका), सारे संसार की पीड़ाओं को हरने वाली त्रयी (तीनों वेद), भगवती हैं ।

मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसङ्गा ।
श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा
गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥ ११॥

मेधासि = मेधा (बुद्धि) शक्ति हैं
देवि = हे देवी
विदित अखिल शास्त्र सारा= सारे शास्त्रों के सार का ज्ञान कराने वाली
दुर्गासि = दुर्गा
दुर्ग भव सागर नौ: असङ्गा = दुर्गम भव सागर से पार उतारने वाली नौका रूप
श्रीः = लक्ष्मी
कैटभारि= कैटभ के दुश्मन विष्णु के
हृदयैककृताधिवासा= हृदय में एक मात्र निवास करने वाली
गौरी = पार्वती
त्वमेव = तुम ही
शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा = शिव द्वारा सम्मानित

हे देवी सारे शास्त्रों के सार का ज्ञान कराने वाली मेधा (बुद्धि) शक्ति , दुर्गम भव सागर से पार उतारने वाली नौका रूप दुर्गा , कैटभ के दुश्मन विष्णु के हृदय में एक मात्र निवास करने वाली लक्ष्मी , शिव द्वारा सम्मानित पार्वती तुम ही हो ।

ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र-
बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम् ।
अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि
वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥ १२॥

ईषत् = मंद , धीमी
सहासम् = हंसी से
अमलं = सुन्दर
परिपूर्णचन्द्र= पूरे चन्द्रमा के
बिम्बानुकारि = बिम्ब का अनुकरण करने वाला
कनकोत्तम कान्ति कान्तम् = शुद्ध सोने की चमक जैसा कांतिमय
अत्यद्भुतं = अत्यंत आश्चर्यजनक है
प्रहृतम्= प्रहार किया गया
आत्तरुषा = क्रोध में
तथापि = तो भी
वक्त्रं = मुख
विलोक्य = देख कर

सहसा = अचानक
महिषासुरेण = महिसासुर द्वारा

धीमी हंसी से सुन्दर पूरे चन्द्रमा के बिम्ब का अनुकरण करने वाला शुद्ध सोने की चमक जैसा कांतिमय मुख देख कर भी महिसासुर द्वारा सहसा प्रहार किया गया , अत्यंत आश्चर्यजनक है ।

दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल-
मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः ।
प्राणान् मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥ १३॥

दृष्ट्वा = देख कर
तु = और
देवि = देवी
कुपितं = क्रोध से
भ्रुकुटीकरालम् = भयानक भौहों वाले
उद्यत् शशाङ्क सदृशच्छवि = उदित होते चन्द्रमा के सामान लाल छवि को
यन्न = यत् न = जो नहीं
सद्यः= तुरंत
प्राणान् = प्राणों को
मुमोच = छोड़ दिया
महिष: = महिषासुर
तत् अतीव = वह अत्यंत
चित्रं = विचित्र है
कैर्जीव्यते = कौन जीत रह सकता है
हि =क्यूंकि
कुपिता = क्रोधित
अन्तक = यम को
दर्शनेन = देख कर

और देवी क्रोध से भयानक भौहों वाले उदित होते चन्द्रमा के सामान लाल छवि को देख कर जो महिषासुर ने तुरंत प्राण नहीं छोड़ दिए वह अत्यंत विचित्र है क्यूंकि क्रोधित यम को देखकर कौन जीवित रह सकता है ।

देवि प्रसीद परमा भवती भवाय

सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि ।
विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेत-
न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥ १४॥

देवि = देवी
प्रसीद = प्रसन्न हो जाओ
परमा = परमात्मस्वरूप
भवती = आप
भवाय = कल्याण के लिए
सद्यो = तुरंत
विनाशयसि = नष्ट कर देती हो
कोपवती = क्रोधित होने पर
कुलानि =कुलों को
विज्ञातम् = ज्ञात हुआ है
एतत् = ये
अधुनैव = अभी ही
यत् = जो
अस्तम्= नष्ट
एतत् = ये
नीतं = कर दी है
बलं = सेना
सुविपुलं = विशाल
महिषासुरस्य= महिषासुर की

हे परमात्मस्वरूपा देवी हमारे कल्याण के लिए प्रसन्न हो जाओ । आप क्रोधित होने पर कुलों को नष्ट कर देती हो , ये अभी ही ज्ञात हुआ है जो आपने महिषासुर की विशाल सेना को तुरंत नष्ट कर दिया है ।

ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥ १५॥

ते = वे
सम्मता = सम्मानित होते हैं
जनपदेषु = देश में
धनानि = धन , संपत्ति

तेषां = उनका
तेषां = उनका
यशांसि = यश
न = नहीं
च = और
सीदति = कमज़ोर , शिथिल
धर्मवर्गः= धरम कुल
धन्यास्त = धन्य वे
एव = ही
निभृत= विनीत , शीलयुक्त
आत्मज= संतान
भृत्य= नौकर
दारा= पत्नी
येषां = जिन पर
सदा अभ्युदयदा = हमेशा सौभाग्य देने वाली
भवती = आप
प्रसन्ना= प्रसन्न होती हैं

हमेशा सौभाग्य देने वाली आप जिन पर प्रसन्न होती हैं वे देश में सम्मानि होते हैं , उनका धन उनकी संपत्ति और धरम कुल शिथिल नहीं होता । विनीत संतान , नौकर और पत्नी से वे धन्य होते हैं ।

धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा-
ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति ।
स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादा-
ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥ १६॥

धर्म्याणि = धरम के
देवि = हे देवी
सकलानि = सभी
सदैव = हमेशा
कर्माणि = कर्म
अति = अत्यंत
आदृतः = सावधानी से
प्रतिदिनं = प्रतिदिन
सुकृती = अच्छे कर्मकरने वाले, पुण्यात्मा
करोति = करते हैं
स्वर्गं = स्वर्ग

प्रयाति = प्राप्त करते हैं
च = और
ततो = तब
भवती = आपकी
प्रसादात् = कृपा से
लोकत्रयेऽपि = तीनों लोकों में भी
फलदा = फल देने वाली हैं
ननु = निश्चय ही
देवि = देवी
तेन = इस प्रकार

आपकी कृपा से पुण्यात्मा हमेशा सावधानी से प्रतिदिन धरम के सभी काम करते हैं और तब स्वर्ग प्राप्त करते हैं । इस प्रकार हे देवी आप निश्चय ही तीनों लोकों के भी फल देने वाली हैं ।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्रदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाआर्द्रचित्ता ॥ १७॥

दुर्गे = कठिन समय में
स्मृता = स्मरण करने पर
हरसि = हरती हो
भीतिम = भय को
अशेषजन्तोः = सभी प्राणियों का
स्वस्थैः = अच्छे समय में
स्मृता = स्मरण करने पर
मतिम्= बुद्धि
अतीव = अत्यंत
शुभां = शुभ
ददासि = देती हो
दारिद्रदुःखभयहारिणि = गरीबी , दुःख , भय को हरने वाली
का = कौन
त्वत् अन्य = तुम्हारे सिवा
सर्व उपकारकरणाय = सब का उपकार करने के लिए
सदा = हमेशा
आद्र = दया से भीगा , नम

चिता = मन

गरीबी , दुःख , भय को हरने वाली देवी कठिन समय में स्मरण करने पर सभी प्राणियों के भय को हरती हो । अच्छे समय में स्मरण करने पर अत्यंत शुभ बुद्धि देती हो । तुम्हारे सिवा कौन है जिसका मन सब का उपकार करने के लिए हमेशा दयाद्र रहता है ।

एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ।
सङ्ग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
मत्वेति नूनमहितान्विनिहंसि देवि ॥ १८॥

एभिः= इन (राक्षसों) को
हतैः = मार कर
जगदुपैति = जगत उपैति = संसार को पहुंचे
सुखं = सुख
तथैते= तथा एते = और ये (राक्षस)
कुर्वन्तु = किये हैं
नरकाय नाम = नरक के लिए
चिराय = देर तक
पापम् =पाप
सङ्ग्राममृत्युम अधिगम्य = संग्राम में मृत्यु प्राप्त करके
दिवं = स्वर्ग
प्रयान्तु = प्राप्त करें
मत्वेति मति इति = इसप्रकार सोच कर
नूनम् = निश्चय ही
अहितान् = शत्रुओं को
विनिहंसि = नष्ट किया है , मारा है
देवि = हे देवी

इन (राक्षसों) को मार कर संसार को सुख पहुंचे और ये (राक्षस) (जि-न्होंने) नरक के लिए देर तक पाप किये हैं संग्राम में मृत्यु प्राप्त करके स्वर्ग प्राप्त करें, हे देवी निश्चय ही इस प्रकार सोच कर आपने शत्रुओं को मारा है ।

दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म
सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ।

लोकान्प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेअतिसाध्वी ॥ १९॥

दृष्ट्वैव = देख कर ही
किं = क्यों
न =नहीं
भवती = आप
प्रकरोति = कर देती
भस्म= भस्म , राख
सर्वासुरानरिषु = सभी असुरों को
यत्प्रहिणोषि = जो प्रहार करती हैं , फेंकती हैं
शस्त्रम् = शस्त्रों को
लोकान् प्रयान्तु = स्वर्ग लोक प्राप्त करें
रिपवोऽपि = शत्रु भी
हि = निश्चय ही
शस्त्रपूता = शस्त्र से पवित्र हो
इत्थं = ऐसी
मति: भवति= सोच होती हैं
तेष्वहितेषु = उनके हित में
साध्वी = अच्छी

आप सभी असुरों को देख कर ही भस्म क्यों नहीं कर देती जो शास्त्रों से प्रहार करती हैं । निश्चय ही शस्त्र से पवित्र हो शत्रु भी स्वर्ग लोक प्राप्त करें ऐसी उनके हित में अच्छी सोच होती हैं ।

खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः
शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ।
यन्नागता विलयमंशुमदिन्दुखण्ड-
योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥ २०॥

खड्ग = तलवार से
प्रभा = चमक , रौशनी के
निकर = समूह से
विस्फुरणैः= . कौंधना। (बिजली का)
तथा = और
उग्रैः= तीक्ष्ण
शूलाग्र = त्रिशूल की नोक के

कान्ति = प्रकाश
निवहेन = ढेर , पुंज
दृशो असुराणाम् = असुरों की दृष्टि
यत न आगता = जो नहीं हुई
विलयम् = नष्ट
अन्शुमत् = प्रभायुक्त
इन्दुखण्ड-योग्य = चाँद के टुकड़े जैसे
आननं = मुख को
तव = तम्हारा
विलोकयतां = देख रहे होंगे
तत् = तब
एतत् = इस

रौशनी के समूह से कौंधती तलवार से तीक्ष्ण त्रिशूल की नोक के प्रकाश पुंज से जो असुरों की दृष्टि नष्ट नहीं हुई (क्यूँकि वे) तब इस प्रभायुक्त चाँद के टुकड़े जैसे मुख को देख रहे होंगे ।

दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं
रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः ।
वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां
वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥ २१॥

दुर्वृत्त = दुराचारियों के
वृत्तशमनं= बुरे व्यवहार को दूर करने वाला है
तव = तुम्हारा
देवि = हे देवी
शीलं = शील
रूपं = रूप
तथा एतत = और यह
अविचिन्त्यम् = चिंतन से परे
अतुल्यम अन्यैः = दूसरों से तुलना से पर है
वीर्यं = पराक्रम
च = और
हन्तृ = नष्ट करने वाला है
हृतदेवपराक्रमाणां = देवताओं के पराक्रम को नष्ट करने वालों को
वैरिष्वपि = शत्रुओं पर भी
प्रकटिते = दिखाई है

एव = ही
दया = दया
त्वयि = तुम्हारे द्वारा
इत्थम् = इस प्रकार

हे देवी तुम्हारा शील दुराचारियों के बुरे व्यवहार को दूर करने वाला है और ये रूप चिंतन से परे और दूसरों से तुलना से पर है, और पराक्रम देवताओं के पराक्रम को नष्ट करने वालों को नष्ट करने वाला है । इस प्रकार शत्रुओं पर भी तुम्हारे द्वारा दया ही दिखाई गयी है ।

केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्र ।
चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा
त्वय्येव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥ २२॥

केन = क्या
उपमा = तुलना
भवतु = होगी
ते अस्य = आपके इस
पराक्रमस्य = पराक्रम की
रूपं = रूप
च = और
शत्रु भयकार्य= शत्रुओं में भय करने वाला
अतिहारि = अत्यंत मनोहर
कुत्र= कहाँ होगा
चित्ते = मन में
कृपा = दया
समरनिष्ठुरता = युद्ध में निष्ठुरता
च = और
दृष्टा = देखी है
त्वय्येव = तुम में ही
देवि = हे देवी
वरदे = वरदान देने वाली
भुवनत्रये अपि = तीनों लोकों में भी

हे वरदान देने वाली देवी आपके इस पराक्रम की क्या तुलना होगी और शत्रुओं में भय करने वाला अत्यंत मनोहर कहाँ होगा । मन में दया और युद्ध में निष्ठुरता भी तीनों लोकों में तुम में ही देखी है ।

त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ।
नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्तम्
अस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥ २३॥

त्रैलोक्यम एतत अखिलं = इस सारे त्रिलोक की
रिपुनाशनेन्= शत्रुओं के नाश से
त्रातं = रक्षा की है
त्वया = तुमने
समरमूर्धनि = युद्ध भूमि में
तेऽपि = उनको भी
हत्वा = मार कर
नीता = प्राप्त करवाया है
दिवं = स्वर्ग
रिपुगणा = शत्रुओं को
भयं अपि = भय को भी
अपास्तम् = दूर किया है
अस्माकम्= हमारे
उन्मत् असुरारि = उन्मत असुरों से
अभवन् = हुए
नमस्ते = आपको नमस्कार है ।

शत्रुओं के नाश से इस सारे त्रिलोक की रक्षा की है । युद्ध भूमि में उन शत्रुओं को मार कर स्वर्ग प्राप्त कराया है । उन्मत असुरों से हुए हमारे भय को भी दूर किया है । आपको नमस्कार है ।

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ २४॥

शूलेन = शूल से
पाहि = रक्षा करो

नो = हमारे
देवि = हे देवी
पाहि = रक्षा करो
खड्गेन = तलवार से
च = और
अम्बिके= अम्बिका
घण्टास्वनेन = घंटे की आवाज़ से
नः =हमारी
पाहि = रक्षा करो
चापज्यानिःस्वनेन = धनुष की टंकार से
च = और

हे देवी शूल से हमारी रक्षा करो , और अम्बिका तलवार से और घंटे की आवाज़ से और धनुष की टंकार से हमारी रक्षा करो ।

प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ २५॥

प्राच्यां = पूर्व से
रक्ष = रक्षा करें
प्रतीच्यां = पश्चिम
च = और
चण्डिके = चण्डिका
रक्ष = रक्षा करो
दक्षिणे = दक्षिण से
भ्रामणेन= घुमा कर
आत्मशूलस्य = अपने शूल को
उत्तरस्यां = उत्तर
तथा = और
ईश्वरि= हे ईश्वरी

हे चण्डिका पूर्व से, पश्चिम और पश्चिम से रक्षा करो , और हे ईश्वरी अपने त्रिशूल को घुमा कर उत्तर से हमारी रक्षा करो ।

सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
यानि चात्यन्तघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ २६॥

सौम्यानि = सौम्य
यानि = जो
रूपाणि = रूप
त्रैलोक्ये = तीनों लोकों में
विचरन्ति = घूमते हैं
ते = आपके
यानि = जो
च = और
अत्यन्तघोराणि = अत्यंतर भयंकर
तै = उनसे
रक्षा
अस्मां = हमारी
तथा = और
भुवम् = संसार की

तीनों लोकों में जो तुम्हारे सौम्य और अत्यंत भयंकर रूप घुमते हैं उनसे हमारी और संसार की रक्षा करो ।

खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्रानि तेऽम्बिके ।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ २७॥

खड्ग शूल गदादीनि= खड्ग शूल गदा आदि
यानि = जो
च= और
अस्त्रानि = अस्त्र
ते = आपके
अम्बिके = हे अम्बिका
करपल्लवसङ्गीनि =कमल जैसे हाथों के संगी हैं
तै: = वे
अस्मान् रक्ष = हमारी रक्षा करे
सर्वतः= सब जगह

और हे अम्बिका खड्ग शूल गदा आदि जो अस्त्र आपके कमल जैसे हाथों के संगी हैं , वे सब जगह हमारी रक्षा करे ।

ऋषिरुवाच ॥ २८॥
ऋषि बोले ।

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः ।
अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः ॥ २९॥

एवं = इस प्रकार
स्तुता = स्तुति की
सुरैः = देवताओं ने
दिव्यैः = दिव्य
कुसुमैः= फूलों से
नन्दन = नंदन वन में
उद्भवैः = उत्पन्न
अर्चिता = पूजा की
जगतां धात्री = जगत की धारण करने वाली देवी की
तथा = और
गन्धान उलेपनैः = गंध चन्दन से

इस प्रकार देवताओं ने जगत की धारण करने वाली देवी की नंदन वन में उत्पन्न दिव्य फूलों से स्तुति की और गंध, चन्दन से पूजा की

भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैः सुधूपिता ।
प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान् ॥ ३०॥

भक्त्या = भक्ति से
समस्तैः = सभी
त्रिदशैः = देवताओं
दिव्यैः धूपैः =दिव्या धूपों से
सुधूपिता = आघ्रापित
प्राह = बोली
प्रसादसुमुखी = प्रसन्न मुख वाली
समस्तान् = सभी
प्रणतान् = प्रणाम करते हुए
सुरान् = देवताओं को

सभी देवताओं से दिव्या धूपों से आघ्रापित प्रसन्न मुख वाली देवी सभी प्रणाम करते हुए देवताओं को बोली ।

देव्युवाच ॥ ३१॥

देवी बोलीं ।

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥ ३२॥

व्रियतां = कहो , मांगो
त्रिदशाः = देवताओं
सर्वे = सब
यत् = जो
अस्मत्तः= मुझसे
अभिवाञ्छितम् = अभिलाषित है

सब देवताओं जो अभिलाषित है मुझसे मांगों ।

देवा ऊचुः ॥ ३३॥

देवता बोले ।

भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिदवशिष्यते ॥ ३४॥
भगवत्या = भगवती ने
कृतं = कर दिया
सर्वं = सब
न = नहीं
किञ्चिद= कुछ भी
अवशिष्यते = शेष है

भगवती ने सब कर दिया है, कुछ भी शेष नहीं है ।

यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ।

यदयं = जो इस
निहतः = मार दिया है
शत्रुः = शत्रु
अस्माकं = हमारे
महिषासुरः = महिसासुर को

जो हमारे इस शत्रु महिषासुर को मार दिया है ।

यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ॥ ३५॥

यदि = यदि
चापि = और भी
वरो = वर
देय = देना है
त्वया = आपके द्वारा
अस्माकं = हमें

महेश्वरि = हे माहेश्वरी

हे माहेश्वरी यदि और भी वर आपके द्वारा हमें देना है ..

संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः ।

संस्मृता संस्मृता= जब जब स्मरण करें
त्वं तुम
नो = हमारी
हिंसेथाः = नाश करो
परमापदः = परम आपदाओं का

जब जब स्मरण करें तुम हमारी परम आपदाओं का नाश करो ।

यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥ ३६॥

यश्च = और जो
मत्य।र्ः = मनुष्य
स्तवैः = स्तोत्रों से
एभि = इन
त्वां = तुम्हारी
स्तोष्यति = स्तुति करता है
अमलानने = प्रसन्नमुखी

हे प्रसन्न मुखी और जो मनुष्य इन स्तोत्रों से तुम्हारी स्तुति करता है

तस्य वित्तर्द्धि।विभवैर्धनदारादिसम्पदाम् ।
वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥ ३७॥

तस्य = उसके
वित्तर्द्धि= वित्त ऋद्धि = वित्त ,समृद्धि
विभवै: = वैभव
धनदारादि = धन, पत्नी आदि
सम्पदाम् = सम्पदा में
वृद्धये = वृद्धि करो
अस्मत् = हम से
प्रसन्ना = प्रसन्न
त्वं = तुम
भवेथाः = रहो
सर्वदा = हमेशा
अम्बिके = हे अम्बिका

उसके वित्त, ऋद्धि ,धन पत्नी आदि संपत्ति में वृद्धि करो । हे अम्बिका आप हमसे हमेशा प्रसन्न रहो ।

ऋषिरुवाच ॥ ३८॥

ऋषि बोला ।

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथात्मनः ।
तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ॥ ३९॥

इति = इस प्रकार
प्रसादिता = प्रसन्न किया
देवै: = देवताओं ने
जगत: = संसार
अर्थे = कल्याण के लिए
तथा आत्मनः = इसी प्रकार
तथेति= ऐसा ही हो
उक्त्वा = कह कर
भद्रकाली = भद्र काली
बभूवा= हो गयी
अन्तर्हिता = अंतर्ध्यान

नृप =हे राजा

इस प्रकार देवताओं ने संसार के तथा अपने कल्याण के लिए देवी को प्र-
सन्न किया । भद्र काली देवी ऐसा ही हो कह कर अंतर्ध्यान हो गयी ।

इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा ।
देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी ॥ ४०॥

इत्येतत्कथितं = इति एतत कथितं = इस प्रकार ये कह दिया
भूप = हे राजा
सम्भूता = उतपन्न हुई
सा = वह
यथा = जैसे
पुरा = पूर्व काल में
देवी = देवी
देवशरीरेभ्यो = देवताओं के शरीर से
जगत्त्रय हितैषिणी = तीनों लोकों का कल्याण चाहने वाली

जिस प्रकार पूर्वकाल में तीनों लोकों का कल्याण चाहने वाली देवी देव-
ताओं के शरीर से प्रकट हुई , हे राजन इस प्रकार ये कह दिया ।

पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्भूता यथाभवत् ।
वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ४१॥
रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी ।

पुनः च = और दुबारा
गौरीदेहात् = पार्वती के शरीर से
सा = वह
समुद्भूता = प्रकट
यथा= जिस प्रकार
अभवत् = हुई
वधाय =वध करने के लिए
दुष्टदैत्यानां = दुष्ट दैत्यों
तथा = और
शुम्भनिशुम्भयोः = शुम्भ निशुम्भ के

रक्षणाय= रक्षा के लिए
च = और
लोकानां = लोकों की
देवानाम उपकारिणी = देवताओं का उपकार करने वाली

और दुबारा दुष्ट दैत्यों और शुम्भ निशुम्भ का वध करने के लिए और लोकों की रक्षा के लिए, देवताओं का उपकार करने वाली वह, पार्वती के शरीर से जिस प्रकार प्रकट हुई

तच्छृणुष्व मयाआख्यातं यथावत्कथयामि ते ॥ ४२॥

तत् = वह
शृणुष्व= सुनो
मया अख्यातं = मेरे द्वारा कहा गया
यथावत् = यथावत (जैसा घटित हुआ वैसा)
कथयामि = कहता हूँ , वर्णन करता हूँ
ते= तुम्हें

मेरे द्वारा कहा गया वह सुनो , तुम्हें यथावत् कहता हूँ ।

। ह्रीं ॐ ।
॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे
देवीमाहात्म्ये
शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४॥

पञ्चमोऽध्यायः

विनियोगः
अस्य श्री उत्तरचरित्रस्य रुद्र ऋषिः ।
श्रीमहासरस्वती देवता ।
अनुष्टुप् छन्दः । भीमा शक्तिः । भ्रामरी बीजम् ।
सूर्यस्तत्त्वम् ।
सामवेदः स्वरूपम् । श्रीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे
उत्तरचरित्रपाठे
विनियोगः ।
ध्यानम्
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं

हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥

घण्टाशूलहलानि =घंटा , शूल , हल
शङ्खमुसले = शंख , मूसल
चक्रं धनुः सायकं= चक्र, धनुष। तीर
हस्ताब्जैः दधतीं = कर कमलों में धारण करती है
घनान्त = शरद ऋतु के
विलसत् शीतांशुतुल्यप्रभाम् = चमकते चाँद के सामान प्रभा वाली
गौरीदेहसमुद्भवां = गौरी के शरीर से प्रकट हुई
त्रिजगताम् आधारभूतां = तीनों जगतों की आधारभूता
महापूर्वामत्र
सरस्वतीमनुभजे = सरस्वती का भजन करता / करती हूँ
शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् = शुम्भ आदि दैत्यों का नाश करने वाली

अपने करकमलों में घंटा , शूल , हल, शंख , मूसल, चक्र, धनुष, तीर धारण करने वाली , शरद ऋतु के चमकते चाँद के सामान प्रभा वाली , गौरी के शरीर से प्रकट हुई , तीनों जगतों की आधारभूता, शुम्भ आदि दैत्यों का नाश करने वाली सरस्वती का भजन करता / करती हूँ ।

ॐ क्लीं ऋषिरुवाच ॥ १॥

ऋषि बोले ।

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः ।
त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात् ॥ २॥

पुरा = पूर्व काल में
शुम्भनिशुम्भाभ्याम असुराभ्यां = शुम्भ और निशुम्भ असुरों ने
शचीपतेः= शची के पति इंद्र से
त्रैलोक्यं = तीनों लोकों को
यज्ञभागाश्च = और यज्ञ भाग को
हृता = छीन लिया

मदबलाश्रयात्= बल के घमंड में आकर

पूर्व काल में शुम्भ और निशुम्भ असुरों ने बल के घमंड में आकर शची के पति इंद्र से तीनों लोकों को और यज्ञ भाग को छीन लिया ।

तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम् ।
कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥ ३॥

तावेव = वे दोनों ही
सूर्यतां = सूर्य का
तद्वत् =उसी प्रकार
अधिकारं = अधिकारों का
तथा = इसी प्रकार
एन्दवम् = चन्द्रमा
कौबेरम = कुबेर का
अथ = तब
याम्यं = यम का
च = और
चक्राते = सञ्चालन करने लगे
वरुणस्य = वरुण का
च =और

उसी प्रकार वे दोनों ही सूर्य के , इसी प्रकार चन्द्रमा , तब कुबेर और याम के और वरुण के अधिकारों का सञ्चालन करने लगे ।

तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च ।

तावेव = वे दोनों ही
पवनर्द्धिं = वायु
च = और
चक्रतुः = करने लगे
वह्निकर्म च = और आग के कार्य

और वे दोनों ही वायु और अग्नि के कार्यों को करने लगे ।

ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः ॥ ४॥

ततो = तब
देवा = देवताओं को

विनिर्धूता : = निकाल दिया गया
भ्रष्टराज्याः = राज्यभ्रष्ट
पराजिताः= पराजित

तब पराजित देवताओं को राष्ट्रभ्रष्ट कर निकाल दिया गया ।

हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः ।
महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥ ५॥

हृताधिकारा: = अधिकार हीन
त्रिदशास्ताभ्यां = देवताओं ने
सर्वे = सब
निराकृताः= अपमानित , निकाले गए
महासुराभ्यां= दोनों महान असुरों द्वारा
तां = उस
देवीं = देवी का
संस्मरन्ति = स्मरण किया
अपराजिताम् = अपराजिता

दोनों महान असुरों द्वारा निकाले गए अधिकार हीन देवताओं ने उस अप-राजिता देवी का स्मरण किया ।

तयास्माकं वरो दत्तो यथापत्सु स्मृताखिलाः ।
भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परमापदः ॥ ६॥

तया = उसने
अस्माकं = हमें
वरो = वरदान
दत्तो = दिया था
यथा = जिस प्रकार , कि
आपत्सु = आपत्ति के समय
स्मृता = स्मरण करने पर
अखिलाः = सभी
भवतां = भविष्य में
नाशयिष्यामि = नाश करुँगी
तत्क्षणात्= उसी क्षण

परमापदः= परम आपदाओं का

उसने हमे वरदान दिया था कि भविष्य में आपत्ति के समय स्मरण करने पर उसी क्षण सभी परम आपदाओं का नाश करुँगी ।

इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम् ।
जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥ ७॥

इति = इस प्रकार
कृत्वा = कर
मतिं = सोच
देवा = देवता
हिमवन्तं = हिमालय पर
नगेश्वरम् = गिरिराज
जग्मुः= गए
तत्र = वहाँ
ततो = तब
देवीं = देवी
विष्णुमायां = विष्णुमाया की
प्रतुष्टुवुः -= स्तुति की

इस प्रकार सोच कर देवता गिरिराज हिमालय पर गए । तब वहाँ देवी विष्णुमाया की स्तुति की ।

देवा ऊचुः ॥ ८॥

देवता बोले ।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥ ९॥

नमो = नमन है
देव्यै = देवी को
महादेव्यै = महा देवी को
शिवायै= कल्याणकारी देवी को
सततं = हमेशा
नमः = नमन करते हैं
नमः = नमन

प्रकृत्यै = प्रकृति (सृजन का मूल) को
भद्रायै = भद्रा(शुभ) को
नियताः = एकाग्रता से
प्रणताः = प्रणाम करते हैं
स्म = हमेशा
ताम् = उसे

देवी को नमन है , कल्याणकारी महादेवी को हमेशा नमन है , प्रकृति, भद्रा को नमन है , उस देवी को हम एकाग्रता से हमेशा प्रणाम करते हैं ।

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः ।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥ १०॥

रौद्रायै = रौद्रा को
नमो = नमन है
नित्यायै = नित्या
गौर्यै = गौरी को
धात्र्यै = धात्री को
नमो नमः = नमन है नमन है
ज्योत्स्नायै = ज्योत्सनामयी
चेन्दुरूपिण्यै = चन्द्ररूपणी
सुखायै = सुख स्वरूपा को

सततं नमः = लगातार नमन है

रौद्रा को नमन है ,नित्या, गौरी को, धात्री को नमन है नमन है।ज्योत्सत्सनामयी , चन्द्ररूपणी , सुख स्वरूपा को लगातार नमन है ।

कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः ।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥ ११॥

कल्याण्यै = कल्याण कारी
प्रणता = प्रणाम है
वृद्ध्यै = वृद्धि
सिद्ध्यै = सिद्धि
कुर्मो = आधार
नमो नमः = नमन है नमन है
नैर्ऋत्यै = राक्षसों की नैऋति

भूभृतां = राजाओं की
लक्ष्म्यै = लक्ष्मी
शर्वाण्यै = शर्वाणी
ते = आपको
नमो नमः = नमन है नमन है

कल्याणकारी देवी को प्रणाम है , वृद्धि और सिद्धि की आधार देवी को नमन है, नमन है , नैऋति, राजाओं की लक्ष्मी , शिवपत्नी आपको नमन है, नमन है ।

दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै ।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥ १२॥

दुर्गायै = दुर्गा
दुर्गपारायै = दुर्गपारा (संकट में पार उतारने वाली)
सारायै = सारा (सारभूत)
सर्वकारिण्यै = सर्वकारिणी
ख्यात्यै = ख्याति
तथैव = इसी प्रकार ही
कृष्णायै=कृष्णा
धूम्रायै = धूम्रा देवी को

सततं नमः = हमेशा नमन है

दुर्गायै = दुर्गा, दुर्गपारा (संकट में पार उतारने वाली), सारा (सारभूत), सर्वकारिणी , ख्याति, इसी प्रकार ही कृष्णा, धूम्रा देवी को हमेशा नमन है ।

अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः ।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥ १३॥

अति सौम्य = अत्यंत सौम्य
अतिरौद्रायै = अत्यंत रौद्र रूपा
नतास्तस्यै = उसको नमस्कार करते है
नमो नमः = बार बार नमन करते हैं
नमो = नमन है
जगत्प्रतिष्ठायै = जगत की आधारभूता
देव्यै = देवी को

कृत्यै = करते हैं

नमो नमः = बार बार नमन

अत्यंत सौम्य , अत्यंत रौद्र रूपा उसको नमस्कार करते है , बार बार नमन करते हैं , जगत की आधारभूता को नमन है , देवी को बार बार नमन है ।

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १४-१६॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
विष्णुमायेति विष्णु माया इति = विष्णुमाया इस प्रकार
शब्दिता = कही जाती है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में विष्णुमाया इसप्रकार कही जाती है , उसको नम-स्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १७-१९॥

या देवी सर्वभूतेषु = जो देवी सब प्राणियों में
चेतनः इति अभिधीयते = चेतना इस प्रकार कहलाती है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में चेतना इस प्रकार कहलाती है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २०-२२॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
बुद्धिरूपेण = बुद्धि के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में बुद्धि के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २३-२५॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
निद्रारूपेण = निद्रा के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में निद्रा के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २६-२८॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
क्षुधारूपेण = भूख के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में भूख के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २९-३१॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
छायारूपेण = छाया के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में छाया के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३२-३४॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
शक्तिरूपेण = शक्ति के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में शक्ति के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३५-३७॥

या = जो

देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
तृष्णारूपेण = तृष्णा के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में तृष्णा के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ३८-४०॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
क्षान्तिरूपेण = क्षमा के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में क्षमा के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४१-४३॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
जातिरूपेण = जाति के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में जाति के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है ,

उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु लज्ज्ञारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४४-४६॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
लज्ज्ञारूपेण =लज्ज्ञा के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में लज्ज्ञा के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ४७-४९॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
शान्तिरूपेण = शान्ति के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में शान्ति के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५०-५२॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
श्रद्धारूपेण = श्रद्धा के रूप में

संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में श्रद्धा के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५३-५५॥
या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
कान्तिरूपेण = कान्ति(चमक , सौंदर्य) के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में कान्ति के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५६-५८॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
लक्ष्मीरूपेण = लक्ष्मी के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में लक्ष्मी के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता ।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ५९-६१॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
वृत्तिरूपेण = वृत्ति के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में वृत्ति के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६२-६४॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
स्मृतिरूपेण = स्मृति के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में स्मृति के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६५-६७॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
दयारूपेण = दया के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में दया के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ६८-७०॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
तुष्टिरूपेण = तुष्टि के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में तुष्टि के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७१-७३॥

या = जो
देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
मातृरूपेण = माता के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में माता के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७४-७६॥

या = जो

देवी = देवी
सर्वभूतेषु = सब प्राणियों में
भ्रान्तिरूपेण = भ्रान्ति के रूप में
संस्थिता = स्थित है
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो देवी सब प्राणियों में भ्रान्ति के रूप में स्थित है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है , उसको नमस्कार है ,बारम्बार नमस्कार है ।

इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या ।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥ ७७॥

इन्द्रियाणाम् अधिष्ठात्री = इन्द्रियों की अधिष्ठात्री(मुखिया) हैं
भूतानां = प्राणियों की
च= और
अखिलेषु = सभी
या = जो
भूतेषु = प्राणियों में
सततं = सदा
तस्यै = उस
व्याप्त्यै= व्याप्त है
देव्यै = देवी को
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो सभी प्राणियों की इन्द्रियों की अधिष्ठात्री(मुखिया) हैं और सभी प्राणियों में सदा व्याप्त हैं , उस देवी को बारम्बार नमस्कार है ।

चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत् ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ७८-८०॥

चितिरूपेण = चैतन्य रूप से
या = जो
कृत्स्नम्= कर के
एतत्= इस
व्याप्य = व्याप्त
स्थिता = स्थित हैं

जगत् = संसार को
नमस्तस्यै= नमः तस्यै = उसको नमस्कार है
नमो नमः = बारम्बार नमस्कार है

जो चैतन्य रूप से इस जगत को व्याप्त करके स्थित हैं उसको नमस्कार है, उसको नमस्कार है, उसको नमस्कार है, बारम्बार नमस्कार है ।

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता ।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥ ८१॥

स्तुता = स्तुति की
सुरैः = देवताओं ने
पूर्वम्= पूर्वकाल में
अभीष्टसंश्रयात् = अभीष्ट की प्राप्ति होने से
तथा = इसी प्रकार
सुरेन्द्रेण = देवराज इंद्र ने
दिनेषु = रोज
सेविता = सेवा की
करोतु = करे
सा = वह
नः = हमारा
शुभहेतुः ईश्वरी= कल्याण की साधनभूता ईश्वरी
शुभानि = कल्याण
भद्राण्य = मंगल करे
अभिहन्तु = नाश करे
च= और
आपदः = आपदाओं का

पूर्वकाल में अभीष्ट की प्राप्ति होने से देवताओं ने स्तुति की , इसी प्रकार देवराज न्द्र ने रोज़ सेवा की वह कल्याण की साधनभूता ईश्वरी हमारा कल्याण और मंगल करे और आपदाओं का नाश करे ।

या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-

रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते ।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥ ८२॥

या = जो
साम्प्रतं = अब
च = और
उद्धत दैत्य तापितै = उद्दंड दैत्यों से सताए हुए
अस्माभि:= हम
ईशा = ईश्वरी को
च = और
सुरै:= देवता
नमस्यते = नमस्कार करते हैं
या = जो
च = और
स्मृता = स्मरण करने पर
तत्क्षणम एव = उसी क्षण ही
हन्ति = नाश करे
नः= हमारी
सर्व आपदो = सभी आपदाओं का
भक्ति विनम्र मूर्तिभिः= भक्ति से विनम्र हो

और जो उद्दंड दैत्यों से सताए हुए हम देवताओं की ईश्वरी है और जो भक्ति से विनम्र हो स्मरण करने पर उसी क्षण ही हमारी सभी आपदाओं नष्ट करती है। (उसे हम) इस समय नमस्कार करते हैं ।

ऋषिरुवाच ॥ ८३॥

ऋषि बोला ।

एवं स्तवाभियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती ।
स्नातुमभ्याययौ तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥ ८४॥

एवं = इस प्रकार
स्तवाभियुक्तानां = स्तुति करने पर
देवानां = देवताओं के द्वारा
तत्र= वहां
पार्वती= पार्वती
स्नातुम = स्नान के लिए

अभ्याययौ= आई
तोये = पानी में
जाह्नव्या= गंगा के
नृपनन्दन = हे राजा

हे राजा इस प्रकार देवताओं के द्वारा स्तुति करने पर पार्वती गंगा के पानी में स्नान करने के लिए वहां आई ।

साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का ।
शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूताब्रवीच्छिवा ॥ ८५॥

सा = वह
अब्रवीत् = बोली
तान् = उन
सुरान् = देवताओं से
सुभ्रूः= सुन्दर भोहों वाली
भवद्भिः = आप
स्तूयतेऽत्र = यहां स्तुति करते हैं
का = किस की
शरीरकोशत्= शरीर से
च = और
अस्याः = उसके
समुद्भूता= प्रकट हुई
अब्रवीत् = बोली
शिवा = शिवा देवी

सुन्दर भोहों वाली वह उन देवताओं से बोलीं , आप यहां किस की स्तुति करते हैं और उसके शरीर से प्रकट हुई शिवा देवी बोलीं ।

स्तोत्रं ममैतत्क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः ।
देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन पराजितैः ॥ ८६॥

स्तोत्रं = स्तोत्र
मम एतत् = मेरा ये
क्रियते = कर रहे हैं
शुम्भदैत्य= शुम्भदैत्य से

निराकृतैः = अपमानित
देवैः = देवता
समेतैः = इकट्ठे हुए
समरे = युद्ध में
निशुम्भेन = निशुम्भ से
पराजितैः = पराजित हो

शुम्भदैत्य से अपमानित, युद्ध में निशुंभ से पराजित हो इकट्ठे हुए देवता मेरा ये स्तोत्र कर रहे हैं ।

शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या निःसृताम्बिका ।
कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥ ८७॥

शरीरकोशात् = शरीर कोश से
यत् = क्यूंकि
तस्याः = उस
पार्वत्या = पार्वती के
निःसृत अम्बिका = अम्बिका प्रकट हुई
कौशिकी इति = कोशिकी , इस प्रकार
समस्तेषु = सारे
ततो = इसलिए
लोकेषु= लोकों में
गीयते = कही जाती है

क्यूंकि अम्बिका उस पार्वती के शरीरकोश से प्रकट हुई , इसलिए सारे लोकों में कौशिकी इस प्रकार कही जाती है ।

तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापि पार्वती ।
कालिकेति समाख्याता हिमाचलकृताश्रया ॥ ८८॥

तस्यां = उस कौशिकी के
विनिर्गतायां = निकलने के बाद
तु = और
कृष्णाभूत् = काली हो गयी
सा अपि = वह भी
पार्वती = पार्वती

कालिकेति= कालिका देवी इस प्रकार
समाख्याता = विख्यात हुई
हिमाचलकृताश्रया = हिमाचल पर रहने वाली

और उस कौशिकी के निकलने के बाद वह पार्वती भी काली हो गयी , (और) हिमाचल पर रहने वाली कालिका देवी इस प्रकार विख्यात हुईं ।

ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनोहरम् ।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ८९॥

ततो अम्बिकां = तब अम्बिका को
परं = परम
रूपं = रूप
बिभ्राणां = धारण करने वाली
सुमनोहरम् = मनोहर
ददर्श= देखा
चण्डो मुण्डश्च = चंड और मुंड ने
भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः = शुम्भनिशुम्भ के सेवक

तब परम मनोहर रूप धारण करने वाली अम्बिका को शुम्भनिशुम्भ के सेवक चंड और मुंड ने देखा ।

ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा ।
काप्यास्ते स्त्री महाराज भासयन्ती हिमाचलम् ॥ ९०॥

ताभ्यां = उनके द्वारा
शुम्भाय = शुम्भ को
आख्याता = बताया गया
च= और
सा= वह
अतीव = अत्यंत
सुमनोहरा = मनोहर
काप्यास्ते = का अपि = कोई
आस्ते = वहां है ,स्थित है
स्त्री = स्त्री
महाराज = हे महराज
भासयन्ती = प्रकाशित कर रही है

हिमाचलम् = हिमालय को

उनके द्वारा शुम्भ को बताया गया कि कोई अत्यंत मनोहर स्त्री वहां है जो हिमालय को प्रकाशित कर रही है ।

नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं केनचिदुत्तमम् ।
ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर ॥ ९१॥

नैव = न एव = ना ही
तादृक् = उसके जैसा
क्वचित् = कहीं
रूपं = कोई रूप
दृष्टं = देखा
केनचित्= किसी का
उत्तमम् = उत्तम
ज्ञायतां = पता लगाइये
काप्य असौ = कौन यह
देवी = देवी है
गृह्यतां = ग्रहण करो
च= और
असुरेश्वर= असुरराज

उसके जैसा उत्तम रूप किसीका और कहीं नहीं देखा । हे असुरराज पता लगाइये यह देवी कौन है और ग्रहण कीजिये ।

स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा ।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति ॥ ९२॥

स्त्रीरत्नम् = स्त्रियों में रतन है
अतिचार्वङ्गी = अति चारु अंगी = अत्यंत सुन्दर अंगों की
द्योतयन्ती = प्रकाशित कर रही है
दिशः= दिशाओं को
त्विषा = चमक से
सा = वह
तु = = निश्चय ही
तिष्ठति = स्थित है
दैत्येन्द्र = दैत्यराज

तां = वह
भवान् = आप
द्रष्टुम् = देखने
अर्हति= योग्य है

वह स्त्रियों में रतन है , अत्यंत सुन्दर अंगों की चमक से दिशाओं को प्रकाशित करती हुई स्थित है , वह निश्चित ही आपके देखने योग्य है ।

यानि रत्नानि मणयो गजाश्वादीनि वै प्रभो ।
त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते गृहे ॥ ९३॥

यानि = जो भी
रत्नानि = रत्न
मणयो = मणि
गजाश्वादीनि = हाथी, घोड़े आदि
वै = वे
प्रभो = प्रभु
त्रैलोक्ये = तीनों लोक में
तु = निश्चित रूप से
समस्तानि = सब
साम्प्रतं = अब
भान्ति = चमक रहे हैं
ते = तुम्हारे
गृहे = घर में

तीनों लोकों में मणि, हाथी, घोड़े आदि जो भी रत्न हैं , वे वे सब निश्चित रूप से अब आपके घर में चमक रहे हैं ।

ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात् ।
पारिजाततरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥ ९४॥

ऐरावतः = ऐरावतः
समानीतो = लिया गया
गजरत्नं = हाथियों में रत्न
पुरन्दरात् = इंद्र से
पारिजाततरु= पारिजात वृक्ष
च = और

अयं = यह
तथैव = वैसे ही
उच्चैःश्रवा = उच्चैःश्रवा
हयः= घोडा

इंद्र से लिया गया हाथियों में रत्न ऐरावत और यह पारिजात वृक्ष , वैसे ही उच्चैःश्रवा घोडा ।

विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति तेऽङ्गणे ।
रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम् ॥ ९५॥

विमानं = विमान
हंस संयुक्तम् एतत् = हंस से युक्त यह
तिष्ठति = स्थित है
ते अङ्गणे = आपके आँगन में
रत्नभूतम् = रत्न जड़ा
इह = यहां
आनीतं = लाया गया है
यदा = जो
आसीत्= था
वेधसो = ब्रह्मा का
अद्भुतम् = अद्भुत

हंसों से युक्त रत्नजड़ा अद्भुत विमान जो ब्रह्मा का था , यहां लाया गया आपके आँगन में स्थित है ।

निधिरेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात् ।
किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धिर्मालामम्लानपङ्कजाम् ॥ ९६॥

निधि: = निधि
एष = ये
महापद्मः = महापद्म नामक
समानीतो = छीन लाये हैं
धनेश्वरात् = कुबेर से
किञ्जल्किनीं = किञ्जल्किनी
ददौ = दी है
च = और

अब्धिः= समुन्दर ने
मालाम्= माला
अम्लान पङ्कजाम् = न कुम्लाने वाले कमलों की

ये महापद्म नमक निधि कुबेर से छीन लाये हैं और समुन्दर ने ना कुम्लाने वाले कमलों की किञ्जल्किनीं माला दी है ।

छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्त्रावि तिष्ठति ।
तथायं स्यन्दनवरो यः पुरासीत्प्रजापतेः ॥ ९७॥

छत्रं = छत्र
ते = और
वारुणं = वरुण का
गेहे = घर में
काञ्चनस्त्रावि = सोने की वर्षा करने वाला
तिष्ठति = स्थित है
तथा= इसी प्रकार
अयं = ये
स्यन्दन वरो = श्रेष्ठ रथ
यः = जो
पुरा आसीत्= पहले था
प्रजापतेः प्रजापति का

और वरुण का सोने की वर्षा करने वाला छत्र आपके घर में स्थित है , इसी प्रकार श्रेष्ठ रथ जो पाले प्रजापति का था ।

मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता ।
पाशः सलिलराजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥ ९८॥

मृत्योः = यम से
उत्क्रान्तिदा = उत्क्रान्तिदा
नाम = नाम की
शक्तिः = शक्ति
ईश = हे ईश्वर
त्वया = तुमने
हृता = छीन ली है
पाशः = पाश

सलिलराजस्य= सलिल राज वरुण का
भ्रातुः भाई ने
तव = तुम्हारे
परिग्रहे = छीन लिया है

हे ईश्वर तुमने यम से उत्क्रान्तिदा नाम की शक्ति छीन ली है ,सलिल राज वरुण का पाश तुम्हारे भाई ने छीन लिया है ।

निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता रत्नजातयः ।
वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥ ९९॥

निशुम्भस्य = निशुम्भ के
अब्धिजाता= समुन्दर से उत्पन्न
च = और
समस्ता =सब
रत्नजातयः = रत्नों के प्रकार
वह्निः = अग्नि ने
अपि = भी
ददौ = दिए हैं
तुभ्यम् = तुम्हे
अग्निशौचे = अग्नि द्वारा शुद्ध किये
च = और
वाससी = वस्त्र

और निशुम्भ के पास समुन्दर से उत्पन्न सब रत्नों के प्रकार हैं और अग्नि ने भी अग्नि से शुद्ध वस्त्र तुम्हे दिए हैं ।

एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते ।
स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥ १००॥

एवं = इस प्रकार
दैत्येन्द्र = दैत्यराज
रत्नानि = रत्न
समस्तानि = सब
आहृतानि = छीन लिए हैं
ते = तुमने
स्त्रीरत्नम् = स्त्रियों में रत्न

एषा= यह
कल्याणी = कल्याणी
त्वया = तुम्हारे द्वारा
कस्मात् न = किसलिए नहीं
गृह्यते अधिकृत की जाए

इस प्रकार तुमने दैत्यराज सब रत्न छीन लिए हैं , यह स्त्रियों में रत्न कल्याणी तुम्हारे द्वारा किसलिए नहीं अधिकृत की जाए ।

ऋषिरुवाच ॥ १०१॥

ऋषि बोला ।

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः ।
प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ॥ १०२॥

निशम्येति = इस प्रकार सुन कर
वचः = वचन
शुम्भः = शुम्भ
स = वह
तदा = तब
चण्डमुण्डयोः = चण्डमुण्ड के
प्रेषयामास = पास भेजा
सुग्रीवं = सुग्रीव को
दूतं = दूत बना
देव्या = देवी के
महासुरम् = महासुर

चण्डमुण्ड के इस प्रकार के वचनों को सुनकर उस शुम्भ ने महासुर सुग्रीव को दूत बना कर देवी के पास भेजा ।

इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम ।
यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥ १०३॥

इति चेति = इस प्रकार के
च = और
वक्तव्या = कहना

सा = उसको
गत्वा = जा कर
वचनान्मम = मेरे वचनों को
यथा = जिससे
च = और
अभ्येति = पास आ जाए
सम्प्रीत्या = प्रसन्न हो
तथा = ऐसा
कार्यं = करना है
त्वया = तुम्हें
लघु = शीघ्र

और जा कर उसको इस प्रकार के मेरे वचनों को कहना और ऐसा तुम्हें करना है जिससे प्रसन्न हो कर शीघ्र (मेरे) पास आ जाए ।

स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने ।
तां च देवीं ततः प्राह श्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥ १०४॥

स = वह
तत्र = वहां
गत्वा = जा कर
यत्र= जहां
आस्ते = स्थित थी
शैलोद्देशे = पर्वतीय प्रदेश में
अतिशोभने = अत्यंत सुन्दर
तां = उसे
च = और
देवीं = देवी को
ततः = तब ,
प्राह = बोला
श्लक्ष्णं = कोमलता से
मधुरया = मीठी
गिरा = आवाज़ में

और वह वहां अत्यंत सुन्दर पर्वतीय प्रदेश में जा कर जहां देवी स्थित थी , उस देवी को तब मीठी वाणी में कोमलता से बोला ।

दूत उवाच ॥ १०५॥

दूत बोला ।

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः ।
दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः ॥ १०६॥

देवि = हे देवी
दैत्येश्वरः = दैत्य राज
शुम्भः = शुम्भ
त्रैलोक्ये = तीनों लोकों के
परमेश्वरः = स्वामी हैं
दूतः अहम् = मैं दूत हूँ
प्रेषितः= भेजा गया
तेन = उनके द्वारा
त्वत्सकाशम् = तुम्हारे पास
इह= यहां
आगतः= आया हूँ

हे देवी दैत्य राज शुम्भ तीनों लोकों के स्वामी हैं मैं उनके द्वारा भेजा गया दूत तुम्हारे पास यहां आया हूँ ।

अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु ।
निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ॥ १०७॥

अव्याहता = पालन होता है
आज्ञः = आज्ञा का
सर्वासु = सब
यः = जिसकी
सदा = सदा
देवयोनिषु = देवताओं द्वारा
निर्जिता = अपराजित
अखिलदैत्यारिः = सभी देवताओ से
स = उसने
यत् आह = जो कहा
शृणुष्व = सुनो
तत् = वह

सब देवताओं द्वारा जिसकी आज्ञा का पालन होता है , सभी देवताओ से अपराजित उसने जो कहा वह सुनो ।

मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः ।
यज्ञभागानहं सर्वानुपाश्नामि पृथक् पृथक् ॥ १०८॥

मम = मेरे हैं
त्रैलोक्यम= तीनों लोक
अखिलं = सब
मम = मेरे
देवा = देवता
वशानुगाः= आज्ञाकारी हैं
यज्ञभागान् = यज्ञ भागों को
अहं = मैं
सर्वान् = सब
उपाश्नामि = प्राप्त करता हूँ
पृथक् पृथक् =अलग अलग

तीनों लोक मेरे हैं , सब देवता मेरे आज्ञाकारी हैं , सारे यज्ञ के भागों को मैं ही अलग अलग प्राप्त करता हूँ ।

त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्यशेषतः ।
तथैव गजरत्नं च हृतं देवेन्द्रवाहनम् ॥ १०९॥

त्रैलोक्ये = तीनों लोकों के
वररत्नानि = श्रेष्ठ रत्न
मम = मेरे
वश्यान् - वश में हैं
अशेषतः = सारे
तथैव = इसी प्रकार ही
गजरत्नं = हाथियों में रत्न
च = और
हृतं = छीन लिया है
देवेन्द्रवाहनम् = इंद्र का वाहन , ऐरावत

तीनों लोकों के श्रेष्ठ रतन मेरे वश में हैं और हाथियों में रत्न इंद्र का वाहन , ऐरावत छीन लिया है ।

क्षीरोदमथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः ।
उच्चैःश्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम् ॥ ११०॥

क्षीरोदमथन्= समुन्दर मंथन से
उद्भूतम् = प्रकट हुआ
अश्वरत्नं = अश्वों में रत्न
मम = मुझे
अमरैः = देवताओं ने
उच्चैःश्रवस संज्ञं = उच्चैःश्रवस नाम का
तत्= वह
प्रणिपत्य = झुक कर
समर्पितम् = समर्पित कर दिया

समुन्दर मंथन से प्रकट हुआ उच्चैःश्रवस नाम का वह अश्वरत्न देवताओं ने झुक कर मुझे समर्पित कर दिया ।

यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषूरगेषु च ।
रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ॥ १११॥

यानि = जितने
च= और
अन्यानि = अन्य
देवेषु = देवताओं
गन्धर्वेषु=गन्धर्वों
उरगेषु = नागों
च = और
रत्नभूतानि = रत्नभूत
भूतानि = पदार्थ
तानि = वे
मय्येव = मेरे ही
शोभने= हे सुंदरी

हे सुंदरी और जितने अन्य रत्नभूत पदार्थ देवताओं, गन्धर्वों और नागों के पास थे , वे मेरे ही पास हैं ।

स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम् ।
सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्नभुजो वयम् ॥ ११२॥

स्त्रीरत्नभूतां = स्त्रियों में रत्न हो
त्वां = तुम
देवि = देवी
लोके = संसार में
मन्यामहे = हम सोचते हैं , मानते हैं
वयम् = हम
सा = ऐसी , वह
त्वम्= तुम
अस्मान् = हमारे
उपागच्छ = पास आ जाओ
यतो = क्यों कि
रत्नभुजो = रत्नों को भोगने वाले
वयम् = हम

देवी हम मानते है तुम संसार में स्त्रियों में रत्न हो , ऐसी तुम हमारे पास आ जाओ , क्यों कि हम रत्नों को भोगने वाले हम हैं ।

मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम् ।
भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः ॥ ११३॥

मां = मेरी
वा = या
ममानुजं = मेरे भाई
वापि = या
निशुम्भम् उरुविक्रमम्= महा पराक्रमी निशुम्भ की
भज = शरण में आ जाओ
त्वं = तुम
चञ्चलापाङ्गि = चंचल नेत्रों वाली
रत्नभूतासि = रत्न हो
वै = भी
यतः= जो

हे चंचल नेत्रों वाली जो तुम भी रत्न हो , या मेरी या मेरे पराक्रमी भाई

निशुम्भ की शरण में आ जाओ ।

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात् ।
एतद् बुद्-ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज ॥ ११४॥

परम ऐश्वर्यम् = महान ऐश्वर्य की
अतुलं = तुलनारहित
प्राप्स्यसे = प्राप्ति होगी
मत्परिग्रहात् = मेरा वरन करने से
एतत् = यह
बुद्ध्या= बुद्धि से
समालोच्य = विचार कर
मत्परिग्रहतां = मेरा वरन करने के लिए
व्रज = बढ़ो , प्राप्त करो

मेरा वरन करने से तुलनारहित महान ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी , यह बुद्धि से विचार कर मेरे वरन करने के लिए बढ़ो ।

ऋषिरुवाच ॥ ११५॥

ऋषि बोला ।

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तःस्मिता जगौ ।
दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते जगत् ॥ ११६॥

इत्युक्ता इति उक्ता = इस प्रकार कहे जाने पर
सा = वह
तदा = तब
देवी = देवी
गम्भीरान्तःस्मिता= मन में गंभीरता से हंसी
जगौ = बोली
दुर्गा = दुर्गा
भगवती = भगवती
भद्रा = कल्याणमयी
ययेदं = यत इदं = जो इस
धार्यते = धारण करती है
जगत् = जगत को

(दूत द्वारा) इस प्रकार कहे जाने पर तब वह कल्याणमयी भगवती दुर्गा देवी जो इस जगत को धारण करती है मन में गंभीरता से हंसी और बोली ।

देव्युवाच ॥ ११७॥

देवी बोलीं ।

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किञ्चित्त्वयोदितम् ।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥ ११८॥

सत्यम् उक्तं = सत्य कहा है
त्वया = उमने
न = नही
अत्र = यहां
मिथ्या = झूट
किञ्चित्= कुछ
त्वया = तुम्हारे
उदितम् = कहे में
त्रैलोक्य अधिपतिः= तीनों लोकों के स्वामी
शुम्भो = शुम्भ
निशुम्भश्चापि = निशुंभ भी
तादृशः= वैसे ही हैं

तुमने सत्य कहा है , यहां तुम्हारे कहे में कुछ झूट नहीं है , शुम्भ तीनों लोकों के स्वामी हैं और निशुम्भ भी वैसे ही हैं ।

किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम् ।
श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥ ११९॥

किंतु = परन्तु
अत्र = यहां (इस विषय में)
यत् प्रतिज्ञातं = जो प्रतिज्ञा की है
मिथ्या = झूट
तत् = वह
क्रियते = करूँ
कथम्= कैसे

श्रूयताम्= सुनो
अल्पबुद्धित्वात् = अल्प बुद्धि के कारण
प्रतिज्ञा= प्रतिज्ञा
या = जो
कृता = की है
पुरा = पहले

परन्तु यहां (इस विषय में) जो प्रतिज्ञा की है वह झूट कैसे करूँ , अल्प बुद्धि के कारण पहले जो प्रतिज्ञा की है वह सुनो ।

यो मां जयति सङ्ग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति ।
यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥ १२०॥

यो = जो
मां = मुझे
जयति = जीतेगा
सङ्ग्रामे = युद्ध में
यो मे = जो मेरे
दर्पं = घमंड को
व्यपोहति = खंडित करेगा
यो मे = जो मेरे
प्रतिबलो = समान बलि होगा
लोके = संसार में
स मे = वो मेरा
भर्ता = पति
भविष्यति = होगा

जो मुझे युद्ध में जीतेगा, जो मेरे घमंड को खंडित करेगा , जो संसार में मेरे समान बाली होगा वो मेरा पति होगा ।

तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महाबलः ।
मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु ॥ १२१॥

तदा = तब
आगच्छतु = आ कर
शुम्भो= शुम्भ
अत्र = यहाँ

निशुम्भो = निशुम्भ
वा = अथवा
महाबलः = महाबली
मां = मुझे
जित्वा = जीत कर
किं चिरेण अत्र = यहां देर क्या है
पाणिं = हाथ
गृह्णातु = ग्रहण कर ले
मे = मेरा
लघु= शीघ्र

तब शुम्भ अथवा महाबली निशुम्भ यहां आ कर मुझे जीत कर शीघ्र मेरा हाथ ग्रहण कर लें , इसमें देर क्या है ?

दूत उवाच ॥ १२२॥

दूत बोला ।

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः ।
त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः ॥ १२३॥

अवलिप्तासि = घमंडी
मा =नहीं
एवं = ऐसा
त्वं = तुम
देवि = देवी
ब्रूहि = कहो
ममाग्रतः = मेरे आगे
त्रैलोक्ये तीनों लोकों में
कः = कौन
पुमां = मनुष्य
तिष्ठेत् = ठहरता है
अग्रे = आगे
शुम्भनिशुम्भयोः = शुम्भ निशुम्भ के

देवी तुम घमंडी हो , मेरे आगे ऐसा न कहो , तीनों लोकों में कौन मनुष्य शुम्भ निशुम्भ के आगे ठहर सकता है ?

अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि ।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका ॥ १२४॥

अन्य एषाम = इन दूसरे
अपि= भी
दैत्यानां = दैत्यों के
सर्वे = सभी
देवा = देवता
न = नहीं
वै = निश्चित रूप से
युधि = युद्ध में
तिष्ठन्ति = ठहरते
सम्मुखे = आगे
देवि = देवी
किं पुनः तवं= फिर तुम्हारा क्या
स्त्री तवं ऐकिका= अकेली स्त्री

निश्चित ररप से सभी देवता इन दूसरे दैत्यों के सामने भी युद्ध में नहीं ठ-हरते , देवी तुम अकेली स्त्री हो तुम्हारा क्या ?

इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे ।
शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम् ॥ १२५॥

इन्द्राद्याः = इंद्र आदि
सकला= सभी
देवा: = देवता
तस्थुः = खड़े होते
येषां = जिन
न = नहीं
संयुगे = साथ
शुम्भादीनां =शुम्भ आदि के
कथं = कैसे
तेषां = उसके
स्त्री = स्त्री
प्रयास्यसि = प्रयास
सम्मुखम् = आगे

इंद्र आदि देवता जिन शुम्भ आदि के साथ नहीं खड़े होते , उसके आगे स्त्री कैसे प्रयास करेगी ।

सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ।
केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि ॥ १२६॥

सा = वह
त्वं = तुम
गच्छ = जाओ
मयैवोक्ता = मयि उक्त = मेरे कहने से
पार्श्वं = पास
शुम्भनिशुम्भयोः = शुम्भ निशुम्भ के
केशाकर्षण = बालों से खींचने पर
निर्धूतगौरवा = प्रतिष्ठा खो कर
मा = नहीं तो
गमिष्यसि = जाओगी

वह तुम मेरे कहने से शुम्भ निशुम्भ के पास चली जाओ , नहीं तो बा-
लों से खींचने पर प्रतिष्ठा खो कर जाओगी ।

देव्युवाच ॥ १२७॥

देवी बोलीं ।

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान् ।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा ॥ १२८॥

एवमेतद् = ऐसा ही है
बली = बलवान
शुम्भो = शुम्भ
निशुम्भः= निशुम्भ
च = और
अति = अत्यंत
वीर्यवान्= पराक्रमी
किं करोमि = क्या करूँ
प्रतिज्ञा = प्रतिज्ञा ली है
मे = मैंने

यद = जो
अनालोचिता = बिना सोचे
पुरा = पहले

ऐसा ही है , शुभ बलवान है और निशुम्भ भी अति पराक्रमी है , क्या करूँ मैंने पहले बिना सोचे प्रतिज्ञा ले ली है ।

स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः ।
तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु यत् ॥ १२९॥

स त्वं = इसलिए तुम
गच्छ = जाओ
मयोक्तं मया उक्तं = मेरे द्वारा कहा गया
ते = तुम्हे
यत् = जो
एतत् = वो
सर्वं = सब
आदृत : = आदर से
तदा= तब
आचक्ष्वा = बोलना
असुरेन्द्राय = असुरराज से
स च = और वह
युक्तं = सही है
करोतु = करें
यत् = जो

इसलिए तुम जाओ , मेरे द्वारा तुम्हे जो कहा गया है वो सब आदर से असुरराज से बोलना , और वह तब जो सही है करें ।

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
देव्या दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५॥

षष्ठोऽध्यायः

ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली-
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये।।

ॐ
नागाधीश्वरविष्टरां = नागराज के सिंहासन पर बैठी
फणिफणोत्तं सोरुरत्नावली = नाग के फनो की उत्तम मणियों की विशाल माला से
भास्वद्देहलतां = उद्भासित देहलता वाली
दिवाकरनिभां = सूर्य के सामान तेज वाली
नेत्रत्रयोद्भासिताम्। = तीन नेत्रों से उद्भासित
मालाकुम्भकपालनीरजकरां =हाथों में माला, कुम्भ , कपाल , कमल लिए
चन्द्रार्धचूडां = अर्ध चन्द्र के मुकुट वाली
परां = परमोत्कृष्ट
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां = सर्वज्ञेश्वर भैरव के आँख में निवास करने वाली

पद्मावतीं चिन्तये = पद्मावती देवी का चिंतन करते हैं ।

नागराज के सिंहासन पर बैठी, नाग के फनो की उत्तम मणियों की विशाल माला से उद्भासित देहलता वाली, सूर्य के सामान तेज वाली , तीन नेत्रों से उद्भासित , हाथों में माला, कुम्भ , कपाल , कमल लिए, अर्ध चन्द्र के मुकुट वाली सर्वज्ञेश्वर भैरव के आँख में निवास करने वाली, परमोत्कृष्ट पद्मावती देवी का चिंतन करते हैं ।

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १॥
ऋषि बोले ।

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः ।
समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ॥ २॥

इत्याकर्ण्य =इति आकर्ण्य= इस प्रकार सुन कर
वचो = वचनों को
देव्याः = देवी के
स = वह
दूतो= दूत
अमर्षपूरितः = क्रोध से युक्त
समाचष्ट = बयान किया , बोला
समागम्य = पास जा कर
दैत्यराजाय = दैत्यराज के
विस्तरात् विस्तार से

इस प्रकार देवी के वचनों को सुन कर क्रोध से भरे उस दूत दैत्य राज के पास जा कर विस्तार से बोला ।

तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः ।
सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् ॥ ३॥

तस्य = उस
दूतस्य = दूत के
तद्वाक्यम = वे वाक्य
आकर्ण्य= सुन कर
असुरराट् = दैत्यों का राजा
ततः= तब
सक्रोधः क्रोधयुक्त हो
प्राह = बोला
दैत्यानामधिपं = दैत्यों के सेनापति से
धूम्रलोचनम् = धूम्रलोचन

उस दूत के वे वाक्य सुन कर दैत्यों का राजा तब क्रोध युक्त हो दैत्यों के सेनापति धूम्रलोचन से बोला ।

हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः ।
तामानय बलाद्दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ ४॥

हे धूम्रलोचना
आशु = जल्दी से
त्वं = तुम
स्वसैन्य= अपनी सेना से
परिवारितः = घिर कर
ताम= उसे
आनय = लाओ
बलात = जबरदस्ती
दुष्टां = दुष्ट को
केशाकर्षणविह्वलाम् = बालों से खींचते हुए

हे धूम्रलोचना जल्दी से अपनी सेना से घिर कर उस दस्ता को बालों से

खींचते हुए जबरदस्ती लाओ ।

तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः ।
स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥ ५॥

तद= उसकी
परित्राणदः = बचाव के लिए
कश्चिद्यदि = यदि कोई
वा = भी
त्तिष्ठते= खड़ा होता है
अपरः= दूसरा
स = उसको
हन्तव्य:= मार देना
अमरो = देवता हो
वापि = अथवा
यक्षो = यक्ष
गन्धर्व = गन्धर्व
एव = ही
वा = अथवा

उसके बचाव के लिए यदि कोई भी दूसरा खड़ा होता है चाहे वो देवता हो , यक्ष हो अतः गंधव ही हो उसको मार देना ।

ऋषिरुवाच ॥ ६॥

ऋषि बोले ।

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः ।
वृतः षष्ट्या सहस्राणामसुराणां द्रुतं ययौ ॥ ७॥

तेन = उस की
आज्ञप्त= आज्ञा पे
ततः= तब
शीघ्रं
स = वह
दैत्यो = दैत्य
धूम्रलोचनः = धूम्रलोचन

वृतः = घिर कर
षष्ठ्या सहस्राणाम = साठ हज़ार
असुराणां = असुरों से
द्रुतं =तेजी से
ययौ =चला गया

उसकी आज्ञा पर वह दैत्य शीघ्र साठ हज़ार असुरों से घर कर तेजी से चला गया।

स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचलसंस्थिताम् ।
जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ८॥

स = उसने
दृष्ट्वा = देख कर
तां = उस
ततो = तब
देवीं = देवी को
तुहिनाचल = हिमालय पर
संस्थिताम् = स्थित
जगाद= बोला
उच्चैः = ज़ोर से
प्रयाह= जाओ
इति = इस प्रकार
मूलं = पास
शुम्भनिशुम्भयोः= शुम्भनिशुम्भ के

वह तब हिमालय पर स्थित उस देवीको देख कर ज़ोर से इस प्रकार बोला शुम्भनिशुम्भ के पास जाओ ।

न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति ।
ततो बलान्नयाम्येष केशाकर्षणविह्वलाम् ॥ ९॥

न = नहीं
चेत्प्रीत्या = प्रसन्नता से
अद्य = अभी
भवती = आप

मद्भर्तारमुपैष्यति = मद भर्तारं उपैष्यति = मेरे स्वामी के पास चलेंगी
ततो = तो
बलान्नयाम्येष= बलात नयामि एष = बलपूर्वक ले जाऊँगा ऐसे
केशाकर्षणविह्वलाम् = बालों से पकड़ कर घसीटते हुए

आप प्रसन्नता से मेरे स्वामी के पास नहीं चलेंगी तो बालों से पकड़ कर घसीटते हुए ऐसे बलपूर्वक ले जाऊँगा।

देव्युवाच ॥ १०॥
देवी बोलीं ।

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान्बलसंवृतः ।
बलान्नयसि मामेवं ततः किं ते करोम्यहम् ॥ ११॥

दैत्येश्वरेण = दैत्यों के स्वामी द्वारा
प्रहितो = भेजे गए (तुम)
बलवान = बलवान
बलसंवृतः = सेना से घिरे हो

बलान्नयसि मामेवं ततः = मुझे बलपूर्वक ले जाओगे तो

किं ते करोम्यहम् = तुम्हारा मैं क्या कर सकती हूँ

दैत्यों के स्वामी द्वारा भेजे गए बलवान सेना से घिरे (तुम) मुझे बलपूर्वक ले जाओगे तो

तुम्हारा मैं क्या कर सकती हूँ।

ऋषिरुवाच ॥ १२॥
ऋषि बोले ।

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः ।
हुङ्कारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका तदा ॥ १३॥

इत्युक्तः इति उक्तः = इस प्रकार कहने पर
सो= वह
अभ्यधावत्=ओर भागा

ताम= उसकी
असुरो = असुर
धूम्रलोचनः = धूम्रलोचन
हुङ्कारेणैव = हुंकार से ही
तं = उसे
भस्म = भस्म
सा = उस
चकार = कर दिया
अम्बिका = अम्बिका ने
तदा = तब

देवी के इस प्रकार कहने पर असुर धूम्रलोचन उसकी तरफ भागा, तब उस अम्बिका देवी ने उसे हुंकार से ही भस्म कर दिया ।

अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका ।
ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः ॥ १४॥

अथ = तब
क्रुद्धं = क्रोधित
महासैन्यमसुराणां = असुरों की महा सेना पर
तथाम्बिका = इस प्रकार अम्बिका ने
ववर्ष = वर्षा की
सायकै:= तीरों
तीक्ष्णै:= तीखे
तथा = इसी प्रकार , और
शक्तिपरश्वधैः= शक्ति , परशु की

तब इस प्रकार क्रोधित अम्बिका ने असुरों की महा सेना पर तीखे तीरों और शक्ति , परशुओं की वर्षा की ।

ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम् ।
पपातासुरसेनायां सिंहो देव्याः स्ववाहनः ॥ १५॥

ततो = तब
धुतसटः = गर्दन के बाल हिलाते हुए
कोपात्= क्रोध से
कृत्वा = किया

नादं = आवाज़ , गर्जना
सुभैरवम् = भयंकर
पपात् = कूद पड़ा
असुरसेनायां = असुरों की सेना पर
सिंहो = सिंह ने
देव्याः = देवी के
स्ववाहनः = अपना वाहन

तब देवी का अपना वाहन सिंह ने गर्दन के बाल हिलाते हुए क्रोध से भयंकर गर्जना करते हुए असुरों की सेना पर कूद पड़ा ।

कांश्चित्करप्रहारेण दैत्यानास्येन चापरान् ।
आक्रान्त्या चाधरेणान्यान् जघान स महासुरान् ॥ १६॥

कांश्चित् = कुछ को
करप्रहारेण = हाथ के प्रहार से
दैत्यान् = दैत्यों को
आस्येन च = मुंह के
अपरान् = दूसरों को
आक्रम्य = पकड़ कर , दबा कर
च= और
अधरेण= जबड़ों में
अन्यान् = अन्य
जघान = मार दिया
स = उसने
महासुरान् = महासुरों को

उसने कुछ दैत्यों को हाथ के प्रहार से,दूसरों को मुंह के और अन्य महासुरों को जबड़ों में दबा कर मार दिया ।

केषाञ्चित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी ।
तथा तलप्रहारेण शिरांसि कृतवान्पृथक् ॥ १७॥

केषाञ्चित = कुछ का
पाटयामास = फाड़ दिया
नखैः = नाखूनों से
कोष्ठानि = पेट
केसरी = शेर ने

तथा = इसी प्रकार
तलप्रहारेण = थप्पड़ के प्रहार से
शिरांसि = सर को
कृतवान = कर दिया
पृथक् = अलग

शेर ने कुछ का नाखूनों से पेट फाड़ दिया , इसी प्रकार थप्पड़ के प्रहार से सर को अलग कर दिया ।

विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन तथापरे ।
पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषां धुतकेसरः ॥ १८॥

विच्छिन्न= अलग
बाहुशिरसः = बांह और सिर
कृता = कर दिए
तेन = उस ने
तथा= इस प्रकार
अपरे = दूसरों के
पपौ = पिया
च = और
रुधिरं = खून
कोष्ठात= पेट से
अन्येषां= अन्यों के
धुतकेसरः= गर्दन के बाल हिलाते हुए

गर्दन के बाल हिलाते हुए उस शेर ने दूसरों के बांह और इसी प्रकार सिर अलग कर दिए और अन्यों के पेट से खून पीया ।

क्षणेन तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना ।
तेन केसरिणा देव्या वाहनेनातिकोपिना ॥ १९॥

क्षणेन = क्षण भर में
तद्बलं = उस सेना को
सर्वं = सारे
क्षयं नीतं= नष्ट कर दिया
महात्मना = हे महात्मा
तेन = उस

केसरिणा केसरी ने
देव्या = देवी के
वाहनेन = वाहन
अतिकोपिना = अति क्रोधित

हे महात्मन उस देवी के वाहन अति क्रोधित केसरी ने क्षण भर में उस सारी सेना को नष्ट कर दिया ।

श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम् ।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः ॥ २०॥

श्रुत्वा = सुन कर
तमसुरं = उस असुर
देव्या = देवी द्वारा
निहतं = मारे जाने
धूम्रलोचनम् = धूम्रलोचन के
बलं = सेना को
च = और
क्षयितं = नष्ट
कृत्स्नं = कर दिया
देवीकेसरिणा देवी के केसरी द्वारा
ततः = तब

तब देवी द्वारा उस असुर धूम्रलोचन के मारे जाने और देवी के वाहन के-सरी द्वारा सेना को नष्ट करने का सुन कर

चुकोप दैत्याधिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः ।
आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥ २१॥

चुकोप = क्रोध से
दैत्याधिपतिः = दैत्यों के स्वामी
शुम्भः = शुम्भ
प्रस्फुरिताधरः = काँपते होंठ वाले
आज्ञापयामास = आज्ञा दी
च = और
तौ = उन दोनों
चण्डमुण्डौ महासुरौ =चण्डमुण्ड महासुरों को

और क्रोध से काँपते होंठ वाले दैत्यों के स्वामी शुम्भ ने उन दोनों चण्डमुण्ड महासुरों को आज्ञा दी ।

हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ ।
तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥ २२॥

हे चण्ड हे मुण्ड
बलैः= सेना
बहुभिः = बड़ी
परिवारितौ = के साथ , घिर कर
तत्र= वहां
गच्छत = जाओ
गत्वा जा कर
च = और
सा = उसे
समानीयतां = साथ लाओ
लघु= जल्दी

हे चण्ड हे मुण्ड बड़ी सेना के साथ वहाँ जाओ और जा कर जल्दी उसे साथ ले कर आओ ।

केशेष्वाकृष्य बद्-ध्वा वा यदि वः संशयो युधि ।
तदाशेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥ २३॥

केशेष्वाकृष्य = बालों से घसीट कर
बद्ध्वा = बाँध कर
वा = अथवा
यदि = यदि
वः = तुम्हें
संशयो= संशय हो
युधि= युद्ध में
तदा = तब
अशेष = सभी
आयुधैः = हथियारों

सर्वै: = सभी
असुरै:= असुरों
विनिहन्य = मार देना
ताम् = उसे

बालों से घसीट कर अथवा बाँध कर (उसे लाओ) यदि तुम्हे संसय हो तब युद्ध में सभी असुरों और सभी हथियारों (की सहायता) से उसे मार देना ।

तस्यां हतायां दुष्टायां सिंहे च विनिपातिते ।
शीघ्रमागम्यतां बद्-ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ॥ २४॥

तस्यां = उसको
हतायां = पराजित कर
दुष्टायां = दुष्टा को
सिंहे = सिंह को
च = और
विनिपातिते = मार कर , पराजित कर
शीघ्रमागम्यतां = जल्दी आओ
बद्ध्वा = बाँध कर
गृहीत्वा = साथ ले कर
तामथाम्बिकाम् = ताम अथ अम्बिका = तब उस अम्बिका को

उस दुष्ट को पराजित कर और सिंह को मार कर , तब उस अम्बिका को बाँध कर साथ ले कर जल्दी आओ ।

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शुम्भनिशुम्भसेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६॥
सप्तमोऽध्यायः
ध्यायेयम् रत्नपीठे शुक कल पठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीम्
न्यस्तैकांघ्रिम् सरोज शशिशकलधराम् वल्लकीम् वादयन्तीम् ।
कह्लाराबद्धमालाम् नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्राम्

माताङ्गीम् शंखपात्राम् मधुरमधुमदाम् चित्रकोद्भासिभालाम् ॥

ध्यायेयम्= ध्यान करते हैं

रत्नपीठे= रत्नों के सिंहासन पर बैठी
शुककलपठितं = पढ़ते हुए तोते की आवाज को
शृण्वतीं = सुनती
श्यामलाङ्गीम् = श्याम अंगों वाली
न्यस्तैक आंघ्रिम्= एक पैर को रखे
सरोज= कमल पर
शशिशकलधराम् = चन्द्र के खंड को धारण करने वाली
वल्लकीम् = वीणा
वादयन्तीम् = बजाती हुई
कह्लाराबद्धमालाम् = कल्हार पुष्पों की माला पहने
नियमित विलसच्चोलिकां= कासी चोली से सुशोभित
रक्तवस्त्राम् = लाल वस्त्र पहने
माताङ्गीम्= मातंगी देवी का
शंखपात्राम् = शंख का पात्र लिए
मधुरमधुमदाम् = मधु के हलके प्रभाव से मधुर

चित्रकोद्भासिभालाम् = बिंदी, टिकली से शोभित मस्तक वाली
रत्नों के सिंहासन पर बैठी , पढ़ते हुए तोते की आवाज को सुनती, श्याम अंगों वाली कमल पर एक पैर को रखे ,चन्द्र के खंड को धारण करने वाली, वीणा बजाती हुई, कल्हार पुष्पों की माला पहने , कसी चोली से सुशोभित , लाल वस्त्र पहने , शंख का पात्र लिए, मधु के हलके प्रभाव से मधुर,बिंदी, टिकली से शोभित मस्तक वाली मातंगी देवी का ध्यान करते हैं ।
ॐ ऋषिरुवाच ॥ १॥

ऋषि बोले ।

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः ।
चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥ २॥

आज्ञप्ता: = आज्ञा लेकर
ते = वे
ततो = तब
दैत्या: = दैत्य
चण्डमुण्ड= चण्डमुण्ड को
पुरोगमाः = आगे कर के
चतुरङ्गबलोपेता =चतुरङ्ग बल उपेता= चतुरङ्गी सेना के साथ
ययु:= गए
अभ्युद्यत = उठाये हुए

आयुधाः = हथियार

ता आज्ञा ले कर वे दैत्य चण्डमुण्ड को आगे करके चतुरङ्गी सेना के साथ हथियार उठाये हुए गए ।

ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम् ।
सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥ ३॥

ददृशुः = देख
ते = उन्होंने
ततो = तब
देवीम= देवी को
ईषद्धासां = मंद मंद मुस्कुराती
व्यवस्थिताम् = बैठी
सिंहस्य ऊपरि = सिंह के ऊपर
शैलेन्द्रशृङ्गे = पहाड़ की चोटी पर
महति = बड़ी
काञ्चने= सुनहरी

तब उन्होंने बड़ी सुनहरी पहाड़ की चोटी पर सिंह पर बैठी मंद मंद मुस्कु-राती देवी को देखा ।

ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः ।
आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः ॥ ४॥

ते = वे
दृष्ट्वा = देखकर
तां = उसको
समादातुम् = पकड़ने का
उद्यमं = प्रयास
चक्रुः= करने लगे
उद्यताः = उत्तेजित हो ,तत्परता से
आकृष्ट = खींच लिया
चाप = धनुष
असि धरा = तलवार ले ली
तथान्ये = इसी प्रकार दूसरे

तत्समीपगाः = उसके समीप चले गए

वे उसे देख कर तत्परता से पकड़ने का प्रयास करने लगे , धनुष खींच लिए , तलवार ले ली, इसी प्रकार दूसरे उसके समीप चले गए ।

ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन्प्रति ।
कोपेन चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा ॥ ५॥

ततः = तब
कोपं = क्रोध
चकार= किया
उच्चै: = बहुत ज्यादा
अम्बिका = अम्बिका
तान्= उन
अरीन्= शत्रुओं के
प्रति= प्रति , तरफ
कोपेन = क्रोध से
च = और
अस्या = उसका
वदनं = मुख
मषीवर्णम् = स्याही के रंग का
अभूत् = हो गया
तदा = तब

तब अम्बिका ने उन शत्रुओं के प्रति बड़ा क्रोध किया और तब क्रोध से उसका मुख स्याही के रंग का काल हो गया ।

भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाटफलकाद्-द्रुत ।
काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी ॥ ६॥

भ्रुकुटीकुटिलात् = टेढ़ी हुई भ्रुकुटियों
तस्या = उसकी
ललाटफलकात् = माथे की सतह
द्रुतम् = तत्काल
काली = काली
करालवदना = भयंकर मुंह वाली
विनिष्क्रान्ता = निकली

असिपाशिनी= तलवार और पाश वाली

उसके माथे की सतह से टेढ़ी हुई भ्रुकुटियों तत्काल भयंकर मुख वाली , तलवार और पाश लिए काली निकली ।

विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा ।
द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्कमांसातिभैरवा ॥ ७॥

विचित्र= अनोखी
खट्वाङ्गधरा = खट्वाङ्ग धारी
नरमालाविभूषणा = नरमुंड माला से सज्जित
द्वीपिचर्मपरीधाना = चीते की खाल के परिधान वाली
शुष्कमांसातिभैरवा = सूखे हुए मांस वाली अत्यंत डरावनी

(वे काली देवी) अनोखी खट्वाङ्ग धारी, नरमुंड माला से सज्जित, चीते की खाल के परिधान वाली सूखे हुए मांस वाली अत्यंत डरावनी थी

अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा ।
निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा ॥ ८॥

अति विस्तार वदना = अत्यंत विशाल मुंह वाली
जिह्वा ललन भीषणा= लटकती जीभ से भयानक लगने वाली
निमग्ना रक्त नयना = अंदर घसी हुए लाल आँखों वाली
नादापूरितदिङ्मुखा = आवाज़ से चारों दिशाओं को गुंजाने वाली

अत्यंत विशाल मुंह वाली, लटकती जीभ से भयानक लगने वाली, अंदर घसी हुए लाल आँखों वाली, आवाज़ से चारों दिशाओं को गुंजाने वाली

सा वेगेनाभिपतिता घातयन्ती महासुरान् ।
सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम् ॥ ९॥

सा = वह
वेगेन = वेग से
अभिपतिता = कूद पड़ी , टूट पड़ी
घातयन्ती = मारती हुई

महासुरान् = महासुरों को
सैन्ये = सेना
तत्र = वहां
सुरारीणाम असुरों के
अभक्षयत्= खाने लगी
तद्बलम्= उस सेना को

वह वेग से महासुरों को मरती हुई सेना पर टूट पड़ी । वहाँ असुरों की उस सेना को खाने लगी ।

पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहयोधघण्टासमन्वितान् ।
समादायैकहस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान् ॥ १०॥

पार्ष्णिग्राह = पार्श्व रक्षकों
अङ्कुशग्राह= महावतों
योध=योद्याओं
घण्टा= घंटों
समन्वितान् = के साथ
समादाय= पकड़ कर
एकहस्तेन=एक हाथ से
मुखे= मुंह में
चिक्षेप= फैंक रही थी
वारणान्= हाथियों

पार्श्व रक्षकों, महावतों, योद्याओं, घंटों के साथ हाथियों को एक हाथ से पकड़ कर मुंह में फैंक रही थी ।

तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह ।
निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम् ॥ ११॥

तथैव = इसी प्रकार ही
योधं = सैनिकों के
तुरगै = घोड़ों को
रथं = रथोंको
सारथिना = सारथियों
सह = के साथ

निक्षिप्य = फैंक कर
वक्त्रे = मुंह में
दशनै = दांतों से
चर्वयन्ति = चबाती थी
अतिभैरवम्= अत्यंत भयंकर

इसी प्रकार ही घोड़ों को सैनिको, रथों को सार्थियों के साथ मुंह में फैंक अत्यंत भयंकर दांतों से चबा जाती थी ।

एकं जग्राह केशेषु ग्रीवायामथ चापरम् ।
पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपोथयत् ॥ १२॥

एकं = एक को
जग्राह = पकड़ कर
केशेषु = बालों से
ग्रीवायाम्= गर्दन से
अथ= तब
चापरम् =और दूसरे को
पादेनाक्रम्य = पैरों से दबा कर
चैवा= और ऐसे ही
अन्यम् = दूसरों को
उरसा = छाती से
अन्यम्= अन्यों को
अपोथयत् = कूट कर , पीस कर

तब एक को बालों से पकड़ कर ,दूसरे को गर्दन से पकड़ के ,और ऐसे ही दूसरों को पैर से दबा कर , अन्यों को छाती से कूट दिया ।

तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः ।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि ॥ १३॥

तै: = उन
मुक्तानि = छोड़े गए
च = और
शस्त्राणि = शास्त्र
महास्त्राणि = शक्तिशाली अस्त्र

तथा= इस प्रकार
असुरैः = असुरों द्वारा
मुखेन = मुंह में
जग्राह =पकड़ कर
रुषा = क्रोध से
दशनै:= दांतों से
मथिता= पीस दिया
अन्यपि =

इस प्रकार उन असुरों के द्वारा छोड़े गए शक्तिशाली अस्त्रों और शास्त्रों को मुंह में पकड़ कर क्रोध से दांतों से पीस दिया।

बलिनां तद्बलं सर्वमसुराणां दुरात्मनाम् ।
ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा ॥ १४॥

बलिनां = शक्तिशाली
तद्बलं = वह सेना
सर्वमसुराणां = सारे असुरों की
दुरात्मनाम्= दुरात्मना
ममर्द = रौंद डाली
अभक्षयत्= खा लिया
च = और
अन्यान= दूसरों को
अन्यां= अन्यों को
च = और
अताडयत् = मार दिया

सारे दुरात्मा असुरों की शक्तिशाली सेना को रौंद दिया और अन्यों को खा लिया और दूसरों को मार दिया।

असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः ।
जग्मुर्विनाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा ॥ १५॥

असिना = तलवार से
निहताः = मारे गए
केचित् = कुछ
खट्वाङ्ग= खट्वाङ्ग
ताडिताः = पीटे गए

जग्मु = प्राप्त हुए
विनाशम् = विनाश को , मृत्यु को
असुरा= असुर
दन्ताग्र = दांतों के अग्र भाग से
अभिहता= काटने पर
तथा = इसी प्रकार

कुछ तलवार से मारे गए , कुछ खट्वाङ्ग से पीटे गए और इसी प्रकार कुछ असुर दांतों के अग्र भाग से काटने पर मृत्यु को प्राप्त हुए ।

क्षणेन तद्बलं सर्वमसुराणां निपातितम् ।
दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥ १६॥

क्षणेन = क्षण भर में
तद्बलं = उस सेना
सर्वमसुराणां= सारे असुरों की
निपातितम्= गिरा
दृष्ट्वा = देख कर
चण्ड:= चण्ड
अभिदुद्राव = की ओर दौड़ा
तां = उस
कालीमतिभीषणाम् -= अति भयंकर काली

क्षण भर में सारे असुरों की उस सेना को गिरा देख कर चण्ड उस अति डरावनी काली की तरफ दौड़ा ।

शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः ।
छादयामास चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः ॥ १७॥

शरवर्षै:= तीरों की वर्षा
महाभीमै:= शक्तिशाली
भीमाक्षीं= बड़ी आँखों वाली
तां= उस
महासुरः= महासुर
छादयामास = आच्छादित कर दिया
चक्रै:= चक्र
च = और

मुण्डः = मुंड
क्षिप्तैः = फेंके
सहस्त्रशः= हजारों

बड़ी आँखों वाली उस काली को चण्ड ने शक्तिशाली तीरों की वर्षा ढक दिया और मुंड ने हजारों चक्र भेजे ।

तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि तन्मुखम् ।
बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम् ॥ १८॥

तानि = वे
चक्राण्यनेकानि = चक्राणि अनेकानि = अनेक चक्र
विशमानानि = घुसते हुए
तन्मुखम् = उसके मुंह में
बभुः= चमक रहे थे
यथा = जिस प्रकार
अर्कबिम्बानि = सुर के बिम्ब
सुबहूनि = अनेक
घनोदरम् = बादलों में

वे अनेक चक्र उसके मुंह में घुसते हुए चम रहे थे जिस प्रकार बादलों में सूर्य के अनेक बिम्ब चमकते हैं ।

ततो जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी ।
काली करालवक्त्रान्तर्दुर्दर्शदशनोज्ज्वला ॥ १९॥

ततो = तब
जहास = हंसी
अतिरुषा = अत्यंत क्रोध में
भीमं = ज़ोर से
भैरव नादिनी= भयंकर गर्जना करने वाली
काली =काली
कराल वक्त्र अन्तः = विकराल मुंह में
दुर्दर्श = मुश्किल से दिखाई देने वाले
दशन उज्ज्वला = उज्ज्वल दांतों वाली

तब अत्यंत क्रोध में भयंकर गर्जना करने वाली विकराल मुंह में मुश्किल से दिखाई देने वाले उज्ज्वल दांतों वाली काली ज़ोर से हंसी ।

उत्थाय च महासिं हं देवी चण्डमधावत ।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत् ॥ २०॥

उत्थाय = चढ़ कर
च = और
महासिंहं = सिंह पर
देवी = देवी
चण्डम= चण्ड की तरफ
अधावत = दौड़ी
गृहीत्वा = पकड़ कर
चास्य च अस्य = और उसके
केशेषु= बालों को
शिर:= सिर
तेन= उस
असिना= तलवार से
आच्छिनत् = काट दिया

और देवी महासिंह पर चढ़ कर चण्ड की तरफ दौड़ी और उसके बाल पकड़ कर उसका सर तलवार से काट दिया ।

अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् ।
तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा ॥ २१॥

अथ = तब
मुण्ड: = मुंड
अभ्यधावत् = तरफ़ दौड़ा
ताम्= उस की
दृष्ट्वा= देख कर
चण्डं = चण्ड को
निपातितम् = गिरा हुआ
तमप्य= तं अपि= उसको भी
अपातयत् = गिरा दिया
भूमौ = भूमि पर
सा = उसने
खड्गाभिहतं = तलवार से मार कर

रुषा = क्रोध में

तब चण्ड को गिरा हुआ देख कर मुंड उस देवी की ओर भागा, उसकोभी उसने तलवार से मार कर भूमि पर गिरा दिया ।

हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् ।
मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् ॥ २२॥

हतशेषं = मरने से बची
ततः = तब
सैन्यं = सेना
दृष्ट्वा = देख कर
चण्डं = चण्ड
निपातितम् = गिरा हुआ , पराजित
मुण्डं = मुण्ड
च = और
सुमहावीर्यं = महा पराक्रमी
दिशो भेजे = चारों दिशाओं में भाग गयी
भयातुरम् = भय से व्याकुल हो

तन मरने से बची सेना चाँद और मुंड को गिरा हुआ देख कर भय से व्याकुल हो चारों दिशाओं में भाग गयी ।

शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च ।
प्राह प्रचण्डाट्टहासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् ॥ २३॥

शिर: चण्डस्य च मुण्डमेव च = चण्ड का और इसी प्रकार मुंड का सिर
काली = काली
गृहीत्वा = पकड़ कर
प्राह = बोली
प्रचण्डाट्टहास मिश्रम प्रचंड अट्टहास करती हुई
अभ्येत्य =पास पहुंच कर
चण्डिकाम् = चण्डिका के

चण्ड का और इसी प्रकार मुंड का सिर पकड़ कर प्रचंड अट्टहास करती

हुई चण्डिका के पास पहुंच कर बोली ।

मया तवात्रोपहृतौ चण्डमुण्डौ महापशू ।
युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि ॥ २४॥

मया = मेरे द्वारा
तवात्र = तव अत्र = यहां तुम्हारे पास
उपहृतौ = लाया गया है
चण्डमुण्डौ = चण्डमुण्ड
महापशू = महा पशुओं को
युद्धयज्ञे = युद्धयज्ञ में
स्वयं = खुद
शुम्भं निशुम्भं च = शुम्भ और निशुम्भ का
हनिष्यसि = वध करना

मेरे द्वारा चण्डमुण्ड महा पशुओं को यहां तुम्हारे पास लाया गया है , युद्ध-यज्ञ में खुद शुम्भ और निशुम्भ का आप वध करना ।

ऋषिरुवाच ॥ २५॥

ऋषि बोले ।

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ ।
उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः ॥ २६॥

ताः= उनको
अवनीतौ = लाया हुआ
ततो = तब
दृष्ट्वा = देख कर
चण्डमुण्डौ = चण्डमुण्ड
महासुरौ =महासुर
उवाच = बोलीं
कालीं = काली को
कल्याणी = कल्याणमयी
ललितं = सुन्दर, कोमल
चण्डिका= चण्डिका

वचः = वचन तब उन महासुरों चण्ड मुण्ड को लाया हुआ देख कर कल्याणमयी चण्डिका देवी काली को कोमल शब्दों में बोलीं ।

यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता ।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवी भविष्यसि ॥ २७॥

यस्मात = क्यों की
चण्डं च मुण्डं च = चण्ड और मुण्ड को
गृहीत्वा = पकड़ कर
त्वम = तुम
उपागता = लायी हो

चामुण्डा = चामुण्डा
इति = इस प्रकार से
ततो तब
लोके = संसार में
ख्याता = प्रसिद्द
देवी = देवी
भविष्यसि = होंगी

देवी, क्यों की तुम चण्ड और मुण्ड को पकड़ कर लायी हो , इस लिए संसार में चामुण्डा इस प्रकार से से प्रसिद्ध होंगी ।

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७॥
अष्टमोऽध्यायः
ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम्।

अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम्।।

अरुणां = लाल रंग वाली
करुणातरङ्गिताक्षीं = आँखों में करुणा की लहर वाली
धृत पाश अङ्कुश बाण चाप हस्ताम्= हाथों में पाश, अंकुश , बाण , चाप धारण किये

अणिमादिभि :आवृतां = अणिमा आदि से घिरी

मयूखैः= किरणों से
अहमित्येव = मैं इस प्रकार
विभावये = विचार करता/ करती हूँ ।
भवानीम्= भवानी का

लाल रंग वाली, आँखों में करुणा की लहर वाली, हाथों में पाश, अंकुश , बाण , चाप धारण किये, अणिमा आदि किरणों से से घिरी भवानी का मैं इस प्रकार विचार करता/ करती हूँ ।

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १॥

ऋषि बोले ।

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते ।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयितेष्वसुरेश्वरः ॥ २॥

चण्डे च निहते = चण्ड के मारे जाने पर
दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते और दैत्य मुंड के मारे जाने पर
बहुलेषु च सैन्येषु = और बहुत साड़ी सेना
क्षयितेषु= नष्ट होने पर
असुरेश्वरः= असुरों के राजा

ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान् ।
उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ॥ ३॥

ततः = तब
कोपपराधीनचेताः = क्रोध के पराधीन मन
शुम्भः = शुम्भ
प्रतापवान् = प्रतापी
उद्योगं = लड़ाई का
सर्वसैन्यानां = सारी सेना को
दैत्यानाम = दैत्यों की
आदिदेश ह = आदेश दिया

तब तब क्रोध से युक्त मन वाले प्रतापी शुम्भ ने दैत्यों की सारी सेना को लड़ाई का आदेश दिया ।

अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः ।
कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः ॥ ४॥

अद्य = आज
सर्वबलैः= सारी सेना के साथ
दैत्याः = दैत्य
षडशीति= छियासी
उदायुधाः = हथियार उठाये , हथियारों से युक्त
कम्बूनां = कम्बु
चतुरशीतिः= चुरासी
निर्यान्तु = कूच करें
स्वबलैर्वृताः= सारी सेना से घिर कर

आज छियासी दैत्य सारी सेना के साथ, चौरासी कम्बु सारी सेना से घिर कर हथियारों से युक्त कूच करें ।

कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै ।
शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥ ५॥

कोटिवीर्याणि = कोटि वीर्य
पञ्चाशद= पचास
असुराणां = असुर (सेनापति)
कुलानि=कुल के
वै = भी
शतं = सौ
कुलानि = कुल के
धौम्राणां = धौम्र
निर्गच्छन्तु = कूच करे
ममाज्ञया = मेरी आज्ञा से

कोटि वीर्य कुल के पचास असुर (सेनापति), सौ धौम्र कुल के (सेना-पति) भी कूच करें ।

कालका दौर्हृदा मौर्याः कालिकेयास्तथासुराः ।
युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥ ६॥

कालका =कालका

दौर्हृदा = दौर्हृदा
मौर्या: = मौर्या:
कालिकेया = कालिकेया
तथा= इसी प्रकार
असुराः = असुर सेनापति
युद्धाय = युद्ध के लिए
सज्ज्ञा = तैयार हो कर
निर्यान्तु = कूच करें
आज्ञया = आज्ञा से
त्वरिता = जल्दी से
मम= मेरी

कालका, दौर्हृदा, मौर्या:, कालिकेया असुर सेनापति मेरी आज्ञा से युद्ध के लिए तैयार हो कर कूच करें ।

इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः ।
निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः ॥ ७॥

इत्याज्ञाप्या= इति आज्ञाप्या= ऐसा आदेश दे कर
असुरपतिः = असुरों का राजा
शुम्भो = शुम्भ
भैरवशासनः= भयानक शाशन करने वाला
निर्जगाम = गया
महासैन्य = महा सेनाओं
सहस्रै = हजारों
बहुभि:= कई प्रकार की
वृतः = घिर कर

ऐसा आदेश दे कर भयानक शाशन करने वाला असुरराज शुम्भ कई प्र-कार की हजारों महासेनाओं के साथ गया ।

आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम् ।
ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् ॥ ८॥

आयान्तं = आते हुए
चण्डिका = चण्डिका ने
दृष्ट्वा = देख कर

तत्सैन्यम = उस सेना को
अतिभीषणम् = अत्यंत भयानक
ज्यास्वनैः = धनुष की टंकार से
पूरयामास = भर दिया , गूंजा दिया
धरणीगगना= धरती और आकाश की
अन्तरम् = दूरी को , खाली जगह को

चण्डिका ने उस अत्यंत भयानक सेना को आते हुए देख कर धनुष की टं-
कार से धरती और आकाश की दूरी को भर दिया ।

ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान्नृप ।
घण्टास्वनेन तान्नादानम्बिका चोपबृंहयत् ॥ ९॥

ततः = तब
सिंहो = सिंह ने
महानादम = महान गर्जना
अतीव = अत्यंत
कृतवान् = की
नृप = हे राजा
घण्टास्वनेन = घंटे की आवाज से
तान् = उस
नादान्= आवाज को
अम्बिका = अम्बिका ने
च= और
उपबृंहयत् = बढ़ा दिया

हे राजा , तब सिंह ने अत्यंत महान गर्जना की और उस आवाज को अ-
म्बिका ने घंटे की आवाज से बढ़ा दिया ।

धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा ।
निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना ॥ १०॥

धनुर्ज्या सिंह घण्टानां = धनुष , शेर और घंटे की
नाद = आवाज से
आपूरित = भर गयीं , गूंज उठी
दिङ्मुखा= चारों दिशाएँ

निनादैः= आवाज से
भीषणैः = भयंकर
काली = काली
जिग्ये = विजयी हुई
विस्तारिताननना = बड़े मुख वाली

धनुष , शेर और घंटे की आवाज से चारों दिशाएँ गूंज उठी । बड़े मुख वाली काली भयंकर आवाज से विजयी हुई ।

तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम् ।
देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ॥ ११॥

तं = उन
निनादम्= आवाज़ों को
उपश्रुत्य = सुन कर
दैत्यसैन्यैः= दैत्यों की सेना ने
चतुर्दिशम् चारों दिशाओं से
देवी = देवी
सिंहस्तथा = सिंह और
काली = काली को
सरोषैः = क्रोध से
परिवारिताः = घेर लिया

उन आवाज़ों को सुन कर दैत्यों की सेना ने क्रोध से चारों दिशाओं से देवी, सिंह और काली को घेर लिया ।

एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् ।
भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥ १२॥

ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः ।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥ १३॥

एतस्मिन् = इसी
अन्तरे = समय
भूप = हे राजा
विनाशाय = विनाश के लिए
सुरद्विषाम् ।= देवताओं के शत्रुओं के

भवाय= कल्याण के लिए
अमरसिंहानाम् = देवताओं के
अतिवीर्यबलान्विताः = अत्यंत पराक्रम और बल युक्त

ब्रह्मेशगुहविष्णूनां = ब्रह्मा , शिव , कार्तिकेय , विष्णु
तथा = इसी प्रकार
इन्द्रस्य = इंद्र के
च = और
शक्तयः= शक्तियां
शरीरेभ्यो= शरीरों से
विनिष्क्रम्य = निकल कर
तद् रुपैः = उसी रूप में
चण्डिकां=चण्डिका के

ययुः = पास गयीं

इसी समय हे राजा देवताओं के शत्रुओं के विनाश के लिए , देवताओं के कल्याण के लिए अत्यंत पराक्रम और बल युक्त ब्रह्मा , शिव , कार्तिकेय , विष्णु और इसी प्रकार इंद्र के शरीरों से निकल कर (उनकी) शक्तियां उसी रूप में चण्डिका के पास गयीं ।

यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषणवाहनम् ।
तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान्योद्धुमाययौ ॥ १४॥

यस्य = जिस
देवस्य = देवता का
यद्रूपं = जो रूप था
यथा = जैसी
भूषणवाहनम् = वेशभूषा , वाहन
तद्वदेव = तद्वद् एव = वैसे ही
हि = बिल्कुल
तच्छक्तिः= तद् शक्तिः = वह शक्ति
असुरा = असुरों से
योद्धुम् = युद्ध के लिए
आययौ = आई

जिस देवता का जैसा रूप था , जैसी वेशभूषा , वाहन थे बिल्कुल वैसे ही वो शक्ति असुरों से युद्ध करने आई ।

हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः ।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणीत्यभिधीयते ॥ १५॥

हंसयुक्तविमानाग्रे = हंसों से युक्त विमान पर
साक्षसूत्रकमण्डलुः= स्फटिक माला(अक्षसूत्र) , कमंडल युक्त
आयाता = आयीं
ब्रह्मणः शक्तिः= ब्रह्मा की शक्ति
ब्रह्माणी =ब्रह्माणी
सा = उसे
अभिधीयते = कहा जाता है

हंसों से युक्त विमान पर स्फटिक माला(अक्षसूत्र) , कमंडल युक्त ब्रह्मा की शक्ति आयीं, उसे ब्रह्माणी कहा जाता है ।

माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी ।
महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा ॥ १६॥

माहेश्वरी = माहेश्वरी
वृषारूढा = वृषभ पर बैठी
त्रिशूलवर धारिणी = श्रेष्ठ त्रिशूल धारण किये
महाहिवलया = महा अहि वलय = महान नाग का कडा पहने
प्राप्ता = आयीं
चन्द्ररेखाविभूषणा = चन्द्र रेखा से सुसज्जित

माहेश्वरी वृषभ पर बैठी, श्रेष्ठ त्रिशूल धारण किये , महान नाग का कडा पहने, चन्द्र रेखा से सुसज्जित आयीं ।

कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना ।
योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुहरूपिणी ॥ १७॥

कौमारी = कौमारी
शक्तिहस्ता = हाथ में शक्ति लिए
च = और
मयूरवरवाहना = श्रेष्ठ मयूर वाहन पर
योद्धुम = युद्ध के लिए

अभ्यायय‍ौ = पास आईं
दैत्यान= दैत्यों के साथ
अम्बिका = अम्बिका के
गुहरूपिणी = कार्तिकेय के रूप में

और कौमारी कार्तिकेय के रूप में हाथ में शक्ति लिए श्रेष्ठ मयूर वाहन पर दैत्यों के साथ युद्ध के लिए अम्बिका के पास आईं ।

तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता ।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥ १८॥

तथैव = इसी प्रकार ही
वैष्णवी = वैष्णवी
शक्तिः= शक्ति
गरुडोपरि = गुरुङ के ऊपर
संस्थिता= बैठी
शङ्ख चक्र गदा शार्ङ्ग खड्ग हस्ता = शङ्ख चक्र गदा शार्ङ्ग खड्ग हाथ में लिए
अभ्युपाययौ = पास गयीं

इसी प्रकार ही वैष्णवी शक्ति गुरुङ के ऊपर बैठी शङ्ख चक्र गदा शार्ङ्ग ख-ड्ग हाथ में लिए पास गयीं ।

यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः ।
शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम् ॥ १९॥

यज्ञवाराहम= यज्ञ बाराह का
अतुलं= अतुलनीय
रूपं = रूप
या = जिसने
बिभ्रतो = धारण किया है
हरेः = श्री हरी की
शक्तिः = शक्ति
सा = वह
अपि = भी
आययौ = आयीं
तत्र = वहां
वाराहीं = वाराह
बिभ्रती = धारण करके

तनुम् = शरीर

यज्ञ बाराह का अतुलनीय रूप जिस ने धारण किया है श्री ह्स्री की वह शक्ति भी वाराह का रूप धारण करके वहां आयीं ।

नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः ।
प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ॥ २०॥

नारसिंही =नारसिंही
नृसिंहस्य = नृसिंह के
बिभ्रती = धारण कर के
सदृशं = सामान
वपुः = शरीर
प्राप्ता = आयीं
तत्र = वहां
सटाक्षेप= गर्दन के बाल हिलाने से
क्षिप्त= बिखर रहा था
नक्षत्र= तारों का
संहतिः = समूह

नारसिंही नृसिंह के सामान धारण कर के वहां आयीं , जिसके गर्दन के बाल हिलाने से तारों का समूह बिखर रहा था ।

वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता ।
प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैव सा ॥ २१॥

वज्रहस्ता = व्रज हाथ में लिए
तथैवैन्द्री = इस प्रकार इंद्री
गजराजोपरि = गजराज के ऊपर
स्थिता = बैठ कर
प्राप्ता = आयीं
सहस्रनयना = हज़ारों नेत्रों वाली
यथा = जैसे
शक्रः =इंद्र
तथैव= वैसी ही
सा = वह

इसी प्रकार हज़ारों नेत्रों वाली इंद्री व्रज हाथ में लिए गजराज के ऊपर बैठ कर आयीं । जैसे इंद्र (का रूप है) वैसी ही वह (थी) ।

ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः ।
हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याह चण्डिकाम् ॥ २२॥

ततः = तब
परिवृत:= घिरे
ताभि:= उन
ईशानो = शिव ने
देवशक्तिभिः = देव शक्तियों से
हन्यन्ताम्= संहार करो
असुराः = असुरों को
शीघ्रं = शीघ्र ही
मम = मेरी
प्रीत्या = प्रसन्नता के लिए
आह = कहा
चण्डिकाम् = चण्डिका

तब उन देव शक्तियों से घिरे शिव ने चण्डिका को कहा मेरी प्रसन्नता के लिए असुरों का शीघ्र ही संहार करो ।

ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा ।
चण्डिका शक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी ॥ २३॥

ततो = तब
देवीशरीरात् =देवी के शरीर से
तु = और
विनिष्क्रान्ता = निकली , प्रकट हुईं
अतिभीषणा ।= अति भयंकर
चण्डिका = चण्डिका
शक्ति:= शक्ति
अत्युग्रा = अति उग्र
शिवाशतनिनादिनी = सौ गीदड़ों की आवाज़ वाली

तब देवी के शरीर से अति भयंकर और अति उग्र सौ गीदड़ों की आवाज़ वाली चण्डिका शक्ति प्रकट हुईं ।

सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता ।
दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ २४॥

सा = उस
च = और
आह = कहा
धूम्रजटिलम्= धूमिल जटाओं वाले
ईशानम्= शिव को
अपराजिता = अपराजिता
दूत = दूत बन
त्वं = आप
गच्छ = जाइए
भगवन् = भगवन
पार्श्वं = पास
शुम्भनिशुम्भयोः = शुम्भ निशुम्भ के

और उस अपराजिता देवी ने धूमिल जटाओं वाले शिव को कहा , भगवन आप शुम्भ निशुम्भ के पास दूत बन कर जाइए ।

ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ ।
ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥ २५॥

ब्रूहि = कहिये
शुम्भं निशुम्भं च= और शुम्भ निशुम्भ को
दानवाव = दानवों को
अतिगर्वितौ = अत्यंत घमंडी
ये = जो
च = और
अन्ये = दूसरे
दानवा= दानव
तत्र = वहां
युद्धाय = युद्ध के लिए
समुपस्थिताः = उपस्थित हैं

और अत्यंत घमंडी दानवों शुम्भ निशुम्भ को और जो दूसरे दानवों को वहाँ युद्ध के लिए उपस्थित हैं , कहिये ।

त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तु हविर्भुजः ।
यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥ २६॥

त्रैलोक्यम् = तीनों लोक
इन्द्रो = इंद्र को
लभतां = मिल जाएँ
देवाः = देवता
सन्तु = करने लगे
हविर्भुजः= यज्ञ भाग का उपयोग
यूयं = तुम सब
प्रयात = चले जाएँ
पातालं = पाताल में
यदि = यदि
जीवितुम् = जीने की
इच्छथ= इच्छा है

यदि जीने की इच्छा है तो तुम सब पाताल में चले जाओ, इंद्र को तीनों लोक मिल जाएँ , देवता यज्ञ भाग का उपयोग करने लगे ।

बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः ।
तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ॥ २७॥

बलावलेपात् = बल का घमंड से
अथ = अब
चेद् = यदि
भवन्तो = तुम सब को
युद्धकाङ्क्षिणः = युध्दि की इच्छा है
तदा= तब
अगच्छत = आओ
तृप्यन्तु = तृप्त हों
मच्छिवाः = मत् शिवाः = मेरी शिवायें
पिशितेन = मांस से
वः = तुम सब के

अब यदि बल का घमंड से तुम सब को युद्ध की अभिलाषा है तो आयटम

सब के मांस से मेरी शिवायें तृप्त हों ।

यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम् ।
शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता ॥ २८॥

यतो = क्यूंकि
नियुक्तो = नियुक्त किया था
दौत्येन = दूत के लिए
तया = उस
देव्या = देवी ने
शिवः = शिव को
स्वयम्= खुद
शिवदूतीति = शिवदूती इस प्रकार
लोकेऽस्मिं इस संसार में
ततः = तब , इसलिए
सा = वह
ख्यातिमागता = ख्यातिम् आगता = प्रसिद्द हुई

क्यों की देवी ने खुद शिव को दूत नियुक्त किया था इसलिए वह इस संसार में शिवदूती के नाम से प्रसिद्द हुईं ।

तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः ।
अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता ॥ २९॥

तेऽपि = वे भी
श्रुत्वा = सुन कर
वचो = वचन
देव्याः = देवी के
शर्वाख्यातं = शिव द्वारा कहे
महासुराः= महाअसुर
अमर्षापूरिता = क्रोध से भरे
जग्मुः = गए
यत्र = जहां
कात्यायनी = कात्यायनी
स्थिता = विराजमान थीं

वे महाअसुर भी शिव द्वारा कहे देवी के वचनों को सुन कर क्रोध से भरे

वहाँ गए जहां कात्यायनी देवी विराजमान थीं ।

ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः ।
ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः ॥ ३०॥

ततः = तब
प्रथममेवा = पहले ही
अग्रे = तरफ , आगे
शर शक्ति ऋष्टि वृष्टिभिः = तीरों , शक्ति , ऋष्टि की
ववर्षुः= वर्षा की
उद्धत = उत्तेजित
अमर्षाः = क्रोध से
ताम् = उस
देवीम् = देवी
अमरारयः= असुरों ने

तब क्रोध से उत्तेजित असुरों ने पहले ही उस देवी की तरफ तीरों , शक्ति , ऋष्टि की वर्षा की ।

सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान् ।
चिच्छेद लीलयाअध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः ॥ ३१॥
सा =उसने
च = और
तान् = उन
प्रहितान् = फेंके गए
बाणान् = बाणों
शूलशक्तिपरश्वधान् = शूल , शक्ति , कुल्हाड़ियों को
चिच्छेद = काट दिया
लीलया= खेल खेल में
आध्मात= टंकार करते
धनुः= धनुष से
मुक्तैः = छोड़े
महेषुभिः महा इषुभिः = बड़े तीरों से

और उस देवी ने उन फेंके हुए बाणों ,शूल , शक्ति , कुल्हाड़ियों को खेल खेल में टंकार करते धनुष से छोड़े बड़े तीरों से काट दिया ।

तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान् ।
खट्वाङ्गपोथितांश्चारीन्कुर्वती व्यचरत्तदा ॥ ३२॥

तस्याग्रतः = उसके आगे
तथा = इसी प्रकार
काली = काली
शूलपातविदारितान् = शूल प्रहार से भेदती
खट्वाङ्गपोथितां = खट्वाङ्ग से नष्ट
च = और
अरीन् = दुश्मनों को
कुर्वन्ति = करती हुई
व्यचरत् = घूमने लगी
तदा = तब

और इसी प्रकार काली दुश्मनों को शूल प्रहार से भेदती और खट्वाङ्ग से नष्ट करती हुई उसके आगे घूमने लगी ।

कमण्डलुजलाक्षेपहतवीर्यान् हतौजसः ।
ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून्येन येन स्म धावति ॥ ३३॥

कमण्डलु = कमण्डलु
जलाक्षेप = जल छिड़क के
हतवीर्यान् = पराक्रम विहीन
हतौजसः= तेज विहीन
ब्रह्माणी = ब्रह्माणी
च= और
अकरोत् = कर देती
शत्रून्= शत्रुओं को
येन येन = जहां जहां
स्म = तब
धावति = जाती

ब्रह्माणी जहां जहां जाती तब कमण्डलु से जल छिड़क के शत्रुओं को पराक्रम विहीन और तेज विहीन कर देती ।

माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी ।
दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना ॥ ३४॥

माहेश्वरी = माहेश्वरी
त्रिशूलेन = त्रिशूल से
तथा = इसी प्रकार
चक्रेण = चक्र से
वैष्णवी = वैष्णवी
दैत्यान्= दैत्यों को
जघान = मार रही थीं
कौमारी = कौमारी
तथा = इसी प्रकार
शक्त्य = शक्ति से
अतिकोपना = अत्यंत क्रोधित

माहेश्वरी त्रिशूल से ,इसी प्रकार वैष्णवी चक्र से ,इसी प्रकार कौमारी शक्ति से दैत्यों को मार रही थीं ।

ऐन्द्री कुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः ।
पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥ ३५॥

ऐन्द्री = ऐन्द्री के
कुलिशपातेन= व्रज के प्रहार से
शतशो = सैंकड़ों
दैत्यदानवाः = दैत्य और दानव
पेतुः= गिर गए
विदारिताः = कट कर
पृथ्व्यां = पृथ्वी पर
रुधिर= रक्त की
औघ= धारा
प्रवर्षिणः= बहाते हुए

ऐन्द्री के व्रज के प्रहार से सैंकड़ों दैत्य और दानव कट कर रक्त की धारा बहाते हुए पृथ्वी पर गिर गए ।

तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः ।

वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः ॥ ३६॥

तुण्डप्रहार = थूथन के प्रहार से
विध्वस्ता = नष्ट हो गए
दंष्ट्राग्र= दाढ़ों के अग्र भाग से
क्षतवक्षसः= छाती भिद गयी
वाराहमूर्त्या = वाराही के
न्यपतं = गिर गए
चक्रेण = चक्र से
च = और
विदारिताः = टुकड़े हो कर

(असुर) वाराही के थूथन के प्रहार से नष्ट हो गए, दाढ़ों के अग्र भाग से छाती भिद गयी और चक्र से (उनके) टुकड़े हो कर गिर गए ।

नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महासुरान् ।
नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा ॥ ३७॥

नखै: = नाखूनों से
विदारितां = फाड़ दिया
च = और
अन्यान् = दूसरों को
भक्षयन्ती = खाती
महासुरान् = महासुरों को
नारसिंही = नारसिंही ने
चचार = घूमने लगी
आजौ = युद्ध भूमि में
नादापूर्णदिगम्बरा = दहाड़ से दिशाओं को गुंजाती हुई

नारसिंही ने महासुरों को नाखूनों से फाड़ दिया और दूसरों को खाती हुई युद्ध भूमि में दहाड़ से दिशाओं को गुंजाती हुई घूमने लगी ।

चण्डाट्टहासैरसुराः शिवदूत्यभिदूषिताः ।
पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा ॥ ३८॥

चण्डाट्टहासै: = प्रचंड अट्टास से
असुराः =असुर

शिवदूति= शिवदूती के
अभिदूषिताः= घायल , भयभीत
पेतुः = गिर गए
पृथिव्यां= पृथ्वी पर
पतितां= गिरे हुए
तां = उन
चखाद = खाने लगी
अथ = और
सा = वह
तदा= तब

असुर शिवदूती के प्रचंड अट्टास से भयभीत हो पृथ्वी पर गिर गए और वह तब गिरे हुए उन असुरों को खा गयीं ।

इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान् ।
दृष्ट्वाभ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ॥ ३९॥

इति = इस प्रकार
मातृगणं = मातृगणों द्वारा
क्रुद्धं = क्रोध में
मर्दयन्तं = मर्दन करते
महासुरान् = महासुरों का
दृष्ट्वा= देख कर
अभ्युपायैः= उपायों से
विविधैः= विभिन्न
नेशुः= भाग खड़े हुए
देवारि सैनिकाः = दैत्य सैनिक

इस प्रकार मातृगणों द्वारा क्रोध में विभिन्न उपायों से महासुरों का मर्दन करते देख कर दैत्य सैनिक भाग खड़े हुए ।

पलायनपरान्दृष्ट्वा दैत्यान्मातृगणार्दितान् ।
योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महासुरः ॥ ४०॥

पलायनपरान् = भागता हुआ
दृष्ट्वा = देख कर

दैत्यान् = दैत्यों को
मातृगणार्दितान् = मातृगणों से पीड़ित
योद्धुम्= युद्ध करने
अभ्याययौ = आया
क्रुद्धो= क्रोधित हो
रक्तबीजो = रक्तबीज
महासुरः= महासुर

मातृगणों से पीड़ित दैत्यों को भागता हुआ देख कर महासुर रक्तबीज क्रो-धित हो युद्ध करने आया ।

रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः ।
समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणो महासुरः ॥ ४१॥

रक्तबिन्दु:= रक्त की बूंदे
यदा = जब
भूमौ = भूमि पर
पतति = गिरते
अस्य = उसके
शरीरतः = शरीर से
समुत्पतति उत्पन्न हो जाता
मेदिन्यां = भूमि से
तत्प्रमाणो = उसके जैसा
महासुरः= महासुर

जब उसके शरीर से रक्त की बूँदें भूमि पर गिरती , भूमि से उसके जैसा महासुर उत्पन्न हो जाता ।

युयुधे स गदापाणिरिन्द्रशक्त्या महासुरः ।
ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् ॥ ४२॥

युयुधे = युद्ध किया
स = उस
गदापाणि: = गदा हाथ में ले
इन्द्रशक्त्या = इंद्र की शक्ति से
महासुरः = महासुर ने
ततः = तब

च = और
एन्द्री = इंद्री ने
स्ववज्रेण = अपने वज्र से
रक्तबीजम्= रक्तबीज को
अताडयत् = मारा

तब उस महासुर ने गदा हाथ में ले इंद्र की शक्ति से युद्ध किया और ऐन्द्री ने अपने वज्र से रक्तबीज को मारा ।

कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम् ।
समुत्तस्थुस्ततो योधास्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥ ४३॥

कुलिशेन= वज्र से
आहत अस्य= घायल उसका
आशु = शीघ्र ही
बहु = बहुत सा
सुस्राव = बह गया
शोणितम् = रक्त
समुत्तस्थु = उठ खड़े हुए
ततो = तब
योधा= योद्धा
तद् रूपा= उसके रूप
तद् पराक्रमाः = उसके पराक्रम

वज्र से घायल उसका शीघ्र बहुत सा रक्त बह गया , तब उसी के रूप , उसी के पराक्रम वाले योद्धा उठ खड़े हुए ।

यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्तबिन्दवः ।
तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः ॥ ४४॥

यावन्तः = जितने
पतिता = गिरे
तस्य = उसके
शरीरात् =शरीर से
रक्तबिन्दवः = रक्त बिंदु
तावन्तः = उतने ही

पुरुषा = पुरुष
जाता: = उत्पन्न हो गए
तद्वीर्यबलविक्रमाः = उसके जैसे साहसी, बली, पराक्रमी वाले

उसके शरीर से जितने भी रक्त बिंदु गिरे , उतने ही   उसके जैसे साहसी, बली, पराक्रमी वाले पुरुष उत्पन्न हो गए ।

ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः ।
समं मातृभिरत्युग्रशस्त्रपातातिभीषणम् ॥ ४५॥

ते = वे
च = और
अपि = भी
युयुधुः = युद्ध करने लगे
तत्र = वहां
पुरुषा = पुरुष
रक्तसम्भवाः = रक्त से उत्पन्न
समं = साथ
मातृभि:= माताओं के
अत्युग्र अति उग्र = अत्यंत तीखे
शस्त्र = शास्त्र
पाताति =
भीषणम् =भयानक

और वे रक्त से उत्पन्न पुरुष भी माताओं के साथ अत्यंत उग्र शास्त्रों को छोड़ते हुए भयानक युद्ध करने लगे ।

पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा ।
ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः ॥ ४६॥

पुनश्च = और फिर से
वज्रपातेन = वज्र के प्रहार से
क्षतम् =घायल
अस्य = उसके
शिरो = सिर से
यदा = जब
ववाह = बहा

रक्तं = रक्त
पुरुषाः= पुरुष
ततः = तब
जाताः = उत्पन्न हो गए
सहस्रशः = हजारों

और दुबारा वज्र के प्रहार से घायल उसके सिर से रक्त बहा तब हजारों पुरुष उत्पन्न हो गए ।

वैष्णवी समरे चैनं चक्रेणाभिजघान ह ।
गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् ॥ ४७॥

वैष्णवी = वैष्णवी ने
समरे = युद्ध में
च ऐनम् = और उसे
चक्रेणा = चक्र से
अभिजघान ह = मारा
गदया = गदा से
ताडयामास = पीटा
ऐन्द्री = ऐन्द्री
तमसुरेश्वरम् = उस असुरराज को

और युद्ध में उसे वैष्णवी ने चक्र से मारा, ऐन्द्री ने उस असुरराज को गदा से पीटा ।

वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः ।
सहस्रशो जगद्-व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः ॥ ४८॥

वैष्णवी = वैष्णवी के
चक्रभिन्न = चक्र से घायल
अस्य = उसके
रुधिरस्राव = रक्त बहने से
सम्भवैः = उत्पन्न
सहस्रशो = हज़ारों
जगद्व्याप्तं = जगत व्याप्त हो गया ।
तत्प्रमाणैः = उसके जैसे
महासुरैः = महासुरों से

वैष्णवी के चक्र से घायल उसके रक्त बहने से उत्पन्न उसके जैसे हज़ारों महासुरों से जगत व्याप्त हो गया ।

शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना ।
माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम् ॥ ४९॥

शक्त्या = शक्ति से
जघान = मारा
कौमारी = कौमारी ने
वाराही = वाराही
च = और
तथा = इसी प्रकार
असिना = तलवार से
माहेश्वरी = माहेश्वरी ने
त्रिशूलेन = त्रिशूल से
रक्तबीजं = रक्तबीज
महासुरम् =महासुर को

महासुर को कौमारी ने शक्ति से और वाराही ने तलवार से ,इसी प्रकार माहेश्वरी ने त्रिशूल से मारा ।

स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक् ।
मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥ ५०॥

स = उस
च= और
अपि = भी
गदया = गदा से
दैत्यः = दैत्य
सर्वा = सब
एव = ही
आहनत् = प्रहार किया
पृथक् = अलग
मातृः = माताओं को
कोप = क्रोध से
समाविष्टो = भर कर
रक्तबीजो = रक्तबीज

महासुरः = महासुर

और क्रोध से भरे उस रक्तबीज महासुर ने भी सब ही माताओं पर अलग अलग प्रहार किया ।

तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि ।
पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥ ५१॥

तस्य: = उसके
आहतस्य= आहत होने पर
बहुधा = अनेक बार
शक्तिशूलादिभिः= शूल , शक्ति आदि से अनेक बार
भुवि= भूमि पर
पपात = गिरी
यो = जो
वै = निश्चित ही
रक्तौघ:= रक्त की धारा
तेन = उससे
सन् = हो गए
शतश: = सैंकड़ों
असुराः= असुर

अनेक बार शूल , शक्ति आदि से अनेक बार आहत होने पर उसके

रक्त की जो धारा भूमि पर गिरी उससे निश्चय ही सैंकड़ों असुर हो गए ।

तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत् ।
व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥ ५२॥

तै: = उन
च = और
असुर असृक् सम्भूतै: = असुर के खून से बने
असुरैः = असुरों से
सकलं = सारा
जगत् = संसार
व्याप्तम्= व्यापत
आसीत् = था

ततो = तब
देवा: = देवताओं को
भयम् = भय
आजग्मु: = आया , हुआ
उत्तमम् = बहुत ज्यादा

और असुर के खून से बने उन असुरों से सारा संसार व्याप्त हो गया था , तब देवताओं को बहुत ज्यादा भय हुआ ।

तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राहसत्वरम् ।
उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥ ५३॥

तान् = उन
विषण्णान् = खिन्न
सुरान् = देवताओं को
दृष्ट्वा = देख कर
चण्डिका = चण्डिका
प्राह = सम्बोधित करते हुए
सत्वरम् = जल्दी से
उवाच = कहा
कालीं = काली को
चामुण्डे = हे चामुण्डा
विस्तीर्णं = विस्तृत
वदनं = मुख
कुरु = करो

उन खिन्न देवताओं को देख कर चण्डिका जल्दी से काली को सम्बोधित करते हुए बोली- हे चामुण्डा मुख विस्तृत करो ।

मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून् महासुरान् ।
रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना ॥ ५४॥
मत् = मेरे
शस्त्रपात = शास्त्र प्रहार से
सम्भूतान् = उत्पन्न
रक्तबिन्दून्= रक्त बिन्दुओं से
महासुरान् =महासुरों

रक्तबिन्दोः = रक्त बिन्दुओं
प्रतीच्छ = खा जाओ , ग्रहण करो
त्वं = तुम
वक्त्रेण = मुख
अनेन = इस प्रकार
वेगिना = जल्दी से

मेरे शास्त्र प्रहार से रक्त बिन्दुओं , (और) रक्तबिन्दुओं से उत्पन्न महासुरों को तुम मुंह में इस प्रकार जल्दी से ग्रहण करो ।

भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान् ।
एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥ ५५॥

भक्षयन्ती = खाती हुई
चर = विचरती रहो
रणे = रन भूमि में
तदुत्पन्नान् = उन उत्पन्न हुए
महासुरान् = महासुरों को
एवम = इस प्रकार
एष = यह
क्षयं = नष्ट
दैत्यः = दैत्य
क्षीण रक्त: रक्त कम होने से
गमिष्यति = हो जाएगा

उन उत्पन्न हुए महासुरों को खाती हुई रणभूमि में विचरती रहो , इस प्रकार यह रक्त कम होने से नष्ट हो जाएगा ।

भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे ।
इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघान तम् ॥ ५६॥

भक्ष्यमाणा: = खाए जाते हुए
त्वया = तुम्हारे द्बारा
चोग्रा = उग्र असुर
च = और
न = नहीं
उत्पत्स्यन्ति = उत्पन्न होंगे

चापरे च अपरे = और दूसरे
इत्युक्त्वा इति उक्तवा = यह कह कर
तां = उसको
ततो = तब
देवी = देवी ने
शूलेन= शूल से
अभिजघान = प्रहार किया
तम्= उस पर

तुम्हारे द्वारा खाए जाते हुए और दूसरे उग्र असुर पैदा नहीं होंगे , उस काली को यह कह कर तब देवी ने शूल से उस पर प्रहार किया ।

मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् ।
ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम् ॥ ५७॥

मुखेन = मुख से
काली = काली ने
जगृहे = ग्रहण कर लिया
रक्तबीजस्य = रक्तबीज का
शोणितम् = खून
ततो = तब
असौ = उस रक्तबीज ने
जघान = प्रहार किया
अथ = और
गदया = गदा से
तत्र = वहां
चण्डिकाम् = चण्डिका पर

मुख से काली ने रक्तबीज का खून ग्रहण कर लिया , और तब वहाँ उसने गदा से चण्डिका पर प्रहार किया ।

न चास्या वेदनां चक्रे गदापातोऽल्पिकामपि ।
तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ॥ ५८॥

न = नहीं
च = और
अस्या = उस को

वेदनां = वेदना
चक्रे = हुई
गदापातो= गदा के प्रहार से
अल्पिकामपि = थोड़ी सी भी
तस्य = उस
आहतस्य= घायल के
देहात्= शरीर से
तु = पर
बहु = बहुत सा
सुस्राव = बह गया
शोणितम्= खून

पर गदा के प्रहार से उस देवी को थोड़ी सी भी वेदना नहीं हुई , पर उस (रक्तबीज) के घायल शरीर से बहुत सा खून बह गया ।

यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति ।
मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः ॥ ५९॥
तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् ।

यत: तत: = जहां भी
तत् = वह
वक्त्रेण = मुंह से
चामुण्डा = चामुण्डा ने
सम्प्रतीच्छति = ग्रहण कर लिया
मुखे = मुख में
समुद्गता = उत्पन्न हुए
ये = जो
अस्या = उसके
रक्तपातात्= रक्त गिरा
महासुराः=महासुर

तां = उनको
चखाद = खा लिया
अथ = भी
चामुण्डा= चामुण्डा ने
पपौ = पी लिया
तस्य = उसका
च = और

शोणितम् = खून

जहां भी वह रक्त गिरा चामुण्डा ने वह मुंह में ग्रहण कर लिया , जो उसके मुंह में महासुर उत्पन्न हुए
उनको चामुण्डा ने खा लिया और उस (रक्तबीज) का खून भी पी लिया ।

देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिर्ऋष्टिभिः ॥ ६०॥
जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम् ।

देवी = देवी ने
शूलेन = शूल से
वज्रेण वज्र
बाणै: = बाणों
असिभि:= तलवारों
ऋष्टिभिः = ऋष्टियों से

जघान = मार दिया
रक्तबीजं = रक्त बीज को
तं = उस के
चामुण्डा = चामुण्डा ने
पीत = पी लिया
शोणितम् = रक्त को

सेवी ने बाणों, व्रजों , तलवारों ऋष्टियों से रक्त बीज को मार दिया । उ-
सके रक्त को चामुण्डा ने पी लिया ।

स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः ॥ ६१॥
नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः ।

स = वह
पपात = गिर गया
महीपृष्ठे = भूमि पर
शस्त्रसङ्घ = शास्त्रों के समूह से
समाहतः= आहत हुआ

नीरक्त= बिना रक्त के
च = और
महीपाल = हे राजन
रक्तबीजो = रक्तबीज
महासुरः = महासुर

वह महासुर रक्तबीज शास्त्रों के समूह से आहत हुआ और बिना रक्त के हो भूमि पर गिर गया ।

ततस्ते हर्षमतुलमवापुस्त्रिदशा नृप ॥ ६२॥

ततः= तब
ते = उन
हर्षम् अतुलम्= अत्यंत हर्ष
अवापुः= प्राप्त हुआ
त्रिदशा = देवताओं को
नृप= हे राजा

हे राजा तब उन देवताओं को अत्यंत हर्ष प्राप्त हुआ ।

तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्मदोद्धतः ॥ ६३॥

तेषां = उन (देवताओं) से
मातृगणो = माताओं के समूह ने
जातो = उत्पन्न ,
ननर्त= नृत्य किया
असृङ्मदोद्धतः = खून के मद से उत्तेजित हो

उन (देवताओं) से उत्पन्न माताओं के समूह ने खून के मद से उत्तेजित हो नृत्य किया ।

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८॥

नवमोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्दैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि।।

बन्धूककाञ्चननिभं = बन्दूक के फूल और सोने के सामान रंग की
रुचिराक्षमालां = सुन्दर अक्ष माला ,
पाशाङ्कुशौ = पाश, अंकुश
च वरदां = और वरद मुद्रा
निजबाहुदण्डैः = अपनी भुजाओं में दंड
बिभ्राणमि= धारण किये
इन्दुशकलाभरणं = अर्द चन्द्र के आभूषण वाले
त्रिनेम्= = तीन नेत्रों वाले
अर्धाम्बिकेशम्= अर्ध अम्बिक ईश वपु : = अर्धनारीश्वर के रूप (श्रीविग्रह) की
अनिशं = निरंतर

आश्रयामि= शरण लेता/ लेती हूँ

बन्दूक के फूल और सोने के सामान रंग की सुन्दर अक्ष माला , पाश, अंकुश ,वरद मुद्रा और अपनी भुजाओं में दंड धारण किये , अर्द चन्द्र के आभूषण वाले, तीन नेत्रों वाले अर्धनारीश्वर के रूप (श्रीविग्रह) की निरंतर शरण लेता/ लेती हूँ ।

ॐ राजोवाच ॥ १॥

राजा बोले ।

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम ।
देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥ २॥

विचित्रम् = अद्भुत
इदम्= ये
आख्यातं = बताया
भगवन् = भगवन
भवता = आप ने
मम = मुझे

देव्याश्चरितमाहात्म्यं = देवी चरित्र का माहात्म्य
रक्तबीजवध= रक्तबीज की वध से
आश्रितम् = सम्बंधित

भगवन आप ने मुझे रक्तबीज की वध से सम्बंधित देवी चरित्र का ये अ-द्भुत माहात्म्य बताया ।

भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते ।
चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः ॥ ३॥

भूयः= दुबारा
च = और
इच्छामि= चाहता हूँ
अहं = मैं
श्रोतुं = सुनना
रक्तबीजे = रक्त बीज के
निपातिते = मारे जाने पर
चकार = किया
शुम्भो = शुम्भ ने
यत्कर्म = जो कर्म
निशुम्भ = निशुम्भ
च = और
अतिकोपनः= अत्यंत क्रोध में

रक्त बीज के मारे जाने पर शुम्भ ने और निशुम्भ ने अत्यंत क्रोध में जो कर्म किया मैं दुबारा सुनना चाहता हूँ

ऋषिरुवाच ॥ ४॥

ऋषि बोले ।

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते ।
शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥ ५॥

चकार = किया
कोपम् = क्रोध
अतुलं = अत्यंत

रक्तबीजे = रक्तबीज के
निपातिते = मारे जाने पर
शुम्भ: = शुम्भ
असुरो = असुरों ने
निशुम्भश्च = और अशुम्भ
हतेष्वन्येषु= हतेषु अन्येषु = अन्यों के मारे जाने पर
च= और
आहवे= युद्ध में

युद्ध में शुम्भ और अशुम्भ असुरों ने रक्तबीज के और अन्यों के मारे जाने पर अत्यंत क्रोध किया ।

हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्षमुद्वहन् ।
अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया ॥ ६॥

हन्यमानं = मारी जाती हुई
महासैन्यं = महा सेना को
विलोक्य = देख कर
अमर्षम् = गुस्से से
उद्वहन् = जलता हुआ
अभ्यधावत् = तरफ भागा
निशुम्भो =निशुम्भ
अथ = तब
मुख्यया = मुख्य
असुरसेनया = असुरसेना के साथ

मारी जाती हुई महा सेना को देख कर गुस्से से जलता हुआ निशुम्भ तब मुख्य असुरसेना के साथ देवी की तरफ भागा ।

तस्याग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः ।
सन्दष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः ॥ ७॥

तस्य = उसके
अग्रत: = आगे
तथा = इसी प्रकार
पृष्ठे = पीछे

पार्श्वयोः = दायें बाएं
च = और
महासुराः= महा असुर थे
सन्दष्टौ = चबाता हुआ , काटता हुआ
औष्ठपुटाः =होंठों को
क्रुद्धा = क्रोध में
हन्तुं = मारने के लिए
देवीम = देवी को
उपाययुः = आगे बढ़ा

उसके आगे और इसी प्रकार पीछे और दायें बाएं महा असुर थे । क्रोध में होंठों को चबाता हुआ देवी को मारने के लिए आगे बढ़ा ।

आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः ।
निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥ ८॥

आजगाम = आया
महावीर्यः = महा पराक्रमी
शुम्भोऽपि = शुम्भ भी
स्वबलैर्वृतः अपनी सेना से घिर कर
निहन्तुं = मारने के लिए
चण्डिकां = चण्डिका को
कोपात्= क्रोध से
कृत्वा = कर के
युद्धं = युद्ध
तु = और
मातृभिः= माताओं से

और महा पराक्रमी शुम्भ भी अपनी सेना से घिर कर माताओं से युद्ध कर के चण्डिका को मारने के लिए आया ।

ततो युद्धमतीवासीद्देव्या शुम्भनिशुम्भयोः ।
शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥ ९॥

ततो = तब
युद्धम् = युद्ध

अतीव = अत्यंत
आसीत् = था
देव्या = देवी
शुम्भनिशुम्भयोः = शुम्भ निशुम्भ
शरवर्षम् = तीरों की वर्षा
अतीव = अत्यंत
उग्रं = भयानक
मेघयोः= मेघों की
इव = जैसी
वर्षतोः= वर्षा

तब देवी (और) शुम्भ निशुम्भ का युद्ध अत्यंत भयानक था । तीरों की अ-त्यंत वर्षा मेघों की वर्षा जैसी थी।

चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः ।
ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥ १०॥

चिच्छेद= काट दिया
अस्तात् = फेंके गए
शरात् = तीरों को
ताभ्यां = उन दोनों के
चण्डिका = चण्डिका ने
स्वशर:= अपने तीरों के
उत्करैः = ढ़ेर से
ताडयामास = प्रहार किया
च = और
अङ्गेषु = अंगों पर
शस्त्रौघै:= शस्त्रों के प्रवाह से
असुरेश्वरौ = दैत्यपतियों के

चण्डिका ने अपने तीरों के ढेरों से उन दोनों के फेंके गए तीरों को काट दिया और शस्त्रों के प्रवाह से दैत्यपतियों के अंगों पर प्रहार किया ।

निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम् ।
अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ॥ ११॥

निशुम्भो = निशुम्भ ने
निशितं = तीखी

खड्गं = तलवार
चर्म =ढाल
च= और
आदाय = ले कर
सुप्रभम् = चमकीली
अताडयत् = मार
मूर्ध्नि = माथे पर
सिंहं = सिंह के
देव्या = देवी के
वाहनम् = वाहन
उत्तमम् = उत्तम

निशुम्भ ने तीखी तलवार और चमकीली ढाल ले कर देवी के उत्तम वाहन सिंह के माथे पर प्रहार किया ।

ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम् ।
निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ॥ १२॥

ताडिते = प्रहार होने पर
वाहने = वाहन पर
देवी = देवी ने
क्षुरप्रेणा= तेज धार वाला तीर
असिम् = तलवार को
उत्तमम् = उत्तम
निशुम्भस्य = निशुम्भ की
आशु = शीघ्र
चिच्छेद = काट दिया
चर्म = ढाल
च = और
अपि = भी
अष्टचन्द्रकम् = आठ चंद्रमाओं वाली

वाहन पर प्रहार होने पर देवी ने तेज धार वाले तीर से शीघ्र निशुम्भ की उत्तम तलवार और आठ चंद्रमाओं वाली ढाल को भी काट दिया ।

छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः ।
तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् ॥ १३॥

छिन्ने = टूटने पर
चर्मणि = ढाल
खड्गे = तलवार
च = और ढाल
शक्तिं = शक्ति
चिक्षेप = फेंकी
सोऽसुरः = सः असुरः = उस असुर ने
ताम् = उसके
अपि = भी
अस्य = उस देवी के
द्विधा = दो भाग
चक्रे = कर दिए
चक्रेणा= चक्र से
अभिमुख = पास , सामने
आगताम् = आती हुई

तलवार और ढाल के टूटने पर उस असुर ने शक्ति फेंकी , उस देवी के पास आती हुई उस (शक्ति) के भी चक्र से दो भाग कर दिए।

कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः ।
आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ॥ १४॥

कोप आध्मात् = क्रोध से जलते हुए
निशुम्भः= निशुम्भ ने
अथ = तब
शूलं = शूल
जग्राह = ले कर
दानवः = दानव
आयातं = आते हुए
मुष्टिपातेन = मुट्ठी के प्रहार से
देवी = देवी ने
तत्= उसको भी
च = और
अपि = भी
अचूर्णयत् = पीस दिया

क्रोध से जलते हुए निशुम्भ ने तब शूल ले कर आया , आते हुए उस शूल को भी देवी ने मुट्ठी के प्रहार से पीस दिया ।

आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति ।
सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता ॥ १५॥

आविध्य = घुमा कर
अथ = तब
गदां = गदा
सोऽपि = उसने भी
चिक्षेप = फेंकी
चण्डिकां = चण्डिका की
प्रति = तरफ
सापि = वह भी
देव्या = देवी के
त्रिशूलेन = त्रिशूल से
भिन्ना = टूट कर
भस्मत्वम् आगता = राख हो गयी

तब उसने भी चण्डिका की तरफ घुमा कर गड़ाए फेंकी , वह भी देवी के त्रिशूल से टूट कर राख हो गयी ।

ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम् ।
आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले ॥ १६॥

ततः = तब
परशुहस्तं = परशु हाथ में ले कर
तम = उस
आयान्तं = आते हुए
दैत्यपुङ्गवम् = दैत्यराज
आहत्य =घायल कर
देवी =देवी ने
बाणौघै = बाणों के प्रवाह से
अपातयत = गिरा दिया
भूतले = भूमि पर

तब परशु हाथ में ले कर आते हुए उस दैत्य राज को बाणों के प्रवाह से

घायल कर भूमि पर गिरा दिया ।

तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे ।
भ्रातर्यतीव सङ्क्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् ॥ १७॥

तस्मिन्= उस
निपतिते = गिरने पर
भूमौ = भूमि पर
निशुम्भे = निशुम्भ के
भीमविक्रमे अत्यंत पराक्रमी
भ्रातरः = भाई
अतीव = बहुत
सङ्क्रुद्धः = क्रोध के साथ
प्रययौ = आगे आया
हन्तुम्= मारने के लिए
अम्बिकाम् = अम्बिका को

उस अत्यंत पराक्रमी भाई निशुम्भ के भूमि पर गिरने से बहुत क्रोध के साथ (शुम्भ) अम्बिका को मारने के लिए आगे आया ।

स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः ।
भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥ १८॥

स = वह
रथस्थ = रथ पर बैठा
तथा= इस प्रकार
अति = अत्यंत
उच्चै: = श्रेष्ठ
गृहीत = लिए
परमायुधैः =परम शस्त्रों को
भुजै: = भुजाओं से
अष्टाभि:= आठ
अतुलै:= अतुलनीय
व्याप्या = व्याप्त कर
अशेषं = सारे
बभौ = शोभनीय था
नभः = आकाश को

इस प्रकार वह रथ पर बैठा अत्यंत परम शस्त्रों को लिए , अतुलनीय आठ भुजाओं से सारे आकाश को व्याप्त कर शोभनीय था ।

तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत् ।
ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम् ॥ १९॥

तम= उसको
आयान्तं = आता हुआ
समालोक्य= देख कर
देवी = देवी ने
शङ्खम = शंख
अवादयत् = बजाया
ज्याशब्दं = टंकार की आवाज
च= और
अपि = भी
धनुष = धनुष से
च = और
चकार = की
अतीव = अत्यंत
दुःसहम् = असहनीय

उसको आता हुआ देख कर देवी ने शंख बजाया और धनुष से अत्यंत अ-सहनीय टंकार की आवाज भी की ।

पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च ।
समस्तदैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ॥ २०॥

पूरयामास = भर दिया
ककुभो = सभी दिशाओं को
निज घण्टा स्वनेन = अपने घंटे की आवाज़ से
च =और
समस्त दैत्य सैन्यानां = सारे दैत्यों की सेना
तेजोवध = तेज को नष्ट
विधायिना = करने वाली

और सारे दैत्यों की सेना के तेज को नष्ट करने वाली अपने घंटे की आ-वाज़ से सभी दिशाओं को भर दिया ।

ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः ।
पूरयामास गगनं गां तथैव दिशो दश ॥ २१॥

ततः = तब
सिंहो = सिंह की
महानादैः = महा गर्जना
त्याजित = दूर करने वाली
एभ= हाथियों के
महामदैः =महान मद को
पूरयामास = भर दिया
गगनं = आकाश
गां = पृथ्वी
तथैव = तथा इसी प्रकार
दिशो = दिशाओं
दश = दसों

हाथियों के महान मद को दूर करने वाली सिंह की महा गर्जना ने आकाश , पृथ्वी तथा इसी प्रकार दसों दिशाओं को भर दिया ।

ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत् ।
कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः ॥ २२॥

ततः = तब
काली = काली ने
समुत्पत्य = उछाल कर
गगनं = आकाश में
क्ष्माम् = पृथ्वी पर
अताडयत् = प्रहार किया
कराभ्यां = हाथों से
तन्निनादेन = तत् निनादेन = उस आवाज़ से
प्राक् = पहले की
स्वनाः= आवाज़ थीं
ते = वे
तिरोहिताः= शांत हो गयीं

तब काली ने आकाश में उछाल कर पृथ्वी पर हाथों से प्रहार किया = उस आवाज़ से पहले की जो आवाज़ें थी वो शांत हो गयीं ।

अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह ।
तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ ॥ २३॥

अट्टाट्टहासम = अट्टहास
अशिवं = अमंगलकारी
शिवदूती = शिवदूती ने
चकार = किया
ह = तब
तैः = उन
शब्दै:= आवाज़ों से
असुरा:= असुर
त्रेसुः = डर गए
शुम्भः = शुम्भ को
कोपं = क्रोध
परं = अत्यंत
ययौ =आया

शिवदूती ने तब अमंगलकारी अट्टहास किया, उन आवाज़ों से असुर सर गए , (पर) शुम्भ को अत्यंत क्रोध आया ।

दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा ।
तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः ॥ २४॥

दुरात्म: = दुष्ट आत्मा
तिष्ठ तिष्ठेति = ठहरो ठहरो
व्याजहारा = बोली
अम्बिका =अम्बिका
यदा = जब
तदा = तब
जयेत्य = जय इति = जय हो
अभिहितं = कहा
देवै: = देवताओं ने
आकाशसंस्थितैः = आकाश में स्थित

जब अम्बिका बोली, दुष्ट आत्मा ठहरो ठहरो, तब आकाश में स्थित देव-ताओं ने कहा जय हो ।

शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा ।
आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥ २५॥

शुम्भेना = शुम्भ ने
आगत्य = आ कर
या = जो
शक्तिः= शक्ति
मुक्ता = छोड़ी
ज्वालातिभीषणा = अति भयानक जलती हुई
आयान्ती = आती हुई
वह्निकूटाभा= आग के पर्वत जैसी शक्ति को
सा = उसने
निरस्ता = रोक दिया

महोल्कया= महा उल्का से

शुम्भ ने आ कर जो अति भयानक जलती हुई शक्ति छोड़ी, आती हुई आग के पर्वत जैसी शक्ति को उसने महा उल्का से रोक दिया ।

सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् ।
निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते ॥ २६॥

सिंहनादेन = सिंह् नाद से
शुम्भस्य = शुम्भ के
व्याप्तं = भर दिया
लोकत्रयान्तरम् = तीनों लोकों के अंतर को
निर्घात = व्रजपात, विनाशी
निःस्वनो = प्रतिध्वनि ने
घोरो = घोर
जितवान = विजयी हुई
अवनीपते = राजन

हे राजन , शुम्भ के सिंह नाद से तीनों लोकों के अंतर को भर

दिया , (और) व्रजपात जैसी घोर प्रतिध्वनि विजयी हुई ।

शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् ।
चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥ २७॥

शुम्भमुक्तान् = शुम्भ द्वारा छोड़े गए
शरान्= तीरों को
देवी = देवी ने
शुम्भः= शुम्भ ने
तत् = उसके
प्रहितान् =छोड़े गए
शरान् = तीरों को
चिच्छेद = काट दिया
स्वशरै: = अपने तीरों से
उग्रैः = भयानक
शतश: = सैंकड़ों
अथ = तब
सहस्रशः = हज़ारों

तब शुम्भ द्वारा छोड़े गए तीरों को देवी ने , उसके छोड़े गए तीरो को शुम्भ ने अपने सैंकड़ों हज़ारों भयानक तीरों से काट दिया ।

ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघान तम् ।
स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह ॥ २८॥

ततः =तब
सा =उस
चण्डिका = चण्डिका ने
क्रुद्धा = क्रोधित
शूलेनाभिजघान = शूल से मारा
तम् =उसे
स = वह
तदा= तब
अभिहतो = आघात से
भूमौ = भूमि पर
मूर्च्छितो = मूर्छित हो कर
निपपात ह = गिर गया

तब उस क्रोधित चण्डिका ने उसे शूल से मारा, वह तब आगत से मूर्छित हो कर भूमि पर गिर गया |

ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः ।
आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ॥ २९॥

ततो = तब
निशुम्भः = निशुम्भ
सम्प्राप्य = पाने पर
चेतनाम्= चेतना
आत्त = ले कर
कार्मुकः = धनुष
आजघान = प्रहार किया
शरैः = तीरों से
देवीं = देवी
कालीं = काली
केसरिणं = सिंह
तथा = इसी प्रकार

तब निशुम्भ ने चेतना पाने पर धनुष लेकर तीरों से देवी , काली , इसी प्रकार सिंह पर प्रहार किया ।

पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः ।
चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् ॥ ३०॥

पुनः= दुबारा
च = और
कृत्वा = कर
बाहूनाम अयुतं = दस हज़ार बाहें कर
दनुजेश्वरः= दैत्यराज
चक्रायुधेन = चक्र के प्रहार से
दितिज= दिति के पुत्र
छादयामास = ढक दिया
चण्डिकाम्= चण्डिका को

और फिर से दिति के पुत्र दैत्यराज दस हज़ार बाहें कर चक्र के प्रहार से चण्डिका को ढक दिया ।

ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी ।
चिच्छेद देवी चक्राणि स्वशरैः सायकांश्च तान् ॥ ३१॥

ततो = तब
भगवती = भगवती
क्रुद्धा = क्रोधित
दुर्गा = दुर्गा
दुर्गार्तिनाशिनी = बुरी दशा का नाश करने वाली
चिच्छेद = काट दिए
देवी = देवी ने
चक्राणि = चक्रों
स्वशरैः = अपने तीरों से
सायकांश्च = और तीरों को
तान् = उसके

तब बुरी दशा का नाश करने वाली भगवती दुर्गा देवी ने अपने तीरों से उसके चक्रों और तीरों को काट दिया ।

ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम् ।
अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसैन्यसमावृतः ॥ ३२॥

ततो = तब
निशुम्भो = निशुम्भ
वेगेन = जल्दी से
गदामादाय - गदा ले कर
चण्डिकाम् = चण्डिका को
अभ्यधावत = तरफ दौड़ा
वै = निश्चित रूप से
हन्तुं = मारने के लिए
दैत्यसैन्य समावृतः = दैत्य सेना से घिरा

तब निशुम्भ जल्दी से गदा ले कर निश्चित रूप से चण्डिका को मारने के लिए (उसकी) तरफ दौड़ा ।

तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका ।
खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे ॥ ३३॥

तस्य - उसकी
अपतत = आती हुई
एव= ही
आशु = जल्दी से
गदां = गदा को
चिच्छेद = काट दिया
चण्डिका = चण्डिका ने
खड्गेन = तलवार से
शितधारेण = तीखी धार वाली
स =उसने
च = और
शूलं = शूल
समाददे= ले लिया

उसकी आती हुई गदा को जल्दी से ही अम्बिका ने अपनी तेज धार वाली तलवार से काट दिया , और उस (निशुम्भ) ने शूल ले लिया ।

शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम् ।
हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ॥ ३४॥

शूलहस्तं = शूल लिए
समायान्तं = आते हुए
निशुम्भम = निशुम्भ का
अमरार्दनम् = देवताओं को पीड़ा देने वाले
हृदि = हृदय
विव्याध = छेद दिया
शूलेन = शूल से
वेगाविद्धेन = वेग से चलाये गए
चण्डिका = चण्डिका ने

देवताओं को पीड़ा देने वाले शूल लिए आते हुए निशुम्भ का हृदय चण्डिका ने वेग से चलाये गए शूल से छेद दिया ।

भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः ।
महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् ॥ ३५॥

भिन्नस्य = विदीर्ण
तस्य = उसके
शूलेन = शूल से
हृदयात्= हृदय से
निसृतो= निकला
अपरः = दूसरा
महाबलो =महा शक्तिशाली
महावीर्य:= महा पराक्रमी
तिष्ठ = ठहरो
इति = ऐसा
पुरुषो = पुरुष
वदन् = कहता हुआ

शूल से विदीर्ण हुए उसके हृदय से दूसरा महाशक्तिशाली , महापराक्रमी पुरुष ठहरो ठहरो कहता हुआ निकला ।

तस्य निष्क्रामतो देवी प्रहस्य स्वनवत्ततः ।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि ॥ ३६॥

तस्य = उस के
निष्क्रामतो = निकलते हुए
देवी = देवी
प्रहस्य = हँसते हुए
स्वनवत् = ज़ोर से
ततः = तब
शिर:= सर को
चिच्छेद = काट दिया
खड्गेन = तलवार से
ततोऽसावपतद्भुवि = ततः असौ अपतत् भुवि

ततः = तब
असौ = वह
अपतत् = गिर गया
भुवि = भूमि पर

देवी ने ज़ोर से हँसते हुए ,निकलते हुए उस (पुरुष) के सर को तलवार से काट दिया । तब वह भूमि पर गिर गया ।

ततः सिंहश्चखादोग्रदंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् ।
असुरांस्तांस्तथा काली शिवदूती तथापरान् ॥ ३७॥

ततः = तब
सिंहः = शेर
चखाद = खा गया
उग्रदंष्ट्रा क्षुण्ण = दाढ़ों से कुचल कर
शिरोधरान्= गर्दन को
असुरां = असुर की
तां = उस
तथा = इसी प्रकार
काली = काली
शिवदूती = शिवदूती
तथा = इसी प्रकार
अपरान्= दूसरों को

तब शेर उस असुर की गर्दन को दाढ़ों से कुचल कर खा गया , इसी प्र-कार काली , इसी प्रकार शिवदूती दूसरों को (खा गयीं) ।

कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः केचिन्नेशुर्महासुराः ।
ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः ॥ ३८॥

कौमारी = कौमारी की
शक्ति = शक्ति से
निर्भिन्नाः = विदीर्ण हो
केचित् = कुछ
नेशुः=नष्ट हो गए
महासुराः= महासुर
ब्रह्माणी= ब्रह्माणी के

मन्त्रपूतेन = मन्त्र पूत
तोयेन = जल से
अन्ये = दूसरे
निराकृताः = दूर हटा दिए गए , खंडित कर दिए गए

कुछ महासुर कौमारी की शक्ति से विदीर्ण हो नष्ट हो गए , दूसरे ब्रह्माणी के मन्त्र पूत जल से दूर हटा दिए गए ।

माहेश्वरीत्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे ।
वाराहीतुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृता भुवि ॥ ३९॥

माहेश्वरी= माहेश्वरी के
त्रिशूलेन = त्रिशूल से
भिन्नाः = छिद कर
पेतु:= गिर गए
तथा= इसी प्रकार
अपरे = दूसरे
वाराही तुण्ड घातेन= वाराही के तुण्ड के प्रहार से
केचित् = कितनों का
चूर्णीकृता = कचूमर हो गया
भुवि = पृथ्वी पर

इसी प्रकार दूसरे माहेश्वरी के त्रिशूल से छिद कर गिर गए । कितनों का वाराही के तुण्ड के प्रहार से पृथ्वी पर कचूमर हो गया ।

खण्डं खण्डं च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः ।
वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथापरे ॥ ४०॥

खण्डं खण्डं = टुकड़े टुकड़े
च = और
चक्रेण = चक्र से
वैष्णव्या= वैष्णवी द्वारा
दानवाः = दानवों के
कृताः = कर दिए गए
वज्रेण = वज्र से
चैन्द्री = और ऐन्द्री के

हस्ताग्रविमुक्तेन = हाथ से छोड़े गए
तथा = इसी प्रकार
अपरे= दूसरों के

वैष्णवी द्वारा चक्र से दानवों के टुकड़े टुकड़े कर दिए गए और इसी प्रकार ऐन्द्री के हाथ से छोड़े गए व्रज से दूसरे (असुरों) के (टुकड़े टुकड़े कर दिए गए) ।

केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात् ।
भक्षिताश्चापरे कालीशिवदूतीमृगाधिपैः ॥ ४१॥

केचित् = कुछ
विनेशु:= नष्ट हो गए
असुराः = असुर
केचित् = कुछ
नष्टा = भाग गए
महाहवात् = महा युद्ध से
भक्षिता:= खा लिया
च = और
अपरे = दूसरों को
काली शिवदूती मृगाधिपैः = काली शिवदूती , सिंह ने

कुछ असुर नष्ट हो गए , कुछ महायुद्ध से भाग गए , और दूसरों को काली शिवदूती,(और) सिंह ने खा लिया ।

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९॥
दशमोऽध्यायः
ध्यानम्
ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्निनेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम्।

रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरुपां कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्।।

उत्तप्त हेम रुचिरां = तपाये सोने जैसी सुन्दर
रविचन्द्रवह्निनेत्रां = रवि, चन्द्र, आग के तीन नेत्रों वाली ,
धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम्= धनुष-बाण, अंकुश, पाश, शूल

रम्यैर्भुजैश्च = और सुन्दर हाथों में

दधतीं = धारण किये
शिवशक्तिरुपां = शिवशक्ति स्वरूपा
कामेश्वरीं = कामेश्वरी देवी का
हृदि = हृदय में
भजामि = चिंतन करता / करती हूँ

धृतेन्दुलेखाम्= अर्धचन्द्र को डरा करने वाली

तपाये सोने जैसी सुन्दर , रवि, चन्द्र, आग के तीन नेत्रों वाली, और सुन्दर हाथों में धनुष-बाण, अंकुश, पाश, शूल धारण किये, शिवशक्ति स्वरूपा , अर्धचन्द्र को धारण करने वाली कामेश्वरी देवी का हृदय में चिंतन करता / करती हूँ ।

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १॥

ऋषि बोले ।

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम् ।
हन्यमानं बलं चैव शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥ २॥

निशुम्भं = निशुम्भ को
निहतं = मरा हुआ
दृष्ट्वा = देख कर
भ्रातरं = भाई
प्राणसम्मितम् = प्राणों के समान
हन्यमानं = मारी जाती हुई
बलं = सेना को
चैव = और ऐसे ही
शुम्भः = शुम्भ
क्रुद्धः = क्रोधित
अब्रवीत्= बोला
वचः = वचन

प्राणों के सामान भाई निशुम्भ को मारा हुआ और ऐसे ही मारी जाती हुई सेना को देख कर शुम्भ क्रोधित वचन बोला ।

बलावलेपदुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह ।
अन्यासां बलमाश्रित्य युद्ध्यसे चातिमानिनी ॥ ३॥

बलावलेप = बल के घमंड में
दुष्टे = दुष्ट
त्वं = तुम
मा = मत , नहीं
दुर्गे =दुर्गे
गर्वम् = गर्व
आवह = करो ,
अन्यासां = दूसरों के
बलमाश्रित्य = बल पर आश्रित
युद्ध्यसे = युद्ध करती हो
च= और
या= जो
अतिमानिनी= अत्यंत अभिमानी

बल के घमंड में हे दुष्ट दुर्गा अभिमान मत करो । और जो तुम अत्यंत माननी हो , दूसरों के बल पर आशीरत हो कर युद्ध करती हो ।

देव्युवाच ॥ ४॥

देवी बोलीं ।

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा ।
पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥ ५॥

एकैवाहं = एक एव अहम्= एक मैं ही हूँ
जगत्य = जगति = संसार में
अत्र = यहां
द्वितीया = दूसरा
का = कौन
मम अपरा = मेरे इलावा
पश्य- देखो
एता: = ये
दुष्ट = हे दुष्ट
मय्येव = मयि एव = मुझमे ही
विशन्त्यो = प्रवेश कर रही हैं
मद्विभूतयः= मत् विभूतयः मेरी शक्तियां , मेरी माया

हे डस्ट इस संसार में एक मैं ही हूँ , मेरे इलावा दूसरा कौन है देखों ये मेरी शक्तियां (हैं और) मुझमे ही प्रवेश कर रही हैं।
ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणीप्रमुखा लयम् ।
तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका ॥ ६॥

ततः = तब
समस्ता : - सारी
ता =वे
देव्यो = देवियाँ
ब्रह्माणीप्रमुखा = ब्रह्माणी को प्रमुख कर
लयम् =लीन
तस्या = उस
देव्या= देवी के
तनौ = शरीर में
जग्मु:= हो गयीं
एकैवासीत्तदाम्बिका = एक एव आसीत् अम्बिका = एक अम्बिका ही थी

तब वे सारी देवियाँ ब्रह्माणी को प्रमुख कर उस देवी के शरीर में लीं हो गयीं , एक अम्बिका ही रह गयी ।
देव्युवाच ॥ ७॥

देवी बोलीं ।

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता ।
तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥ ८॥

अहं = मैं
विभूत्या = माया से
बहुभि: = विभिन्न
इह = यहां
रूपै:= रूपों में
यदास्थिता = यत् आस्थिता= जो स्थित थी
तत्संहृतं - तत् संहृतम् = वे समेट लिए हैं
मया = मेरे द्वारा
एक एव = एक ही

तिष्ठामि = खड़ी हूँ
आजौ =युद्ध में
स्थिरो = स्थिर
भव= हो जाओं

मैं यहां माया से विभिन्न रूपों में जो स्थित थी वे मेरे द्वारा समेत लिए गए हैं , युद्ध में मैं एक ही खड़ी हूँ , तुम स्थिर हो जाओ ।

ऋषिरुवाच ॥ ९॥

ऋषि बोले ।

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः ।
पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् ॥ १०॥

ततः = तब
प्रववृते = प्रवृत हुए , छिड़ना , शुरू होना
युद्धं = = युद्ध
देव्याः = देवी
शुम्भस्य = शुम्भ का
च= और
उभयोः= दोनों
पश्यतां = देखते हुए
सर्वदेवानाम = सब देवों
असुराणां= असुरों
च = और
दारुणम्= घोर

तब सभी देवताओं और असुरों के देखते हुए देवी और शुम्भ दोनों का घोर युद्ध छिड़ गया ।

शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः ।
तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयङ्करम् ॥ ११॥

शरवर्षैः = तीरों की वर्षा
शितैः = तीखे
शस्त्रैः= शास्त्र

तथा =इसी प्रकार
च = और
अस्त्रैः = अस्त्र
एव ही = से ही
दारुणैः =भयंकर
तयोः= उन दोनों का
युद्धम् = युद्ध
अभूत् = हुआ
भूयः = फिर से
सर्वलोकभयङ्करम् = सारे संसार को भयभीत करने वाला

तीखे तीरों की वर्षा और इसी प्रकार ही शास्त्र और अस्त्रों से उन दोनों का सारे संसार को भयभीत करने वाला युद्ध हुआ ।

दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका ।
बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥ १२॥

दिव्यान्यस्त्राणि= दिव्यानि अस्त्राणि = दिव्य अस्त्र
शतशो सैंकड़ों
मुमुचे = छोड़े
यानि= जो
अथ = तब
अम्बिका = अम्बिका ने
बभञ्ज = तोड़ दिया
तानि = उन को
दैत्येन्द्रः= दैत्य राज
तत = तब
प्रतीघातकर्तृभिः = निवारक अस्त्रों से

तब अम्बिका ने जो सैंकड़ों दिव्य अस्त्र छोड़े उनको तब दैत्यराज ने निवारक अस्त्रों से तोड़ दिया ।

मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी ।
बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः ॥ १३॥

मुक्तानि = छोड़े
तेन = उस के

च=और
अस्त्राणि = अस्त्रों को
दिव्यानि = दिव्य
परमेश्वरी= परमेश्वरी ने
बभञ्ज = तोड़ दिया
लीलयैव=खेल है में ही
उग्रहुङ्कार= भयंकर हुंकार के
उच्चारणादिभिः= उच्चारण आदि से

और उसके छोड़े गए दिव्य अस्त्रों को देवी ने खेल खेल में भयंकर हुंकार के उच्चारण आदि से तोड़ दिया ।

ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः ।
सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥ १४॥

शरशतै:= सैंकड़ों तीरों से
देवीम्= देवी को
आच्छादयत् = ढक दिया
स: = उस
असुरः= असुर ने
सा= उस
अपि = भी
तत्= तब
कुपिता = क्रोधित
देवी = देवी ने
धनु:= धनुष को
चिच्छेद = काट दिया
च = और
इषुभिः= तीरों से

तब उस असुर ने देवी को सैंकड़ों तीरों से ढक दिया और तब उस क्रोधत देवी ने भी तीरों से उसके धनुष को काट दिया ।

छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे ।
चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् ॥ १५॥

छिन्ने = टूटने पर

धनुषि = धनुष के
दैत्येन्द्रः= दैत्य राज ने
तथा = इस प्रकार
शक्तिम् = शक्ति
अथ= तब
आददे = उठाई
चिच्छेद = काट दिया
देवी = देवी ने
चक्रेण = चक्र से
ताम्= उस के
अपि =भी
अस्य = इसे
करे = हाथ में
स्थिताम् = स्थित

इस प्रकार धनुष टूटने पर दैत्यराज ने तब शक्ति उठाई । देवी ने चक्र से उसके हाथ में स्थित इसे भी काट दिया ।

ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत् ।
अभ्यधावततां देवीं दैत्यानामधिपेश्वरः ॥ १६॥

ततः = तब
खड्गम्= तलवार
उपादाय= ले कर
शतचन्द्रं = सौ चंद्रमा वाली
च = और
भानुमत् = चमकती
अभ्यधावत = ओर दौड़ा
तां = और
देवीं =देवी की
दैत्यानाम् = दैत्यों का
अधिपेश्वरः = स्वामी

और तब दैत्यों का स्वामी सौ चन्द्रमा वाली चमकती तलवार ले कर देवी की तरफ दौड़ा ।

तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका ।
धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् ॥ १७॥

तस्य= उसके
अपतत= आते
एव= ही
आशु = जल्दी से
खड्गं= तलवार को
चिच्छेद = काट दिया
चण्डिका = चण्डिका ने
धनुर्मुक्तैः= धनुष से छोड़े
शितैः= तीखे
बाणैः= बाणों से
चर्म = ढाल को
च= और
अर्क कर = सूर्य की किरणों सी
अमलम्= उज्ज्वल

उसके आते ही चण्डिका ने जल्दी से धनुष से छोड़े तीखे बाणों से तलवार को और सूर्य की किरणों सी उज्ज्वल ढाल को काट दिया ।

हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः ।
जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः ॥ १८॥

हताश्वः = मारे गए घोड़े
स = वह
तदा = तब
दैत्यः = दैत्य
छिन्नधन्वा = टूटे धनुष
विसारथिः = सारथि रहित
जग्राह = हाथ में ले
मुद्गरं = मुद्गर
घोरम =भयंकर
अम्बिका = अम्बिका को
निधनः = मारने के लिए

उद्यतः= तैयार हुआ तब मारे गए घोड़े , टूटे धनुष , सारथि रहित वह दै-

त्य भयंकर मुद्गर हाथ मे ले अम्बिका को मारने के लिए तैयार हुआ ।

चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः ।
तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥ १९॥

चिच्छेद= काट दिया
अपतत= आती हुई
तस्य = उसकी
मुद्गरं = मुद्गर को
निशितैः = तीखे
शरैः = तीरों से
तथापि= तो भी
स = वह
अभ्यधावत् = तरफ भगा
ताम् = उसकी
मुष्टिम् = मुट्ठी
उद्यम्य = ऊपर उठा
वेगवान् = तेजी से

आती हुई उसकी मुदगर को तीखे तीरों से काट दिया तो भी वह मुट्ठी उठा कर तेजी से उस देवी की तरफ भागा ।

स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः ।
देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत् ॥ २०॥

स = उसने
मुष्टिं = मुट्ठी से
पातयामास = प्रहार किया
हृदये = छाती पर
दैत्यपुङ्गवः दैत्यराज ने
देव्या:= देवी के
तं = उस की
चापि च= और
अपि = भी
सा = उस
देवी = देवी ने
तलेन = थप्पड़ से
उरस्य = छाती को

अताडयत् = पीटा

उस दैत्यराज ने मुट्ठी से देवी की छाती पर प्रहार किया , देवी ने भी थ-प्पड़ से उसकी छाती को पीटा ।

तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले ।
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥ २१॥

तलप्रहार= थप्पड़ के प्रहार से
अभिहतो = पिटा
निपपात = गिर गया
महीतले = पृथ्वी पर
स = वह
दैत्यराजः = दैत्यराज
सहसा = अचानक
पुनः = दुबारा
एव = ही
तथा = उसी प्रकार
उत्थितः = खड़ा हो गया

थपाद के प्रहार से पिटा वह दैत्यराज पृथ्वी पर गिर गया , अचानक दु-बारा उसी प्रकार ही खड़ा हो गया ।

उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः ।
तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका ॥ २२॥

उत्पत्य = उछल कर
च = और
प्रगृह्य = पकड़ कर
उच्चैः = ज़ोर से
देवीं = देवी को
गगनम = आकाश में
अस्थितः = खड़ा हो गया
तत्रापि तत्र अपि = वहां भी
सा = उस
निराधारा = बिना आधार के
युयुधे = युद्ध किया

तेन = उससे
चण्डिका= चण्डिका ने

और उछाल कर ज़ोर से देवी को पकड़ कर आकाश में खड़ा हो गया । वहां भी उस चण्डिक ने बिना आधार के उससे युद्ध किया ।

नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम् ।
चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥ २३॥

नियुद्धं = बाहुयुद्ध
खे = आकाश में
तदा = तब
दैत्य = दैत्य
चण्डिका= चण्डिका का
च = और
परस्परम् = आपस में
चक्रतुः = हुआ
प्रथमं = पहली बार
सिद्धमुनि = सिद्ध मुनियों को
विस्मय कारकम् = हैरान करने वाला

तब दैत्य और चण्डिका का आपस में आकाश में सिद्ध मुनियों को हैरान करने वाला पहली बार बाहुयुद्ध हुआ ।

ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह ।
उत्पाट्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥ २४॥

ततो = तब
नियुद्धं = बाहु युद्ध
सुचिरं = देर तक
कृत्वा = कर के
तेन = उसके
अम्बिका = अम्बिका ने
सह = साथ
उत्पाट्य = उठा कर
भ्रामयामास = घुमाते हुए
चिक्षेप = फैंक दिया

धरणीतले= धरती पर

देर तक उसके साथ बाहु युद्ध करते हुए तब अम्बिका ने उसे उठा कर घुमाते हुए धरती पर फैंक दिया ।

स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ।
अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया ॥ २५॥

स= वह
क्षिप्तो = फेंका हुआ
धरणीं = धरती पर
प्राप्य = आ कर
मुष्टिम् = मुट्ठी को
उद्यम्य = उठा कर
वेगवान् = शीघ्रता से
अभ्यधावत = की तरफ भागा
दुष्टात्मा = दुष्ट आत्मा
चण्डिका = चण्डिका को
निधन = मारने की इच्छा से
इच्छया= इच्छा से

वह फेंका हुआ दुष्ट आत्मा पृथ्वी पर आ कर चण्डिका को मारने की इच्छा से जल्दी से मुट्ठी उठा कर उसकी ओर भागा ।

तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम् ।
जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥ २६॥

तम= उस की
आयान्तं = आते हुए
ततो = तब
देवी =देवी ने
सर्वदैत्य जनेश्वरम् = सब दैत्यों के स्वामी
जगत्यां = भूमि पर
पातयामास = गिरा दिया
भित्त्वा = भेद कर
शूलेन =शूल से
वक्षसि = छाती को

तब आते हुए उस सब दैत्यों के स्वामी की छाती को देवी ने शूल से भेद कर भूमि पर गिरा दिया ।

स गतासुः पपातोर्व्यां देवी शूलाग्रविक्षतः ।
चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥ २७॥

स = वह
गतासुः =प्राण रहित
पपात = गिर गया
उर्व्यां = पृथ्वी पर
देवी = देवी के
शूलाग्र विक्षतः = शूल की नोक से घायल
चालयन् = कंपाता हुआ
सकलां = सारी
पृथ्वीं = धरती को
साब्धिद्वीपां = समुन्द्र , द्वीपों
सपर्वताम् = पर्वतों के साथ

देवी के शूल की नोक से घायल वह प्राणरहित हो साड़ी धरती को समुन्द्र , द्वीपों, पर्वतों के साथ कंपाता हुआ पृथ्वी पर गिर गया ।

ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि ।
जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः ॥ २८॥

ततः = तब
प्रसन्नम् = प्रसन्न
अखिलं = सब
हते = मारे जाने पर
तस्मिन् = उस
दुरात्मनि = दुष्ट के
जगत् = जगत
स्वस्थ्यम् = स्वस्थ
अतीव= बहुत ज्यादा
आप = पानी
निर्मलं = स्वच्छ

च = और
अभवत् = हो गया
नभः = आकाश

उस दुष्ट के मारे जाने पर सारा संसार प्रसन्न , जल अत्यंत स्वस्थ और आकाश स्वच्छ हो गया ।

उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः ।
सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते ॥ २९॥

उत्पातमेघाः = उत्पात करते बादल
सोल्का = उल्कापात
ये = जो
प्रागासं= उल्का
प्राक्= पहले
असत्= थे
ते = वे
शमं = शांत
ययुः = हो गए
सरितो = नदिया
मार्ग = मार्ग से
वाहिन्य: =बहने लगी
तथा = इस प्रकार
असत् = थी
तत्र = वहाँ
पातिते = मारे जाने पर

इस प्रकार वहाँ (उस दैत्य) के मारे जाने पर उत्पात करते बादल, उल्का-पात जो पहले थे शांत हो गए, नदियां मार्ग से बहने लगीं ।

ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः ।
बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः ॥ ३०॥

ततो = तब
देवगणाः = देवगण
सर्वे = सभी
हर्षनिर्भरमानसाः = हर्ष युक्त मन वाले

बभूवुः = हो गए
निहते = मारे जाने पर
तस्मिन् = उस के
गन्धर्वा = गन्धर्व
ललितं = मधुरता से
जगुः= गाने लगे

उसके मारे जाने पर सभी देवगण हर्ष युक्त मन वाले हो गए गन्धर्व मधु-रता से गाने लगे ।

अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः ।
ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥ ३१॥

अवादयत् = बजाने लगे
तथा = इसी प्रकार
एव = ही
अन्ये = दूसरे
ननृतुः= नाचने लगी
च = और
अप्सरोगणाः = अप्सराएं
ववुः = बहने लगी
पुण्या = पवित्र
तथा = इसी प्रकार
वाताः = वायु
सुप्रभः=अच्छी प्रभा वाले
अभूत्= हो गए

दिवाकर : = सूर्य

इसी प्रकार ही दूसरे बजाने लगे और अप्सराएं नाचने लगीं ।

पवित्र वायु बहने लगी, इसी प्रकार सूर्य अच्छी प्रभा वाले हो गए ।

जज्वलुश्चाग्नयः शान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः ॥ ३२॥

जज्वलुः= जलने लगी
च = और

अग्नयः = अग्नि
शान्ताः = शांति से
शान्ता = शांत हो गया
दिग्जनितस्वनाः = दिशाओं से उत्पन्न शोर

अग्नि शान्ति से जलने अग्नि और दिशाओं में उत्पन्न शोर शांत हो गया ।

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे
देवीमाहात्म्ये शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १०॥
एकादशोऽध्यायः
ॐ बालरविद्युतिमिन्दुकिरिटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम्।

स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम्।।

बाल रवि द्युतिम् = उदित होते सूर्य की आभा वाली
इन्दुकिरिटां = चन्द्रमा के मुकुट वाली
तुङ्गकुचा = उच्च स्तनों वाली
नयनत्रययुक्ताम्= तीन नेत्रों से युक्त

स्मेरमुखीं = मुस्कुराते मुख वाली
वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां = हाथ में वरद, अंकुश, पाश, अभयमुद्रा वाली

प्रभजे भुवनेशीम् = भुवनेश्वरी देवी का ध्यान करता/करती हूँ

उदित होते सूर्य की आभा वाली , चन्द्रमा के मुकुट वाली ,उच्च स्तनों वाली , तीन नेत्रों से युक्त , मुस्कुराते मुख वाली, हाथ में वरद, अंकुश, पाश, अभयमुद्रा वाली भुवनेश्वरी देवी का ध्यान करता/करती हूँ ।

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १॥

ऋषि बोला ।

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे
सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम् ।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्

विकाशिवक्त्राब्जविकाशिताशाः ॥ २॥

देव्या = देवी द्वारा
हते = मारे जाने पर
तत्र = वहां
महासुरेन्द्रे =असुरराज के
सेन्द्राः = इंद्र के साथ
सुरा = देवता
वह्निपुरोगमः = अग्नि को आगे कर के
आस्ताम् = वे
कात्यायनीं = कात्यायनी की
तुष्टवु = स्तुति करने लगे
इष्टलाभाद् =अभीष्ट प्राप्ति होने से
विकाशि = खिलते हुए , चमकते हुए
वक्त्रा= मुख
अब्ज = कमल
विकाशित = चमकती थीं
आशाः = दिशाएँ

वहां देवी द्वारा असुरराज के मारे जाने पर इंद्र के साथ वे देवता अग्नि को आगे कर के कात्यायनी की स्तुति करने लगे । अभीष्ट प्राप्ति होने से चमकते हुए मुख कमल से दिशाएँ चमक रहीं थी ।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥ ३॥

देवि = देवी
प्रपन्ना = शरणागत की
आर्तिहरे = पीड़ा को हरने वाली
प्रसीद प्रसीद = प्रसन्न हो जाओ
मातः जगतो अखिलस्य= सारे संसार की माँ
प्रसीद =प्रसन्न हो जाओ
विश्वेश्वरि =विश्वेश्वरि
पाहि= रक्षा करो
विश्वं= विश्व की
त्वम= तुम

ईश्वरी = अधीश्वरी हो
देवि = हे देवी
चराचरस्य= चर अचर की

शरणागत की पीड़ा हरने वाली हे देवी प्रसन्न हो जाओ , प्रसन्न हो जाओ , हे विश्वेश्वरि विश्व की रक्षा करो , हे देवी तुम चर अचर की अधीश्वरी हो ।

आधारभूता जगतस्त्वमेका
महीस्वरूपेण यतः स्थितासि ।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैत-
दाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये ॥ ४॥

आधारभूता = आधार रूप हो
जगत:= जगत की
तवं एका = तुम एक ही
महीस्वरूपेण = पृथ्वी के रूपमे
यतः = जो
स्थितासि = स्थित हो
अपां = जल के
स्वरूपस्थितया = रूप में स्थित
त्वयैत- त्वया एतत = तुम इसे
आप्यायते = तृप्त , पुष्ट
कृत्स्नम् = करती हो
अलङ्घ्य वीर्ये = पराक्रम अलंघनीय है

तुम एकमात्र ही संसार का आधार हो जो पृथ्वी के रूप में स्थित हो , जल के रूप में स्थित हो तुम इसे तृप्त करती हो , (तुम्हारा) पराक्रम अलंघनीय है ।

त्वं वैष्णवीशक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥ ५॥

त्वं= तुम
वैष्णवीशक्ति: अनन्तवीर्या= अत्यंत बलशाली वैष्णवी शक्ति हो
विश्वस्य = संसार की
बीजं = बीज (उत्पत्ति का कारण)

परमा = परम
असि = हो
माया = माया
सम्मोहितं = सम्मोहित किया है
देवि = देवी
समस्तम = सब को , सारे
एतत् = इस (जगत को)
त्वं = तुम
वै = वास्तव में
प्रसन्ना = प्रसन्न होने पर
भुवि = पृथ्वी पर
मुक्तिहेतुः = मुक्ति का कारण हो

तुम अत्यंत बलशाली वैष्णवी शक्ति हो , तुम संसार की बीज (उत्पत्ति का कारण) पर माया हो , तुमने इस सारे जगत को सम्मोहित किया है , वास्तव में तुम ही प्रसन्न होने पर पृथ्वी पर मुक्ति का कारण हो ।

विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरापरोक्तिः ॥ ६॥

विद्याः = विद्याएं
समस्ता:= सारी
तव = तुम्हारा
देवि = देवी
भेदाः= रूप हैं
स्त्रियः = स्त्रियां
समस्ताः = सभी
सकला = सारा
जगत्सु = संसार में
त्वयैकया त्वया एकया= एकमात्र तुम्ही से
पूरितम = व्यापत है
अम्बया = हे अम्बा
एतत् = ये
का = कौन
ते = तुम्हारी
स्तुतिः = स्तुति कर सकता है

स्तव्यपरा= स्तवन से परे
परोक्तिः= वाणी से परे

सारे संसार में सभी विद्याएं, सभी स्त्रियां तुम्हारे ही रूप हैं । हे अम्बा ये संसार एकमात्र तुम्ही से व्याप्त है , तुम्हारी स्तुति कौन कर सकता है , तुम स्तवन से परे (और) वाणी से परे हो ।

सर्वभूता यदा देवी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥ ७॥

सर्वभूता = सर्वस्वरूपा
यदा = जब
देवी = देवी
स्वर्ग मुक्ति प्रदायिनी = स्वर्ग और मोक्ष देने वाली हो
त्वं = तुम्हारी
स्तुता = स्तुति की जाती है
स्तुतये = स्तुति के लिए
का = क्या
वा =तब
भवन्तु = होगी
परमोक्तयः= इससे उत्तम उक्तियाँ

हे देवी जब स्वर्ग और मोक्ष देने वाली हो, सर्वस्वरूपा हो (कह कर) तुम्हारी स्तुति की जाती है , तब स्तुति के लिए इससे उत्तम उक्तियाँ क्या होगी ।

सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते ।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ८॥

सर्वस्य = सब के
बुद्धिरूपेण = बुद्धि के रूप में
जनस्य = लोगों के
हृदि = हृदय में
संस्थिते = स्थित हो
स्वर्गापवर्गदे = स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करने वाली
देवि नारायणि नमोऽस्तु ते = नारायणी देवी आप को नमस्कार है ।

सब लोगों के हृदय में बुद्धि रूप में हो , स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करने वाली नारायणी देवी आप को नमस्कार है ।

कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि ।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ९॥

कलाकाष्ठादिरूपेण = कला काष्ठ(समय गणना) आदि के रूप में
परिणामप्रदायिनि = परिणाम(बदलाव) देने वाली
विश्वस्य = संसार का
उपरतौ = उपसंहार (प्रलय , समाप्ति) करने में
शक्ते = समर्थ
नारायणि नमोऽस्तु ते = नारायणी तुम्हें नमस्कार है

कला काष्ठ आदि के रूप में परिणाम देने वाली, संसार का उपसंहार (प्रलय , समाप्ति) करने में समर्थ नारायणी तुम्हें नमस्कार है ।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १०॥

सर्व मंगल मांगल्ये= सभी मंगलों में मंगलमयी
शिवे= कल्याणकारी
सर्व अर्थ साधिके = सभी मनोरथों को सिद्ध करने वाली
शरण्ये = शरणागत वत्सला,शरण ग्रहण करने योग्य
त्रयम्बके= तीन नेत्रों वाली
गौरी= शिवपत्नी
नारायणी= विष्णुपत्नी
नमः अस्तु ते= तुम्हे नमस्कार है

तुम्ही शिव पत्नी, तुम्ही नारायण पत्नी अर्थात भगवान के सभी स्वरूपों के साथ तुम्हीं जुडी हो, तुम्हे नमस्कार है.

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ ११॥

सृष्टिस्थितिविनाशानां = सृष्टि पालन और संहार की
शक्तिभूते = शक्ति भूता
सनातनि = सनातनी(शाश्वत) देवी

गुणाश्रये = गुणों(सत्व , रजस, तमस) का आधार
गुणमये = सर्व गुणमयी
नारायणि = नारायणी
नमोऽस्तु ते = तुम्हे नमस्कार है

सृष्टि पालन और संहार की शक्तिभूता सनातनी(शाश्वत) देवी, गुणों(सत्व , रजस, तमस) का आधार, सर्व गुणमयी नारायणी तुम्हे नमस्कार है ।

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १२॥

शरणागत = शरण में आये
दीन = दुखी
आर्त= पीड़ित
परित्राण = रक्षा में
परायणे= संलग्न
सर्वस्य= सब की
आर्ति= पीड़ा को
हरे = हरने वाली

शरण में आये, दुखियों और पीड़ितों की रक्षा में संलग्न, सब की पीड़ा को हरने वाली देवी नारायणी तुम्हें नमस्कार है ।

हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि ।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १३॥

हंसयुक्तविमानस्थे = हंस जुते विमान पर बैठी
ब्रह्माणीरूपधारिणि= ब्रह्माणी का रूप धारण कर
कौशाम्भःक्षरिके= कुश मिश्रित जल छिड़कने वाली
देवि नारायणि नमोऽस्तु ते =नारायणी देवी तुम्हे नमस्कार है ।

ब्रह्माणी का रूप धारण कर हंस जुते विमान पर बैठी कुश मिश्रित जल छिड़कने वाली नारायणी देवी तुम्हे नमस्कार है ।

त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि ।
माहेश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तुते ॥ १४॥

त्रिशूल चन्द्र अहि धरे = त्रिशूल , चन्द्र , सांप धारण करने वाली
महावृषभवाहिनि = महा वृष के वाहन वाली
माहेश्वरीस्वरूपेण = माहेश्वरी के रूप में
नारायणि नमोऽस्तुते= नारायणी तुम्हे नमस्कार है

माहेश्वरी के रूप में त्रिशूल , चन्द्र , सांप धारण करने वाली, महा वृष के वाहन वाली नारायणी तुम्हे नमस्कार है ।

मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे ।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १५॥

मयूरकुक्कुटवृते = मोरों और मुर्गों से घिरी
महाशक्तिधरे = महा शक्ति धारण करने वाली
अनघे = निष्पाप
कौमारीरूपसंस्थाने = कौमारी रूप धारण करने वाली
नारायणि नमोऽस्तु ते = नारायणी तुम्हे नमस्कार है

मोरों और मुर्गों से घिरी , महा शक्ति धारण करने वाली , निष्पाप , कौ-मारी रूप धारण करने वाली नारायणी तुम्हे नमस्कार है ।

शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे ।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १६॥

शङ्ख चक्र गदा शार्ङ्ग = शङ्ख चक्र गदा शार्ङ्ग धनुष आदि
गृहीत परमायुधे = उत्तम हथियारों को धारण करने वाली
प्रसीद = प्रसन्न हो जाओ
वैष्णवीरूपे = वैष्णवी के रूप में
नारायणि नमोऽस्तु ते= नारायणी तुम्हे नमस्कार है

वैष्णवी के रूप में शङ्ख चक्र गदा शार्ङ्ग धनुष आदि उत्तम हथियारों को धारण करने वाली नारायणी तुम्हे नमस्कार है ।

गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे ।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १७॥

गृहीत उग्रमहाचक्रे = भयानक महाचक्र लिए
दंष्ट्र उद्धृत वसुन्धरे = दाढ़ों पर पृथ्वी को धारण करने वाली
वराहरूपिणि = वाराही के रूप में
शिवे = कल्याणकारी
नारायणि नमोऽस्तु ते = नारायणी तुम्हे नमस्कार है

वाराही के रूप में भयानक महाचक्र लिए, दाढ़ों पर पृथ्वी को धारण करने वाली कल्याणकारी नारायणी तुम्हे नमस्कार है ।

नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे ।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १८॥

नृसिंहरूपेण उग्रेण = भयंकर नृसिंह के रूप में
हन्तुं = मारने का
दैत्यान् = दैत्यों को
कृत उद्यमे= उद्योग करने वाली
त्रैलोक्य त्राण सहिते = त्रिलोक की रक्षा में लीन
नारायणि नमोऽस्तु ते = नारायणी तुम्हें नमस्कार है

भयंकर नृसिंह के रूप में दैत्यों को मारने का उद्योग करने वाली त्रिलोक की रक्षा में लीन नारायणी तुम्हें नमस्कार है ।

किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले ।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ १९॥

किरीटिनि = मुकुट धारण करने वाली
महावज्रे = महाव्रज लिए
सहस्रनयनोज्ज्वले= हजारों आँखों से उज्ज्ञवल
वृत्रप्राणहरे= वृत्रसुर के प्राण हरने वाली
च = और
एन्द्रि = इन्द्रशक्ति रूपा
नारायणि नमोऽस्तु ते = नारायणी तुम्हें नमस्कार है

मुकुट धारण करने वाली , महाव्रज धारण करने वाली , हजारों आँखों से उज्ज्ञवल और वृत्रसुर के प्राण हरने वाली इन्द्रशक्ति रूपा नारायणी तुम्हें नमस्कार है

।

शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले ।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २०॥

शिवदूतीस्वरूपेण = शिवदूती के रूप में
हतदैत्यमहाबले = दैत्यों की महान सेना को मारने वाली
घोररूपे = भयंकर रूप वाली
महारावे = महान गर्जना वाली
नारायणि नमोऽस्तु ते = नारायणी तुम्हें नमस्कार है

शिवदूती के रूप में दैत्यों की महान सेना को मारने वाली, भयंकर रूप वाली ,महान गर्जना वाली नारायणी तुम्हें नमस्कार है ।

दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे ।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २१॥

दंष्ट्राकरालवदने = दाढ़ों से भयानक मुख वाली
शिरोमालाविभूषणे = सिरों की माला से सुशोभित
चामुण्डे = चामुण्डा
मुण्डमथने = मुंड मर्दनी
नारायणि नमोऽस्तु ते= नारायणी तुम्हें नमस्कार है

दाढ़ों से भयानक मुख वाली , सिरों की माला से सुशोभित मुंड मर्दनी चा-मुण्डा नारायणी तुम्हें नमस्कार है ।

लक्ष्मि लज्ञे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि स्वधे ध्रुवे ।
महारात्रि महामाये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ २२॥

लक्ष्मि = लक्ष्मी
लज्ञे = लज्ञा
महाविद्ये = महाविद्या
श्रद्धे = श्रद्धा
पुष्टि = पुष्टि
स्वधे = स्वधा
ध्रुवे= ध्रुवा

महारात्रि = महारात्रि
महामाये = महामाया रूपा
नारायणि नमोऽस्तु ते = नारायणी तुम्हे नमस्कार है

लक्ष्मी , लज्ञा , महाविद्या , श्रद्धा , पुष्टि , स्वधा , ध्रुव , महारात्रि , महा-
माया रूपा नारायणी तुम्हें नमस्कार है ।

मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि ।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तुते ॥ २३॥

मेधे = मेधा
सरस्वति = सरस्वती
वरे = वारा (श्रेष्ठ)
भूति = भूति (ऐश्वर्यरूपा)
बाभ्रवि = पार्वती
तामसि = तामसी (काली)
नियते = नियता (सन्यम्परायणा)
त्वं = तुम
प्रसीदे=प्रसन्न हो जाओ
ईशे = ईश्वरी

नारायणि नमोऽस्तुते नारायणी तुम्हे नमस्कार है

मेधा, सरस्वती ,वरा (श्रेष्ठ), भूति (ऐश्वर्यरूपा) , बाभ्रवि (पार्वती) , ता-
मसी (काली), नियता (सन्यम्परायणा), तुम प्रसन्न हो जाओ हे ईश्वरी नारायणी
तुम्हें नमस्कार है ।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥ २४॥

सर्वस्वरूपे = सर्वस्वरूपा
सर्वेशे = सर्वेश्वरी
सर्वशक्तिसमन्विते = सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न
भयेभ्य: त्राहि = सब भयों से रक्षा कीजिये
नो = हमारी
देवि = देवी
दुर्गे देवि = हे   दुर्गे देवी
नमः अस्तु ते = तुम्हे नमस्कार है

सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न देवी सब भ-
यों से हमारी रक्षा कीजिये। हे दुर्गे देवी तुम्हें नमस्कार है।

एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥ २५॥

एतत् = ये
ते = तुम्हारा
वदनं = मुख
सौम्यं = सौम्य
लोचन त्रय भूषितम्= तीन नयनों से सुसज्जित
पातु = रक्षा करे
नः = हमारी
सर्वभूतेभ्यः = सब भयों से
कात्यायनि नमोऽस्तु ते= कात्यायनि तुम्हे नमस्कार है

तीन नयनों से सुसज्जित ये तुम्हारा सौम्य मुख सब भयों से हमारी रक्षा करे । हे कात्यायनि तुम्हें नमस्कार है ।

ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् ।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥ २६॥

करालम् = विकराल
अत्युग्रम्= अत्यंत उग्र
अशेष असुरसूदनम्= सभी असुरों क संहार करने वाला
त्रिशूलं = त्रिशूल
पातु= रक्षा करे
नो = हमारी
भीते= भय से
भद्रकालि = भद्रकाली
नमोऽस्तु ते =तुम्हें नमस्कार है

हे भद्रकाली ,जवालों से विकराल , अत्यंत उग्र ,सभी असुरों क संहार क-
रने वाला तुम्हारा त्रिशूल भय से हमारी रक्षा करे , तुम्हें नमस्कार है ।

हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् ।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव ॥ २७॥

हिनस्ति =नष्ट करता है
दैत्य तेजांसि = दैत्यों के तेज को
स्वनेन आपूर्य = आवाज़ से व्याप्त करता है
या = जो
जगत् = संसार को
सा = वह
घण्टा = घंटा
पातु = रक्षा करे
नो = हमारी
देवि = हे देवी
पापेभ्यो = पापों से
नः = हमारी
सुतानिव = पुत्रों के समान

हे देवी जो घंटा दैत्यों के तेज को नष्ट करता है , संसार को आवाज़ से व्याप्त करता है वह हमारी पुत्रों के समान पापों से रक्षा करे ।

असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः ।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥ २८॥

असुरासृग्वसापङ्क चर्चित:= असुरों के खून और चर्बी से चर्चित
ते =वह
करोज्ज्वलः = हाथों में चमकती
शुभाय = शुभ
खड्गो = तलवार
भवतु = हो
चण्डिके त्वां नता वयम्= हे चण्डिका हम आपको नमन करते हैं

असुरों के खून और चर्बी से चर्चित, हाथों में चमकती वह तलवार (हमारे लिए) शुभ हो । हे चण्डिका हम आपको नमन करते हैं ।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।

त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ २९॥

रोगान्= रोगों को
अशेषान् = सब
अपहंसि = नष्ट कर देती हो
तुष्टा= प्रसन्न होने पर
रुष्टा = कुपित होने पर
तु = और
कामान् = कामनाओं का
सकलान्= सभी
अभीष्टान् = इच्छित
त्वाम् = तुम्हारी
आश्रितानां = शरण में आये
न विपत् = विपत्ति नही आती
नराणां = नरों को
त्वाम् = तुम्हारे
आश्रिता: = आश्रित
हि=निश्चित रूप से
आश्रयतां = शरण
प्रयान्ति = प्रदान करते हैं

प्रसन्न होने पर सब रोगों को और कुपित होने पर सब कामनाओं को नष्ट कर देती हो , तुम्हारी शरण में आये नारों को विपत्ति नहीं आती , निश्चित रूप से तुम्हारे आश्रित (दूसरों को) शरण प्रदान करते हैं ।

एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य
धर्मद्विषां देवि महासुराणाम् ।
रूपैरनेकैर्बहुधात्ममूर्तिं
कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या ॥ ३०॥

एतत् कृतं = जो किया है
यत्= जो
कदनं = वध , विनाश
त्वया= तुम्हारे द्वारा
अद्य = आज
धर्मद्विषां = धर्म विरोधी

देवि = देवी
महासुराणाम् = महासुरों का
रूपैः= रूप
अनेकैः = कई
बहुधा= अलग प्रकार के
आत्ममूर्तिं= अपने स्वरूपको
कृत्वा= करके
अम्बिके = अम्बिका
तत्= वह
प्रकरोति = करेगा
का= कौन
अन्या = दूसरा

देवी आज तुम्हारे द्वारा जो अपने स्वरुप के कई अलग प्रकार के रूप कर के धर्मविरोधी महासुरों का विनाश किया है , वह हे अम्बिके दूसरा कौन करेगा ।

विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपे-
ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या ।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे
विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥ ३१॥

विद्यासु = विद्याओं में
शास्त्रेषु = शास्त्रों में
विवेकदीपेषु = दर्शन शास्त्र
आद्येषु = आदि , प्रथम
वाक्येषु = वाक्यों में
च = और
का = कौन है
त्वदन्या = तुम्हारे इलावा
ममत्वगर्ते= ममता के गर्त में
अतिमहान्धकारे= अत्यंत अंधकारमय
विभ्रामयति = घुमाती हो
एतत = इस
अतीव =अत्यंत
विश्वम् = विश्व को

विद्याओं में ,शास्त्रों में , दर्शन शास्त्र में और आदि वाक्यों (वेदों) में तु-म्हारे इलावा और कौन है , ममता के अत्यंत अंधकारमय गर्त में इस विश्व को बहुत ज्यादा घुमाती हो , (वो भी तुम ही हो) ।

रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र ।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ॥ ३२॥

रक्षांसि = राक्षस
यत्र = जहां
उग्रविषा:= भयंकर विष वाले
च = और
नागा= सांप
यत्र= जहां
अरयो = शत्रु
दस्युबलानि = लुटेरों की सेना
यत्र = जहां
दावानलो = दावानल (जंगल की आग)
यत्र = जहां
तथा = इसी प्रकार
अब्धिमध्ये = समुन्दर के बीच में
तत्र = वहां
स्थिता = रह कर
त्वं = तुम
परिपासि = रक्षा करती हो
विश्वम्= विश्व की

जहां राक्षस हों , जहां भयंकर विष वाले सांप हों , जहां शत्रु हों , लुटेरों की सेना हो , जहां दावानल हो , इसी प्रकार समुन्दर के बीच में स्थित रह कर तुम विश्व की रक्षा करती हो ।

विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् ।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ॥ ३३॥

विश्वेश्वरि= विश्व की अधीश्वरी

त्वं = तुम
परिपासि = रक्षा करती हो
विश्वं= विश्व की
विश्वात्मिका = विश्व की आत्मा हो
धारयसि धारण करती है
विश्वं = विश्व को
इह = इस
विश्वेश वन्द्या = विश्वनाथ की वन्दनीय हो
भवती = आप
भवन्ति= होते हैं
विश्वाश्रया = विश्व को आश्रय देने वाले
ये = जो
त्वयि = तुम्हारी
भक्तिनम्राः= भक्ति से नतमस्तक है

विश्व की अधीश्वरी तुम विश्व की रक्षा करती हो ,विशव को धारण करने वाली विश्व की आत्मा हो , आप विश्वनाथ की वन्दनीय हो , जो तुम्हारी भक्ति से नतमस्तक हैं वे विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं ।

देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीते-
निर्त्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः ।
पापानि सर्वजगतां प्रशमं नयाशु
उत्पातपाकजनितांश्च महोपसर्गान् ॥ ३४॥

देवि =हे देवी
प्रसीद = प्रसन्न हो जाओ
परिपालय = रक्षा करो
नः= हमारी
अरिभीते- शत्रुओं के भय से
नित्यं = हमेशा
यथा= जिस प्रकार
असुरवधात् = असुरों के वध से
अधुना एव = अभी
सद्यः = आज
पापानि = पापों को
सर्वजगतां = सारे जगत के
प्रशमं नयः = नष्ट कर दो
आशु = शीघ्र ही

उत्पातपाकजनितान् = उत्पात और पापों से उत्पन्न
महोपसर्गान् = बड़े उपद्रवों को

हे देवी प्रसन्न हो जाओ, शत्रुओं के भय से हमारी रक्षा करो जिस प्रकार असुरों का वध कर आज अभी की है । सारे जगत के पापों और उत्पात और पापों से उत्पन्न बड़े उपद्रवों को शीघ्र ही नष्ट कर दो ।

प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव ॥ ३५॥

प्रणतानां = प्रणाम करते हैं
प्रसीद = प्रसन्न हो जाओ
त्वं = तुम
देवि = हे देवी
विश्व आर्तिहारिणि = विश्व की पीड़ा हरने वाली
त्रैलोक्यवासिनाम् = तीनों लोकों के वासियों की
ईड्ये = पूजनीय
लोकानां = लोगों को
वरदा = वरदान देने वाली
भव= हो जाओ

विश्व की पीड़ा हरने वाली हे देवी हम प्रणाम करते हैं तुम प्रसन्न हो जाओ , तीनों लोकों के वासियों की पूजनीय लोगों को वरदान देने वाली हो जाओ ।

देव्युवाच ॥ ३६॥

देवी बोलीं ।

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारकम् ॥ ३७॥

वरदाहं = मैं वर देती हूँ
सुरगणा - हे सुरगण
वरं = वर
यत् मनस इच्छथ = जो मन चाहे
तं = उसे

वृणुध्वं = मांगो
प्रयच्छामि = प्रदान करुँगी
जगताम् = जगत के
उपकारकम्= उपकार के लिए

हे सुरगण मैं वार देती हूँ , जो मन चाहे मांगों , जगत के उपकार के लिए उस वर को प्रदान करुँगी ।

देवा ऊचुः ॥ ३८॥

देवता बोले ।

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥ ३९॥

सर्वा बाधा प्रशमनं = सब बाधाओं का शमन करो
त्रैलोक्यस्य = तीनों लोकों की
अखिलेश्वरि= हे अखिलेश्वरी
एवमेव = इसी प्रकार ही
त्वया = तुम
कार्यम्= करती रहो
अस्मत्= हमारे
वैरि विनाशनम् = शत्रुओं का विनाश

हे अखिलेश्वरी तीनों लोकों की सब बाधाओं का शमन करो इसी प्रकार ही त्वया हमारे शत्रुओं का विनाश करती रहो ।

देव्युवाच ॥ ४०॥

देवी बोलीं ।

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे ।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥ ४१॥

वैवस्वते अन्तरे = वैवस्वत मन्वन्तर
प्राप्ते = आने पर
अष्टाविंशतिमे युगे = अठाईसवाँ युग

शुम्भो निशुम्भ = शुम्भो निशुम्भ
च= और
एव अन्ये = जैसे दूसरे
उत्पत्स्येते = उत्पन्न होंगे
महासुरौ = महासुर

वैवस्वत मन्वन्तर में अठाईसवाँ युग आने पर शुम्भ और निशुम्भ जैसे दूसरे महासुर उत्पन्न होंगे ।

नन्दगोपगृहे जाता यशोदागर्भसम्भवा ।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ॥ ४२॥

नन्दगोपगृहे = नन्दगोपके घर में
जाता = उत्पन्न हो
यशोदागर्भसम्भवा= यशोदा के गर्भ से
ततः= तब
तौ= उन दोनों का
नाशयिष्यामि = नाश करुँगी
विन्ध्याचलनिवासिनी= विन्ध्याचलनिवासिनी के रूप में

तब नन्दगोपके घर में यशोदा के गर्भ से उत्पन्न हो विन्ध्याचलनिवासिनी के रूप में उन दोनों का नाश करुँगी ।

पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेण पृथिवीतले ।
अवतीर्य हनिष्यामि वैप्रचित्तांस्तु दानवान् ॥ ४३॥

पुनः= दुबारा
अपि = भी
अतिरौद्रेण = अत्यंत भयंकर
रूपेण = रूप में
पृथिवीतले =भूमि पर
अवतीर्य = अवतरित हो
हनिष्यामि = वध करुँगी
वैप्रचित्तां = वैप्रचित्ता
दानवान् = दानवों का

दुबारा भी अत्यंत भयंकर रूप में अवतरित हो वैप्रचित्ता दानवों का वध करूँगी ।

भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान् वैप्रचित्तान् महासुरान् ।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः ॥ ४४॥

भक्षयन्त्याः= खाने से
च = और
तान् उग्रान् = उन भयानक
वैप्रचित्तान् महासुरान्= वैप्रचित्त महासुरों को
रक्ता = लाल
दन्ता = दांत
भविष्यन्ति = हो जाएंगे
दाडिमीकुसुम उपमाः= अनार के फूल के सामान

और उन भयानक वैप्रचित्त महासुरों को खाने से अनार के फूल के सामान लाल दांत हो जाएंगे ।

ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः ।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् ॥ ४५॥

ततो = तब
मां = मेरी
देवताः = देवता
स्वर्गे = स्वर्ग में
मर्त्यलोके = मृत्युलोक में
च = और
मानवाः= मनुष्य
स्तुवन्तो = स्तुति करेंगे
व्याहरिष्यन्ति = कहते हुए
सततं = हमेशा
रक्तदन्तिकाम् = रक्तदन्तिका

तन स्वर्ग में देवता और मृत्युलोक में मनुष्य हमेशा रक्त दन्तिका कहते हुए मेरी स्तुति करेंगे ।

भूयश्च शतवार्षिक्यामनावृष्ट्यामनम्भसि ।

मुनिभिः संस्मृता भूमौ सम्भविष्याम्ययोनिजा ॥ ४६॥

भूयश्च = और दुबारा
शतवार्षिक्याम् = सौ वर्षों तक
अनावृष्ट्याम् = बारिश न होने से
अनम्भसि = पानी के अभाव में
मुनिभिः = मुनियों के
संस्मृता = स्तुति करने पर
भूमौ = भूमि पर
सम्भविष्यामि= प्रकट होउंगी
अयोनिजा = अयोनिजा रूप में

और दुबर सौ वर्षों तक बारिश न होने से पृथ्वी पर पानी के अभाव में मुनियों के स्तुति करने पर अयोनिजा रूप में प्रकट होउंगी ।

ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन् ।
कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ॥ ४७॥

ततः = तब
शतेन = सौ
नेत्राणां = नेत्रों से
निरीक्षिष्यामि= देखूंगी
अहम्= मैं
मुनीन् = मुनियों को
कीर्तयिष्यन्ति = कीर्तन करेंगे
मनुजाः = मनुष्य
शताक्षीम् इति= शताक्षी नाम से
मां = मेरी
ततः = तब

तब मैं सौ नेत्रों से मुनियों को देखूंगी , मनुष्य तब शताक्षी के नाम से मेरा कीर्तन करेंगे ।

ततोऽहमखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः ।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः ॥ ४८॥

अहम्= मैं
अखिलं = सारे
लोकम् = संसार का
आत्मदेह समुद्भवैः = अपनी देह पर उत्पन्न
भरिष्यामि = भरण पोषण करुँगी
सुराः = हे देवताओं
शाकै: = शाकों से
आवृष्टेः = बारिश न होने तक
प्राणधारकैः= प्राण दायक

हे देवताओं तब मैं बारिश न होने तक अपनी देह पर उत्पन्न प्राण दायक शाकों से सारे संसार का भरण पोषण करुँगी ।

शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यास्याम्यहं भुवि ।
तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥ ४९॥

शाकम्भरीति = शाकम्भरी नाम से
विख्यातिं = ख्याति
तदा = तब
यास्यामि = प्राप्त करुँगी
भुवि = पृथ्वी पर
तत्रैव = वहीँ
च = और
वधिष्यामि = वध करुँगी
दुर्गमाख्यं = दुर्गम कहे जाने वाले
महासुरम् = महासुर का

तब मैं पृथ्वी पर शाकम्भरी नाम से ख्याति प्राप्त करुँगी और वहीँ दुर्गम कहे जाने वाले महासुर का वध करुँगी ।

दुर्गादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ।
पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥ ५०॥

दुर्गादेवी इति = दुर्गा देवी इसप्रकार
विख्यातं = प्रसिद्द
तत मे = तब मेरा
नाम = नाम

भविष्यति = होगा
पुनश्च = और दुबारा
अहं = मैं
यदा = जब
भीमं = भीम
रूपं = रूप
कृत्वा = करके
हिमाचले = हिमाचल पर

तब मेरा नाम दुर्गादेवी इस प्रकार प्रसिद्ध होगा , और दुबारा जब माओं हिमाचल पर भीम रूप करके ...

रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात् ।
तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः ॥ ५१॥

रक्षांसि = राक्षसों को
भक्षयिष्यामि = खाऊँगी
मुनीनां = मुनियों की
त्राणकारणात् = रक्षा के लिए
तदा = तब
मां = मुझे
मुनयः मुनि
सर्वे = सब
तोष्यन्ति = स्तुति करेंगे
नम्रमूर्तयः= नतमस्तक हो

मुनियों की रक्षा के लिए आक्षसों को खाऊँगी तब सब मुनि नतमस्तक हो कर स्तुति करेंगे ।

भीमादेवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति ।
यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥ ५२॥

भीमादेवी इति = भीमा देवी इस प्रकार
विख्यातं = प्रसिद्द
तन्मे = तब मेरा
नाम = नाम
भविष्यति = होगा

यदा = जब
अरुणाख्य= अरुण नाम का (असुर)
त्रैलोक्ये = तीनों लोकों में
महाबाधां = महा उपद्रव
करिष्यति = करेगा

तब मेरा नाम भीमा देवी इस प्रकार प्रसिद्द होगा । जब अरुण नाम का (असुर) तीनों लोकों में महा उपद्रव करेगा...

तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्-पदम् ।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम् ॥ ५३॥

तदा अहं = तब मैं
भ्रामरं = भ्रामर
रूपं= रूप
कृत्वा= करके
असङ्ख्येय = असंख्य
षट्पदम् = छह पैरों वाले
त्रैलोक्यस्य= तीनों लोकों के
हितार्थाय = हित के लिए
वधिष्यामि = वध करुँगी
महासुरम् = महासुर का

तब मैं छह पैरों वाले असंख्य भ्रामरों का रूप कर के तीनों लोकों के हित के लिए महासुर का वध करुँगी ।

भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः ।
इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥ ५४॥

भ्रामरी इति = भ्रामरी इस प्रकार
च = और
मां = मेरी
लोका:= लोग
तदा = तब
स्तोष्यन्ति = स्तुति करेंगे
सर्वतः = सब

इत्थं = इस प्रकार
यदा यदा = जब जब
बाधा = बाधा
दानव = दानवों द्वारा
उत्था = खड़ी
भविष्यति = होगी

और तब सब लोग मेरी भरामृ इस प्रकार स्तुति करेंगे । इस प्रकार जब जब दानवों द्वारा बाधा खड़ी होगी ...

तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥ ५५॥

तदा तदा= तब तब
अवतीर्या= अवतार ले कर
अहं = मैं
करिष्यामि = करुँगी
अरिसङ्क्षयम् =शत्रुओं का संहार

तब तब अवतार ले कर मैं शत्रुओं का संहार करुँगी ।

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
नारायणीस्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११॥

द्वादशोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

विद्युद्दामसमप्रभां = बिजली की चमक के सामान आत्भहा वाली
मृगपतिस्कन्धस्थितां = सिंह के कंधे पर बैठी
भीषणां = भयानक
कन्याभिः = कन्याओं से
करवाल खेट विलसद्धस्ताभि: = चमकती तलवार , ढाल लिए
सेविताम्= सेवित
हस्तैश्चक्रगदा असिखेटविशिखांश्चापं =हाथों में चक्र गदा तलवार ढाल बाण , तीर, धनुष
गुणं = पाश

तर्जनीं = तर्जनी मुद्रा
बिभ्राणाम = धारण किये
अनलात्मिकां = अग्निमय स्वरुप वाली
शशिधरां = चन्द्रमा धारण किये

दुर्गां त्रिनेत्रां भजे तीन नेत्रों वाली दुर्गा का ध्यान करते हैं

बिजली की चमक के सामान आत्भहा वाली, सिंह के कंधे पर बैठी, भयानक चमकती तलवार , ढाल लिए कन्याओं से सेवित, हाथों में चक्र गदा तलवार ढाल बाण , तीर, धनुष , पाश, तर्जनी मुद्रा धारण किये, अग्निमय स्वरुप वाली, चन्द्रमा का मुकुट धारण किये , तीन नेत्रों वाली दुर्गा का ध्यान करते हैं ।

ॐ देव्युवाच ॥ १॥

देवी बोलीं ।

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः ।
तस्याहं सकलां बाधां शमयिष्याम्यसंशयम् ॥ २॥

एभिः =इन
स्तवै= स्तुतियों से
च = और
मां = मेरी
नित्यं = रोज़
स्तोष्यते = स्तुति करेगा
यः = जो
समाहितः एकाग्रचित्त हो
तस्याहं = उसकी मैं
सकलां = सभी
बाधां = बाधाओं को
शमयिष्याम्य = नष्ट कर दूंगी
असंशयम् = बिना शक के , निश्चित ही
जो इन स्तुतियों से एकाग्रचित्त हो नित्य

मेरी स्तुति करेगा उसकी सभी बाधाओं को मैं निश्चित ही नष्ट कर दूंगी ।

मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम् ।

कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भनिशुम्भयोः ॥ ३॥

मधुकैटभनाशं = मधु कैटभ के नाश
च = और
महिषासुरघातनम् = महिषासुर के संहार का
कीर्तयिष्यन्ति = कीर्तन करेंगे
ये =जो
तद्वत् = वैसे ही
वधम् = वध का
शुम्भनिशुम्भयोः = शुम्भ निशुम्भ के

जो मधु कैटभ के नाश , महिषासुर के संहार का और वैसे ही शुम्भ निशुम्भ के वध का कीर्तन करेंगे ।

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः ।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥ ४॥

अष्टम्यां = अष्टमी
च = और
चतुर्दश्यां = चतुर्दशी
नवम्यां = नवमी
चैकचेतसः एकाग्रचित्त हो
श्रोष्यन्ति = श्रवण
च= और
एव = ही
ये = जो
भक्त्या = भक्तिपूर्वक
मम = मेरे
माहात्म्यम उत्तमम् = उत्तम माहात्मय का

जो भक्तिपूर्वक मेरे उत्तम माहात्मय का एकाग्रचित्त हो अष्टमी, चतुर्दशी और नवमी को श्रवण ही करेंगे

न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः ।
भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम् ॥ ५॥

न = नही
तेषां = उन से
दुष्कृतं = पाप
किञ्चित्= कुछ
दुष्कृतोत्था = पाप जनित
न = न
चापदः = आपत्तियां
भविष्यति = होंगी
न = ना
दारिद्र्यं = दरिद्रता
न च एव= और न ही
इष्टवियोजनम्= प्रियजनों का विछोह होगा

न उनसे कुछ पाप होगा , न पापजनित आपत्तियां होंगी , न दरिद्रता होगी, न प्रियजनों का विछोह होगा ।

शत्रुभ्यो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः ।
न शस्त्रानलतोयौघात् कदाचित् सम्भविष्यति ॥ ६॥

शत्रुभ्यो = शत्रुओं से
न = न
भयं = डर
तस्य = उसको
दस्युतो = लुटेरों
वा= या
न = न
राजतः= राजाओं से
न = न
शस्त्र अनल तोयौघात् = शास्त्र , अग्नि , जलधारा से
कदाचित् = कुछ
सम्भविष्यति= होगा

उसको न शत्रुओं से , न लुटेरों से या राजाओं से , न शास्त्र , अग्नि , जलधारा से कुछ डर होगा ।

तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः ।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत् ॥ ७॥

तस्मात् = इसलिए
मम एतत् माहात्म्यं = मेरा ये माहात्म्य
पठितव्यं = पढ़ें
समाहितैः = एकाग्रचित्त हो
श्रोतव्यं = सुनें
च = और
सदा - सदा
भक्त्या = भक्ति पूवर्क
परं = परम
स्वस्त्ययनं = कल्याणकारी
तत् = जो
हि= निश्चित रूप से

इसलिए एकाग्रचित्त हो मेरा ये माहात्म्य भक्तिपूर्वक सदा पढ़ें और सुने जो निश्चितरूप से परम कल्याणकारी है ।

उपसर्गानशेषांस्तु महामारीसमुद्भवान् ।
तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥ ८॥

उपसर्गान् = रोगों
अशेषान् = सभी
तु = और
महामारी समुद्भवान् = महामारी से उत्पन्न
तथा = इसी प्रकार
त्रिविधम उत्पातं = तीन प्रकार के उत्पातों को
माहात्म्यं= माहात्मय
शमयेन्= शांत करने वाला है

मम= मेरा मेरा माहात्म्य सभी रोगों और और इसी प्रकार महामारी से उत्पन्न तीन प्रकार के उत्पातों को शांत करने वाला है ।

यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम ।
सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम् ॥ ९॥

यत्र एतत्= जहां ये
पठ्यते =पढ़ा जाता है
सम्यक् = विधिपूर्वक

नित्यम् = रोज़
आयतने = घर
मम = मेरा
सदा = हमेशा
न = नहीं
तत् =वह
विमोक्ष्यामि = छोड़ती
सांनिध्यं = सानिध्य
तत्र = वहां
मे = मेरा
स्थितम् = स्थित रहता है

जहां मेरा ये माहात्म्य विधिपूर्वक नियम से पढ़ा जाता है , वह घर नहीं छोड़ती , वहां हमेशा मेरा सानिध्य स्थित रहता है ।

बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे ।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥ १०॥

बलिप्रदाने = बलि दान
पूजायाम् = पूजा
अग्निकार्ये = होम
महोत्सवे = महोत्सव में
सर्वं = सब को
मम= मेरे
एतत् चरित = इस माहात्म्य का
उच्चार्यं = उच्चारण करना
श्राव्यम् = श्रवण
एव = निश्चित रूप से
च= और

बलिदान , पूजा , होम , महोत्सव में सबको मेरे इस माहात्म्य का निश्चित रूप से उच्चारण और श्रवण करना चाहिए ।

जानताजानता वापि बलिपूजां यथा कृताम् ।
प्रतीक्षिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथाकृतम् ॥ ११॥

जानताजानता वा= (विधि) जानते हुए अथवा न जानते हुए

अपि = भी
बलिपूजां= बलि पूजा
तथा= इसी प्रकार
कृताम् = करता है
प्रतीक्षिष्यामि= ग्रहण करुँगी
अहं = मैं
प्रीत्या = प्रेम से
वह्निहोमं = यज्ञ
तथा= इसी प्रकार
कृतम् = करता है

इसीप्रकार विधि जानते हुए अथवा न जानते हुए भी बलि पूजा करता है , इसी प्रकार यज्ञ करता है , मैं प्रेम से ग्रहण करुँगी ।

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी ।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥ १२॥

शरत्काले = शरत काल में
महापूजा = महापूजा
क्रियते = करते हैं
या = जो
च = और
वार्षिकी = वार्षिक
तस्यां = उस में
मम एतत माहात्म्यं = मेरे इस माहात्म्य को
श्रुत्वा = सुनते हैं
भक्तिसमन्वितः = भक्तिपूर्वक

शरत्काल में जो वार्षिक महापूजा करते हैं और उस में मेरे इस माहात्मय को भक्तिपूर्वक सुनते हैं

सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसमन्वितः ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥ १३॥

सर्वाबाधा= सब बाधाओं
विनिर्मुक्तो =से मुक्त
धन धान्य सुतान्वितः = धन धान्य,पुत्रों से युक्त

मनुष्यो = मनुष्य
मत्प्रसादेन =मेरे प्रसाद से
भविष्यति = होगा
न संशयः =बिना संशय के

वे मनुष्य मेरे प्रसाद से बिना संशय के सब बाधाओं से मुक्त , धन धा-न्य,पुत्रों से युक्त होंगे ।

श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः ।
पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ॥ १४॥

श्रुत्वा = सुन कर
मम एतत माहात्म्यं = मेरे इस माहात्म्य को
तथा = इसी प्रकार
च = और
उत्पत्तयः = उत्पत्ति
शुभाः = शुभ
पराक्रमं = पराक्रम को
च = और
युद्धेषु = युद्ध के
जायते = हो जाएगा
निर्भयः = निर्भय
पुमान् = मनुष्य

मेरे इस माहात्म्य को और इसी प्रकार शुभ उत्पत्ति और युद्ध के पराक्रम को सुन कर मनुष्य निर्भय हो जाएगा ।

रिपवः सङ्क्ष्यं यान्ति कल्याणं चोपपद्यते ।
नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम श्रृण्वताम् ॥ १५॥

रिपवः = शत्रु
सङ्क्ष्यं = नष्ट
यान्ति = हो जाते हैं
कल्याणं = कल्याण की
च= और
उपपद्यते = प्राप्ति होती है
नन्दते = आनंदित होता है

च = और
कुलं = कुल
पुंसां = मनुष्य के
माहात्म्यं= माहात्म्य को
मम = मेरे
शृण्वताम् = सुनाने से

मेरे माहात्मय के सुनाने से मनुष्य के शत्रु नष्ट हो जाते हैं और कल्याण की प्राप्ति होती है और कुल आनंदित होता है ।

शान्तिकर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने ।
ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ॥ १६॥

शान्तिकर्मणि = शान्ति कर्मों में
सर्वत्र = सभी
तथा = इसी प्रकार
दुःस्वप्नदर्शने = बुरे सपने दिखाई देने पर
ग्रहपीडासु = ग्रह पीड़ा में
च = और
उग्रासु = भयंकर
माहात्म्यं = माहात्म्य को
शृणुयात् = सुनना चाहिए
मम= मेरा

सभी शान्ति कर्मों में और इसी प्रकार बुरे सपने दिखाई देने पर और भयंकर ग्रह पीड़ा में मेरे माहात्म्य को सुनना चाहिए ।

उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः ।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥ १७॥

उपसर्गाः = विघ्न
शमं = शांत
यान्ति = हो जाती हैं
ग्रहपीडा = ग्रह पीड़ाएं
च = और
दारुणाः = भयंकर
दुःस्वप्नं= बुरे स्वप्न

च = और
नृभि:= मनुष्यों द्वारा
दृष्टं = देखे गए
सुस्वप्नम् = शुभ स्वप्न
उपजायते = हो जाते हैं

विघ्न और भयंकर ग्रह पीड़ाएं शांत हो जाती हैं और मनुष्यों द्वारा देखे गए बुरे स्वपन शुभ स्वप्न हो जाते हैं ।

बालग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम् ।
सङ्घातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम् ॥ १८॥

बालग्रहा अभिभूतानां = बालग्रहों से व्याकुल
बालानां =बालकों के लिए
शान्तिकारकम् = शान्तिकारक है
सङ्घातभेदे = संगठन में फूट होने से
च = और
नृणां = मनुष्यों के
मैत्रीकरणम् = मित्रता कराने वाला है
उत्तमम्= उत्तम

बालग्रहों से व्याकुल बालकों के लिए शान्तिकारक है और मनुष्यों के संगठन में फूट होने से उत्तम मित्रता कराने वाला है ।

दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम् ।
रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् ॥ १९॥

दुर्वृत्तानाम= दुराचारियों के
अशेषाणां = सभी
बलहानिकरं = बल का नाश करने वाला
परम् = परम
रक्षोभूतपिशाचानां = राक्षसों , भूतों , पिशाचों का
पठनादेव = पढ़ने से ही
नाशनम् = नाश कर देता है

महातम्य को पढ़ने से ही सभी दुराचारियों के परम बल का नाश करने वाला (और) राक्षसों , भूतों , पिशाचों का नाश कर देता है ।

सर्वं ममैतन्माहात्म्यं मम सन्निधिकारकम् ।
सर्वं = सब
ममैतन्माहात्म्यं = मेरा ये माहात्मय
मम = मेरा

सन्निधिकारकम् = सामीप्य कराने वाला है

मेरा ये सब माहात्मय मेरा सामीप्य कराने वाला है ।

पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथोत्तमैः ॥ २०॥

पशु पुष्प अर्घ्य धूपैश्च= पशु , फूल , अर्ध्य और धुप
गन्ध दीपै: तथा उत्तमैः = इसी प्रकार उत्तम गंध , दीप से

पशु , फूल , अर्ध्य, धुप और इसी प्रकार उत्तम गंध , दीप से

विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम् ।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या ॥ २१॥

भोजनै: = भोजन
होमैः = होम
प्रोक्षणीयै: = अभिषेक
अहर्निशम्= प्रतिदिन
अन्यै:= अन्य
च = और
विविधै: भोगैः = अनेक प्रकार के भोग
प्रदानै: प्रदान करने से
वत्सरेण = एक साल तक
या = जो

साल भर प्रतिदिन ब्राह्मणों को भोजन, होम ,अभिषेक और अनेक प्रकार के अन्य भोग प्रदान कर

प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृत्सुचरिते श्रुते ।

श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति ॥ २२॥

प्रीति: मे = मुझे प्रसन्न
क्रियते = करते हैं
सा = वह , उतनी
अस्मिन् = इस
सकृतचरिते = उत्तम चरित्र को
श्रुते= सुनने से होती हूँ
श्रुतं =सुनने पर
हरति = हरती हूँ
पापानि = पाप
तथा= इसी प्रकार
आरोग्यं प्रयच्छति = आरोग्य प्रदान करती हूँ

मुझे प्रसन्न करते हैं , उतनी (प्रसन्न मैं) इस उत्तम चरित्र को सुनने से होती हूँ, इसे सुनने पर मैं पाप हारती हूँ , इसी प्रकार आरोग्य प्रदान करती हूँ ।

रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम ।
युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम् ॥ २३॥

तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते ।

रक्षां = रक्षा
करोति = करता है
भूतेभ्यो = भूतों से
जन्मनां = उत्पत्ति का
कीर्तनं = कीर्तन
मम = मेरी
युद्धेषु = युद्ध का
चरितं = चरित्र है
यन्मे = जो मेरा
दुष्टदैत्यनिबर्हणम् = दुष्ट दैत्यों के संहार का

तस्मिञ्छ्रुते = उसके सुनने से
वैरिकृतं = शत्रुओं द्वारा उत्पन्न
भयं = भय
पुंसां = मनुष्यों को

न जायते = नहीं रहता

मेरी उत्पत्ति का कीर्तन भूतों से रक्षा करता है । दुष्ट दैत्यों के संहार का जो मेरा चरित्र है उसके सुनने से शत्रुओं द्वारा उत्पन्न भय मनुष्यों को नहीं रहता ।

युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ॥ २४॥

ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम् ।

युष्माभिः = तुम ने
स्तुतयो = स्तुति
याश्च = और जो
याश्च = और जो
ब्रह्मर्षिभिः ब्रह्म ऋषियों ने
कृताः = की है

ब्रह्मणा च = और ब्रह्मा ने
कृता:= की है
ता: = वे
तु = वास्तव में
प्रयच्छन्तु = देती है
शुभां =शुभ
मतिम् = मति

और जो (देवताओं) तुमने , और जो ब्रह्म ऋषियों ने स्तुति की है और जो ब्रह्मा ने की है वो वास्तव में शुभ मति देती हैं ।

अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः ॥ २५॥

दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः ।
सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः ॥ २६॥
अरण्ये = वनमे
प्रान्तरे = निर्जन रास्ते में
वा= अथवा
अपि = भी

दावाग्नि परिवारितः= जंगल की आग में घिर कर

दस्युभिः= लुटेरों से
वा = अथवा
वृतः = घिर कर
शून्ये = निर्जन में
गृहीतो = पकडे जाने पर
वापि = अथवा
शत्रुभिः= शत्रुओं द्वारा
सिंहव्याघ्रा = शेर और चीतों
अनुयातो = पीछा करने पर
वा =अथवा
वने =वन में
वा =अथवा
वनहस्तिभिः= जंगली हाथियों द्वारा

वनमे अथवा निर्जन रास्ते में अथवा जंगल की आग में घिर कर भी , निर्जन में लुटेरों से घर कर अथवा शत्रुओं द्वारा पकड़े जाने पर अथवा वन में शेर और चीतों द्वारा या जंगली हाथियों द्वारा

पीछा करने पर

राज्ञा क्रुध्द्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा ।
आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥ २७॥

राज्ञा = राजा
क्रुध्द्धेन = क्रोधित
च= और
अज्ञप्तो = आज्ञा
वध्यो = वध की
बन्धगतो= बंदी होने पर
अपि = भी
वा = अथवा
आघूर्णितो= डगमगाती
वा = अथवा
वातेन = तूफ़ान से
स्थितः = स्थित

पोते = नाव पर
महार्णवे = महासागर में

क्रोधित राजा द्वारा वध की आज्ञा या बंदी होने से अथवा महासागर में तू-फ़ान से डगमगाती नाव पर स्थित होने पर

पतत्सु चापि शस्त्रेषु सङ्ग्रामे भृशदारुणे ।
सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥ २८॥

पतत्सु = प्रहार होने पर
च = और
अपि= भी
शस्त्रेषु = शास्त्रों के
सङ्ग्रामे= संग्राम में
भृशदारुणे = अत्यंत भयंकर
सर्वाबाधासु = बाधाओं में
घोरासु = भयानक
वेदनाभ्य आर्दितो = वेदना से पीड़ित होने पर
अपि = भी
वा = या

और अत्यंत भयंकर संग्राम में शास्त्रों के प्रहार होने पर भी, भयानक बा-धाओं में या वेदना से पीड़ित होने पर भी

स्मरन् ममैतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात् ।

स्मरन् = स्मरण करने पर
ममैतच्चरितं = मम एतत चरितं = मेरे इस माहात्मय को
नरो = मनुष्य
मुच्येत = मुक्त हो जाता है
सङ्कटात्= संकटों से

मेरे इस माहात्मय को स्मरण करने पर मनुष्य संकटों से मुक्त हो जाता है ।

मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥ २९॥

दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितं मम ॥ ३०॥

मम = मेरे
प्रभावात्= प्रभाव से
सिंहाद्या = सिंह आदि जानवर
दस्यवो = लुटेरे
वैरिण: = शत्रु
तथा = इसी प्रकार

दूरात् एव = दूर से ही
पलायन्ते = भागते हैं
स्मरत: = समरण करने पर
चरितं = चरित्र का
मम = मेरे

मेरे चरित्र का स्मरण करने पर मेरे प्रभाव से सिंह आदि जानवर, लुटेरे , इसी प्रकार शत्रु दूर से ही भागते हैं ।

ऋषिरुवाच ॥ ३१॥

ऋषि बोला ।

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा ॥ ३२॥

पश्यतां सर्वदेवानां तत्रैवान्तरधीयत ।

इत्युक्त्वा = इति उक्तवा = यह कह कर
सा = वह
भगवती = भगवती
चण्डिका = चण्डिका
चण्डविक्रमा= प्रचंड पराक्रम वाली

पश्यतां = देखते
सर्वदेवानां = सब देवताओं के
तत्रैव= वहीँ
अन्तरधीयत = अंतर्ध्यान हो गयी

यह कह कर वह प्रचंड पराक्रम वाली बगवती चण्डिका सब देवताओं के देखते देखते वहीँ अंतर्ध्यान हो गयीं ।

तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा ॥ ३३॥

यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः ।

तेऽपि= वे भी
देवा = देवता
निरातङ्काः = आतंक रहित हो
स्वाधिकारान् = अपने अधिकार का पालन
यथा = जैसे
पुरा = पहले

यज्ञभागभुजः= यज्ञ भाग का उपभोग करते हुए
सर्वे = सब
चक्रुः = करने लगे
विनिहता = मारे जाने पर
आरयः= शत्रुओं के

वे सब देवता भी शत्रुओं के मारे जाने पर पहले की तरह डर रहित हो यज्ञ भाग का उपभोग करते हुए अपने अधिकार का पालन करने लगे ।

दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ॥ ३४॥

जगद्विध्वंसके तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे ।
निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः ॥ ३५॥

दैत्याः = दैत्य
च = और
देव्या = देवी द्वारा
निहते = मारे जाने पर
शुम्भे = शुम्भ के
देवरिपौ = असुर

युधि= युद्ध में

जगत् विध्वंसनि = जगत को नष्ट करने वाले
तस्मिन् = उस
महोग्रे= महा भयंकर
अतुलविक्रमे = अत्यंत पराक्रमी

निशुम्भे च = और निशुम्भ के
महावीर्ये = महावीर्य
शेषाः = बचे हुए
पातालम= पाताल में
आययुः= चले गए

और जगत को नष्ट करने वाले उस महा भयंकर अत्यंत पराक्रमी असुर शुम्भ और महावीर निशुम्भ के युद्ध में देवी द्वारा मारे जाने पर शेष बचे दैत्य पाताल चले गए ।

एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः ।
सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥ ३६॥

एवं = इस प्रकरर्
भगवती = भगवती
देवी = देवी
सा = वह
नित्यापि = नित्य होती हुई भी
पुनः पुनः = बार बार
सम्भूय = प्रकट हो कर
कुरुते = करती है
भूप = हे राजा
जगतः = जगत की
परिपालनम् = रक्षा

हे राजा , इस प्रकार वह भगवती देवी नित्य होती हुई भी बार बार प्रकट हो कर जगत की रक्षा करती है ।

तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते ।
सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति ॥ ३७॥

तया = उनसे
एतत =इस
मोह्यते = मोहित किया जाता है
विश्वं = विश्व को
सैव स एव = वह ही
विश्वं = विश्व को
प्रसूयते = जनम देती हैं
सा = वह
याचिता = प्रार्थना करने पर
च = और
विज्ञानं = विज्ञान
तुष्टा = संतुष्ट हो
ऋद्धिं = समृद्धि
प्रयच्छति = प्रदान करती हैं

उनके द्वारा ही इस विश्व को मोहित किया जाता है , वे ही विश्व को जनम देती हैं । वह प्रार्थना करने पर संतुष्ट हो समृद्धि प्रदान करती हैं ।

व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर ।
महादेव्या महाकाली महामारीस्वरूपया ॥ ३८॥

व्याप्तं = व्याप्त है
तया= उनके द्वारा ही
एतत = यह
सकलं = सारा
ब्रह्माण्डं = ब्रह्माण्ड
मनुजेश्वर = हे राजन
महाकाल्या = महाकाली
महाकाले = महाकाल में
महामारीस्वरूपया = महामारी का रूप धारण करने वाली

हे राजन महाकाल में महामारी का रूप धारण करने वाली उन महाकाली द्वारा ही यह सारा ब्रह्माण्ड व्याप्त है ।

सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा ।
स्थितिं करोति भूतानां सैव काले सनातनी ॥ ३९॥

सैव = वह ही
काले = समयानुसार
महामारी =महामारी
सैव = वह ही
सृष्टि:= सृष्टि
भवति = बन जाती हैं
अजा = अजन्मा
स्थितिं = रक्षा , पालन पोषण
करोति = करती हों
भूतानां = प्राणियों की
सैव = वह ही
काले = समय समय पर
सनातनी = सनातनी(नित्य एवं प्राचीन) देवी

वह ही समयानुसार महामारी हैं , वे ही अजन्मा हो कर भी सृष्टि बन जाती हैं , वे सनातनी देवी ही समयनुसार प्राणियों की रक्षा करती हैं ।

भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे ।
सैवाभावे तथाऽलक्ष्मीर्विनाशायोपजायते ॥ ४०॥

भवकाले = शुभ समय में
नृणां = मनुष्यों के
सैव = वे ही
लक्ष्मी: = लक्ष्मी
वृद्धिप्रदा = समृद्धि देने वाली
गृहे = घर में
सैव = वे ही
अभावे = अभाव में
तथा = इसी प्रकार
अलक्ष्मी: = अलक्ष्मी हैं
विनाशाय = विनाश
उपजायते = करने वाली

वे ही शुभ समय में मनुष्यों घर में समृद्धि देने वाली लक्ष्मी हैं , इसी प्रकार वे ही अभाव में विनाश करने वाली अलक्ष्मी हैं ।

स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्गन्धधूपादिभिस्तथा ।

ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ॥ ४१॥

स्तुता = स्तुति करने से
सम्पूजिता = पूजा कर
पुष्पै:= फूल
गन्धधूपादिभि:= गंध , धुप आदि से
तथा = इस प्रकार
ददाति = देती हैं
वित्तं = धन
पुत्रांश्च = और पुत्र
मतिं = बुद्धि
धर्मे = धार्मिक
गतिं = गति
शुभाम् = शुभ

इसी प्रकार फूल गंध , धुप आदि से पूजा कर स्तुति करने से धन , पुत्र , धार्मिक बुद्धि और शुभ गति देती है ।

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
भगवती वाक्यं द्वादशोऽध्यायः ॥ १

त्रयोदशोऽध्यायः

ध्यानम्
ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्।
पाशाङ्कुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे।।

बालार्क मण्डल आभासां = उदयकाल के सूर्यमण्डल की आभा वाली
चतुर्बाहुं = चार भुजाओं वाली
त्रिलोचनाम्= तीन नेत्रों वाली
पाशाङ्कुशवराभीती: धारयन्तीं = पाश, अंकुश , वर और अभय मुद्रा धारण करने वाली

शिवां भजे = शिवा देवी का ध्यान करता/करती हूँ ।

उदयकाल के सूर्यमण्डल की आभा वाली चार भुजाओं वाली, तीन नेत्रों वाली ,पाश, अंकुश, वर और अभय मुद्रा धारण करने वाली, शिवा देवी का ध्यान

करता/करती हूँ ।

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १॥

ऋषि बोले ।

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम् ।
एवम्प्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत् ॥ २॥

एतत्ते = एतत ते = इस प्रकार आपको
कथितं = वर्णन कर दिया
भूप = राज़ा
देवीमाहात्म्यमुत्तमम् = देवी के उत्तम माहात्म्य का
एवम्प्रभावा = ऐसा प्रभाव है
सा देवी = उस देवी
ययेदं यत इदं = जो इस
धार्यते = धारण करती है
जगत् = जगत को

हे राजा इस प्रकार आपको देवी के उत्तम माहात्म्य का वर्णन कर दिया है , उस देवी का ऐसा प्रभाव है जो इस जगत को दजारां करती है ।

विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया ।
तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ॥ ३॥

मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे ।

विद्या = ज्ञान
तथैव = इस प्रकार ही
क्रियते = उत्पन्न करती है
भगवद्विष्णुमायया = भगवान विष्णु की माया स्वरूपा
तया = उसके द्वारा
त्वम्= तुम
एष= यह
वैश्यश्च वैश्यः च और वैश्य
तथैवान्ये =तथा एव अन्ये
विवेकिनः= बुद्धिमान
मोह्यन्ते= मोहित हुए

मोहिताः मोहित होते हैं
मोहम् = मोह में , मोहित
एष्यन्ति = आएंगे , होते रहेंगे
च अपरे = और दूसरे भी

भगवान विष्णु की माया स्वरूपा ज्ञान उत्पन्न करती है, इस प्रकार ही उसके द्वारा तुम और यह वैश्य और अन्य बुद्धिमान मोहित हुए और मोहित होते हैं । और दूसरे भी मोहित होते रहेंगे ।

तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥ ४॥

ताम = उस की
उपैहि = जाओ , पहुँचो
महाराज = हे महाराज
शरणं = शरण में
परमेश्वरीम् = परमेश्वरी की

हे महाराज उस परमेश्वरी की शरण में जाओ ।

आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा ॥ ५॥

आराधिता = आराधना करने पर
सैव= सा एव = वे ही
नृणां = मनुष्यों को
भोगस्वर्गापवर्गदा = भोग, स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करती हैं

आराधना करने पर वे ही मनुष्यों को भोग, स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करती हैं ।

मार्कण्डेय उवाच ॥ ६॥

मार्कण्डेय बोले ।

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः ॥ ७॥

इति = इस प्रकार

तस्य = उसके
वचः = वचनों को
श्रुत्वा = सुनकर
सुरथः = सुरथ
स नराधिपः= वह राजा

इस प्रकार उसके वचनों को सुनकर वह राजा सुरथ

प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं संशितव्रतम् ।
निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥ ८॥

प्रणिपत्य = प्रणाम कर के
महाभागं = महाभाग
तमृषिं = उस ऋषिको
संशितव्रतम् = दृढ़ता से व्रत का पालन करने वाले
निर्विण्णो = दुखी , निराश
अतिममत्वेन = अति ममता
राज्यापहरणेन = राज्य के अपहरण से
च = और

दृढ़ता से व्रत का पालन करने वाले उस ऋषि महाभाग को प्रणाम कर के अति ममता और राज्य के अपहरण से दुखी

जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने ।
सन्दर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः ॥ ९॥

जगाम = गए
सद्य= उसी वक़्त
तपसे = तपस्या के लिए
स च वैश्यो = वह और वैश्य
महामुने = महामुनि
सन्दर्शनार्थम = दर्शनों के लिए
अम्बाया = अम्बा के
नदीपुलिन = नदी के किनारे
संस्थितः = स्थित हो

हे महानूनी वह और वैश्य तपस्या के लिए नदी के किनारे स्थित हुए ।

स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् ।
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् ॥ १०॥

अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः ।

स च वैश्य = उसने और वैश्य ने
तप: = तपस्या
तेपे = तपी , की
देवीसूक्तं = देवी सूक्त का
परं = अत्यधिक
जपन् = जप कर के
तौ = वे दोनों
तस्मिन् = उस
पुलिने = पल पर
देव्याः = देवी की
कृत्वा = बना कर
मूर्तिं = मूर्ति
महीमयीम् = मिट्टी की

अर्हणां = पूजन
चक्रतुः= किया
तस्याः = उसका

पुष्प धूप अग्नि तर्पणैः = फूल, धूप, हवन और तर्पण से

उसने और वैश्य ने देवीसूक्त का परम जप कर तपस्या की । उन दोनों ने नदी के पल पर देवी की मिटटी की मूर्ति बना कर फूल, धूप, हवन और तर्पण से उसका पूजन किया ।

निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥ ११॥

ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम् ।

निराहारौ = बिना भोजन
यताहारौ = संयत भोजन
तन्मनस्कौ = एकाग्र मन से

समाहितौ = युक्त हो कर

ददतुः = दी
तौ = उन दोनों ने
बलिं = बलि
चैव = और ऐसे ही
निजगात्र= अपने शरीर का
असृग्= खून
उक्षितम्= छिड़क कर

उन दोनों ने एकाग्र मन से युक्त हो कर बिना भोजन , अल्प भोजन कर और ऐसे ही अपने शरीर का खून छिड़क कर बलि दी ।

एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥ १२॥

परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ॥ १३॥

एवं = इस प्रकार
समाराधयत: = आराधना की
त्रिभि:= तीन
वर्षै:= वर्षों तक
यतात्मनोः = मन को संयत करके

परितुष्टा = संतुष्ट हो
जगद्धात्री = जगत को धारण करने वाली
प्रत्यक्षं = प्रकट हो
प्राह = कहा
चण्डिका= चण्डिका ने

इस प्रकार एकाग्र मन से तीन वर्षों तक आराधना करने पर संतुष्ट हो जगत को धारण करने वाली चण्डिका ने कहा ।

देव्युवाच ॥ १४॥
देवी बोलीं ।

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन ।

मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ॥ १५॥

यत्प्रार्थ्यते = जिसके लिए प्रार्थना की है
त्वया = तुम्हारे द्वारा
भूप = राजा
त्वया च कुलनन्दन = और कुलनन्दन तुम्हारे द्वारा
मत्= मेरे द्वारा
तत्= वह
प्राप्यतां = प्राप्त करोगे
सर्वं = सब
परितुष्टा = संतुष्ट हुई
ददामि = प्रदान करूँगी
ते = और

हे राजा तुम्हारे द्वारा और कुलनन्दन तुम्हारे द्वारा जिसके लिए प्रार्थना की गयी है वह मेरे द्वारा प्राप्त करोगे और संतुष्ट हुई मैं सब प्रदान करूँगी ।

मार्कण्डेय उवाच ॥ १६॥
मार्कण्डेय बोले ।

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि ।
अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ॥ १७॥

ततो = तब
वव्रे = वरदान माँगा , प्रार्थना की
नृपो = राजा ने
राज्यमविभ्रंश्य = नष्ट न होने वाला राज्य
अन्यजन्मनि = दूसरे जन्म में
अत्रैव यहाँ ही
च = और
निजं = अपना
राज्यं = राज्य
हतशत्रुबलं शत्रु सेना द्वारा छीना
बलात् = बलपूर्वक, जबदस्ती

तब राजा ने दूसरे जन्म में नष्ट न होने वाला राज्य और यहाँ (इस जन्म में) ही शत्रु सेना द्वारा जबरदस्ती चीनी गए अपने राज्य का बरदान माँगा ।

सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्णमानसः ।
ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम् ॥ १८॥

सोऽपि = वह भी
वैश्य:= वैश्य
ततो = तब
ज्ञानं =ज्ञान
वव्रे = वरदान माँगा ,
निर्विण्ण= दुखी
मानसः= मन
ममेत्यहमिति मम इति अहम इति = ममता और अहम इस
प्राज्ञः = बुद्धि
सङ्गविच्युतिकारकम् =(साथ से अलग करने का) अलगाव करने के

तब उस दुखी वैश्य ने ममता और अहम इस बुद्धि अलगाव करने के ज्ञान का वरदान माँगा ।

देव्युवाच ॥ १९॥

देवी बोलीं ।

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥ २०॥

स्वल्पै:= थोड़े
अहोभि := दिनों में
नृपते = राजा
स्वं = अपना
राज्यं = राज्य
प्राप्स्यते = प्राप्त करोगे
भवान् = आप

हे राजा आप थोड़े दिनों में अपना राज्य प्राप्त करोगे ।

हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति ॥ २१॥

हत्वा =मार कर
रिपून= शत्रुओं को
अस्खलितं= स्थिर
तव = तुम्हारा
तत्र = वहां
भविष्यति= होगा

शत्रुओं को मार कर वहां तुम्हारा स्थिर (राज्य) होगा ।

मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ॥ २२॥

सावर्णिको मनुर्नाम भवान्भुवि भविष्यति ॥ २३॥

मृतश्च = मृत्यु पर
भूयः = दुबारा
सम्प्राप्य = प्राप्त करके
जन्म = जन्म
देवात् = भगवान
विवस्वतः = सूर्य से

सावर्णिको = सावर्णिक
मनु= मनु
नाम = नाम
भवान् = आप
भुवि = पृथ्वी पर
भविष्यति = बनेंगे

मृत्यु के बाद भगवान सूर्य से जन्म प्राप्त कर आप पृथ्वी पर सावर्णिक नाम के मनु बनेंगे ।

वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवाञ्छितः ॥ २४॥

तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति ॥ २५॥

वैश्यवर्य = श्रेष्ठ वैश्य
त्वया तुमने

यश्च= और जो
वरोऽस्मत्तो = वर मुझसे
अभिवाञ्छितः = चाहा है

तं = उसे
प्रयच्छामि =देती हूँ
संसिद्ध्यै = मोक्ष
तव = तुम्हे
ज्ञानं = ज्ञान
भविष्यति = होगा

और श्रेष्ठ वैश्य तुमने जो वार मुझसे चाहा है वह मैं तुम्हे देती हूँ , तुम्हें मोक्ष के लिए ज्ञान होगा ।

मार्कण्डेय उवाच ॥ २६॥

मार्कण्डेय बोले ।

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम् ।
बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता ॥ २७॥

इति = इस प्रकार
दत्त्वा = दे कर
तयो = उन को
देवी = देवी
यथाभिलषितं = जो इच्छित था
वरम् = वरदान
बभूवान्तर्हिता = अंतर्ध्यान हो गयी
सद्यो = उसी वक़्त
भक्त्या = भक्ति से
ताभ्याम= उनके द्वारा
अभिष्टुता = स्तुति की जाती हुई ,

इस प्रकार उनको मनोवांछित वरदान दे कर , भक्तिपूर्वक उन दोनों द्वारा स्तुति की जाती हुई वह देवी उसी वक़्त अंतर्ध्यान हो गयी ।

एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ।

सूर्याज्ञन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥ क्लीं ॐ ॥

एवं = इस प्रकार
देव्या = देवी से
वरं = वरदान
लब्ध्वा = प्राप्त कर
सुरथः= सुरथ
क्षत्रियर्षभः = ऋषियों में श्रेष्ट
सूर्याज्ञन्म = सूर्य से जन्म ले
समासाद्य = प्राप्त कर
सावर्णि= सावर्णि
भविता = होंगे
मनुः=मनु

इस प्रकार ऋषियों में श्रेष्ट सुरथ देवी से वरदान पा सूर्य से जन्म ले सा-
वर्णि मनु होंगे ।

॥ स्वस्ति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
सुरथवैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३॥

॥उपसंहारः॥
इस प्रकार सप्तशती का पाठ पूरा होने पर पहले नवार्णजप करके फिर देवीसूक्त के पाठ का विधान है ; अतः यहाँ भी नवार्ण-विधि उद्धृत की जाती है। सब कार्य पहले की ही भाँति होंगे।
॥विनियोगः॥
श्रीगणपतिर्जयति। ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः,
गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवताः,
ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।
॥ऋष्यादिन्यासः॥
ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः, शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः, मुखे।
महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वतीदेवताभ्यो नमः, हृदि।
ऐं बीजाय नमः, गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ।
"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" - इति मूलेन करौ संशोध्य-
॥करन्यासः॥
ॐ ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥हृदयादिन्यासः॥
ॐ ऐं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्लीं शिखायै वषट्।
ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।
॥अक्षरन्यासः॥
ॐ ऐं नमः, शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे।
ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे। ॐ चां नमः, दक्षिणकर्णे।
ॐ मुं नमः, वामकर्णे। ॐ डां नमः, दक्षिणनासापुटे।
ॐ यैं नमः, वामनासापुटे। ॐ विं नमः, मुखे। ॐ च्चें नमः, गुह्ये।
"एवं विन्यस्याष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात्"
॥दिङ्न्यासः॥
ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः।
ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः।
ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः।
ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।
॥ध्यानम्॥
खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥१॥
अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥२॥
घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम्॥३॥
इस प्रकार न्यास और ध्यान करके मानसिक उपचार से देवी की पूजा करें। फिर १०८ या १००८ बार नवार्णमन्त्र का जप करना चाहिये। जप आरम्भ करने के पहले "ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः" इस मन्त्रसे माला की पूजा करके इस प्रकार प्रार्थना करें-
ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये॥
ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि
साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा।
इस प्रकार प्रार्थना करके जप आरम्भ करें। जप पूरा करके उसे भगवती को समर्पित करते हुए कहे-
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वंरि॥
तत्पश्चात् फिर नीचे लिखे अनुसार न्यास करें-
॥करन्यासः॥
ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ चं तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ डिं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ कां अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं चण्डिकायै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।
॥हृदयादिन्यासः॥
ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा॥ हृदयाय नमः।
ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च॥ शिरसे स्वाहा।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि॥ शिखायै वषट्।
ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥ कवचाय हुम्।
ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥ नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥ अस्त्राय फट्।
॥ध्यानम्॥
ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्च क्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

॥ऋग्वेदोक्तं देवीसूक्तम्॥
॥विनियोगः॥
ॐ अहमित्यष्टर्चस्य सूक्तस्य वागाम्भृणी ऋषिः,
सच्चित्सुखात्मकः सर्वगतः परमात्मा देवता, द्वितीयाया ऋचो
जगती, शिष्टानां त्रिष्टुप् छन्दः, देवीमाहात्म्यपाठे विनियोगः।
॥ध्यानम्॥

ॐ सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः
शङ्खं चक्रधनुःशरांश्चर दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।
आमुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला॥
जो सिंह की पीठपर विरजमान हैं , जिनके मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है , जो मस्तक मणि के समान कान्तिवाली अपनी चार भुजाओं में शंख , चक्र , धनुष और बाण धारण करती हैं , तीन नेत्रों से सुशोभित होती हैं , जिनके भिन्न - भिन्न अंग बाँधे हुए बाजूबंद हार , कंकण , खनखनाती हुई करधनी और रुनझुन करते हुए नूपुरों से विभूषित हैं तथा जिनके कानों में रत्नजटित कुण्डल झिलमिलाते रहते हैं , वे भगवती दुर्गा हमारी दुर्गति दूर करनेवाली हों ।
॥देवीसूक्तम्॥
ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः।
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा॥१॥
[महर्षि अम्भृण की कन्या का नाम वाक् था । वह बड़ी ब्रह्मज्ञानिनी थी । उसने देवी के साथ अभिन्नता प्राप्त कर ली थी । उसीके ये उद्गार हैं -] मैं सच्चिदानन्दमयी सर्वात्मा देवी रुद्र , वसु , आदित्य तथा विश्व देवगणों के रूप में विचरती हूँ । मैं ही मित्र और वरुण दोनों को , इन्द्र और अग्नि को तथा दोनों अश्विनी कुमारों को धारण करती हैं ॥१॥
अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम्।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते॥२॥
मैं हीं शत्रुओं के नाशक अकाशचारी देवता सोम को , त्वष्टा प्रजापति को तथा पूषा और भग को भी धारण करती हूँ । जो हविष्य से सम्पन्न हो देवताओं को उत्तम हविष्यकी प्राप्ति कराता है तथा उन्हें सोमरस के द्वारा तृप्त करता है , उस यजमान के लिये मैं ही उत्तम यज्ञ का फल और धन प्रदान करती हूँ ॥२॥
अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्य्यावेशयन्तीम्॥३॥
मैं सम्पूर्ण जगत् की अधीश्वरी , अपने उपासकों को धन की प्राप्ति करानेवाली , साक्षात्कार करने योग्य परब्रह्म को अपने से अभिन्न रूप में जाननेवाली तथा पूजनीय देवताओं में प्रधान हूँ मैं प्रपंचरूप से अनेक भावों में स्थित हूँ सम्पूर्ण भूतों में मेरा प्रवेश है । अनेक स्थानों में रहनेवाले देवता जहाँ – कहीं जो कुछ भी करते हैं ॥ ३॥
मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः
प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि
श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि॥४॥
जो अन्न खाता है , वह मेरी शक्ति से ही खाता है [क्योंकि मैं ही भोक्तृ- शक्ति हूँ]

; इसी प्रकार जो देखता है , जो साँस लेता है तथा जो कही हुई बात सुनता है , वह मेरी ही सहायता से उक्त सब कर्म करने में समर्थ होता है । जो मुझे इस रूप में नहीं जानते , वे न जानने के कारण ही दीन - दशा को प्राप्त होते जाते हैं । हे बहुश्रुत ! मैं तुम्हें श्रद्धा से प्राप्त होनेवाले ब्रह्मतत्व का उपदेश करती हूँ , सुनो - ॥४॥

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं
देवेभिरुत मानुषेभिः।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि
तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्॥५॥
मैं स्वयं ही देवताओं और मनुष्यों द्वारा सेवित इस दुर्लभ तत्त्व का वर्णन करती हूँ । मैं जिस - जिस पुरुष की रक्षा करना चाहती हूँ, उस- उसको सबकी अपेक्षा अधिक शक्तिशाली बना देती हूँ । उसी को सृष्टिकर्ता ब्रह्मा , परोक्षज्ञान सम्पन्न ऋषि तथा उत्तम मेधाशक्ति से युक्त बनाती हूँ ॥५॥
अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश॥६॥
मैं ही ब्रह्मद्वेषी हिंसक असुरों का वध करने के लिये रुद्र के धनुष को चढ़ाती हूँ । मैं ही शरणागतजनों की रक्षा के लिये शत्रुओं से युद्ध करती हूँ तथा अंतर्यामी रूप से पृथ्वी और आकाश के भीतर व्याप्त रहती हूँ ॥६॥
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम
योनिरप्स्वन्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वो –
तामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि॥७॥
मैं ही इस जगत् के पितारूप आकाश को सर्वाधिष्ठान स्वरूप परमात्मा के ऊपर उत्पन्न करती हूँ । समुद्र (सम्पूर्ण भूतोंके उत्पत्तिस्थान परमात्मा) – में तथा जल (बुद्धिकी व्यापक वृत्तियों) – मेरे कारण (कारणस्वरूप चैतन्य ब्रह्म) – की स्थिति है ; अतएव मैं समस्त भुवन में व्याप्त रहती हूँ तथा उस स्वर्गलोक का भी अपने शरीर से स्पर्श करती हूँ ॥७॥
अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा ।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव॥८॥*
मैं कारण रूप से जब समस्त विश्व की रचना आरम्भ करती हूँ , तब दूसरों की प्रेरणा के बिना स्वयं ही वायु की भाँति चलती हूँ स्वेच्छा से ही कर्म में प्रवृत्त होती हूँ । मैं पृथ्वी और आकाश दोनों से परे हूँ । अपनी महिमा से ही मैं ऐसी हुई हूँ ॥८॥
स्वस्ति ऋग्वेदोक्तं देवीसूक्तम् समाप्तं।

॥अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्॥
नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥१॥
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरुपिण्यै सुखायै सततं नमः॥२॥
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः॥३॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः॥४॥
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः॥५॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥६॥
या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥७॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥८॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥९॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१०॥
या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥११॥
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१२॥
या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१३॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१४॥
या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१५॥
या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१६॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१७॥
या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१८॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥१९॥

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२०॥
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२१॥
या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२२॥
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२३॥
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२४॥
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२५॥
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्त्स्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२६॥
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः॥२७॥
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥२८॥
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया-
त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः॥२९॥
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-
रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः॥३०॥
स्वस्ति तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम् समाप्तं।

दुर्गासप्तशती रहस्य

॥विनियोगः॥
ॐ अस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः,
महाकालीमहालक्ष्मीमहासरस्वत्यो देवता यथोक्तफलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः।
ॐ सप्तशतीके इन तीनों रहस्योंके नारायण ऋषि, अनुष्टुप् छन्द तथा महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती देवता हैं । शास्त्रोक्त फलकी प्राप्तिके लिये जपमें विनियोग होता है ।

॥अथ प्राधानिकं रहस्यम्॥
राजोवाच
भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः।

एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमर्हसि॥१॥
राजा बोले- भगवन् ! आपने चण्डिका के अवतारों की कथा मुझसे कही । ब्रह्मन् ! अब इन अवतारों की प्रधान प्रकृति का निरुपण कीजिये ॥१॥
आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन च द्विज।
विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे॥२॥
द्विजश्रेष्ठ ! मैं आपके चरणों में पड़ा हूँ । मुझे देवी के जिस स्वरूप की और जिस विधि से आराधना करनी है , वह सब यथार्थ रूप से बतलाइये ॥२॥
ऋषिरूवाच
इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते।
भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप॥३॥
ऋषि कहते हैं- राजन् ! यह रहस्य परम गोपनीय है । इसे किसी से कहने - योग्य नहीं बतलाया गया है ; किंतु तुम मेरे भक्त हो , इसलिये तुमसे न कहने - योग्य मेरे पास कुछ भी नहीं है ॥ ३॥
सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी।
लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता॥४॥
त्रिगुणमयी परमेश्वरी महालक्ष्मी ही सबका आदि कारण हैं । वे ही दृश्य और अदृश्य रूप से सम्पूर्ण विश्व को व्याप्त करके स्थित हैं ॥४॥

मातुलुङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती।
नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्धनि॥५॥
राजन् ! वे अपनी चार भुजाओं में मातुलुंग (बिजौरे का फल) ,गदा , खेट (ढ़ाल) एवं पानपात्र और मस्तक पर नाग , लिंग तथा योनि - इन वस्तुओं को धारण करती हैं ॥५॥
तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा।
शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा॥६॥
तपाये हुए सुवर्ण के समान उनकी कान्ति है , तपाये हुए सुवर्ण के ही उनके भूषण हैं । उन्होंने अपने तेज से इस शून्य जगत् को परिपूर्ण किया है ॥६॥
शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी।
बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि॥७॥
परमेश्वरी महालक्ष्मी ने इस सम्पूर्ण जगत् को शून्य देखकर केवल तमोगुणरूपा उपाधि के द्वारा एक अन्य उत्कृष्ट रूप धारण किया ॥७॥
सा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राङ्कितवरानना।
विशाललोचना नारी बभूव तनुमध्यमा ॥८॥
वह रूप एक नारी के रूपमें प्रकट हुआ , जिसके शरीर की कान्ति निखरे हुए काजल की भाँति काले रंग की थी , उसका श्रेष्ठ मुख दाढ़ों से सुशोभित था । नेत्र बड़े - बड़े और कमर पतली थी ॥८॥
खड्गपात्रशिरःखेटैरलङ्कृतचतुर्भुजा।

कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणा हि शिरःस्रजम्॥९॥
उसकी चार भुजाएँ ढ़ाल , तलवार , प्याले और कटे हुए मस्तक से सुशोभित थीं । वह वक्ष:स्थल पर कबन्ध (धड़) – की तथा मस्तक पर मुण्डों की माला धारण किये हुए थी ॥९॥
सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा।
नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः॥१०॥
इस प्रकार प्रकट हुई स्त्रियों मे श्रेष्ठ तामसी देवीने महालक्ष्मी से कहा - ' माताजी ! आपको नमस्कार है । मुझे मेरा नाम और कर्म बताइये' ॥१०॥
तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम्।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते॥११॥
तब महालक्ष्मीने स्त्रियों में श्रेष्ठ उस तामसी देवी से कहा-'मैं तुम्हें नाम प्रदान करती हूँ और तुम्हारे जो - जो कर्म हैं , उनको भी बतलाती हूँ, ॥११॥
महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा।
निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिर्दुरत्यया॥१२॥
महामाया , महाकाली , महामारी , क्षुधा , तृषा , निद्रा ,तृष्णा , एकवीरा , कालरात्रि तथा दुरत्यया - ॥१२॥
इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः।
एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम्॥१३॥
ये तुम्हारे नाम हैं , जो कर्मों के द्वारा लोक में चरितार्थ होंगे । इन नामों के द्वारा तुम्हारे कर्मों को जानकर जो उनका पाठ करता है , वह सुख भोगता है' ॥१३॥
तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप।
सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ॥१४॥
राजन् ! महाकाली से यों कहकर महालक्ष्मी ने अत्यन्त शुद्ध सत्त्व गुण के द्वारा रूप धारण किया , जो चन्द्रमा के समान गौरवर्ण था ॥१४॥
अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी।
सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ॥१५॥
वह श्रेष्ठ नारी अपने हाथों में अक्षमाला , अंकुश , वीणातथा पुस्तक धारण किये हुए थी । महालक्ष्मी ने उसे भी नाम प्रदान किये ॥१५॥
महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती।
आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी॥१६॥
महाविद्या , महावाणी , भारती , वाक् , सरस्वती , आर्या , ब्राह्मी , कामधेनु , वेदगर्भा और धीश्वरी (बुद्धिकी स्वामिनी) – ये तुम्हारे नाम होंगे ॥१६॥
अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम्।
युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः॥१७॥
तदनन्तर महालक्ष्मी ने महाकाली और महासरस्वती से कहा-' देवियो ! तुम दोनों अपने - अपने गुणों के योग्य स्त्री - पुरुष के जोड़े उत्पन्न करो' ॥१७॥

इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम्।
हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ॥१८॥
उन दोनों से यों कह कर महालक्ष्मी ने पहले स्वयं ही स्त्री - पुरुष का एक जोड़ा उत्पन्न किया। वे दोनों हिरण्यगर्भ (निर्मल ज्ञानसे सम्पन्न) सुन्दर तथा कमल के आसनपर विराजमान थे । उनमें से एक स्त्री थी और दूसरा पुरुष ॥१८॥
ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम्।
श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम्॥१९॥
तत्पश्चात् माता महालक्ष्मी ने पुरुष को ब्रह्मन ! विधे ! विरिंच! तथा धात: ! इस प्रकार सम्बोधित किया और स्त्री को श्री ! पद्मा ! कमला ! लक्ष्मी ! इत्यादि नामों से पुकारा ॥१९॥
महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह।
एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते॥२०॥
इसके बाद महाकाली और महासरस्वती ने भी एक - एक जोड़ा उत्पन्न किया । इनके भी रूप और नाम मैं तुम्हें बतलाता हूँ ॥२०॥
नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम्।
जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम्॥२१॥
महाकाली ने कण्ठ में नील चिह्न से युक्त , लाल भुजा , श्वेत शरीर और मस्तक पर चन्द्रमा धारण करने वाले पुरुष को तथा गोरे रंग की स्त्री को जन्म दिया ॥२१॥
स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः।
त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा॥२२॥
वह पुरुष रुद्र , शंकर , स्थाणु , कपर्दी और त्रिलोचन के नाम से प्रसिद्ध हुआ तथा स्त्री के त्रयी , विद्या , कामधेनु , भाषा , अक्षरा और स्वरा – ये नाम हुए ॥२२॥
सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप।
जनयामास नामानि तयोरपि वदामि ते॥२३॥
राजन् ! महासरस्वती ने गोरे रंग की स्त्री और श्याम रंग के पुरुषको प्रकट किया । उन दोनों के नाम भी मैं तुम्हें बतलाता हूँ ॥२३॥
विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः।
उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा॥२४॥
उनमें पुरुष के नाम विष्णु , कृष्ण , हृषीकेश , वासुदेव और जनार्दन हुए तथा स्त्री उमा , गौरी , सती , चण्डी , सुंदरी , सुभगा और शिवा - इन नामों से प्रसिद्ध हुई ॥२४॥
एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः॥२५॥
इस प्रकार तीनों युवतियाँ ही तत्काल पुरुष को प्राप्त हुईं । इस बात को ज्ञान नेत्रवाले लोग ही समझ सकते हैं । दूसरे अज्ञानीजन इस रहस्य को नहीं जान

सकते ॥२५॥
ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम्।
रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम्॥२६॥
राजन् ! महालक्ष्मी ने त्रयीविद्यारूपा सरस्वती को ब्रह्मा के लिये पत्नीरूप में समर्पित किया , रुद्र को वरदायिनी गौरी तथा भगवान् वासुदेव को लक्ष्मी दे दी ॥२६॥
स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत्।
बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान्॥२७॥
इस प्रकार सरस्वती के साथ संयुक्त होकर ब्रह्माजी ने ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया और परम पराक्रमी भगवान् रुद्र ने गौरी के साथ मिलकर उसका भेदन किया ॥२७॥
अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजातमभून्नृप।
महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम्॥२८॥
राजन् ! उस ब्रह्माण्ड में प्रधान (महत्तत्त्व) आदि कार्यसमूह – पंचमहाभूतात्मक समस्त स्थावर - जंगमरूप जगत् की उत्पत्ति हुई ॥२८॥
पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः।
संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वशरः॥२९॥
फिर लक्ष्मी के साथ भगवान् विष्णु ने उस जगत् का पालन - पोषण किया और प्रलयकाल में गौरी के साथ महेश्वर ने उस सम्पूर्ण जगत् का संहार किया ॥२९॥
महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्त्वमयीश्वरी।
निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत्॥३०॥
नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित्॥ॐ॥३१॥

महाराज ! महालक्ष्मी ही सर्वसत्त्वमयी तथा सब सत्त्वों की अधीश्वरी हैं । वे ही निराकार और साकार रूप में रहकर नाना प्रकार के नाम धारण करती हैं ॥३०॥ सगुणवाचक सत्य , ज्ञान , चित् , महामाया आदि नामान्तरों से इन महालक्ष्मी का निरुपण करना चाहिये । केवल एक नाम (महालक्ष्मीमात्र) – से अथवा अन्य प्रत्यक्ष आदि प्रमाण से उनका वर्णन नहीं हो सकता ॥३१॥
॥ स्वस्ति श्री प्राधानिकं रहस्यं सम्पूर्णम्॥
॥अथ वैकृतिकं रहस्यम्॥
ऋषिरुवाच
ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता।
सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते॥१॥
ऋषि कहते हैं - राजन् ! पहले जिन सत्त्वप्रधाना त्रिगुणमयी महालक्ष्मी के तामसी आदि भेद से तीन स्वरूप बतलाये गये , वे ही शर्वा , चण्डिका , दुर्गा , भद्रा और भगवती आदि नामों से कही जाती हैं ॥१॥
योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा।
मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः॥२॥
तमोगुणमयी महाकाली भगवान् विष्णु की योगनिद्रा कही गयी हैं । मधु कैटभ का

नाश करने के लिये ब्रह्माजी ने जिनकी स्तुति की थी, उन्हीं का नाम महाकाली है ॥२॥
दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा।
विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया॥३॥
उनके दस मुख , दस भुजाएँ और दस पैर हैं । वे काजल के समान काले रंग की हैं तथा तीस नेत्रों की विशाल पंक्ति से सुशोभित होती हैं ॥ ३॥
स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि भूमिप।
रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः॥४॥
भूपाल ! उनके दाँत और दाढ़ें चमकती रहती हैं । यद्यपि उनका रूप भयंकर है , तथापि वे रूप , सौभाग्य , कान्ति एवं महती सम्पदा की अधिष्ठान (प्राप्तिस्थान) हैं ॥४॥
खड्गबाणगदाशूलचक्रशङ्खभुशुण्डिभृत्।
परिघं कार्मुकं शीर्षं निश्च्योतद्रुधिरं दधौ॥५॥
वे अपने हाथों मे खड्ग , बाण , गदा , शूल , चक्र , शंख , भुशुण्डि , परिघ , धनुष तथा जिससे रक्त चूता रहता है , ऐसा कटा हुआ मस्तक धारण करती हैं ॥५॥
एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया।
आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम्॥६॥
महाकाली भगवान् विष्णु के दुस्तर माया हैं । आराधना करने पर ये चराचर जगत् को अपने उपासक के अधीन कर देती हैं ॥६॥
सर्वदेवशरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी॥७॥
सम्पूर्ण देवताओं के अंगों से जिनका प्रादुर्भाव हुआ था , वे अनन्त कान्ति से युक्त साक्षात् महालक्ष्मी हैं । उन्हें ही त्रिगुणमयी प्रकृति कहते हैं तथा वे ही महिषासुर का मर्दन करनेवाली हैं ॥७॥
श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तनमण्डला।
रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा॥८॥
उनका मुख गोरा , भुजाएँ श्याम , स्तनमण्डल अत्यन्त श्वेत , कटिभाग और चरण लाल तथा जंघा और पिंडली नीले रंग की हैं। अजेय होने के कारण उनको अपने शौर्य का अभिमान है ॥८॥
सुचित्रजघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा।
चित्रानुलेपना कान्तिरूपसौभाग्यशालिनी॥९॥
कटि के आगेका भाग बहुरंगे वस्त्र से आच्छादित होने के कारण अत्यन्त सुन्दर एवं विचित्र दिखायी देता है । उनकी माला , वस्त्र , आभूषण तथा अंगराग सभी विचित्र हैं । वे कान्ति , रूप और सौभाग्य से सुशोभित हैं ॥९॥
अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती।
आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात्॥१०॥

यद्यपि उनकी हजारों भुजाएँ हैं तथापि उन्हें अठारह भुजाओं से युक्त मानकर उनकी पूजा करनी चाहिये ।अब उनके दाहिनी ओर के निचले हाथों से लेकर बायीं ओर के निचले हाथों तक में क्रमशः जो अस्त्र हैं , उनका वर्णन किया जाता है ॥१०॥
अक्षमाला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा।
चक्रं त्रिशूलं परशुः शङ्खो घण्टा च पाशकः॥११॥
शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः।
अलङ्कृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम्॥१२॥
सर्वदेवमयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप।
पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत्॥१३॥
अक्षमाला , कमल , बाण , खड्ग , वज्र , गदा चक्र , त्रिशूल , परशु , शंख , घण्टा , पाश , शक्ति , दण्ड , चर्म (ढ़ाल) , धनुष , पानपात्र और कमण्डलु - इन आयुधों से उनकी भुजाएँ विभूषित हैं । वे कमल के आसन पर विराजमान हैं , सर्वदेवमयी हैं तथा सबकी ईश्वरी हैं । राजन् ! जो इन महालक्ष्मी देवी का पूजन करता है , वह सब लोकों तथा देवताओं का भी स्वामी होता है ॥११- १३॥
गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया।
साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी॥१४॥
जो एकमात्र सत्त्वगुण के आश्रित हो पार्वतीजी के शरीर से प्रकट हुई थीं तथा जिन्होंने शुम्भ नामक दैत्य का संहार किया था , वे साक्षात् सरस्वती कही गयी हैं ॥१४॥
दधौ चाष्टभुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत्।
शङ्खं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप॥१५॥
पृथ्वीपते ! उनके आठ भुजाएँ हैं तथा वे अपने हाथों में क्रमशः बाण , मुशल , शूल , चक्र , शंख , घण्टा , हल एवं धनुष धारण करती हैं ॥१५॥
एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति।
निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी॥१६॥
ये सरस्वती देवी , जो निशुम्भ का मर्दन तथा शुम्भासुर का संहार करनेवाली हैं , भक्तिपूर्वक पूजित होने पर सर्वज्ञता प्रदान करती हैं ॥१६॥
इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव।
उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय॥१७॥
राजन् ! इस प्रकार तुम से महाकाली आदि तीनों मूर्तियों के स्वरूप बतलाये , अब जगन्माता महालक्ष्मी की तथा इन महाकाली आदि तीनों मूर्तियों की पृथक् - पृथक् उपासना श्रवण करो ॥१७॥
महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती।
दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम्॥१८॥
जब महालक्ष्मी की पूजा करनी हो , तब उन्हें मध्य में स्थापित करके उनके दक्षिण और वामभाग में क्रमशः महाकाली और महासरस्वती का पूजन करना चाहिये और पृष्ठभाग में तीनों युगल देवताओं की पूजा करनी चाहिये ॥१८॥

विरञ्चिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे।
वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम्॥१९॥
महालक्ष्मी के ठीक पीछे मध्यभाग में सरस्वती के साथ ब्रह्माका पूजन करे । उनके दक्षिणभाग में गौरी के साथ रुद्र की पूजा करे तथा वामभाग में लक्ष्मीसहित विष्णु का पूजन करे । महालक्ष्मी आदि तीनों देवियों के सामने निम्नांकित तीन देवियों की भी पूजा करनी चाहिये ॥१९॥
अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना।
दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत्॥२०॥
मध्यस्थ महालक्ष्मी के आगे मध्यभाग में अठारह भुजाओंवाली महालक्ष्मी का पूजन करे । उनके वामभाग में दस मुखोंवाली महाकालीका तथा दक्षिणभाग में आठ भुजाओंवाली महासरस्वती का पूजन करे ॥२०॥
अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप।
दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा॥२१॥
कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये।
यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी॥२२॥
नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ।
नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत्॥२३॥
राजन् ! जब केवल अठारह भुजाओंवाली महालक्ष्मी का अथवा दशमुखी काली का या अष्टभुजा सरस्वती का पूजन करना हो , तब सब अरिष्टों की शान्ति के लिये इनके दक्षिणभाग में काल की और वामभाग में मृत्यु की भी भली भाँति पूजा करनी चाहिये । जब शुम्भासुर का संहारा करनेवाली अष्टभुजा देवी की पूजा करनी हो , तब उनके साथ उनकी नौ शक्तियों का और दक्षिण भाग में रुद्र एवं वामभाग में गणेशजी का भी पूजन करना चाहिये (ब्राह्मी , माहेश्वरी , कौमारी , वैष्णवी , वाराही , नारसिंही , ऐन्द्री , शिवदूती तथा चामुण्डा - ये नौ शक्तियाँ हैं) 'नमो देव्यै ****' इस स्तोत्र से महालक्ष्मी की पूजा करनी चाहिये ॥२१-२३॥
अवतारत्रयार्चायां स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः।
अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी॥२४॥
महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती।
ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी॥२५॥
तथा उनके तीन अवतारों की पूजा के समय उनके चरित्रों में जो स्तोत्र और मन्त्र आये हैं , उन्हींका उपयोग करना चाहिये । अठारह भुजाओंवाली महिषासुरमर्दिनी महालक्ष्मी ही विशेषरूप से पूजनीय हैं ; क्योंकि वे ही महालक्ष्मी , महाकाली तथा महासरस्वती कहलाती हैं । वे ही पुण्य - पापों की महेश्वरी तथा सम्पूर्ण लोकों की महेश्वरी हैं ॥२४ - २५॥
महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः।
पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्॥२६॥

जिसने महिषासुरका अन्त करनेवाली महालक्ष्मी की भक्तिपूर्वक आराधना की है , वही संसार का स्वामी है । अत: जगत् को धारण करनेवाली भक्तवत्सला भगवती चण्डिका की अवश्य पूजा करनी चाहिये ॥२६॥
अर्घ्यादिभिरलङ्कारैर्गन्धपुष्पैस्तथाक्षतैः।
धूपैर्दीपैश्चङ नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः॥२७॥
रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप।
(बलिमांसादिपूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता॥
तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्वचित्।)
प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना ॥२८॥
सकर्पूरैश्चय ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः।
वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम् ॥२९॥
पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया।
दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वयरम् ॥३०॥
वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम्।
कुर्याच्च स्तवनं धीमांस्तस्या एकाग्रमानसः॥३१॥
ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः।
एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह॥३२॥
चरितार्धं तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात्।
प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः॥३३॥
क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः।
प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसं तिलसर्पिषा॥३४॥
अर्घ्य आदि से , आभूषणों से , गन्ध , पुष्प , अक्षत , धूप , दीप तथा नाना प्रकार से भक्ष्य पदार्थों से युक्त नैवेद्यों से , रक्तसिंचित बलि से , मांस से तथा मदिरा से भी देवी का पूजन होता है । * (राजन् ! बलि और मांस आदि से की जानेवाली पूजा ब्राह्मणों को छोड़कर बतायी गयी है । उनके लिये मांस और मदिरा से कहीं भी पूजा का विधान नहीं है ।) प्रणाम , आचमन के योग्य जल , सुगन्धित चन्दन , कपूर , ताम्बूल आदि सामग्रियों को भक्तिभाव से निवेदन करके देवी की पूजा करनी चाहिये । देवी के सामने बायें भाग में कटे मस्तकवाले महादैत्य महिषासुर का पूजन करना चाहिये , जिसने भगवती के साथ सायुज्य प्राप्त कर लिया । इसी प्रकार देवी के सामने दक्षिण भाग में उनके वाहन सिंह का पूजन करना चाहिये , जो सम्पूर्ण धर्म का प्रतीक एवं षड्विध ऐश्वर्य से युक्त है । उसी ने इस चराचर जगत् को धारण कर रखा है ।
तदनन्तर बुद्धिमान पुरुष एकाग्रचित हो देवी की स्तुति करे । फिर हाथ जोड़कर तीनों पूर्वोक्त चरित्रों द्वारा भगवती का स्तवन करे । यदि कोई एक ही चरित्र से स्तुति करना चाहे तो केवल मध्य चरित्र के पाठ से कर ले , किंतु प्रथम और उत्तर चरित्रों में से एक का पाठ न करे । आधे चरित्र का भी पाठ करना मना है । जो

आधे चरित्र का पाठ करता है , उसका पाठ सफल नहीं होता । पाठ - समाप्ति के बाद साधक प्रदक्षिणा और नमस्कार कर तथा आलस्य छोड़कर जगदम्बा के उद्देश्य से मस्तक पर हाथ जोड़े और उनसे बारम्बार त्रुटियों या अपराधों के लिये क्षमा - प्रार्थना करे । सप्तशती का प्रत्येक श्लोक मंत्ररूप है , उससे तिल और घृत मिली हुई खीर की आहुति दे ॥२७- ३४॥

जुहुयात्स्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः।
भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्सुसमाहितः॥३५॥

अथवा सप्तशती में जो स्तोत्र आये हैं , उन्हीं के मन्त्रों से चण्डिका के लिये पवित्र हविष्य का हवन करे । होम के पश्चात् एकाग्रचित हो महालक्ष्मी देवी के नाम - मंत्रों को उच्चारण करते हुए पुन: उनकी पूजा करे ॥३५॥

प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणम्यारोप्य चात्मनि।
सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत्॥३६॥

तत्पश्चात् मन और इन्द्रियों को वश में रखते हुए हाथ जोड़ विनीत भाव से देवी को प्रणाम करे और अन्त:करण में स्थापित करके उन सर्वेश्वरी चण्डिकादेवी का देर तक चिन्तन करे । चिन्तन करते - करते उन्हीं में तन्मय हो जाय ॥३६॥

एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम्।
भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्॥३७॥

इस प्रकार जो मनुष्य प्रतिदिन भक्तिपूर्वक परमेश्वरी का पूजन करता है , वह मनोवांछित भोगों को भोगकर अन्त में देवीका सायुज्य प्राप्त करता है ॥३७॥

यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्।
भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी॥३८॥

जो भक्तवत्सला चण्डी का प्रतिदिन पूजन नहीं करता , भगवती परमेश्वरी उसके पुण्यों को जलाकर भस्म कर देती हैं ॥३८॥

तस्मात्पूजय भूपाल सर्वलोकमहेश्वरीम्।
यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि॥३९॥
स्वस्ति वैकृतिकं रहस्यं सम्पूर्णम्।

इसलिये राजन् ! तुम सर्वलोकमहेश्वरी चण्डीका का शास्त्रोक्त विधि से पूजन करो । उससे तुम्हें सुख मिलेगा * ॥३९॥

॥ स्वस्ति श्री वैकृतिकं रहस्यं संपुरणम् ॥

अथ मूर्तिरहस्यम्

ऋषिरुवाच ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा। स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम्॥1॥

अर्थ :- ऋषि कहते हैं- राजन्! नन्दा नाम की देवी जो नन्द से उत्पन्न होने वाली हैं, उनकी यदि भक्ति पूर्वक स्तुति और पूजा की जाय तो वे तीनों लोकों को उपासक के अधीन कर देती हैं॥1॥

कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा। देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा॥2॥
उनके श्रीअङ्गों की कान्ति कनक के समान उत्तम है। वे सुनहरे रंग के सुन्दर वस्त्र धारण करती हैं। उनकी आभा सुवर्ण के तुल्य है तथा वे सुवर्ण के ही उत्तम आभूषण धारण करती हैं॥2॥

कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा। इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजा-सना॥3॥
उनकी चार भुजाएँ कमल, अङ्कुश, पाश और शङ्ख से सुशोभित हैं। वे इन्दिरा, कमला, लक्ष्मी, श्री तथा रुक्माम्बुजासना (सुवर्णमय कमल के आसन पर विराजमान) आदि नामों से पुकारी जाती हैं॥3॥

या रक्त दन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ। तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभया-पहम्॥4॥
निष्पाप नरेश! पहले मैंने रक्त दन्तिका नाम से जिन देवी का परिचय दिया है, अब उनके स्वरूप का वर्णन करूँगा; सुनो। वह सब प्रकार के भयों को दूर करने वाली है॥4॥

रक्ताम्बरा रक्त वर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा। रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा॥5॥
रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका। पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम्॥6॥
वे लाल रंग के वस्त्र धाण करती हैं। उनके शरीर का रंग भी लाल ही है और अङ्गों के समस्त आभूषण भी लाल रंग के हैं। उनके अस्त्र-शस्त्र, नेत्र, शिर के बाल, तीखे नख और दाँत सभी रक्त वर्ण के हैं; इसलिये वे रक्त दन्तिका कहलाती और अत्यन्त भयानक दिखायी देती हैं। जैसे स्त्री पति के प्रति अनुराग रखती है, उसी प्रकार देवी अपने भक्त पर (माता की भाँति) स्नेह रखते हुए उसकी सेवा करती हैं॥5-6॥

वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी। दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ॥7॥
कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी। भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौ स्तनौ॥8॥
देवी रक्त दन्तिका का आकार वसुधा की भाँति विशाल है। उनके दोनों स्तन सुमेरु पर्वत के समान हैं। वे लंबे, चौडे, अत्यन्त स्थूल एवं बहुत ही मनोहर हैं। कठोर होते हुए भी अत्यन्त कमनीय हैं तथा पूर्ण आनन्द के समुद्र हैं। सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ति करने वाले ये दोनों स्तन देवी अपने भक्त कों को पिलाती हैं॥7-8॥

खड्गं पात्रं च मुसलं लाङ्गलं च बिभर्ति सा। आख्याता रक्त चामुण्डा देवी योगेश्वरीति च॥9॥

वे अपनी चार भुजाओं में खड्ग, पानपात्र, मुसल और हल धारण करती हैं। ये ही रक्त चामुण्डा और योगेश्वरी देवी कहलाती हैं॥9॥

अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावरजङ्गमम्। इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्यापनेति चराच-रम्॥10॥

इनके द्धारा सम्पूर्ण चराचर जगत् व्याप्त है। जो इन रक्त दन्तिका देवी का भक्ति पूर्वक पूजन करता है, वह भी चराचर जगत् में व्याप्त होता है॥10॥

(भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमापनुयात्।) अधीते य इमं नित्यं रक्त दन्त्या वपुःस्तवम्। तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना॥11॥

(वह यथेष्ट भोगों को भोगकर अन्त में देवी के साथ सायुज्य प्राप्त कर लेता है।) जो प्रतिदिन रक्तदन्तिका देवी के शरीर का यह स्तवन करता है, उसकी वे देवी प्रेमपूर्वक संरक्षणरूप सेवा करती हैं ठीक उसी तरह, जैसे पतिव्रता नारी अपने प्रियतम पति की परिचर्या करती है॥11॥

शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना। गम्भीरनाभिस्त्रिवलीविभूषिततनूदरी॥12॥

शाकम्भरी देवी के शरीर की कान्ति नीले रंग की है! उनके नेत्र नील कमल के समान हैं, नाभि नीची है तथा त्रिवली से विभूषित उदर (मध्यभाग) सूक्ष्म है॥12॥

सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी। मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया॥13॥
पुष्पपल्लवमूलादिफलाढयं शाकसञ्चयम्। काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युभयापहम्॥14॥
कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी। शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकी-र्तिता॥15॥

उनके दोनों स्तन अत्यन्त कठोर, सब ओर से बराबर, ऊँचे, गोल, स्थूल तथा परस्पर सटे हुए हैं। वे परमेश्वरी कमल में निवास करने वाली हैं और हाथों में बाणों से भरी मुष्टि, कमल, शाक-समूह तथा प्रकाशमान धनुष धारण करती हैं। वह शाकसमूह अनन्त मनोवाञ्छित रसों से युक्त तथा क्षुधा, तृषा और मृत्यु के भय को नष्ट करने वाला तथा फूल, पल्लव, मूल आदि एवं फलों से सम्पन्न है। वे ही शाकम्भरी, शताक्षी तथा दुर्गा कही गयी हैं॥13-15॥

विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम्। उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती॥16॥

वे शोक से रहित, दुष्टों का दमन करने वाली तथा पाप और विपत्ति को शान्त करने वाली हैं। उमा, गौरी, सती, चण्डी, कालिका और पार्वती भी वे ही हैं॥16॥

शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन्। अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम्॥17॥

जो मनुष्य शाकम्भरी देवी की स्तुति, ध्यान, जप, पूजा और वन्दन करता है, वह शीघ्र ही अन्न, पान एवं अमृतरूप अक्षय फल का भागी होता है॥17॥

भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा। विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा॥18॥ चन्द्रहासं च डमरुं शिरः पात्रं च बिभ्रती। एकावीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता॥19॥

भीमादेवी का वर्ण भी नील ही है। उनकी दाढें और दाँत चमकते रहते हैं। उनके नेत्र बडे-बडे हैं, स्वरूप स्त्री का है, स्तन गोल-गोल और स्थूल हैं। वे अपने हाथों में चन्द्रहास नामक खड्ग, डमरू, मस्तक और पानपात्र धारण करती हैं। वे ही एकवीरा, कालरात्रि तथा कामदा कहलाती और इन नामों से प्रशंसित होती हैं॥18-19॥

तजोमण्डलुदुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत्। चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता॥20॥

भ्रामरी देवी की कान्ति विचित्र (अनेक रंग की) है। वे अपने तेजोमण्डल के कारण दुर्धर्ष दिखायी देती हैं। उनका अङ्गराग भी अनेक रंग का है तथा वे चित्र-विचित्र आभूषणों से विभूषित हैं॥20॥

चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते। इत्येता मूर्तयो देव्या याः ख्याता वसुधाधिप॥21॥

चित्रभ्रमरपाणि और महामारी आदि नामों से उनकी महिमा का गान किया जाता है। राजन्! इस प्रकार जगन्माता चण्डिका देवी की ये मूर्तियाँ बतलायी गयी हैं॥21॥

जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः। इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया॥22॥

जो कीर्तन करने पर कामधेनु के समान सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करती हैं। यह परम गोपनीय रहस्य है। इसे तुम्हें दूसरे किसी को नहीं बतलाना चाहिए॥22॥

व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम्। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्त-रम्॥23॥
दिव्य मूर्तियों का यह आख्यान मनोवाञ्छित फल देने वाला है, इसलिये पूर्ण प्रयत्न करके तुम निरन्तर देवी के जप (आराधन) में लगे रहो॥23॥

सप्तजन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि। पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्बिषैः॥24॥
सप्तशती के मन्त्रों के पाठमात्र से मनुष्य सात जन्मों में उपार्जित ब्रह्महत्यासदृश घोर पातकों एवं समस्त कल्मषों से मुक्त हो जाता है॥ 24॥

देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत्। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्र-दम्॥25॥
इसलिये मैंने पूर्ण प्रयत्न करके देवी के गोपनीय से भी अत्यन्त गोपनीय ध्यान का वर्णन किया है, जो सब प्रकार के मनोवाञ्छित फलों को देने वाला है॥25॥

(एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि। सर्वरूपमयी देवी सर्व देवीमयं जगत्। अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।)
(उनके प्रसाद से तुम सर्वमान्य हो जाओगे। देवी सर्वरूपमयी हैं तथा सम्पूर्ण जगत् देवीमय है। अत: मैं उन विश्वरूपा परमेश्वरी को नमस्कार करता हूँ।)
॥ स्वस्ति श्री मूर्तिरहस्यं संपुरणम् ॥
॥क्षमा-प्रार्थना॥
अपराधसहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वारि॥१॥
परमेश्वरी मेरे द्वारा रात - दिन सहस्त्रों अपराध होते रहते हैं । 'यह मेरा दास है' – यों समझकर मेरे उन अपराधों को तुम कृपापूर्वक क्षमा करो॥१॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वारि॥२॥
परमेश्वरी मैं आवाहन नहीं जानता , विसर्जन करना नहीं जानता तथा पूजा करने का ढ़ंग भी नहीं जानता । क्षमा करो ॥२॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥३॥
देवि सुरेश्वरी मैंने जो मन्त्रहीन , क्रियाहीन और भक्तिहीन पूजन किया है , वह सब

आपकी कृपा से पूर्ण हो ॥ ३॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत्।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः॥४॥
सैकड़ों अपराध करके भी जो तुम्हारी शरण में जा 'जगदम्ब' कहकर पुकारता है , उसे वही गति प्राप्त होती है , जो ब्रह्मादि देवताओं के लिये भी सुलभ नहीं है ॥४॥
सापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके।
इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरू॥५॥
जगदम्बिके मैं अपराधी हूँ , किंतु तुम्हारी शरणमें आया हूँ । इस समय दयाका पात्र हूँ । तुम जैसा चाहो , वैसा करो ॥५॥

अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि॥६॥
देवि ! परमेश्वरी ! अज्ञान से , भूल से अथवा बुद्धि भ्रान्त होने के कारण मैंने जो न्यूनता या अधिकता कर दी हो , वह सब क्षमा करो और प्रसन्न होओ ॥६॥
कामेश्वंरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि॥७॥
सच्चिदानन्दस्वरूपा परमेश्वरि ! जगन्माता कामेश्वरि ! तुम प्रेमपूर्वक मेरी यह पूजा स्वीकार करो और मुझपर प्रसन्न रहो ॥७॥
गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गुहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि॥८॥
श्रीदुर्गार्पणमस्तु।
देवि ! सुरेश्वरि ! तुम गोपनीय से भी गोपनीय वस्तु की रक्षा करनेवाली हो । मेरे निवेदन किये हुए इस जपको ग्रहण करो । तुम्हारी कृपा से मुझे सिद्धि प्राप्त हो ॥८॥
श्रीदुर्गार्पणमस्तु